// राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान-राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिलभारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषानिबद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट-ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक

फतहसिंह, एम.ए., डी.लिट्.
निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

ग्रन्थाङ्क १०१

मुंहता नैणसी री लिखी

मारवाड़ रा परगनां री विगत

प्रथम भाग

प्रकाशक

राजस्थान-राज्याज्ञानुसार

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर (राजस्थान)

१९६८ ई०

वि० सं० २०२५

भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८९०

प्रधान-सम्पादकीय

प्रस्तुत ग्रन्थ अपने ढंग की एक अद्वितीय कृति है। महाराजा जसवंतसिंह के काल में मुंहणोत नैणसी के द्वारा लिखित यह एक मारवाड़ का गजेटियर है जिसमें मारवाड़ के विभिन्न परगनों के अन्तर्गत आने वाले सभी गाँवों का जैसा विस्तृत वर्णन दिया गया है वैसा हमारे आधुनिक गजेटियरों में भी प्राप्त नहीं होता। भौगोलिक, ऐतिहासिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सामाजिक दृष्टि से जो व्यौरेवार विवरण यहाँ प्रस्तुत किये गये हैं वे न केवल इतिहास के अध्ययन के लिये उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं अपितु उनसे हमें विभिन्न आधुनिक समस्याओं के अध्ययन के लिये भी प्रेरणा प्राप्त हो सकती है।

लगभग ३०० वर्ष पूर्व तैयार किया गया यह ग्रन्थ हमारी एक अनुपम राष्ट्रनिधि है जिसके प्रथम भाग को प्रकाशित करते हुये, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर एक विशेष गौरव और उल्लास का अनुभव करता है। इस ग्रन्थ के लेखक की सुप्रसिद्ध ग्रंथ "मुंहता नैणसी री ख्यात" को इसी प्रतिष्ठान द्वारा चार भागों में प्रकाशित किया जा चुका है। उसमे जो ऐतिहासिक सामग्री दी गई है उसको समझने के लिये कहीं-कहीं पर प्रस्तुत ग्रन्थ से बड़ी सहायता मिल सकती है। इस ग्रन्थ के सम्पादन में डॉ० नारायणसिंह भाटी ने जो परिश्रम किया है उसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं। उन्होंने इस ग्रन्थ को अधिकाधिक उपयोगी बनाने के लिये अनेक परिशिष्ट तैयार किये हैं जो कि विस्तार-भय से इस भाग में नहीं दिये जा रहे है। इन परिशिष्टों के लिये विद्वान् पाठकों को अगले भागों के प्रकाशन तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। आशा है कि इसका दूसरा भाग अगले दो महीनों में प्रकाशित हो जायगा और उसके पश्चात् शीघ्र ही तृतीय भाग पाठकों तक पहुँच सकेगा।

विजया दशमी, सं० २०२५
जोधपुर।

—फतहसिंह

विषय-सूची

सम्पादकीय — पृ० १ से ४०

वात परगने जोधपुर री — पृ० १ से ३८२

वात परगने सोझत री — पृ० ३८३ से ४९२

वात परगने जैतारण री — पृ० ४९३ से ५५७

परिशिष्ट १—

(क) कमठां री विगत — पृ० ५५९ से ५७८

(ख) नीवांणां री विगत — पृ० ५७९ से ५९५

(ग) गढ़ जोधपुर नीवांण छै जिकां की याददास्त — पृ० ५९६ से ६०२

सम्पादकीय

'मारवाड़ रा परगनां री विगत' पश्चिमी राजस्थान के बहुत बड़े भू-भाग के सम्बन्ध में अनेक प्रकार की जानकारी प्रस्तुत करने वाला अद्वितीय ग्रंथ है। यह ग्रंथ जोधपुर के इतिहास-प्रसिद्ध शासक महाराजा जसवंतसिंह (प्रथम) के योग्य दीवान व ख्यातिप्राप्त इतिहासविद् मुहता नैणसी की रचना है।

इस ग्रंथ में, भौगोलिक दृष्टि से मारवाड़ का जो क्षेत्र उस समय उक्त महाराजा के राज्य में शामिल था उसका इतिहास के परिपेक्ष में विस्तृत विवरण प्रस्तुत करना लेखक का उद्देश्य रहा है। यह भू-भाग प्राचीन काल में मरु. मरुस्थल, मरुस्थली, मरुमेदनी, मरुमंडल, मारव, मरुदेश, और मरुकान्तर आदि[1] नामों से पुकारा जाता था। इनका मुख्य आशय रेगिस्तान अथवा निर्जल प्रदेश है।

मेजर के. डी. एरिस्किन ने 'मारवाड़' को 'मारुवाड़' का अपभ्रंश माना है तथा मरुस्थल की विभीषिका और जल की कमी के कारण इसे जीव-हन्ता कहा है[2]। कर्नल टॉड के अनुसार प्राचीन काल में यह नाम समुद्र से लेकर सतलज तक के विस्तृत भू-भाग के लिये प्रचलित था। मारवाड़ के नाम से पहिचाने जाने वाले इस भू-खंड के कई भागों के नाम समय-समय पर बदलते भी रहे हैं। गुर्जर, प्रतिहार और चौहानों के शासन-काल में इसके कई भू-भाग अन्य नामो से भी पुकारे जाते रहे हैं।

बादशाह अकबर के समय में मारवाड शब्द काफी बड़े क्षेत्र के लिये प्रयुक्त होता था। अबुल फज्ल ने आईने अकबरी मे अजमेर सूबे के अंतर्गत इसका उल्लेख करते हुए इसकी लंबाई १०० कोस तथा चौड़ाई ६० कोस बताई है। अजमेर, जोधपुर, सिरोही, नागोर तथा बीकानेर के क्षेत्र (सरकारें) इसके अंतर्गत माने हैं।[3]

---

१. जोधपुर राज्य का इतिहास (प्रथम खंड) पृ. २. गौ. ही. ओझा।

२. Rajputana Gazatteers, volume 111-A. by maj. K. D. Erskine.

३. Marwar is 100 kos in length by 60 in breadth and it comprises the Sarkars of Ajmer, Jodhpur, Sirohi, Nagor and Bikaner. —AIN-I-AKBARI, VOL. 11 Page 276

—Translated by Col. H. S. JARRETT (Second edition, J.N. Sarkar)

जोधपुर राज्य के सीमा-विस्तार की दृष्टि से भी राव मालदे के समय में अजमेर और बीकानेर जैसे बड़े क्षेत्र इसके अंतर्गत रह चुके हैं। परन्तु मुगल काल में जोधपुर राज्य की सीमा भी प्रत्येक शासक के समय में बदलती रही है। आंतरिक विग्रह और राज्य-विस्तार की लिप्सा के कारण एक ओर शासक और उसके कुटंबियों के बीच संघर्ष रहता था तथा दूसरी ओर पड़ौसी रियासतों के साथ भी युद्ध होते रहते थे। अकबर ने अपनी कूटनीति से इस परिस्थिति का पूरा लाभ उठाया और प्रत्येक रियासत के शासक को अपनी ओर से राज्याधिकार तथा मनसब देने की नीति अपनाई। जिसके फलस्वरूप एक ही राज्य के कई शक्तिशाली सामंतों का सम्बंध सीधा मुगल साम्राज्य से हो गया। इस प्रकार राज्य की राजनैतिक इकाई का अधीष्ठाता सम्राट स्वयं बन गया।

बादशाह राजनैतिक परिस्थियों के अनुकूल शक्ति-संतुलन को बनाये रखने के लिये सामंतों व शासकों की सेवाओं के अनुसार इन राज्यों के परगनों के अधिकार में परिवर्तन करता रहता था। अतः जोधपुर(मारवाड़) राज्य के परगनों में भी प्रत्येक शासक के समय में घटा-बढ़ी होती रही है।

राजा गजसिंह की मृत्यु के पश्चात् जसवंतसिंह को शाहजहां ने जब मारवाड़ का टीका दिया[१] उस समय जोधपुर, सोजत, फलोदी, मेड़ता और सिवाने के परगने ही उसने प्रदान किये थे। जैतारण का परगना कुछ ही समय बाद उन्हें मिल गया। परन्तु पोकरण का परगना सं० १७०७ में बादशाह की अनुमति मिलने पर जैसलमेर वालों से छीन कर अपने अधिकार में किया। इन्ही सात परगनो का विवरण नैणसी ने इस ग्रंथ में प्रस्तुत किया है।

प्रत्येक परगने से सम्बन्धित विवरण इस ग्रंथ का एक अध्याय है। इस प्रकार सात अध्यायों मे ग्रंथ पूर्ण होता है। प्रत्येक परगने के इतिहास, भूगोल, राजस्व, आबादी आदि की विस्तृत जानकारी बड़े व्यवस्थित तथा वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत की गई है। विवरण का क्रम प्रायः निम्न प्रकार है[२]—

१. परगने के मुख्य कस्बे का नामकरण, स्थापना, भौगोलिक स्थिति, समय-समय पर घटने वाली ऐतिहासिक घटनाएँ, परगने के अधिकार में परिवर्तन, कस्बे में बनी इमारतें, देवस्थान, जलाशय, कस्बे की आबादी (जाति के अनुसार)

---

१. सं० १६९५ (चैत्रादि) आषाढ़ वदि ७। २. कहीं-कहीं इस क्रम मे साधारण परिवर्तन है। कुछ स्थलो पर इस क्रम को व्यवस्थित भी कर दिया गया है।

कस्बे की वार्षिक आय (१०-१५ वर्षों की) परगने की १९-२० वर्षों की आय (तफावार) फसलों का विवरण, खालसा, सांसण व सूने गांवों के अनुसार कुल गांवों का वर्गीकरण।

२. तफावार प्रत्येक गांव का विवरण—गांव का नाम, रेख, भौगोलिक स्थिति व कस्बे से दूरी, आबादी जाति के अनुसार, जमीन की किस्म, फसलें, कुए, तालाब, नदियें। ५ वर्ष की आमदनी। (सं० १७१५ से १९ तक) कुछ गांवों का रकबा, बसाने वाले व्यक्तियों के नाम, ऐतिहासिक व्यक्ति से सम्पर्क आदि का भी उल्लेख है।

३. ब्राह्मणों व चारणों, भाटों, जोगियों आदि को दान (सांसण) में दिये हुए गांवों का विवरण एक स्थल पर दे दिया गया है। ऐसे प्रत्येक गांव की जानकारी भी विस्तार से दी गई है, यथा— वह गांव किस राजा ने किसे और कब दान मे दिया और इस समय उनके वंशजों में से कौन मौजूद है। कुछ गांवों की मिलकियत के सम्बन्ध में बीच-बीच में परिवर्तन भी हुए हैं उनकी जानकारी भी देदी गई है।

४. प्रत्येक परगने की सीमा पर स्थित गांव कौन-कौन-से हैं और दूसरे परगने के किन-किन गांवों से उनकी सीमा लगती है, इसे स्पष्ट करने के लिये भी तालिकाएँ प्राय: परगने के अंत में दी गई हैं।

५. परगने सम्बन्धी विशिष्ट जानकारी भी कहीं-कहीं अंकित कर दी गई है, जैसे—नमक की खानें आदि।

इस प्रकार तत्कालीन मारवाड़ का पूरा चित्र इस ग्रथ में हमें मिलता है। आधुनिक युग में जिस प्रकार गजेटियर तैयार किये जाते हैं ठीक उसी प्रकार का प्रयास नैणसी ने लगभग ३०० वर्ष पहले किया था। आधुनिक युग की साधन-सुविधाओं को देखते हुए इस प्रकार का कार्य सरल हो सकता है परन्तु उस युग में नैणसी ने यह कार्य करके अपनी असाधारण प्रतिभा और अनूठी सूझ-बूझ का परिचय दिया है।

प्रसिद्ध इतिहासविद् अबुल फज्ल ने अपने विख्यात ग्रंथ आईने अकबरी के एक भाग में पूरे मुगल साम्राज्य का सर्वेक्षण प्रस्तुत किया है। सम्पूर्ण साम्राज्य को १२ सूबों में विभक्त कर प्रत्येक सूबे को अनेक सरकारों में विभाजित किया है। प्रत्येक सूबे का संक्षिप्त इतिहास भी दिया गया है तथा दोनों फसलों की १९ वर्ष[1] की उपज के आधार पर प्रत्येक सरकार की औसत आमदनी निकाली

---

1. Nineteen years correspond with a Cycle of the moon during which period season are supposed to undergo a complete revolution. Gladwin, p. 292, V. 1

गई है। सरकारों की तालिकाओं में, लगान, क्षेत्रफल, फौज, किलों आदि की भी जानकारी दी गई है। प्रशासन एवं राजस्व की व्यवस्था की दृष्टि से यह ग्रंथ देशी रियासतों में भी प्रसिद्ध रहा होगा अतः यह संभव है कि मारवाड़ के सम्बन्ध में इस प्रकार का ग्रंथ तैयार करने की प्रेरणा नैणसी को इसी ग्रंथ से मिली हो। वैसे महाराजा जसवंतसिंह (प्रथम) स्वयं उच्चकोटि के विद्वान् और प्रबुद्ध शासक थे अतः उनके आदेश पर भी यह ग्रंथ तैयार करवाया गया हो तो भी कोई आश्चर्य की बात नहीं।

ग्रंथ-निर्माण के पीछे चाहे जो प्रेरणा रही हो राज्यव्यवस्था और इतिहास की दृष्टि से उस समय तो इसका व्यावहारिक उपयोग रहा ही है, बाद में भी मारवाड़ के शासकों के लिये यह एक आवश्यक ग्रंथ रहा होगा।

आईने अकबरी में लेखक ने उपरोक्त जानकारी बड़ी संक्षेप में दी है। परन्तु इस ग्रंथ में जहां तक सर्वेक्षण का प्रश्न है प्रत्येक गांव को स्थान दिया गया है। नैणसी इतिहासकार था अतः उसने प्रत्येक परगने, कस्बे और महत्त्वपूर्ण गांवों को इतिहास के परिपेक्ष में देखने का प्रयत्न किया है, यह उसकी बहुत बड़ी विशेषता है। इस विशेषता के कारण ही यह ग्रंथ केवल सर्वेक्षण के आंकड़ों की तालिकाओं का संग्रह मात्र न होकर मारवाड़ का जीवन्त चित्र अंकित करने में सक्षम है।

अनेक दृष्टियों को ध्यान में रख कर लिखे गये इस ग्रंथ की कुछ विशेषताएँ इस प्रकार हैं:—

भौगोलिक व खेती सम्बन्धी

१. प्रत्येक परगने के मुख्य कस्बे को विशेष महत्त्व देते हुए उसकी भौगोलिक स्थिति आदि का विस्तार से वर्णन किया गया है। कस्बे के तालाबों, कुओं, सिंचाई के साधनों, बावड़ियों, बगीचों, पहाड़ियों, रास्तों आदि का उल्लेख किया गया है। जमीन की किस्म, फसल व सब्जियों तक का भी उल्लेख किया है।

२. परगने के गांव की ठीक भौगोलिक स्थिति बताने के लिये कस्बे से दूरी व दिशा का उल्लेख प्रायः किया है।

३. पीने के लिये पानी के साधनों की ओर लेखक ने विशेष ध्यान दिया है। प्रत्येक गांव में कितने कुए हैं, पानी कैसा है, पानी कितना गहरा है तथा पर्याप्त है या नहीं, यदि तालाब है तो पानी कितने महीने चलता है।

पानी समाप्त होने पर पड़ौस के कौनसे गांव पर पानी के लिए निर्भर करना पड़ता है, आदि जानकारी स्पष्ट रूप से दी गई है।

४. सिंचाई के साधनों की भी सही जानकारी देने का प्रयास किया है। जहां कुओं से सिंचाई होती है वहां किस प्रकार के कुए हैं[1] कितने गहरे है। इनके अतिरिक्त जमीन में अन्य कुए खोद कर सिंचाई करने की गुंजाइश है या नहीं, आदि।

५. कोई नदी या नाला सीमा में या सीमा के पास से होकर बहता है तो उसका भी उल्लेख किया है।

६. अनेक गांवों में वर्षा का पानी खेतों में भर जाने से गेहूँ व चने आदि पैदा होते हैं (सेंवज) उनका भी यथा स्थान जिक्र कर दिया गया है। इस प्रकार की खेती कितने बीघे में होती है यह भी उल्लेख कही-कही कर दिया है।

७. कही-कहीं पेड़ों का जिक्र भी कर दिया है।

८. गांव में नमक आदि की खान है तो उसका उल्लेख किया है।

९. समय के परिवर्तन के साथ जहां कुछ गांवों की सीमा में परिवर्तन हो गये हैं उनकी ओर भी संकेत किया गया है।

१०. जिन गांवों मे घोड़ों आदि के चरने के लिये जोड की भूमि (पड़त भूमि) छोड़ी गई है वह भी अंकित की गई है।

११. जहां पुराने कुए या तालाब रेत से पट गये हैं उनका उल्लेख भी कहीं-कहीं किया है।

ऐतिहासिक

राजस्थान के इतिहास के लिये ख्यातें एक महत्त्वपूर्ण साधन हैं। स्वयं नैणसी की ख्यात इस दृष्टि से सर्वोत्तम महत्त्व की मानी जाती है। ओझाजी का मत है कि कर्नल टॉड के समय में यह ख्यात प्रसिद्ध नही हुई थी। यदि उसे यह ग्रंथ मिल जाता तो उसका 'राजस्थान' दूसरे ही रूप मे लिखा जाता[2]। राजस्थान के राजवशों पर विस्तृत प्रकाश डालने वाला यह अद्वितीय ग्रंथ है, इसमें कोई संदेह नही। परन्तु जहां तक जोधपुर के राठौड़-राजवंश का प्रश्न है

---

१. ग्रंथ में सर्वत्र अनेक भांति के सिंचाई वाले कुओं का जिक्र आया है, यथा—कोसीटा, ढीवड़ा, अरट, चांच, पगवटिया आदि।

२. मुहणोत नैणसी री ख्यात : (प्रथम भाग) पृ. ८ (वंशपरिचय), नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।

उसमें न तो कोई क्रमबद्ध इतिहास ही दिया है और न सभी शासकों पर प्रकाश ही डाला है। सीहाजी, आसथान, रिड़मल, जोधाजी, सलखाजी आदि से सम्बन्धित संक्षिप्त बाते विशेष घटनाओं को लेकर ही लिखी गई है। इसके अतिरिक्त कुछ प्रसिद्ध सामंतों व राठौड़ों की वंशावली तक ही उनका वृतान्त सीमित है, जो अपर्याप्त ही नही एकांगी भी है।[1] वास्तव में जोधपुर का क्रमबद्ध इतिहास नैणसी ने प्रस्तुत ग्रंथ मे ही दिया है। जोधपुर परगने के अंतर्गत राव सीहाजी से लेकर जसवन्तसिंह (प्रथम) तक का इतिहास प्रारंभ के लगभग २०० पृष्ठों में है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक परगने के प्रारंभ में. जो परगने का इतिहास दिया गया है उसमें भी समय-समय पर घटने वाली कितनी ही घटनाओं, सम्बन्धित व्यक्तियो तथा राजनैतिक हलचलों पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। इस प्रकार कुल मिलाकर लगभग ३०० पृष्ठों में विशुद्ध ऐतिहासिक सामग्री है। गांवों की विगत मे भी सैकडों ऐतिहासिक महत्व के संकेत मिलते हैं जो मारवाड़ का विस्तृत इतिहास लिखने में तथा कितनी ही घटनाओं को सत्यापित करने मे सहायक सिद्ध हो सकते हैं। ग्रथकर्ता जसवंतसिंह (प्रथम) का समसामयिक है अतः उस समय की प्रामाणिक जानकारी के लिये इस ग्रंथ से बढ़कर अन्य साधन नहीं हो सकता। फारसी के इतिहास-ग्रथों मे जो असतुलित और विकृत तथ्य भारतीय इतिहास के बारे मे मिलते हैं उन्हें सही और संतुलित दृष्टि से देखना चाहें तो इस प्रकार के ग्रंथों का अध्ययन अपरिहार्य है। संक्षेप में इस ग्रथ की ऐतिहासिक विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं —

१. प्रत्येक परगने के विवरण में कतिपय ऐसी महत्वपूर्ण घटनाओं का उल्लेख किया गया है तथा उनके सम्बन्ध-सूत्र को इस प्रकार प्रकट किया गया है कि ऐसा वृत्तांत अन्यत्र नही मिलता। मालदे, वीरम और मुगलों के बीच जो सघर्ष हुआ, वह विवरण उदाहरणार्थ मेड़ता के इतिहास में देखा जा सकता है।

२. जोधपुर राज्य की सीमा मे किस राजा के समय कौन-कौन से परगने रहे, उनकी आमदनी क्या थी तथा मारवाड़ का जो परगना राजा के अधिकार में नही था वह किसके अधिकार में था आदि बातें इस ग्रथ से पूर्णतया स्पष्ट हो जाती हैं।

३. मुगल साम्राज्य की सेवार्थ किसी बड़े युद्ध अथवा सूबे की व्यवस्था के लिये यहां के राजाओं को ससैन्य जाना पड़ता था। ऐसे अवसरों पर किस राजा को तनख्वाह के रूप मे देश के कौन-कौन से सूबे मिले तथा उनकी आमदनी उस समय क्या कूती गई थी इसका भी पूरा व्यौरा यथा स्थान दिया गया है।

---

१. देखें, मुहता नैणसी री ख्यात: भाग २-३, राज० प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर।

३. शासक की अनुपस्थिति में राज्य का कार्य-भार संभालने वाले प्रमुख पदाधिकारियों की नियुक्ति तथा ऐसे व्यक्तियों को मिलने वाले वेतन के एवजाने में जागीरों आदि का भी व्यौरा इसमें मिलता है, जो अनेक दृष्टियों से उपयोगी है।

४. विभिन्न शासकों द्वारा बनवाये गये सामरिक महत्त्व के किलों, परकोटों, कोटड़ियों, जलाशयों आदि का भी विवरण यथा स्थान दिया गया है।

५. राज्यव्यवस्था के संचालन में ओसवाल, ब्राह्मण, कायस्थ, मुसलमान आदि क्षत्रियेतर जातियों का कैसा और कितना सहयोग समय-समय पर शासकों को मिलता था इसका भी अच्छा चित्रण मिलता है।

६. शासकों के अनेक विवाह हुआ करते थे। उनका वृत्तांत, उनसे संतति, तथा लड़कियों आदि की शादियों का विवरण भी नैणसी ने निष्पक्ष होकर किया है जिससे अनेक महत्त्वपूर्ण राजनैतिक तथा सामाजिक संकेत भी मिलते हैं।

७. स्थानीय राजनीति में अंतःपुर का भी कभी-कभी पर्याप्त हाथ रहता था। राजाओं के अनेक रानियें, पड़दायतें, पासवानें आदि हुआ करती थीं। अपनी संतान को राज्यगद्दी दिलवाने के लिये रानियों में प्रतिस्पर्द्धा रहती थी, जिसके फलस्वरूप कई बार परम्परा के अनुसार सबसे बड़े राजकुमार को राज्यगद्दी न देकर प्रिय रानी के पुत्र को गद्दी का अधिकारी बना दिया जाता था। इसके भयंकर दुष्परिणाम आंतरिक विग्रह का रूप धारण कर लेते थे। ये घटनाएँ यहां के इतिहास को बहुत दूर तक प्रभावित करती थीं। इन घटनाओं का विवरण भी नैणसी ने महत्त्वपूर्ण ढंग से दिया है।

८. यहां के शासकों तथा बड़े सामंतों के मुगल साम्राज्य के साथ राजनैतिक सम्बन्ध, संधि-विग्रह, शक्ति-संतुलन आदि ऐतिहासिक महत्व की सामग्री परगनों के इतिहास में यथास्थान प्रस्तुत की गई है।

९. जयपुर, बीकानेर, जैसलमेर, सिरोही आदि पड़ौसी राज्यों के साथ राजनैतिक सम्बन्धों में समय-समय पर परिवर्तन होते रहे हैं जिसके मुख्य कारण सीमा-विवाद, मुगल सल्तनत की नीति और राज्य-विस्तार आदि होते थे। कहीं-कहीं इन तथ्यों पर अच्छा प्रकाश पड़ा है। पड़ौसी राज्यों के इतिहास के लिये भी यह उपयोगी है।

१०. कुछएक महत्वपूर्ण युद्धों में भाग लेने वाले अथवा काम आने वाले

प्रसिद्ध व्यक्तियों तथा योद्धाओं की सूचियां भी लेखक ने देदी हैं जो अन्यत्र उपलब्ध नहीं होतीं। इस प्रकार की सूचियों में उज्जैन के युद्ध में भाग लेने वाले मारवाड़ के योद्धाओं की सूची विशेष रूप से उपयोगी है। मेड़ता के युद्ध में देवीदास जैतावत के साथ काम आने वाले योद्धाओं की सूची भी महत्व की है।

११. कहीं-कहीं प्राचीन स्मारकों व शिलालेखों का भी उल्लेख हुआ है। उनका विशिष्ट ऐतिहासिक महत्व है।

१२. यद्यपि मारवाड़ के गांवों की भौगोलिक व फसल तथा राजस्व सम्बन्धी स्थिति को स्पष्ट करना लेखक का मुख्य उद्देश्य प्रतीत होता है परन्तु यथा-प्रसंग, कहीं जागीरदार का नाम, कहीं गांव के बसाये जाने का संवत, कहीं गांव बसाने वाले व्यक्ति का नाम, कही महत्वपूर्ण व्यक्ति का निवास होने का उल्लेख आदि कितने ही सुस्पष्ट ऐतिहासिक महत्व के सकेत भी लेखक ने दिये हैं।

जहां तक चारणों और ब्राह्मणों आदि को दान में दिये हुए गांवों का प्रश्न है उनकी ऐतिहासिक स्थिति तो बहुत ही स्पष्ट है। क्योंकि प्रत्येक गांव के सम्बन्ध में यह बतलाया गया है कि किस राजा ने किसे वह गांव दिया और सर्वेक्षण के समय कौन सा वंशज मौजूद था।

गांवों के नामों का अध्ययन भी इतिहास की दृष्टि से बड़ा दिलचस्प और उपादेय है। यदि बारीकी से इनके नामों पर विचार किया जाय तो नामकरण के निम्नलिखित आधार प्रायः मिलते हैं। यथा—

(क) विशिष्ट भौगोलिक तथ्यों के आधार पर—
माळंगो[1] मंसाजी री भाखर[2] ढसु री भाखर[3] छीतरियौ (तालाब)[4] चपला बेरो[5] धवलेहरो[6] (तालाब)

(ख) बसने वाले प्रमुख व्यक्ति के नाम पर—
कांना गोधा री बास[7], सोढा बांमण री बास[8], वीरम रो बास[9], सुरजमल रौ बास[10], गोयंदपुरो[11]।

(ग) विशिष्ट व्यक्ति के अधिकार के आधार पर—
कांनावास[12] मानसिंघ री वासणी[13], रायमल री वासणी[14], भींद-ळियो।[15]

---

१. पृ० ३२६। २. ४७१। ३. ५०६। ४. ४४०। ५. ३६१। ६. ४४९। ७. ३०१। ८. ३०२। ९. २२८। १०. २३८। ११. ४१९। १२. २३८। १३. ४०४। १४. ४०६। १५. ४१९।

(घ) किसी देवता अथवा देवस्थान के आधार पर—

विनाइकयो[1], चवंडवा[2], आदि

(ङ) चमत्कारिक व्यक्ति के नाम पर—

सोझत[3], चरपटियो,[4], जैतारण[5]

(च) बस्ती विशेष के आधार पर—

गोगादेवां री वास[6], सतावतां री वास[7], कुंभारां री वास[8], सोलंकियां री कोहर[9], मो'तों री वासणो[10]।

इस प्रकार तत्कालीन मारवाड़ से सम्बन्धित विविध ऐतिहासिक सामग्री तथा प्राचीन इतिहास के बारे में अनेक प्रकार की जानकारी व पड़ौसी राज्यों तथा मुगल साम्राज्य के साथ राजनैतिक सम्बन्धों के कई महत्त्वपूर्ण सूत्र इस ग्रंथ में विद्यमान हैं।

राजस्व व प्रशासनिक व्यवस्था

राजस्थान के इतिहास से सम्बंधित जो भी साधन अद्यावधि उपलब्ध हुए हैं उनमें यहां के प्राचीन राज्यों की राज्य-व्यवस्था, आमदनी के साधनों आदि के सम्बन्ध में अति अल्प जानकारी मिलती है। प्रस्तुत ग्रंथ में अपेक्षाकृत ऐसी जानकारी विशेष रूप से उपलब्ध होती हैं। लेखक ने किसी एक ही स्थल पर इस विपय पर प्रकाश नही डाला है अपितु अनेक प्रसंगों में इस प्रकार के तथ्यों का उल्लेख किया है।

बादशाह अकबर ने अपनी प्रबंध-पटुता से प्रशासन व राजस्व सम्बन्धी नियम निश्चित किये थे और सभी सूबों में एक ही प्रकार का प्रशासन कायम किया था। उसी परिपाटी का निर्वाह आगे भी होता रहा। जोधपुर के महाराजा सूरसिंह के योग्य प्रधान भाटी गोयंददास ने सर्वप्रथम बादशाही नियमों के आधार पर मारवाड़ में भी प्रशासनिक व राजस्व सम्बन्धी नियम बना कर उन्हें लागू किया। वही प्रणाली अनेक पीढ़ियों तक यहां प्रचलित रही। इस ग्रंथ से महाराजा जसवंतसिहजी (प्रथम) के समय में प्रचलित राजस्व व प्रशासन सम्बन्वी परम्परागत नियमों तथा उनमें उस समय होने वाले परिवर्तनों का कुछ विशेष पता चलता है।

---

१. २०८। २. २३७। ३. ३८३। ४. ४४६। ५. ३८३। ६. ३०५। ७. ३०६। ८. ३०७। ९. ३१५। १०. ३९५।

राजस्व

राजस्व ही ग्रामदनी का मुख्य साधन था। इसकी वसूली दो प्रकार से होती थी—जागीरदारों से रेख के रूप मे तथा खालसा गांवों से जमीन की उपज के अनुसार सीधी लगान-वसूली।

१. जागीरदारों के गांवों से रेख के निश्चित रुपयों के अतिरिक्त जब्ती के समय विशेष कर वसूल किया जाता था। यह जब्ती जागीरदार की मृत्यु होने पर अथवा शासक की नाराजगी के कारण भी होती थी।[1] ऐसे अवसर पर राजकीय अधिकारी लगान वसूल करता था।

२. खालसा के गांवों से प्रत्येक परगने में खरीफ और रबी की फसल की पैदावार से अलग-अलग अनुपात में फसल का हिस्सा लिया जाता था। इसके अतिरिक्त अफीम, सब्जी, कपास, कड़बी, फलों आदि पर रोकड़ कर लिया जाता था[2]। कुछ लोगों से खेती की उपज का हिस्सा न लेकर रोकड़ रुपया मुकाते के रूप में वसूल होता था।

जानवरों की चराई पर भी कर वसूल किया जाता था। गायों, भैंसों आदि पर लगने वाला कर घासमारी कहलाता था तथा ऊंट बकरी पर लगने वाला कर पांनचराई के नाम से पुकारा जाता था। यह कर पशुओं की गणना के अनुसार रोकड़ में लिया लाता था[3]।

खलिहानों पर अनेक प्रकार के छोटे-बड़े कर लिये जाते थे जिनमें गूघरी, दवातपूजा, कागज-खर्च, कणवारिये की रकम, दांती, जुआरी, ताली, भरोती, निगरानी का खर्च आदि मुख्य थे। इन करों में घटा-बढी भी होती रहती थी। कभी-कभी कुछ कर माफ भी कर दिये जाते थे।[4] परगनों के अनुसार करों की संख्या व अनुपात में भिन्नता भी थी।[5]

जनता से धूमाला व षीचड़े का कर भी लिया जाता था। धूमाला का कर गांव की आवादी से प्रति घर हैसियत के अनुसार चौधरी लोग शामिल कर के राज्यकर्मचारी को देते थे। खीचड़े की रकम फौज आदि के खर्च के लिये ली जाती थी। यह रकम अधिक नही होती थी। पूरे मेड़ते परगने की खीचड़े की रकम ६००) या ७००) रुपये वसूल होती थी।[6]

---

१. द्रष्टव्य भाग २ पृ० ६१। २. पृ० ८६। ३. पृ० ८८। ४. पृ० ६२-६३।
५. इन पर भाग ३ के परिशिष्ट में विस्तार से प्रकाश डाला जाएगा। ६. पृ० ६८।

३. जमीन और खेती सम्बन्धी इन करों के अतिरिक्त व्यापारियों से भी कर लिया जाता था। इस प्रकार की कर-व्यवस्था का संकेत लेखक ने पोकरण परगने के वृत्तांत में दिया है।

पोकरण के व्यापारी राज्य के अंदर से ही कपास, अनाज, तिल, घी आदि वस्तुएँ व्यापार के लिये लाते थे तो एक मन पर १ सेर कर वसूल किया जाता था। बिसाती-वस्तुओं के ऊपर एक मन के पीछे सवा सेर कर के रूप में वसूल किया जाता था। परदेश के व्यापारी कपड़ा, रेशम, दांत, कस्तूरी, कपूर, मोती आदि लाते थे, उन पर रोकड़ कर दुगानी के सिक्कों में लिया जाता था। महाजनों से प्रति घर १७ दुगानी कर लिया जाता था। होली-दीवाली १२ दुगानी तथा राखड़ी (रक्षा-बन्धन) पर ५ दुगानी। घोड़ों आदि के व्यापारियों से भी कर लिया जाता था। मेलों से भी आमदनी होती थी। प्रत्येक परगने की पैदावार तथा आर्थिक व भौगोलिक स्थिति के आधार पर कर की इन दरों के अनुपात में भी भिन्नता थी।

४. मुगल काल में जो मनसब देने की प्रथा थी उसके अनुसार यहां के शासकों को भारत के विभिन्न सूबों की सूबेदारी मिलती रही है। इन्हें उस सूबे की एक निश्चित रकम प्रति वर्ष बादशाह के खजाने में जमा करवानी होती थी[1] बाकी आमदनी शासक स्वयं रखता था। कभी-कभी युद्ध आदि विशेष अवसरों पर बादशाह की ओर से फौज-खर्च के लिये भी रकम मिलती थी। युद्धों में अच्छा काम देने पर रोकड़ रकम के रूप में ईनाम, जड़ाऊ शस्त्र, हाथी तथा घोड़े आदि भी दिये जाते थे। अतः यह भी आमदनी का एक साधन था। ऐसे अवसरों पर अधिक ईनाम तथा विशेष राजकीय सम्मान पाने के लिये शासकों में प्रतिस्पर्द्धा भी चलती थी।[2] महाराजा जसवंतसिंहजी को अनेक अवसरों पर बादशाह शाहजहां और औरंगजेब ने सूबेदारी व राजकीय सम्मान दिया था, जिनका विस्तार से वर्णन जोधपुर परगने के ऐतिहासिक वृत्तांत में लेखक ने दिया है।

उस समय व्यवहार में आने वाले सिक्कों में रुपया, दांम, पीरोजी, दुगनी, फदिया, टका आदि का उल्लेख इस ग्रंथ में मिलता है। दांम व रुपये का प्रयोग शाही खजाने के साथ लेन-देन में भी होता था। ४० दांम का एक रुपया[3] उस

---

१. इस रकम में कभी-कभी वृद्धि भी कर दी जाती थी जिसे ईजाफा कहा जाता था।
२. ऐतिहासिक रुक्के परवाने (परम्परा भाग-२४ पृ० ६)। ३. रुपये का आविष्कार शेरखां के समय में हुआ। अकबर के समय में भी ४० दांम का एक रुपया माना जाता था। (आईने अकबरी पृ० ४१, अनु० हरिवंशराय)।

समय माना जाता था। दांम[1] तांबे का तथा रुपया चांदी का सिक्का होता था। व्यापार में भी प्रायः इन दोनों सिक्कों का प्रचलन अधिक था। स्वर्ण मुद्राओं में मोहर का भी उल्लेख हुआ है।

अपने राज्य में पुराने कर घटाने-बढ़ाने का अधिकार शासक को था। परन्तु मुगल सम्राट भी इसमें दखल दे सकता था क्योंकि किसी भी परगने को राज्य मे मिलाने व अलग करने का अधिकार इसे था। महाराजा जसवंतसिंह के समय में मेड़ता के जाटों ने करों को घटाने के लिये बादशाह की दरगाह मे फरियाद की थी और उनकी फरियाद बराबर सुनी गई। तथा बादशाह की ओर से आदेश दिया गया था कि राजा गजसिंह के समय में जो भी कर लिया जाता था वही लिया जाय उससे अधिक या कम नही किया जाय[2]। इस घटना से ऐसा प्रतीत होता है कि करों की व्यवस्था का मूल आधार स्थानीय परम्परा से सम्बंध रखता था और साधारणतया उनमें परिवर्तन करना उचित नहीं समझा जाता था।

अकाल पड़ने पर करों में विशेष रियायत दी जाती थी। जमीन का लगान नाम मात्र का लिया जाता था, जिसे पाताळ-भोग कहते थे।[3] गांवों की आमदनी के वृत्तांत से उस समय के प्रकृति-गत प्रभाव और वस्तुओं के भावों सम्बन्धी अनेक तथ्यो के बारे मे अनुमान लगाया जा सकता है। संवत १७१५ में प्रायः प्रत्येक गांव की आमदनी बहुत कम है जिससे अनुमान लगता है कि इस वर्ष अकाल था।[4] इसी प्रकार जिन वर्षों में अधिक आमदनी हुई है वे वर्ष विशेष अच्छी वर्षा व पैदावार होने के द्योतक हैं।

प्रशासन

ग्रंथ में राज्य-व्यवस्था तथा प्रशासन सम्बन्धी अनेक संकेत कई स्थलों पर मिलते हैं जो स्थानीय मान्यताओं, परिस्थितियों और परम्पराओं को समझने में सहायक हैं। साथ ही यहां की व्यवस्था पर मुगलो के प्रभाव, मुगल साम्राज्य के दखल और अंतर्बाह्य कारणों से पैदा होने वाली उलझनों तथा उनके निदान पर भी प्रकाश पड़ता है।

---

१. पहले इसे बहलोल व पैसा भी कहते थे। २. पृ० ९४-९५ (भाग-२) ३. पृ० १२७। ४. इस तथ्य की पुष्टि एक अन्य ग्रंथ से भी होती है, जिसमें लिखा है कि सं० १७१५ में जबरदस्त अकाल पड़ा तब १ रु० का २॥ सेर अनाज बिका। सं० १७२० में भी अकाल पड़ा तब जानवर बहुत मरे। (रा. शो. सं. संग्रह, ग्रंथांक ८१९० पत्र १४५)

शासक की नियुक्ति तथा उसके अधिकार—राव मालदे तक साधारणतया यह परम्परा मान्य थी कि शासक की मृत्यु के पश्चात उसका जेष्ठ पुत्र राजगद्दी का अधिकारी होता था। परन्तु इस परम्परा का बराबर निर्वाह दो कारणों से नहीं हो पाया—कई बार राजा अपनी प्रिय रानी के पुत्र को गद्दी का अधिकारी घोषित कर देता था जैसा राव चूंडा ने किया। जेष्ठ पुत्र में योग्यता की कमी होने पर भी गद्दी के लिये उसे अनुपयुक्त समझ कर सामंत गण उसके अन्य भाई को गद्दी का अधिकारी बना देते थे।[२] तभी से यह कहावत प्रसिद्ध हुई—

'रिड़मलां थापिया जिके राजा'

यह सब कुछ होते हुए भी तब तक राज्य-गद्दी के अधिकार के निश्चय के सम्बन्ध में किसी बाहरी शक्ति का वैधानिक हस्तक्षेप नहीं था। बादशाह अकबर की ओर से सर्वप्रथम मुगल साम्राज्य का हस्तक्षेप प्रारंभ हुआ और मारवाड़ का विधिवत शासक वही माना जाने लगा जिसे सम्राट की ओर से टीका दिया जाता था। साथ ही उसे मनसब भी दिया जाता था, जिसके बदले में उसे अपनी सेवाएँ साम्राज्य को देनी होती थीं। मोटा राजा उदयसिंह को सर्वप्रथम अकबर ने अपनी ओर से मारवाड़ का राज्याधिकार दिया था और तब से ऐसी प्रथा चल गई कि सम्राट शासक के पुत्रों मे से किसी को भी राज्य-गद्दी का अधिकारी बना सकता था। परन्तु यह सब उस समय की परिस्थितियों तथा शासक व सम्राट के आपसी सम्बन्धों पर ही बहुत कुछ निर्भर करता था। शाहजहां ने राजा गजसिंह की इच्छानुसार उसके छोटे लड़के जसवंतसिंह को गद्दी का अधिकारी बनाया था क्योकि गजसिंह की सेवाओं से वह बहुत प्रसन्न था और जेष्ठ पुत्र अमरसिंह को पहले से ही नागोर की जागीर प्रदान कर के अलग कर दिया था।

गद्दी पर बैठने के पश्चात नये शासक के नाम का 'अमल दस्तूर' उसके राज्य में होता था, जिससे उस शासक के नाम की विधिवत कार्यवाही राज्य में प्रारंभ होती थी।

शासक की दोहरी जिम्मेवारी होती थी। एक ओर उसे मुगल साम्राज्य की सेवाओं का पूरा खयाल रखना पड़ता था तथा दूसरी ओर अपने राज्य का प्रबंध करना पड़ता था। अकबर के शासन-काल से लेकर औरंगजेब के समय तक प्रायः यहां के शासक मुगल साम्राज्य की सेवाओं में ही अधिक व्यस्त रहे है और स्थानीय शासन का कार्य अपने प्रधान व दीवान आदि के माध्यम से चलाते रहे हैं।

---

१. पृष्ठ २६। २. मुहणोत नैणसी की ख्यात (ना. प्र. स. काशी) जि.-२ पृ. १४४।

शासक अपने राज्य के आंतरिक प्रशासन में स्वतंत्र था। राज्य-कर्मचारियों की नियुक्ति करना, अधिकार बांटना, पुरस्कृत करना, दंड देना आदि सभी कुछ उसी के अधिकार में था।

राज्य-व्यवस्था को चलाने के लिये अनेक अधिकारी नियुक्त किये जाते थे[1]। परन्तु इस ग्रंथ में ४-५ प्रमुख पदाधिकारियों का ही उल्लेख कुछ प्रसंगों में हुआ है। इन अधिकारियों के अधिकार और कर्त्तव्यों का भी कुछ अनुमान लेखक के वृत्तांतों से मिलता है।

प्रधान—यह राज्य का प्रधान मंत्री होता था। राज्य की सम्पूर्ण प्रशासनिक व्यवस्था उसके अधिकार में होती थी। प्रधान राजनीति और राज्य-व्यवस्था में निपुण होता था तथा साथ ही राजा का विश्वासपात्र तथा प्रभावशाली व्यक्ति होता था। प्रधानगी का पद राज्य मे सबसे बड़ा पद माना जाता था तथा इस पद की चाकरी की एवज में शासक की ओर से जागीर का बड़ा पट्टा दिया जाता था। राजा की अनुपस्थिति में सारा कार्य-भार उसी पर होता था। राजा के आदेश पर सन्धि-विग्रह, चढाई, मुगलदरबार में उपस्थित होना आदि सभी कार्य प्रधान करता था। राजा सूरसिंह के प्रधान भाटी गोयंददास द्वारा की गई इस प्रकार सेवाएँ इसका प्रमाण हैं।

जसवंतसिंह की गद्दीनशीनी के समय राजसिंह खींवावत मारवाड़ का प्रधान था। उसकी मृत्यु होने पर संवत १६९७ में राठौड़ महेशदास सुरजमलोत को यह पद मिला था।[2]

दीवान— यह राज्य का राजस्व सम्बन्धी सबसे बड़ा अधिकारी होता था। राजस्व की वसूली, उसका हिसाब-किताब अधीनस्थ कर्मचारियों की निगरानी आदि का कार्य उसके जिम्मे होता था। उसे पर्याप्त दीवानी और फौजदारी अधिकार भी होते थे। वह परगने के हाकिमों, कानूगोओं आदि से सीधा सम्पर्क रखता था। जमीन की किश्म, पैदावार, जागीर व खालसे के गांवों की पूरी जानकारी उसे होती थी। स्वयं नैणसी ने लम्बे अरसे तक मारवाड़ की दीवानगी का कार्य किया था।

अकबर की राज्य-व्यवस्था में दीवान का पद बड़े महत्व का माना जाता था। प्रत्येक सूबे में दीवान और सूबेदार के दो प्रमुख पद होते थे। ये एक

---

१. प्राचीन ग्रंथो में मारवाड़ के प्रशासन के सम्बन्ध में ९० ओहदों की सूची मिलती है, जिनमें से अधिकाश पद इसी समय से चले आते रहे हैं। २. पृष्ठ १२५।

दूसरे से स्वतंत्र पदाधिकारी होते थे।[१] पहला राजस्व वसूली आदि की व्यवस्था को देखता था, दूसरा प्रशासनिक अधिकारी होता था, जिसके अधिकार में फौज व पुलिस रहती थी। इसे सिपहसालार भी कहते थे।

वैसे दीवान शब्द बहुत प्राचीन है तथा प्राचीन राज्य-व्यवस्था की विशिष्ट प्रणाली में ऐतिहासिक महत्व रखता है क्योंकि सर्वप्रथम अरबों द्वारा इजिप्ट पर शासन करते समय इस पद की स्थापना की गई थी तथा राजस्व और प्रशासनिक कार्यों को सर्वथा अलग-अलग बांट दिया था।

ग्रंथ में वर्णित नैणसी द्वारा की गई सेवाओं के आधार पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि दीवान प्रशासन तथा युद्ध-कार्य में भी सिद्धहस्त होता था। वह जनता के साथ सीधा सम्पर्क भी स्थापित करता था तथा परिस्थिति के अनुसार शासक को निवेदन कर, कर की वसूली में रियायत भी करवा सकता था।

वकील—यह पद भी अपना विशिष्ट महत्व रखता था। यह मुगल दरबार में शासक के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करता था। आवश्यकता पड़ने पर वह मुगल दरबार में अपने शासक की अर्ज पेश करता था। वह वहां की राजनैतिक गतिविधियों पर पूरी नजर रखता था तथा महत्त्वपूर्ण मसलों के बारे में अपने शासक को पत्र भेज कर सूचित करता रहता था। वकील अत्यंत बुद्धिमान और राजा के भरोसे का व्यक्ति होता था। राज्य और साम्राज्य के आपसी सम्बन्धों का निर्वाह किसी हद तक उस पर निर्भर करता था।

शाही दफ्तर की फहरिश्तों में अपने राजा को मिलने वाले नवीन परगनों की स्थिति, रकम की जमा-बकाया आदि का लेखाजोखा भी वह देखकर सूचना भेजता था। वहां के अधिकारियों से उचित सम्बन्ध बनाये रखकर समय पर अपना काम करवाना तथा विशिष्ट परिस्थितियों में सभी प्रकार की राजनैतिक हलचलों से शासक को सूचित करना आदि उसके कार्य होते थे। राजा जसवंत सिंह के समय में मनोहरदास प्रसिद्ध वकील हुआ।[२] समय-समय पर उसके द्वारा दी गई सूचनाओं तथा सेवाओं से पता चलता है कि यह पद उस समय कितना महत्व रखता था। ख्यातों में कभी-कभी प्रधान के लिये भी वकील शब्द का प्रयोग मिलता है।

---

१. AIN-I- AKBARI.Vol. II page 38-53। २. पृष्ठ १५७।

बाद के कुछ रुक्के-परवानों के अध्ययन से तो स्पष्ट प्रतीत होता है कि केन्द्र की राजनीति से सतर्क रहने के लिये तो बहुत हद तक राजाओं को अपने वकीलों पर ही निर्भर करना पड़ता था। उनकी गफलत से शासक को बड़े से बड़ा नुक़सान हो सकता था।[1]

हाकिम—प्रत्येक परगने में एक हाकिम नियुक्त किया जाता था जो राजस्व-वसूली और राज्य-व्यवस्था आदि कार्य देखता था। वह कस्बे के दुर्ग में आवश्यक साज-सामान सहित रहता था। वह अपना दीवान लगाता था तथा मुकदमों की सुनवाई भी करता था।[2] मु० सुंदरदास तथा नैणसी पोकरण के हाकिम रह चुके थे। इसे थानेदार भी कहा जाता था क्योंकि परगने की सुरक्षा का प्रबंध भी उसके जिम्मे होता था। आवश्यकता पड़ने पर उसे आक्रान्ताओं से मुकाबला भी करना पड़ता था। शासकों को जब बाहर के किसी परगने की सूबेदारी मिलती थी तो उसके प्रमुख अधिकारी को भी हाकिम का पद दिया जाता था।

कानूगो—प्रत्येक परगने में कानूगो रहते थे। जमीन की पैमाइश, उसकी किश्म, लगान, आमदनी आदि का व्योरा इनके पास रहता था। राजस्व को व्यवस्था में यह महत्वपूर्ण पद होता था। कानूगो लोग प्राय: ओसवाल अथवा पंचोली जाति के होते थे। इनका यह पद पुश्तैनी होता था। जमीन के जिस भाग का व्योरा जिसे रखना होता था वह उसके जिम्मे वंश-परम्परा से रहता था। मेड़ते परगने के इस दृष्टि से ६ हिस्से (पट्टी) थे और उनका कार्य ६ कानूगोओं के घरानों में वंटा हुआ था।[3] अकबर के प्रशासन में भी यह पद पर्याप्त महत्त्व रखता था। इसका दर्जा तहसीलदार से नीचे रखा गया था। कानूगो के कार्य-सम्पादन मे पेशे की परम्परागत व विस्तृत जानकारी अपेक्षित थी इसलिये उसने भी इनका पद पुश्तैनी ही रखा था। महेसदास जसवंतसिंहजी के समय में प्रसिद्ध कानूगो हुआ।[4]

इन प्रमुख पदों के अतिरिक्त अन्य कई छोटे-बड़े पद होते थे जैसे हुजदार, सिकदार, पोतदार, चौकीनवीस आदि।

इस ग्रंथ में प्रशासन अधिकारियों और उनके कार्यों का जो भी उल्लेख हुआ है उसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि उस समय यद्यपि राजस्व सम्बन्धी व्यवस्था की ओर पर्याप्त ध्यान दिया जाता था परन्तु उस काल की

---

१. द्रष्टव्य—ऐतिहासिक रुक्के परवाने (परम्परा भा० २४) २. पृ० ३६० । ३. पृ० ८७ (भाग २) ४. पृ० १६४।

परिस्थितियों और प्राचीन परम्पराओं के अनुसार प्रशासन, राजस्व और फौज के विभाग पूर्णतया एक दूसरे से अलग नहीं थे। बहुत से उच्च अधिकारियों को प्राय: मिले-जुले रूप में उपरोक्त तीनों जिम्मेवारियों का निर्वाह करना पड़ता था।

उस समय की सामाजिक एवं राजनैतिक प्रणाली में पंच-व्यवस्था के भी एक-दो संदर्भ इस ग्रंथ मे आए हैं। बरसिंघ की मृत्यु के पश्चात पंचों ने मिलकर उसके पुत्र सीहा को मेड़ते का टीका दिया परन्तु सीहा अयोग्य निकला, तब उसकी मां ने पंचों को फिर से बुलाया और उनकी सलाह से दूदा को वापिस बुला कर मेड़ते का टीका दिया। जनता के प्रतिनिधि के रूप में चौधरी नियुक्त करने की भी प्रथा थी। दूदा के समय थिरराज डांगा जाट को देश-मुख चौधरी नियुक्त करने का उल्लेख मेड़ता के प्रसंग में है।

राज्य के बड़े पदों पर अधिकारियों को नियुक्त करते समय उनकी वंश-परम्परा और राजकीय सेवाओं को भी ध्यान मे रखा जाता था। परन्तु ये पद पुश्तैनी नहीं हुआ करते थे। ख्यातों मे ऐसे उल्लेख अवश्य मिलते हैं जिनके अनुसार कुछ पदों पर जाति विशेष के व्यक्तियों को नियुक्त करने की परम्परा थी। खीची, धांधल पड़िहार और गेहलोत शाखा के राजपूत प्राचीन काल से ही राजा की खवासी (पद विशेष) में रहने के अधिकारी माने जाते थे।

अपनी कुछ स्थानीय विशेषताओ के होते हुए भी धीरे धीरे सम्पूर्ण राज्य-व्यवस्था की प्रणाली मुगल साम्राज्य के प्रशासनिक ढांचे से पूरी तरह प्रभावित हो चुकी थी, जिसका अनुमान पदों के नामों और प्रशासनिक शब्दावली से ही लगाया जा सकता है। मुगल काल में भारत के सभी राज्य इस प्रणाली के ढांचे में ढल चुके थे अत: यह राज्य उसका अपवाद नहीं हो सकता था। इस धारणा को अधिक स्पष्ट करने के लिये सर जदुनाथ सरकार की निम्न पंक्तियाँ उल्लेखनीय हैं—

"This type of administration, with its arrangement procedure Machinery and even titles was borrowed by the Hindu States outside the territory directly subject to muslim rule. ....But the Mughal System was also the model followed by some independent Hindu States of the time. Even a staunch champion of Hindu orthodoxy like Shivaji at first copied it in Maharastra, and it was only later in life that he made a deliberate attempt to give a Hindu colour to his administrative machinery by substituting Sanskrit titles for Persian onces at his court.[1]"

---

1. MUGHAL ADMINISTRATION—Sir Jadunath Sarkar, Page 2-3 (IV Ed.)

मनसव सेना व युद्ध

मनसव—यहां के राजाओं को शाही मनसब मिलता था, यह पहले ही कहा जा चुका है। जिस शासक का जितना बड़ा मनसव होता था वह मुगल साम्राज्य का उतना ही बड़ा पदाधिकारी माना जाता था। मनसब का मुख्य सम्बन्ध सैनिक शक्ति से था[1] क्योंकि मनसबदार को अपने मनसब के अनुसार नियत संख्या में सेना रखनी पड़ती थी। प्रस्तुत ग्रन्थ में अनेक स्थलों पर यहाँ के शासकों के मनसव का विस्तार के साथ ब्यौरा दिया गया है जिसके आधार पर उन शासकों का साम्राज्य में दर्जा, सैनिक-शक्ति, शाही वेतन आदि अनेक महत्वपूर्ण तथ्यों पर प्रकाश पड़ता है।

मनसव और मनसबदार मुगलकालीन भारत की न केवल सैनिक व्यवस्था के अपितु राजनीति और प्रशासन के भी मुख्य आधार रहे हैं। इसीलिए इस काल के इतिहासकारों ने इन पर यथाप्रसंग अपने विचार प्रकट किये हैं। प्रसिद्ध इतिहासकार वी. स्मिथ का इस पद की परम्परा आदि के सम्बन्ध में मन्तव्य इस प्रकार है—

"The superior graded officers were called Manasabdars, holders of Manasabs, official Places of Rank and Profit.

The Arabic word Manasab which was imported from Turkistan and Persia Simply means Place (जगह).

The earliest mention of the grading of Manasabdars in India is the statement of Tod, that Biharimal was the first prince of Amer who paid homage to the mohamadan power. He received from Humayun the Manasab of 5000 as Raja of Amer. That must have happened about 1584. The next reference to a Manasab of definite grade known to me occurs in the 15 year of Akbar's reign (1570-71) when Baz Bahadur the Ex-King of Malwa came to court and was appointed a Manasabdar of 1000. ....The system was borrowed directly from Persia.[2]

सेना—इन मनसवदारों के पद के आगे हजारी शब्द लगता था, जैसे

---

१. वैसे मुगल साम्राज्य के सभी पदों पर कार्य करने वालों का वेतन व दर्जा मनसब के अनुसार ही बंधा हुआ था और नक्सी ही उनकी (फौजी व अन्य पदाधिकारी) तनख्वाह चुकाता था परन्तु इस संदर्भ में 'मनसब' का सम्बन्ध सैनिक सेवाओं से है। 2. Akbar the great mogul, Page 262-63.

२ हजारी, ३ हजारी आदि। छोटे मनसबदारों के आगे सदी शब्द लगता था—२ सदी, ३ सदी आदि। मनसब की वास्तविक स्थिति को स्पष्ट करने के लिये जात और सवार शब्द प्रयुक्त होते थे जिनके अर्थ के सम्बन्ध में इतिहासकारों में भ्रान्ति व मतभेद है[1]। डॉ० आशीर्वादीलाल ने जात और सवार शब्दों पर विचार करते हुए, उनके अनुसार दर्जों को स्पष्ट करने का प्रयास किया है[2] —

जात—जात मनसबदार को घोड़े, हाथी और लद्दू जानवर निश्चित संख्या में रखने पड़ते थे परन्तु घुड़सवार नहीं।

सवार—इस पद वाले को घुड़सवार नियत संख्या में रखने पड़ते थे।

श्रेणियाँ—

१. सवार पद जात के पद के समान होता था तो प्रथम श्रेणी।

२. सवार पद जात पद से कम पर जात से आधे से कम नहीं तो द्वितीय श्रेणी।

३. सवार पद से जात पद कम होता था तो तृतीय श्रेणी।

प्रस्तुत ग्रंथ मे इकसपह, दूसपह और सेसपह शब्द भी मनसब के साथ प्रयुक्त हुए है। ये शब्द मनसबदार की फौज की वास्तविक वैतनिक स्थिति को स्पष्ट करने के लिए प्रयुक्त होते रहे हैं परन्तु इनके सही अर्थ के सम्बन्ध में भी इतिहासकार एक मत नहीं है। वास्तव में इस प्रकार के मतभेद का मुख्य कारण यह प्रतीत होता है कि प्रत्येक बादशाह के समय में फौज की वास्तविक स्थिति में कुछ न कुछ रद्दोबदल होता रहता था। मनसब का दर्जा वही रहते हुए भी युद्ध के समय उपस्थित घुड़सवारों की संख्या आदि में भी परिवर्तन होते रहते थे[3]। विलियम इरविन ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'The Army of the Indian Moghuls' में इकसपह और दूसपह पर इस प्रकार अपना मन्तव्य व्यक्त किया है—

These mounted officers might be two-horse (*duaspah*) or only one horse (*Yakaspah*) men. Working on these Distinctions we get the following scheme of Pay—

Duaspah suwar : Where inclusive of the officers own

---

1. History of Shahjhan—B.P. Saksena, Page 285. २. मुगलकालीन भारत—डॉ० आशीर्वादीलाल सक्सेना, पृ० ५७०। ३. डॉ० रघुबीरसिंह—राजस्थान भारती, भा० ६ अ० १ पृ० ८ (टिप्पणी)।

retainers *(Khasha)* there were one huudred men present per hundred of rank, Pay was drawn at *duaspah* rates.

But if the number were under fifty per 100 of rank, pay was passed to the *hazari* as if he were a mounted *sadiwal*[1]; subject to restoration to *duaspah* pay when his muster again conformed to the standard.

Yakaspah : If including *Khasha* men there were fifty men present per hundred of rank full pay was given; if only thirtyone or under, the hazari was paid as a *Sadiwal Piyadah* (unmounted) and certain other deductions were made.[2]

उपरोक्त दोनों शब्दों के साथ बावरदी शब्द भी प्रयुक्त हुआ है,[3] जिसका अर्थ होता है 'सुयोग्य परन्तु दरिद्री सैनिक, जिन्हें घोड़ा रखने के लिये वेतन मिलता था, जागीर भी दी जाती थी परन्तु जिनके घोड़े दागे नहीं जाते थे'[4]।

सैनिकों के वेतन और सेना के निरीक्षण आदि से सम्बन्धित अनेक नियम बने हुए थे जिनका पालन मनसबदारों को करना पड़ता था। मनसबदारों को अपनी सेना में सैनिक भर्ती करने का पूरा अधिकार था। विशेषतया वे अपने कुटुंब के लोगों को प्राथमिकता दे सकते थे।

कुल मिलाकर मनसबदारों को खूब अच्छा वेतन मिलता था।[5] उनको अच्छी सेवाओं के उपलक्ष में पद-वृद्धि तथा पुरष्कार मिलते रहते थे। सेवाओं में असावधानी करने पर अथवा किसी राजनैतिक कारण से सम्राट के असंतुष्ट होने पर पद में कमी भी कर दी जाती थी। ऐसी स्थिति में उनके मनसब के आधार पर दिये गये परगनों में भी उसी समय कटौती कर दी जाती थी।

मनसब के अंतगर्त नियत सेना की संख्या के अतिरिक्त शासक को अपने राज्य की सुरक्षा के लिये भी पर्याप्त सेना रखनी पड़ती थी। शासकों को साम्राज्य की सेवा में आदेशानुसार सुदूर प्रांतों में ससैन्य जाना पड़ता था और कई वर्षों तक वहीं रहना पड़ता था। पीछे छोटे-बड़े सीमा-सम्बन्धी विवाद आंतरिक संघर्ष आदि होते ही रहते थे, जिन्हें प्रधान, हाकिम आदि सेना-सहित

---

१. जिसके मनसब के आगे 'सदी' लगता हो। 2 The Army of the Indian Moghuls—William. Irvine, Page 23-24. ३. पृ० १५३। ४. डॉ० रघुवीर-सिंह, राजस्थान भारती—भाग ६, अक १, पृ० १०। ५. डॉ० आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव, मुगलकालीन भारत पृ० ५७१।

जाकर दबाते थे। इस फौज में प्राय: यहां के जागीरदरों द्वारा चाकरी में दिये हुए सैनिक भी रहते थे। सभी परगनों में इस प्रकार की व्यवस्था रहती थी, जिसके अंतर्गत प्रत्येक जागीरदार की ओर से राज्य सेवा के लिये निश्चित संख्या में नियत किये गये घुड़सवार, सुतरसवार आदि रहते थे।[1]

युद्ध—मुगल साम्राज्य के लिये यहां के शासकों द्वारा बड़े-बड़े युद्ध लड़े गये, जिनका उल्लेख इस ग्रंथ में यथाप्रसंग किया गया है। परन्तु युद्धों का विस्तृत ब्यौरा कहीं पर भी नहीं दिया गया है। मारवाड़ राज्य के कुछ सीमावर्ती राज्यों और आंतरिक संघर्षों का कहीं-कहीं विस्तार से वर्णन अवश्य किया गया है जिससे उस समय की युद्ध-प्रणाली, सैनिक-संगठन और अधिकारियों की सूझ-बूझ का कुछ परिचय हमें मिलता है। राव मालदे की मेड़ता पर चढाइयां, उदयसिंह की फलोधी पर चढ़ाई, नैणसी की पोकरण पर चढाई, चंद्रसेन का अकबर की फौज से मुकाबला, सीवाना के किले की रक्षार्थ कल्ला का प्राणोत्सर्ग आदि कुछ उल्लेखनीय युद्ध हैं, जिन पर लेखक ने विस्तृत प्रकाश डाला है। युद्ध-कला की दृष्टि से इनका वर्गीकरण निम्न प्रकार किया जा सकता है—

१. खुले मैदान में दोनों पक्षों की सेनाओं का युद्ध—खेत बुहार लड़णो[2]।

२. पहाड़ों में छापामार प्रणाली द्वारा युद्ध—भाखर सभणो[3], झालणो।

३. किले में सुरक्षित रह कर मुकाबला करना—गढ़ सभणो, गढ़ झालणो[4]।

४. रात्री को हमला बोलना—राती बाहो[5]।

सेना जब युद्ध के लिये गंतव्य स्थान की ओर प्रयाण करती थी तो सम्बन्धित अधिकारी रास्ते में पड़ने वाले जागीरदारों को विशिष्ट व्यक्ति के साथ आगे संदेश भिजवाता था, जिससे वे ठीक समय पर अपने सैनिक लेकर फौज में शामिल हो जावें। मु० नैणसी ने जब पोकरण पर चढाई की थी तो उसने इसी प्रकार की व्यवस्था की थी[6]। उस समय लोगों का शकुन में बड़ा विश्वास था। ठीक शकुन न होने पर कई बार फौज आगे बढने से रोक दी जाती थी।[7] हमला करने के पहले परिस्थिति के अनुसार फौज को कई भागों (अणियां) में बांट दिया जाता था[8] और प्रत्येक भाग एक जिम्मेदार पदाधिकारी को सौंपा जाता था।

---

१. पृ० ३३२, ३३३, ३३४, (भाग २)। २. द्रष्टव्य पृ० ३। ३. ११७। ४. पृ० ११५, ६४ (भाग २) २१९ (दो०) २९४-२९५ (भाग २)। ५. पृ० ७५, ४४ (भाग २), २२० (भा० २)। ६. १३८। ७. १२०-१२१। ८. २९९ (भाग २)।

हमला करते समय नगारा बजाया जाता था[१] जिससे सभी लोग सावधान हो जावें तथा अपने सैनिक युद्ध के लिए सन्नद्ध हो जावें। युद्ध में प्राय: तीर, तलवार, भाला, कटारी, गुरज, बन्दूक, तोप आदि अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग होता था। युद्ध करने के पहले शत्रु की सैनिक-शक्ति व आंतरिक स्थिति का पता लगाने के लिये जासूस (हेरू) छोड़े जाते थे।[२] अनेक बार इन जासूसों की चतुराई से कई गोपनीय तथ्यों का पता लग जाने के कारण शत्रु को परास्त करने में सफलता प्राप्त होती थी।

जब विरोधी किसी सुदृढ़ दुर्ग में युद्ध की सामग्री का प्रबंध आदि करके मुकाबला करने को कटिबद्ध हो जाता था तो किले को तोड़ना बड़ा दुष्कर कार्य होता था। ऐसी स्थिति में सुरंग अथवा तोपों द्वारा किले के किसी कमजोर भाग को क्षतिग्रस्त करने का प्रयास किया जाता था। ऐसे अवसर पर शत्रु की मार से बचने के लिये मोरचों की पद्धति काम में ली जाती थी।[३] कई बार बड़े मजबूत किले किसी भेदिये द्वारा भेद दे देने पर सहजता से जीत लिये जाते थे।[४] दोनों पक्षों के लिये विकट स्थिति बन जाने पर उनके बीच चतुर व्यक्ति को भेजकर समझौता-वार्ता के भी प्रयास कई बार होते थे।[५] समझौते के अनुसार यदि किले वाला पक्ष किला खाली करके जाता था तो प्राय: वे विपक्षी से प्राणों की रक्षा का वचन मांगते थे जिसे 'धरम दुवार निकलना' कहते थे[६]। ऐसा संभव न होने पर वे केसरिया वस्त्र धारण कर किले के द्वार खोलते थे और लड़ते हुए वीर गति प्राप्त करते थे।[७] स्त्रियां जौहर कर अपने को अग्नि के समर्पण कर देती थीं[८] जिससे वे विधर्मियों के हाथों में न पड़ें। विजयी पक्ष सैदाने (वाद्य विशेष) बजा कर प्रसन्नता व्यक्त करता हुआ अपने विजय की घोषणा करता था[९] तथा अपने स्वामी के नाम की दुहाई चारों ओर फेर कर अपना अधिकार कायम करता था।

नैणसी द्वारा किये गए इन युद्ध-वर्णनों से पता चलता है कि युद्ध का तरीका वही परम्परागत था। परन्तु बंदूक और तोप आदि के आविष्कार के कारण उसमें कुछ परिवर्तन अवश्य हो गये थे। व्यक्तिगत पराक्रम, शस्त्र-संचालन की निपुणता, घुड़-सवारी और रसद की व्यवस्था का उस समय विशेष महत्व था।

---

१. पृ० १२०। २. पृ० ११५, पृ० ४ (भा० २), पृ० ४४ (भा० २)। ३. पृ० ३०३ (भा० २)। ४. पृ० २२० (भा० २)। ५. पृ० ११८, पृ० ७ (भा० २)। ६. पृ० ६४ (भा० २), पृ० २१६ (भा० २)। ७. पृ० ५४ (भा० २)। ८. पृ० २२० (भा० २)। ९. पृ० ५६ (भा० २)।

सुरक्षा की दृष्टि से किलों को बड़ा महत्व दिया जाता था क्योंकि उस समय सुदूर प्रान्तों की रक्षा के लिये कई स्थानों पर चौकियाँ कायम की जाती थीं। जिससे वे अपनी सामग्री व परिवार आदि को उनमें सुरक्षित रखकर युद्ध-कार्य कर सकें। तथा शत्रु से घिर जाने पर भी दूसरी सहायता पहुंचने तक उनका मुकाबला कर सकें। इसलिये जब तक दुर्ग को जीता नहीं जाता था तब तक उस क्षेत्र की विजय कोई विशेष मायने नहीं रखती थी।

किलों के इस महत्व के कारण ही प्राय: प्रत्येक शासक ने नये किले बनवाने के साथ-साथ पुराने किलों की मरम्मत करवाई और उनमें जलाशय आदि भी बनवाये। राव मालदे की देन इस दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है[1] क्योंकि उन्होंने न केवल जोधपुर के किले में सबसे अधिक कार्य करवाया अपितु सुदूरवर्ती किलों तक में कई परिवर्तन करवाये और कितने ही नवीन किलों व कोटड़ियों का निर्माण करवाया। यहां तक कि अजमेर के किले में भी पानी की नई व्यवस्था उन्होंने करवाई।

इस काल में राजपूतों की युद्ध-नीति में सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन राव चंद्रसेन ने किया। नैणसी के विवरण से पता चलता है कि उसने पहाड़ों में रह कर छापामार-प्रणाली अपनाई क्योंकि अकबर जैसे शक्तिशाली सम्राट की विशाल फौज का खुले मैदान में मुकाबला करना न तो संभव था और न उसमें कोई बुद्धिमानी ही थी। आंतरिक विग्रह और साधनों की कमी के कारण उसे अपने खोये हुए राज्य को प्राप्त करने में सफलता नहीं मिल सकी। परन्तु उसने अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की और बराबर उसका मुकाबला करता रहा इसका मुख्य श्रेय उसकी युद्ध-प्रणाली को ही है। इसी प्रणाली के द्वारा आगे जाकर राणा प्रताप, राठोड़ दुर्गादास और शिवाजी जैसे स्वतंत्रता-प्रेमियों ने अपने लक्ष्य की प्राप्ति की।

साहित्य, धर्म और संस्कृति

साहित्य—राजस्थान ने भारतीय इतिहास को न केवल शौर्य और वीरत्व की गाथाओं से अलंकृत किया है अपितु साहित्य, धर्म और संस्कृति के क्षेत्र में भी उसकी अनुपम देन है। राव सीहा से लेकर जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह तक का इतिहास हमें बताता है कि राजस्थान ने मृत्यु के साथ खिलवाड़ करके

---

१. पृ० ४५।

ही जीवन के वास्तविक मूल्यों की स्थापना की है और उसका जीवन्त चित्रण यहां के साहित्य की अद्वितीय विशेषता है।

इस साहित्य की ओर आज के विद्वान अवश्य आकृष्ट हुए हैं पर जब तक उस समय की सामाजिक परिस्थितियों और कवियों की वास्तविक जीवनी के तथ्यों को गहराई से नहीं समझा जायगा तब तक उनकी रचनाओं के साथ तादात्म्य स्थापित नही हो सकेगा और न उनका सही मूल्यांकन करने में ही कोई विद्वान सफल हो सकेगा। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिये नैणसी के इस ग्रंथ में विपुल प्रामाणिक सामग्री संग्रहीत है।

मध्यकालीन राजस्थान का साहित्य डिंगल व पिंगल दोनों भाषाओं में लिखा गहा हैं। डिंगल विशेष रूप से चारणों की भाषा रही और पिंगल को भाटों ने अपनाया। दोनों ही जातियों को यहां राज्याश्रय प्राप्त था। परन्तु चारणों के साथ राजपूतों के परम्परागत विशिष्ट सम्बन्ध होने से उन्हें विशेष प्रश्रय मिला।[1] चारण जाति का मारवाड़ में आगमन कोई १३वीं शताब्दी में गुजरात की ओर से हुआ था। यहां के शासकों ने खुले हृदय से उनको प्रश्रय देकर सम्पन्न बनाया। यही कारण था कि मारवाड़ शताब्दियों तक डिंगल काव्य का केन्द्र रहा जिससे राजस्थान के अन्य राज्यों की अपेक्षा यहां का साहित्य अधिक सम्पन्न बन सका।

इन कवियों को सम्मानित करने के लिये न केवल करोड-पसाव, लाख-पसाव, हाथी, घोड़े, रकम, कुरब व पद आदि ही दिये गये अपितु पीढ़ियों के जीवन-यापन के लिये ग्राम व भूमि तक प्रदान की गई।

नैणसी ने मारवाड़ के ऐतिहासिक वृत्तांत में तो अनेक कवियों का उल्लेख प्रसंगानुसार किया ही है परन्तु प्रत्येक परगने में चारणों को प्राप्त सांसण के गांवों की अलग से सूची देकर उनके सम्बन्ध में पूरी जानकारी दी है यथा— किस शासक अथवा सामंत ने किसे यह ग्राम दिया और इस समय उसके वंशजों में से कौन व्यक्ति विद्यमान है तथा गांव की पैदावार आदि क्या है। इस प्रकार की विश्वस्त और निश्चित सूचना के आधार पर न केवल अनेक ज्ञात-अज्ञात कवियों के समय की ही जानकारी मिलती है अपितु उनकी आर्थिक परिस्थितियां वंश-परम्परा और राजपूतों की कुछ शाखाओं तथा घरानों के साथ उनके सम्पर्क व आपसी सम्बन्धों का भी पता चलता है।

---

१. इसका एक मुख्य कारण चारण-कुलोत्पन्न देवियों में यहां के क्षत्रियों की गहन आस्था भी था।

क्षत्रियों के साथ चारणों का अटूट सम्बन्ध रहा है इसलिये न केवल शान्ति के समय अपितु विपत्ती के समय भी वे उनके साथ रहे हैं। इस प्रकार राजनीतिक युद्ध और सन्धि-विग्रह में भी अनेक बार इस जाति के व्यक्तियों ने हाथ बटाया है। अतः क्षत्रियों के अतिरिक्त अन्य किसी जाति का दिया हुआ सांसण ये स्वीकार नहीं करते थे। इसके एक दो अपवाद ही इस ग्रंथ में मिलते हैं[1] जिससे उस समय उनकी मनःस्थिति का पता चलता है।

चारणों को दिये गये ग्राम पुश्तैनी तौर पर उनके वंशजों के पास ही रहते थे और उनसे किसी प्रकार का लगान अथवा सैनिक सेवाएँ आदि नहीं ली जाती थीं। पूर्वजों द्वारा उदक में दी हुई भूमि मे किसी प्रकार का दखल न देना उस समय की एक विशिष्ट धर्म सम्मत मान्यता थी। और उसका निर्वाह भी प्रायः सभी शासकों ने किया परन्तु राजा उदयसिंह के समय में एक अपवादस्वरूप घटना अवश्य घटी, जिसके अनुसार कुछ विशेष कारणों से उसने चारणों और ब्राह्मणों के अनेक ग्राम जब्त कर लिये थे।

इस प्रकार उस समय की इस विशिष्ट जाति की सामाजिक, आर्थिक और परम्परागत मान्यताओं का अच्छा दिग्दर्शन इस ग्रंथ मे है। चांनण खिड़िया, वारहठ आसा, दुरसा आढा, अषा वारहठ, नरहरिदास बारहठ, किसना आढा जैसे विख्यात कवियों की जीवनी पर भी इस ग्रथ से नया प्रकश पड़ता है।

चारणों के अतिरिक्त ब्राह्मण और भाट कवियों को भी ग्राम, कुए तथा जमीन आदि प्रदान की गई है उनके सम्बंध मे भी प्रामाणिक जानकारी इस ग्रंथ द्वारा मिलती है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि राठौड़ों के राज्य की यहां स्थापना से लेकर महाराजा जसवतसिंह तक के अधिकांश कवियों के सम्बन्ध में इस ग्रथ में बड़ी उपयोगी सामग्री लेखक ने सकलित की है। महाराजा जसवतसिंह तो कवि और रीति-काव्य के आचार्य थे ही, नैणसी स्वयं भी कवि था, इसलिये उसने कवियों आदि के बारे में कही-कहीं विशेष रूप से जानकारी प्रस्तुत की है जो राजस्थानी साहित्य के क्रमबद्ध विकास के अध्ययन में असाधारण महत्व रखती है।

धर्म—भारतीय संस्कृति का मूलाधार धर्म रहा है। इसलिये धर्म का निर्वाह तथा उसकी रक्षा हमारे पूर्वजों का सर्वोच्च आदर्श था। राजस्थान

---

१. द्रष्टव्य, पृ० ५३। २. पृ० ७८-७९।

के शासकों और प्रजा ने धर्म की मर्यादा की रक्षार्थ बहुत बड़े त्याग और-तपस्या का जीवन मध्यकाल में व्यतीत किया है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि मंदिरों, पवित्र तीर्थ-स्थानों, मूर्तियों और स्मारकों की रक्षा के लिये यहां के वीरों ने बड़े से बड़े बलिदान किये हैं। गौ, ब्राह्मण और स्त्री के सम्मान के लिये उन्होंने प्राणों की बाजी लगा देने में भी कभी संकोच नहीं किया। इस ग्रथ में भी नैणसी ने यथाप्रसंग ऐसी कुछ घटनाओं का उल्लेख किया है। यह पक्ष धर्म-सम्बंधी पवित्र उपकरणों की रक्षा से सम्बन्ध रखता है। परन्तु धर्म के पोषण और उत्थान के लिये उस समय किये गये रचनात्मक कार्यों का भी कम महत्व नही है। परगनों के गांवों के वृत्तांतों से प्रकट होता है कि प्रत्येक परगने में से अनेक ग्राम, कुए, खेत आदि ब्राह्मणों को दान में दिये गये थे[1] जिनका उपभोग वे पीढ़ी-दर-पीढ़ी करते रहे हैं। इतना ही नहीं राठौड़ों के आगमन के पहले भी जो भूमि इस प्रकार दान करदी गई थी वह उनके वंशजों के पास से नहीं ली गई।[2] व्यक्ति विशेष के अतिरिक्त कितने ही मंदिरों और देवस्थानों के सेवा-खर्च के लिये भी गांव व भूमि प्रदान की गई। गायों के लिये जागीर की भूमि में से अनेक गांवों में गोचर-भूमि (चारागाह) छोड़ने का भी उल्लेख है[3]। सनातन धर्म के प्रति पूंर्ण श्रद्धा रखते हुए भी शासकों की धार्मिक उदारता के कुछ उदाहरण इस ग्रंथ में मिलते हैं। महाराजा जसवंतसिह (प्रथम) ने अजमेर के ख्वाजा के पीरजादे को भी मेड़ता परगने का ग्राम खांतोलाह प्रदान किया था[4], यह इसका एक प्रमाण है।

यहाँ की जनता के धार्मिक संस्कारों के निर्माण में लोक-देवताओं का भी बड़ा महत्व रहा है। लेखक ने इस प्रकार के देवताओं का उल्लेख अनेक स्थलों पर किया है। १४-१५वीं शताब्दी में अवतरित होने वाले मारवाड़ के प्रसिद्ध पांचों पीरों[5] —पावू, हड़वू(भू), रांमदे, गोगादे तथा मेहा (मांगळिया) के

१. राजस्थानी भाषा में ऐसी जमीन को डोळी की भूमि कहा गया है। २. पड़िहारो तथा चौहानो द्वारा दान में दिये गये अनेक गाँवों का उल्लेख इस ग्रंथ में है जिन्हें बाद में भी बहाल रखा गया था। दान प्राप्त-कर्ता का कोई वंशज न रहने पर या उस गांव की एवज में दूसरा ग्राम दे देने पर अथवा किसी गंभीर राजनैतिक कारण से ही इस प्रकार के गावों में कुछ रद्दोबदल हुआ है। ३. छोटे जागीरदारों तथा भोमियो के लिये ग्राम आदि दान में देना संभव नहीं था। अतः उन्होने कुआ, खेत या गोचर भूमि ही दान की है। ४. पृ० ११४ (भा. ४)

५. पावू हरभू रांमदे, गोगादे जेहा।
पांचू पीर पधारजो, मांगळिया मेहा॥

सम्बन्ध में पर्याप्त जानकारी इस ग्रंथ से मिलती है। इन पीरों के पवित्र स्थानों की सेवार्थ दिये गये गांवों का विवरण विभिन्न परगनों की विगत में यथा-स्थान किया गया है।

राजस्थान में शक्ति-पूजा की प्रधानता रही है। राजपूत जाति की प्रत्येक शाखा की कुलदेवियों[1] की महत्ता ने लौकिक जीवन को बहुत दूर तक प्रभावित किया है[2]। इन में से कुछ देवियों के मुख्य स्थान मारवाड़ के अनेक गांवों में आज भी विद्यमान हैं। इनकी स्थापना और सेवार्थ दी गई भूमि आदि का प्रामाणिक उल्लेख इस ग्रथ में मिलता है। सार्वजनिक हित के लिये कुए, तालाब, बावड़ियें आदि खुदवाना तथा मन्दिर आदि बनवाना भी बहुत बड़ा धार्मिक कार्य माना जाता था। प्रत्येक शासक, उसकी रानियां तथा राज-घरानों से सम्बन्धित व्यक्तियों व अधिकारियों द्वारा करवाये गए इस प्रकार के निर्माण-कार्यों की सूचना भी इस ग्रंथ में यथाप्रसंग दी गई है जिससे उनकी धार्मिक प्रवृत्ति और सम्प्रदाय विशेष में आस्था आदि का पता चलता है। उस समय में तीर्थ-यात्राओं का भी कितना बड़ा धार्मिक महत्त्व था और ऐसे अवसरों पर कितना दान-पुण्य किया जाता था आदि बातें भी इस ग्रंथ में वर्णित कुछ शासकों की जीवनी से ज्ञात होती हैं।

ऐतिहासिक परिवेश में प्रस्तुत इस प्रकार के निश्चित सकेत वहां के जन-जीवन में व्याप्त धार्मिक विश्वासों के मूलाधार और तत्सम्बन्धी अनेक धारणाओं का गहन अध्ययन करने मे बहुत बड़ी सहायता पहुंचाते हैं।

संस्कृति —

राजस्थान सन्त, सती और सूरमाओं का देश रहा है। जो समाज संतों द्वारा निर्देशित, सतियों द्वारा पोषित और सूरमाओं द्वारा रक्षित होता है उसकी संस्कृति निश्चय ही बेजोड़ होती है। लेखक ने अनेक सन्तों, सतियों और सूर-माओं की वास्तविक जानकारी यहाँ की धरती के संदर्भ में दी है। साथ ही यहाँ के जन-जीवन की भौतिक परिस्थितियों का भी यथातथ्य विवरण दिया है।

प्रत्येक परगने के प्रमुख कस्बे के वृत्तान्त के साथ वहाँ की आबादी की संख्या जातियों के अनुसार दी है जिससे उस समय वहां बसने वाली विभिन्न जाति के

---

१. द्रष्टव्य—चारण पत्रिका, भा० १, अंक ३-४।

२. आवड़ तूठी भाटियां, कामेही गौड़ांह।
श्री बरवड़ सीसोदियां, करनल राठोड़ांह॥

लोगों को स्थिति तथा उनके पेशों के प्रचलन का अनुमान लगाया जा सकता है।

प्रत्येक युग में आर्थिक एवम् राजनैतिक कारणों से जातियों की सामाजिक स्थित में परिवर्तन होते रहे हैं। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण इस ग्रंथ मे हमें मिलता है। राठौड़ों (कन्नौजिया) के आगमन के पहले यहां जिन क्षत्रिय जातियों का अधिकार था वे धीरे-धीरे उनसे परास्त होकर राजपूत समाज की साधारण श्रेणी में आ गये। राव जोधाजी ने जब मारवाड़ पर अच्छी तरह शासन कायम कर लिया और यहाँ की धरती अपने भाइयों व लड़कों आदि में बाँट कर उन्हें अलग-अलग भागों में बसा दिया तब से मारवाड़ के राज्य में उन्हीं के परिवार का राजनैतिक प्रभुत्व कायम करने के लिए दरबार में दो मिसलें कायम की गईं जिसके अनुसार बांई मिसल में उनके लड़कों और उनकी संतान को बैठने का अधिकार था और दांई मिसल में उनके भाइयों तथा उनकी संतान को बैठने का अधिकार निश्चित किया गया। यही परम्परा जोधपुर राज्य के विलीनीकरण तक बराबर चलती रही। सींधल, सांखला, कोटेचा, आसायच, ईंदा, चौहान, गोहिल, कोठेचा आदि जातियों का राजनैतिक प्रभुत्व समाप्त हो गया था[1]। अतः उनके पास जागीर भी साधारण ही रह गई थी। आगे जाकर तो विभिन्न गांवों में उनके पास भोमीचारे के खेत आदि ही रह गये और कई लोग साधारण खेतीहर राजपूत रह गये जिससे वे मुकाता आदि चुका कर या पसायता के तौर पर जागीरदार को विशिष्ट अवसरों पर चाकरी देकर कुछ जमीन अपने लिये बोते थे। गांवों के वृत्तांत में नैणसी ने इस प्रकार के पर्याप्त संकेत दिये हैं जिनसे इस बात की पुष्टि होती है।

राजपूतों की इन जातियों में से कुछ कबीलों की स्थिति और भी निम्नतर होती गई और उन्होंने जिस पेशे को अपनाया उसी के अनुसार कालान्तर में उनकी जाति निश्चित हो गई और उनके वैवाहिक सम्बन्ध राजपूतों से नहीं रहे तथा रीति-रिवाज में भी अन्तर आता गया[2]। अतः जातियों के उत्थान और पराभव के मुख्य कारणों के अध्ययन की दृष्टि से इस ग्रंथ की अपनी उपयोगिता है।

परगनों के ऐतिहासिक वृत्तांत में मुख्यतया राजपूत-समाज की तत्कालीन मान्यताओं पर प्रसंगानुसार कुछ प्रकाश मिलता है। स्वामिभक्ति, कष्ट-सहिष्णुता,

---

१. द्रष्टव्य, पृ० २३। २. द्रष्टव्य, पृ० ४१।

बैर लेने की उत्कट भावना, उदारता, वीरता, दानशीलता, स्त्री की मर्यादा, महत्त्वाकाँक्षा, धरती-प्रेम, जातीय-गौरव, यश की आकाँक्षा, स्वेच्छाचारिता, वीरगति का मोह, धर्म में आस्था, कर्त्तव्य-परायणता, वचनबद्धता आदि अनेक परम्परागत आदर्शों के उदाहरण इनमें मिलते हैं।

इनके अतिरिक्त रहन-सहन, खान-पान, शादी, बहुविवाह, पासवान-प्रथा, वेश-भूषा, राजपूत जातियों से सम्बन्ध, सती-प्रथा, कुरब-कायदे आदि विभिन्न रीति-रिवाजों और सामाजिक संस्कारों की जानकारी के लिये यह ग्रंथ उपयोगी है।

इन मान्यताओं और सस्कारों का प्रभाव यहाँ के जनजीवन पर भी बहुत पड़ा है, विशेष तौर से उन जातियों पर जिनका सीधा सम्बन्ध राजपूत जाति से रहा है और उनके सभी महत्त्वपूर्ण कार्यों में उन्होंने हाथ वंटाया है।

उस समय में प्रचलित सतीप्रथा के जो विपुल उदाहरण इस ग्रंथ में मिलते हैं वे नारी जाति की मनोदशा और संस्कारों को समझाने में बड़ी सहायता करते हैं। प्रत्येक शासक और अनेक योद्धाओं के पीछे अनेक सतियाँ हुई हैं। प्रायः शासकों की मृत्यु पर तो उसकी अनेक रानियाँ, उपपत्नियाँ, गायिकाएँ, सेविकाएँ, पत्नियों की सहेलियाँ आदि के सती होने का उल्लेख मिलता है। दूरस्थ स्थानों में पति के वीरगति प्राप्त करने की सूचना मिलने पर बिना अर्थी के भी श्मशान-भूमि में जाकर सती होने के अनेक उदाहरण इसमे मिलते हैं। वास्तव में कष्ट सहन करने तथा रणभूमि मे प्राणों को न्योछावर करने में वीरों को इन वीरांगनाओं ने बहुत बड़ी प्रेरणा दी है[1]।

मध्यकालीन राजस्थान की सस्कृति पर मुगल संस्कृति का काफी प्रभाव पड़ा है। मारवाड़ के शासकों के हाथ से जोधपुर कई बार मुगलों ने छीना और उनका राज्याधिकार यहां रहा। मारवाड़ के परगनों के इतिहास से हमे ज्ञात होता है कि प्रायः सभी परगने किसी न किसी समय में मुगलों के अधिकार में अवश्य रहे जहां मुगल साम्राज्य का सूबेदार अथवा अन्य कोई अधिकारी रहता था। ऐसे समय में वहां अनेक मस्जिदें बनी, मुसलमान लोग स्थायी तौर से यहां बसने लगे और यहाँ की जातियो के सम्पर्क मे आए तथा अनेक क्षत्रिय व क्षत्रियेतर जातियों के लोगों ने किसी न किसी कारण से मुसलमान धर्म भी अंगीकार किया। जनगणना के आंकिक विवरण देखने से यह बात भली भांति स्पष्ट हो जाती है।

---

१. राव मालदे की फौज ने जब सीवाने का किला घेर लिया और राणा डूंगरसी घबरा गया तब उसके सामन्त मदा मेरावत की स्त्री ने अपने पति से कहा कि तूं किला प्राणोत्सर्ग करके फिर दे। मदा ने यही किया और पत्नी सती हुई। पृ० २१६ (भा० २)।

मुगल संस्कृति का सबसे अधिक प्रभाव यहाँ के शासक वर्ग पर पड़ा। राजनैतिक कारणों से उनका निरन्तर सम्पर्क मुगल सम्राटों तथा उनके उच्च अधिकारियों से रहता था। अकबर ने अपनी व्यवहारकुशलता से राजस्थान के अनेक राजघरानों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध कायम किए और यह परिपाटी अनेक पीढ़ियों तक चलती रही। इन सब कारणों से शासकों के राजसी ठाट-बाट, वेश-भूषा, खान-पान पर सब से पहले प्रभाव पड़ा और फिर बहुविवाह, राज्य-प्राप्ति व राज्य-विस्तार के लिए प्रियजनों से छलाघात, ऐश्वर्यप्रियता, धन-लोलुपता, क्रूरता आदि दुर्गुण भी उनके चरित्र को अधिक प्रभावित करने लगे।

मुगल सम्राटों की भाषा फारसी थी। औरंगजेब के राज्य-काल तक भी फारसी साम्राज्य के काम-काज की प्रमुख भाषा रही इसलिए यहाँ के शासकों तथा राज्याधिकारियों को भी यह भाषा अपनानी पड़ी। यहाँ के राज्य-कार्य में भी फारसी को महत्व मिला जिससे यहां की मूल भाषा मारवाड़ी अथवा राजस्थानी पर भी इस भाषा का पर्याप्त प्रभाव पड़ा। उस समय की राजकीय पत्रावली, बहियों, ख्यातों, बातों, कविता तथा प्रशासनिक ब्यौरों में यह प्रभाव देखा जा सकता है। इस ग्रंथ में आए हुए राज्यव्यवस्था तथा राजस्व सम्बन्धी विवरणों में फारसी की शब्दावली का आधिक्य भी इस बात का एक प्रमाण है[1]।

यहाँ की कलाओं पर भी उक्त संस्कृति का प्रभाव पड़ा है जो उस समय के शासकों द्वारा निर्मित भवनों व अन्य कलाकृतियों को देखने से स्पष्ट हो जाता है। इस ग्रंथ में भी स्थापत्य कला सम्बन्धी कुछ उद्धरण इस दृष्टि से विचारणीय हैं।

यह सब कुछ होते हुए भी भारत के इस भू-भाग की जन-संस्कृति पर मुगल सस्कृति का प्रभाव उत्तरी भारत के अन्य प्रान्तों की अपेक्षा बहुत कम पड़ा है। इस ग्रंथ में वर्णित यहां के प्राचीन रीति-रिवाज, उत्सव, पर्व, धार्मिक संस्कार, भक्तों-संतों तथा चारण कवियों की वाणी का प्रभाव और संस्कृति के लिए चुकाए जाने वाले मूल्य इस तथ्य की भली भाँति पुष्टि करते हैं। साम्राज्य-वाद और धर्मान्धता के झंझावात की विकट परिस्थिति में भी धरती, धर्म और संस्कृति की रक्षा उस समय के लोगों ने की है। अतः वह हमारी संस्कृति के इतिहास का कम गौरवपूर्ण काल नहीं है।

---

१. फारसी और उर्दू शब्दावली-प्रधान भाषा का यहाँ के राजकीय कार्यों में अंग्रेजों के शासनकाल में भी अधिक प्रयोग था। सर्वप्रथम सर प्रताप ने मारवाड़ी को उसके स्थान पर प्रधानता दी।

भाषा और शैली

नैणसी ने यह ग्रंथ विशुद्ध मारवाड़ी में लिखा है जिसे पश्चिमी राजस्थानी कहा जा सकता है। आधुनिक भारतीय भाषाओं की गद्य-परम्परा में प्राचीनता की दृष्टि से राजस्थानी का विशिष्ट महत्व है। भाषा की सम्पन्नता उसके प्रयोग के विभिन्न रूपों में देखी जा सकती है। प्राचीन गद्य की अनेक साहित्यिक व ऐतिहासिक विधाएँ राजस्थानी में उपलब्ध होती हैं। टीका, (इसके अनेक भेद हैं) अनुवाद, वचनिका, दवावेत, बात, ख्यात, पीढ़ी, वंशावली, विगत, हकीकत, खत, पट्टा, परवाना, रुक्का, लेख, याददास्त आदि रचनाएँ आज भी प्राचीन ग्रंथागारों में उपलब्ध हैं। राजस्थानी भाषा का वैज्ञानिक अनुशीलन इन रचनाओं के अध्ययन के बिना सम्भव नही है।

नैणसी की ख्यात तथा प्रस्तुत विगत १८वीं शताब्दी के प्रथम चरण में लिखी गई हैं। अतः मध्यकालीन राजस्थानी गद्य का अध्ययन इनके आधार पर किया जा सकता है।

नैणसी के उक्त दोनों ग्रंथ इस बात के प्रमाण हैं कि वह अपने समय में राजस्थानी गद्य के सर्वोत्कृष्ट लेखकों मे था। यद्यपि साहित्य-रचना करना उसका उद्देश्य नहीं था परन्तु उसने बड़ी सधी हुई टकसाली राजस्थानी भाषा का प्रयोग अपनी लिखावट में किया है। भाषा में कितने ही परम्पराबद्ध प्रयोग होते हुए भी वह बोधगम्य है तथा व्यावहारिक होते हुए भी उसमे स्खलन व लचरपन दृष्टिगोचर नहीं होता। भाषा की स्वाभाविकता भी उसका बहुत बड़ा गुण है। उसने तत्सम, तद्भव तथा अरबी फारसी के शब्दों का स्वाभाविक रूप में प्रयोग किया है। किसी भी स्थल पर ऐसा नही प्रतीत होता कि किसी शब्द को उसने सप्रयत्न रखा हो। ग्रंथ विवरणात्मक ही अधिक है और उसमें भी आंकिक विवरण की प्रधानता है। राजस्व और प्रशासन सम्बन्धी शब्दावली की भी इसमें अधिकता है जिस पर फारसी भाषा का पर्याप्त प्रभाव है। परन्तु फारसी के शब्दों का राजस्थानी में आकर किस प्रकार रूप-परिवर्तन हो गया इसके सुन्दर उदाहरण इस ग्रंथ में मिलते हैं। इस प्रकार के शब्दों की बहुलता नैणसी की ख्यात में भी है परन्तु मारवाड़ के भूगोल, खेती-बाड़ी, जमीन की नाप-जोख, कर-व्यवस्था, फसले तथा प्रकृति सम्बन्धी शब्दावली का ऐसा समृद्ध प्रयोग शायद ही किसी ग्रंथ में मिले। इनमें भी जो आंचलिक शब्दावली का प्रयोग लेखक ने किया है वह विशिष्ट महत्व रखता है क्योंकि उस समय के अन्य ग्रंथों मे ऐसे प्रयोगों का मिलना कठिन है।

उपयुक्त स्थानों पर कहावतों और मुहावरों का प्रयोग करने में भी लेखक बड़ा निपुण है जिससे उसकी वर्णनात्मक शैली में भी सर्वत्र निखार आ गया है। युद्ध-वर्णन और संवादात्मक शैली के स्थलों में विशेष सजीवता है जिसमें लेखक का विस्तृत लौकिक ज्ञान और उस समय का सामाजिक वातावरण झांकता है।

गांवों के वृत्तांत में वाक्यों की संक्षिप्तता और नपी-तुली शब्दावली का प्रयोग शब्दों की मितव्ययता को प्रकट करता है। इस ग्रथ की विशिष्ट पारिभाषिक शब्दावली न केवल भाषा विज्ञान[1] के विद्वानों के लिए अपितु समाजशास्त्रियों के अध्ययन के लिए भी पर्याप्त सामग्री प्रस्तुत करती है।

ग्रंथ-लेखक के साधन

नैणसी ने इस ग्रथ को तैयार करने में अनेक ज्ञात-अज्ञात साधनों का उपयोग किया है। इन साधनों को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है—

पौराणिक—परगनों के इतिहास में मुख्य कस्बे की प्राचीनता को प्रतिपादित करने के लिये पौराणिक कथाओं का उपयोग किया गया है जो जनश्रुतियों में घुलमिल कर अपना मूल रूप खो चुकी हैं।

ऐतिहासिक—नैणसी इतिहास का विद्वान था, अतः वह ऐतिहासिक साधनों का मूल्य भली भाँति जानता था। साथ ही तथ्यों की प्रामाणिकता की परीक्षा करने का भी उसे अच्छा अभ्यास था। उसने इस ग्रंथ मे वर्णित प्राचीन इतिहास की जानकारी जिन वस्तुओं से प्राप्त की उनमें से कुछ का उल्लेख किया है। इनमें शिलालेख, पुराने राजकीय लेखागार, ख्यातें (जूनी बहियें) तथा कानूनगोओं के पास सुरक्षित प्राचीन विवरण आदि मुख्य हैं। इनके अतिरिक्त ताम्र-पत्र, पट्टे, परगनों के हाकिमों के लेखागार, भाटों व बड़वों की वंशावलियाँ तथा प्राचीन साहित्यिक ग्रंथ तथा स्फुट काव्य-कृतियों से भी पर्याप्त सहायता उसने ली होगी।

किंवदंतियों का भी कहीं-कहीं सहारा लिया गया है। एक ही घटना के बारे में अन्य मत व्यक्त करते समय प्रायः उसने लिखा है—'एक बात यूं सुणी छै।'

समसामयिक—महाराजा जसवंतसिंहजी के समय का ऐतिहासिक वृत्तान्त लेखक ने विस्तार से दिया है। इस काल मे वह स्वयं अनेक घटनाओं का प्रत्यक्षदर्शी

---

१. इस ग्रंथ का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करना यहां अभीष्ट नही है अतः कुछ मूल विशेषताओं के सकेत मात्र दे दिए गए है।

था तथा कई युद्धों तथा महत्त्वपूर्ण कार्यों में उसने स्वयं भाग लिया था अतः उस समय की बहुत-सी घटनाएं अपनी निजी जानकारी के आधार पर ही लिखी हैं।

जहाँ तक गाँवों के आंकिका विवरण आदि का प्रश्न है उसने यह जानकारी प्रत्येक परगने के हाकिमों के मारफत, कानूनगोओं, तफेदारों, जागीरदारों, मुनीमों आदि के द्वारा शामिल करवाई होगी और उसकी प्रामाणिकता के लिये दीवान के कार्यालय के रेकार्ड से भी मिलान किया होगा। नैणसी ने मारवाड़ की दीवानगी काफी लम्बे समय तक की और उसके पहले वह कई परगनों की हाकिमी कर चुका था। अतः उसे मारवाड़ के हर भाग में भ्रमण के पर्याप्त अवसर मिले हैं। जिससे अनेक कस्बों और गांवों सम्बंधी तथ्यों का प्रत्यक्ष सत्यापन करने की भी सहूलियत उसे थी। इस प्रकार उसने संकलित सामग्री को और अधिक प्रामाणिक रूप दिया होगा।

नैणसी का पिता जयमल महाराजा गजसिंह के समय राज्य के प्रमुख अधिकारियों में था। उसने कई परगनों की हाकिमी की थी तथा बाद में दीवान के पद तक पहुच गया था[1]। अतः बहुत सम्भव है नैणसी ने अपने पिता के साथ रह कर भी बचपन व किशोर अवस्था में मारवाड़ संबंधी अनेक प्रकार की जानकारी प्राप्त की होगी। अनेक गाँवों और कस्बों से वह उसी समय परिचित हो गया होगा तथा उस समय के लोगों से सुनी हुई बातों ने भी आगे जाकर उसे सहायता पहुंचाई होगी।

नैणसी का भाई सुन्दरसी भी अपने समय का महत्त्वपूर्ण व्यक्ति रहा है। वह भी इतिहास-प्रेमी[2] और कवि था। अनेक परगनों मे उच्च पदों पर उसने काम किया था और कई युद्धों में भाग लिया था अतः उसकी जानकारी से भी नैणसी ने लाभ उठाया ही होगा।

ग्रंथ का महत्त्व

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि यह ग्रंथ मारवाड़ के इतिहास, भूगोल, खेती, जनगणना, गांवों की स्थिति, सेना, युद्ध, राज्य-व्यवस्था, प्रशासन, राजस्व-नीति, व्यापार, साहित्य, भाषा, धर्म, संस्कृति, मुगलों का प्रभाव आदि अनेक महत्त्वपूर्ण विषयों की प्रामाणिक जानकारी देने वाला है।

---

१. ओझा—मुहणोत नैणसी की ख्यात—(भूमिका—वंश-परिचय) पृ० २।
२. द्रष्टव्य—ऐतिहासिक बातां (परम्परा) सं० नारायणसिंह भाटी।

अद्यावधि नैणसी का यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विशाल ग्रंथ अज्ञात था। मैंने इस ग्रंथ का उल्लेख सर्वप्रथम डॉ० टैसीटरी की ग्रंथ-सर्वेक्षण रिपोर्ट[1] में देखा था। वैसे इस ग्रंथ का उल्लेख मुंशी देवीप्रसाद, गौरीशंकर हीराचंद ओझा, कालिका-रंजन कानूगो[2] आदि विख्यात विद्वानों ने भी किया है। पर उन विद्वानों में से किसी ने भी इसका विस्तृत परिचय नहीं दिया। राजस्थान के इतिहासकारों में से किसी भी इतिहासकार ने अपनी पुस्तक में इतने महत्त्वपूर्ण ग्रंथ का संदर्भ के तौर पर भी उपयोग नहीं किया। केवल ओसवाल जाति के इतिहास में नैणसी का परिचय देते समय इसके अल्प अंश का उदाहरण मात्र दिया है।

अतः मेरा यह अनुमान है कि यह पूरा ग्रंथ इनमें से किसी भी इतिहासकार को प्रयत्न करने पर भी उपयोग के लिये उपलब्ध नहीं हुआ। ओझाजी ने नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित नैणसी की ख्यात की भूमिका में इस ग्रंथ का उल्लेख करते हुए इसे भी महत्त्वपूर्ण कृति बतलाया है परन्तु यह ग्रंथ उन्होंने किस संग्रह में देखा इसका उल्लेख नहीं किया। उनके निजी संग्रह में इस ग्रंथ के होने की संभावना नहीं है क्योंकि उनके संग्रह में यह ग्रंथ होता तो जोधपुर के इतिहास में इसका उपयोग वे अवश्य करते।

नैणसी की ख्यात की भी प्रतिलिपियां बहुत कम उपलब्ध होती हैं। परन्तु इस ग्रंथ की प्रतियाँ तो कुछ वर्षों पहले अलभ्य-सी ही थी।

ऐसा प्रतीत होता है कि इस ग्रंथ की न केवल एकेडेमिक उपयोगिता थी वरन् जागीरदारों के गाँवों सम्बन्धी आपसी झगड़ों, सीमा-विवादों तथा दान में दी हुई भूमि के विवादों को निबटाने में तथा करों की वसूली में यह ग्रंथ राज्य में प्रामाणिक माना जाता होगा। इसलिये जिस किसी घराने के पास इसकी प्रति होती थी उसका बड़ा महत्त्व होता था और उसके लिये यह आमदनी का जरिया भी रही हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। अतः इसकी इनीगिनी प्रतियों के मालिक किसी अन्य व्यक्ति को इसकी प्रतिलिपि नहीं करने देते होंगे क्योंकि अधिक प्रतिलिपियां हो जाने पर उनका एकाधिकार समाप्त होने का भय था।

मुंशी देवीप्रसादजी ने नैणसी को राजपूताने का अबुल फज्ल कहा करते थे[3]। ओझाजी भी मुंशीजी के कथन से सहमति प्रकट करते है[4]। अबुल फज्ल अपने

---

1. A Descriptive Catalogue of Bardic and Historical Mss. Part I, (Jodhpur) Page 48.
2. Studies in Rajput History, Page 88.
३. ओझा—मुहणोत नैणसी की ख्यात, (वंश-परिचय) पृ० ७। ४. वही।

समय का सबसे बड़ा इतिहासकार माना जाता है। उसने अकबरनामा जैसे विशाल ग्रंथ मे तैमूर-वंश का पूरा इतिहास तथा यहाँ मुगल राज्य की स्थापना के बाद शासकों की उपलब्धियो का विस्तृत वृत्तान्त है। आइने अकबरी इसी ग्रथ का तृतीय भाग है, जिसमें अकबर के राज्यकाल के विषय में धर्म, राजनीति, प्रशासन, राज्य के महकमे, साम्राज्य के सूबों का प्रबन्ध, उनकी आमदनी, कर-व्यवस्था, सैनिक-व्यवस्था आदि कितनी ही सूचनाएँ विस्तार के साथ दी गई हैं। अबुल फज्ल को अकबर जैसे महान् सम्राट का प्रश्रय प्राप्त था और उसके पास यह ग्रथ लिखने के लिये इच्छानुकूल साधन थे। लेखक फारसी का अच्छा विद्वान था तथा इतिहास लेखन-कला में बड़ा निपुण था। परन्तु जब हम नैणसी और अबुल फज्ल की तुलना करते हैं तो दोनों में बहुत अन्तर प्रतीत होता है। अबुल फज्ल के ग्रंथ का विषय-विस्तार नैणसी से कही अधिक है। फिर दोनों की परिस्थितियों में बड़ा अन्तर है। अबुल फज्ल ने अपने ग्रंथ की रचना सम्राट् के आश्रय में रह कर सम्राट् के लिये की थी परन्तु नैणसी ने अपने ग्रन्थों का निर्माण स्वान्तः सुखाय किया था। इसलिये दोनों के दृष्टिकोण में बड़ी भिन्नता है। अबुल फज्ल के पास कई ग्रंथों का अध्ययन करने तथा उन पर मनन करके यथोचित ढंग से उपयोग करने के लिये पर्याप्त समय था परन्तु नैणसी को राज्य की प्रशासनिक सेवाओं में सदा व्यस्त रहना पड़ता था। अतः दोनों लेखकों के कृतित्व में मूल-भूत अन्तर होना स्वाभाविक है। इसीलिये उनकी रचनाओ की तुलना करना वसे न्यायसंगत नहीं हैं। परन्तु नैणसी का प्रयास आंचलिक महत्त्व का होते हुए भी अपनी कुछ विशेषताएँ रखता है जिनका अबुल फज्ल में अभाव है। अतः उन पर संक्षेप में यहाँ विचार किया जा रहा है—

१. अबुल फज्ल ने ग्रंथ की जो विस्तृत योजना बनाई थी और जिस देश के बारे में वह जानकारी प्रस्तुत कर रहा था उसकी मुख्य भाषा संस्कृत से वह अनभिज्ञ था इसलिए अनेक बातों को गहराई में वह नहीं जा सका[1]। परन्तु नैणसी अपने इतिहास के क्षेत्र की भाषा और संस्कृति से पूर्णतया परिचित था इसलिए उसने अनेक तथ्यों की गहराई को छुआ है।

२. अनेक इतिहासकार अबुल फज्ल पर यह दोषारोपण करते हैं कि उसने जिन ग्रथों में से सामग्री ली है उनका उल्लेख नही किया[2]।

---

1. Col. JARRETT, AIN-I-AKBARI, Vol. III (Revised), Page VIII. २. वही।

कहीं-कहीं पर तो उसने दूसरे लेखकों के विचारों को ऐसा आत्मसात करके अपनी शैली में गुंफित कर दिया है कि बड़े से बड़े विद्वान के लिए यह पता लगाना कठिन हो जाता है कि लेखक किस ग्रंथ के आधार पर यह बात कह रहा है। परन्तु नैणसी ने प्रायः अनेक स्थलों पर सहज भाव से साधनों की सूचना दे दी है जिससे उसके वृत्तान्तों के मूल्यांकन में सहायता मिलती है। साथ ही लेखक की ईमानदारी भी प्रकट होती है।

३. कुल मिला कर कर्नल जेरेट ने अबुल फज्ल द्वारा दिए गए अकबर-कालीन भारत के विभिन्न सूबों की आमदनी, फसलों और जमीन की पैमाइश आदि को पूरे ग्रथ का अत्यंत महत्वपूर्ण भाग माना है[1]। परन्तु नैणसी द्वारा प्रस्तुत ग्रंथ मे दी गई जानकारी की तुलना जब अबुल फज्ल के उक्त सर्वेक्षण से करते हैं तो पता चलता है कि अबुल फज्ल का सर्वेक्षण वैज्ञानिक होते हुए भी बड़ा सक्षिप्त व केवल आंकिक है। नैणसी ने मारवाड़ के प्रत्येक गांव तक का विवरण प्रस्तुत किया है और उसमें भी वैज्ञानिक प्रणाली को यथासंभव निभाया है। इतना ही नहीं नैणसी ने सम्पूर्ण ग्रंथ को जिस ऐतिहासिक सामग्री से सम्प्रक्त किया है और जन-जीवन से सम्बन्धित तथ्य इस ग्रंथ मे प्रकट किए हैं अबुल फज्ल में प्रायः उनका अभाव है।

४. अबुल फज्ल राज्याश्रय में रह कर अपने विचारों को पूर्ण स्वतंत्रता के साथ व्यक्त नहीं कर सकता था। वह अपने इतिहास-लेखन और सर्वेक्षण में सर्वत्र अल्लाह और सम्राट की दुहाई देना नहीं भूलता तथा अवसर मिलते ही हर नई बात के लिए दार्शनिक आदर्शवादिता की भूमिका बांधने से नहीं चूकता। इस प्रकार की बातें चाहे जितनी सारगर्भित और सदुपयोगी हों इतिहास के वैज्ञानिक अध्ययन-क्रम में बाधा पहुचाती हैं। नैणसी की स्थिति इससे ठीक विपरीत है। उसने अपने इतिहास मे राजस्थान के लगभग समस्त राजवंशों का इतिहास बिना किसी पूर्वाग्रह अथवा पक्ष-पात के लिखा है। यहां तक कि प्रस्तुत ग्रन्थ के ऐतिहासिक वृत्तांत में अपने स्वामी के राजवश का यथातथ्य विवरण देने का ही प्रयत्न किया है। परगनों की विगत में भी जिस सहज अपनत्व के साथ संक्षिप्त किन्तु सार-गर्भित शैली उसने अपनाई है उसका उदाहरण अन्यत्र मिलना कठिन है।

---

१. वही—Page IX.

यद्यपि अबुल फज्ल का बहुत बड़ा महत्त्व उसकी विद्वत्ता और प्रेषणीयता के कारण है तथापि नैणसी की उपर्युक्त विशेषताओं के कारण ही श्री कालिकारंजन कानूगो के इस कथन से हमें सहमत होना पड़ता है—'Libraries and Royal Patronage may produce an Abul Fazal but not a Nainsi'.[1]

हस्त प्रतियां व सम्पादन

इस ग्रंथ का सपादन दो प्रतियों के आधार पर किया गया है। दोनों ही प्रतियां राजस्थानी शोध सस्थान चौपासनी के संग्रह विभाग (ख्यात प्रकोष्ठ) में सुरक्षित हैं। प्रतियों का परिचय निम्न प्रकार है—

क. संज्ञक प्रति (आदर्श प्रति)

पत्र संख्या[2]—३६२
लिपि काल—१८ वीं शताब्दी (विक्रम) का मध्य
लिपि—सुवाच्य मारवाड़ी (एक ही व्यक्ति की लिखी हुई)
आकार—१२"×९¼"
पंक्ति संख्या—२० से २३ तक
अक्षर संख्या— १८ से २२ तक

ख. सज्ञक प्रति[3]

पत्र सख्या—४५९
लिपि काल—२० वीं शताब्दी (विक्रम) का पूर्वार्द्ध
लिपि—मारवाड़ी (एक ही व्यक्ति की लिखी हुई)
आकार—१३½"×१०"
पक्ति सख्या—२० से २८ तक
अक्षर सख्या—२० से ३० तक

---

१. Studies in Rajput History, Page 94.

२. इसके सभी पत्र खुले हुए तथा अलग-अलग है। कुछ पत्र खण्डित भी है।

३. यह प्रति वही है जिसका उल्लेख डा० टैसेटरी ने 'A descriptive catalogue of Bardic and Historical manuscripts' part I (Jodhpur) में किया है। मूल ग्रंथ के प्रारंभ से पहले १२ पृष्ठों में हिंदू उमरावों के मनसब आदि की विगत तथा नागौर का सक्षिप्त वृत्तात है। पत्र ४५३ से ४५९ तक जोधपुर सम्बधी कुछ स्फुट विगत है। इनमें से आवश्यक अश भाग २ के परिशिष्ट में प्रकाशित किये जायेंगे।

इन दोनों प्रतियों में से 'क' प्रति को आदर्श प्रति मान कर 'ख' प्रति का उपयोग पाठान्तर लेने में किया है। दोनों प्रतियों में कही-कहीं बिलकुल समानता है, यहाँ तक कि 'क' प्रति में कई स्थलों पर रिक्त स्थान छोड़ दिए गए हैं वह वृत्तांत 'ख' प्रति में नहीं मिलता। परन्तु दोनों में पर्याप्त भिन्नता भी है जिससे महत्वपूर्ण पाठ-भेद भी पाया जाता है। 'ख' प्रति में अनेक गांवों तथा व्यक्तियों के सम्बन्ध में अतिरिक्त जानकारी मिलती है। आंकिक तालिकाओं में भी कहीं-कहीं अंतर है तथा कुछ गांवों तथा व्यक्तियों की सूचियों के क्रम में भी भिन्नता है।

जहाँ तक पाठान्तर ग्रहण करने का प्रश्न है पाठान्तर के लिए ही पाठान्तर निकालने की प्रणाली मैंने नहीं अपनाई है परन्तु यथासम्भव आवश्यक पाठान्तर लेने का प्रयत्न अवश्य किया गया है। अर्द्ध विराम, विराम, अनुच्छेद आदि आवश्यकतानुसार लगा दिए हैं जो मूल में प्राय: नहीं थे।

लिपिकर्ता ने व और ब के भेद के सम्बन्ध में किसी निश्चित नीति का अनुसरण नहीं किया है, यथा—विनायक : बिनायक, वड़लो : बड़लो, वरसाळी बरसाळी आदि। प्राचीन राजस्थानी में दोनों ही रूप प्रचलित हैं अत: ऐसे शब्दों के दोनों ही रूपों को अपनाया है। इसी प्रकार एक ही गांव तथा व्यक्ति के नामों में भी कहीं-कही अन्तर पाया जाता है उन्हें इतने बड़े ग्रंथ में सर्वत्र एकरूपता प्रदान करना व्यावहारिक दृष्टि से सम्भव नही था।

राजस्थानी के प्राचीन ग्रथों में लिपिकार प्राय: ल और ळ में लिखते समय भेद नहीं करते यद्यपि दोनों के उच्चारण में अन्तर है। इसी प्रकार अनुस्वार तथा ह्रस्व-दीर्घ के प्रयोग में भी सतर्कता नहीं बरतते। यदि लिपिकार की इन त्रुटियों को ज्यों का त्यों अपना लिया जाय तो पाठक को कठिनाई तो बढ़ती ही है कई शब्दों के तो अर्थ ही बदल जाते हैं। अत: सम्पादक को ऐसी कुछ शुद्धियां करने का अधिकार लेना पड़ा है।

यह ग्रन्थ साहित्य की सामान्य विधाओं से भिन्न कोटि का है तथा इस प्रकार के अन्य ग्रंथ भी उपलब्ध नहीं होते। अतः इसके सम्पादन में अनेक प्रकार की नई समस्याएँ भी सामने आई हैं जिनका समाधान खोजने का यथाशक्य प्रयास किया गया है।

आदर्श प्रति के कुछ पत्र त्रुटित थे, उनके स्थान पर केवल 'ख' प्रति के पाठ का उपयोग करना पड़ा है, ऐसे स्थलों को कोष्ठकों द्वारा चिन्हित [ ] कर दिया गया है।

परिशिष्ट में जोधपुर तथा कुछ अन्य स्थानों पर बनी हुई प्राचीन इमारतों, मंदिरों तथा जलाशयों-सम्बन्धी उपलब्ध जानकारी इस भाग के साथ समाहित करदी गई है, जो इस परगने के अध्ययन में सहायक सिद्ध होगी[1]।

सम्पादन में यथोचित सतर्कता बरतने पर भी ग्रंथ के विषय-वैशिष्ट्य तथा वृहदाकार को देखते हुए सम्पादन-प्रकाशन सम्बन्धी कुछ त्रुटियों का रह जाना असभव नही है, अतः मैं विज्ञ पाठकों से इसके लिये क्षमाप्रार्थी हूँ।

मुझे इस ग्रंथ का सम्पादन करने का आदेश मुनि जिनविजयजी महाराज ने कोई तीन वर्ष पहले दिया था। उन दिनों 'मुहणोत नैणसी री ख्यात' का प्रकाशन-कार्य समापन पर था[2] अतः मुनिजी की यह इच्छा थी कि उसी लेखक की यह दूसरी कृति भी शीघ्र ही प्रकाशित हो कर इतिहास-प्रेमियों के सम्मुख आ जाय। प्रतिष्ठान के तत्कालीन उपसंचालक श्री गोपालनारायणजी बहुरा ने भी इस कार्य को शीघ्र प्रारम्भ कर देने के लिये मुझे प्रोत्साहित किया परन्तु कार्याधिक्य के कारण इस काम के लिये मैं कुछ महीनों तक निजी समय नहीं निकाल पाया। जब मैंने इस कार्य को हाथ मे लिया तो सब से पहले प्राचीन प्रति के अस्तव्यस्त पत्रों को व्यवस्थित करने में मुझे बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा। यद्यपि इस कार्य में दूसरी प्रति बड़ी सहायक सिद्ध हुई, फिर भी यह कार्य समय-साध्य था। इस कार्य में मेरे मित्र श्री सौभाग्यसिंह शेखावत यदि अपना कुछ समय निकाल कर मेरी सहायता नही करते तो इसी उधेड़-बुन में कुछ समय और निकल जाता।

प्रकाशन-कार्य प्रारम्भ होने के पश्चात भी अनेक अंतर्बाह्य कारणों से प्रथम भाग के प्रकाशन में कुछ विलंब हो गया है। दूसरा भाग शीघ्र ही पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत हो सके इसके लिये प्रतिष्ठान प्रयत्नशील है।

इस ग्रंथ के प्रकाशन में प्रतिष्ठान के वर्तमान निदेशक श्रद्धेय डॉ० फतहसिंहजी ने पूर्ण रुचि लेकर मुझे प्रोत्साहित किया तथा प्रकाशन विभाग के अधिकारीगण सहृदयतापूर्वक अपना सहयोग देते रहे हैं, जिसके लिये मैं इन सभी महानुभावों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ।

---

१. परिशिष्ट की यह सामग्री शोध-संस्थान में संकलित 'रीत किरियावर की बही' तथा 'विविध संग्रह' नामक ग्रथों से ली गई है। २. सम्पादनकर्ता श्री बदरीप्रसाद साकरिया।

साधना प्रेस के व्यवस्थापक श्री हरिप्रसादजी पारीक का भी मैं आभारी हूँ जिन्होंने बड़ी तत्परतापूर्वक इस ग्रंथ के प्रूफ-संशोधन में अपना मूल्यवान सहयोग दिया है।

चौपासनी, जोधपुर,
स्थापना, २३-६-६८

नारायणसिंह भाटी

मुहता नैणसी री लिखी

मारवाड़ रा परगनां री विगत

श्री गणेसाय न्मांः ॥ श्री म्हामाई जी सदा सहाय श्री परमेसर ॥

(१) वात परगनै जोधपुर री

१. आदि सहर[1] मंडोवर थौ। सासत्र माहे नै पदमपुरांण माहे वात छै। भोगसील[2] परवत मेर रो बेटौ कहै छै। तिण रौ भोगसील माहातम घणौ कह्यौ छै। माडलेस्युर[3] माहादेव, नागाद्रीह[4] नदी, सुरेजकुंड रो घणो महातम वषाणीयो छै।

२. मंडोवर सहर री आदि थापना मंदोदर दईत[5] री कीवी छै। इण ठोड़ मंदोदर री बेटी रावण दईत लंका रै धणी परणी छै। तिण रा आरष चंवरी रा अजेस[6] छै। तठा पछै मंडोवर केईक दिन पंवारां रै रह्यो छै। धरणीवाराहा वडौ राजा बाहड़मेर हुवौ छै। तिण आप रौ भाई सांवत नुं भाईवांटै दीयौ छै। सांवत मंडोवर भोगव्रीयौ[7] छै। तिण री साष[8] रौ कवत :—

मंडोवर सांवत हुवौ, अजमेर सिंध सु।
गढ़ पुंगळ गजमल हुवौ, लुद्रवै भांण भु॥
जोगराज[1] धर धाट हुवौ, हासु पारकर।
अल्ह पाल्ह अरबद, भोजराज जालंधर॥
नव कौटि किराडू सु जुगत, थिर पंवारा हर थापिया।
धरणीवाराह धर भाईयां, कोट वांट जु जु[9] किया॥

---

१. जुगराज

---

1. शहर। 2. भोगिशैल। 3. मंडलेश्वर। 4. नागह्रदी। 5. दैत्य। 6. अभी तक। 7. भोगा, राज्य किया। 8. साक्षी, ऐतिहासिक घटना पर लिखे गये स्फुट काव्य को डिंगल में साख री कविता के नाम से अभिहित किया गया है। 9. अलग-अलग।

३. तठा पछै किण ही समै पंवारां सु मंडोवर छूटौ। पड़ीहारां नै मंडोवर हुवो । तिण माहे नाहड़राव नागारजन रौ बेटौ, वडो रजपूत हुवो। मंडोवर घणौ कमठौ[1] सारो नाहड़राव रौ संवरायो[2] थौ। नाहड़राव री मंडोवर वडी वार वार[3] कही।[१]

नाहड़राव पड़िहार री पीढीयां ....यारै[२] भाट लिषाई।

१. राजा दसरथ	२. राजा रथ[३]
३. जीर्णं बंध	४. विजैपाळ
५. अजगंध[४]	६. अजैपाळ
७. वडोवेण	८. नागाअरजन
९. नाहड़राव	१०. महणसी[५] राजा प्रीथीराज चहुवाण रै सांवत हुवो।

४. नाहड़राव मंडोवर धणी[4] छै। घणी धरती नाहड़राव रै छै। चहुवाण प्रीथीराज सोमेसर रौ बेटौ, दिल्ली धणी छै। नाहड़राव रै बेटी कंचनमाळा एक छै, सु प्रीथीराज सुं सगाई की छै। पछै नाहड़राव रै कांई मन मैं आई छै – हूं बेटी प्रीथीराज नुं नहीं देऊं। जिको आदमी सगाई करण गयौ हुतो तिण घणौ ही पालीयौ[5], कहौ — लाय इसड़ी न छै जिका दीवी ले जोईजै।[6] पिण नाहड़राव कहै—प्रीथीराज मांहे दस षोड़[7] छै। इण नुं बेटी नहीं देऊं। तरै अदावद[8] हुई। प्रीथीराज कुंवरपदै थको अजमेर सुं चढ ऊपर आयौ। प्रीथीराज रा डेरा गीररी हुआ, नाहड़राव रा डेरा पाटवै सोभत रै डूलवाळे हुआ।\ तिण दिन एक वडी वेढ़[9] हुई। चांगवाळा मेर नाहड़राव रै परवत चाकर थौ उण वडी वेढ कीवी। आदमी ५०० सुं मेर परवत कांम आयौ।[10] दूजै दिन

---

१. वाहर वुही। २. नीलीयां रै। ३. भारथ। ४. अजघष। ५. मोहण सी।

---

1. भवन-निर्माण कार्य। 2. संवारा हुआ। 3. प्रसिद्धि। 4. मालिक, पति। 5. मना किया। 6. यह कोई साधारण व्यक्तित्व वाला आदमी नहीं है। 7. दोष, कमियां। 8. दुश्मनी। 9. युद्ध। 10. वीरगति को प्राप्त हुआ।

प्रीथीराज चहुवाण नै नाहड़राव मैदान बुहार लड़ीया ।[1] घाव ११ चहुवाण प्रीथीराज रै लागा नै नाहड़राव रौ घणौ साथ मराणौ । वेढ प्रीथीराज जीती । नाहड़राव भागो । तरै वळे नाहड़राव पुज न सकै ।[2] तरै वीच आदमी फेर भेळा कीया, बेटी दी । घावे लागे ही जे[3] प्रीथीराज उण डेरै परणीयौ । नाहड़राव आय पगे लागो[4], चाकर हुवौ । नै बेटा दोय नाहड़राव रा चाकर कर साथे लीया ।[1] प्रीथीराज फिर अजमेर डोळौ ले गयौ ।[5] नाहड़राव रा बेटा २ प्रीथीराज रा सांवत हुआ—१ पड़ीहार मोहणसी राजा झालीयो तद कांम आयौ । २ पड़ीहार अल्ह कनोज री वेढ में कांम आयौ, माथो वाढ[6] प्रीथीराज नुं गुदराय[7] लड़ीयौ ।

५. नाहड़राव रौ भाई पीपो पिण सांवत हुवौ छै । एक वार पीपो पड़िहार पातसाहि साहिबदी झालीयो[8] छै । तठा पछै एक वार ...[२] भीमदे पाटण रौ धणी कटक कर[9] आयौ छै । दाहीमौ कै .....[३] प्रीथीराज भीमदे ऊपर विदा कीयौ । सु सोझत रौ गांव धोवलेहरे वेढ हुई । तिण वेढ नाहड़राव कांम आयो । चहुवाण प्रीथीराज मंडोवर महणसी अल्ह नुं दीयौ छै । सु प्रीथीराज नुं संवत ११५५ ग्यारैसै पचावनै साहबदी झालीयौ तठा ताउ[10] अल्ह नुं रहौ छै । तठा पछै दिली चहुवाण प्रीथीराज रौ बेटो रतनसी नुं हुई । प्रीथीराज मुवां पछै[11] वरस १८ अठारै रतनसी दिली भोगवी । तठा पछै पातसाह साहिबदी रौ बेटो पातसाह साहब गजनी तषत बैठौ । तिकौ कर फौज नै दिली ऊपर आयौ । इण फेर रतनसी कोट[12] झालीयौ ।[13] सांवत चहुवाण कांन्हर[४] नरनाह रौ बेटो चहुवांण ईसरदास वडो रजपूत छै ।

---

१. मेलीया । २. भोळो राजा । ३. कैंवास नु फौज वे । ४. कन्हा ।

---

1. खुल कर घमासान युद्ध किया । 2. पहुँच नही सका । 3. घायल अवस्था में ही । 4. समर्पण किया, अभिवादन किया । 5. वधू को साथ ले गया । 6. काट कर । 7. कह कर, दिखा कर । 8. पकड़ लिया । 9. फौज ले कर । 10. तक । 11. मरने के बाद । 12. किला । 13. पकड़ा, शरण ली ।

वडी वडी गढ वीग्रही श्रै लड़ाई की। पछै गढ कितरेक दिन डोढ[1] रतनसी ईसरदास घणा साथ सु काम श्राया। पछै सुलतान साहब कनवज ऊपर चालीया। राजा जैचंद गंगा मांहे प्रवेस कीयौ। तठा थी तुरकां सारी धरती लीवी। तद पड़ीहारां था संवत ११७३ इग्यारैसौ तींहतरै रै टांणै[1] साहब री फोज पड़ीहारां कन्हा[2] मंडोवर लीयौ। तुरकांणो हुवौ।

वात एक नाहड़राव री

६. पड़ीहार नागारजन रै बेटा न हुता। तरै जोगी १ सीध[3] श्रायौ तिण री इण सेवा कीवी। जोगी प्रसंन हुवौ। कहौ – कासु चाहे छै? तरै इण कह्यौ – माहरै बेटो नहीं। तरै कह्यौ – फळ ३ हुं तो नुं देईस[4]। पिण[5] तिण माहे एक हुं लेईस। तरै नागारजन वात कबूल कीवी। जोगी श्रांबा ३ दीया, बेटा ३ बाईर[6] ३ रै हुवा। वरस १० जोगी फिर श्रायौ। बेटा ३ दीठा। नागारजन सुं मिळीयौ। रांणीयां सुणीयौ जोगी श्रायौ छै। तरै नाहड़राव री मां जाणीयो बेटो सषरो[7] माहा रौ[8] छै, श्रो लेसी। तरै इण नाहड़राव नुं ले नै षांषटै नाहड़सर ले श्राई। छांनौ[9] राषीयो छै। पछै जोगी वांसौ[10] श्रायौ, पछै इण री मां नाहड़राव नुं ले श्रजमेर श्राई, मोटौ हुवौ। श्रजमेर रा धणी रौ चाकर हुवौ। मुजरै पोहतो[11], गांव १ दीयौ।

७. जोगी उठै श्राय भाषरी[12] ऊपर रह्यौ, नाहड़राव नुं कह्यौ–एक बार तुं सदा म्हां कन्है श्रायौ करे। पछै दीवाळी रै दिन कड़ाह तेल रौ चढ़ा रह्यौ थौ। नाहड़राव श्रजमेर सुं रात श्राधी'क[13] रौ श्रायौ तिण

---

१. छोड

---

1. समय, आसपास। 2. पास से। 3. सिद्ध। 4. दूगा। 5. परन्तु। 6. स्त्रियां। 7. अच्छा, सुन्दर। 8. मेरा। 9. गुप्त, प्रच्छन्न। 10. पीछे-पीछे। 11. प्रणाम करने गया—राजकीय सेवा के लिए दरबार मे उपस्थित हुआ। 12. पहाड़ी, टेकरी। 13. मध्यरात्रि।

वेळा जोगी कन्है आयौ। तरै जोगी कहौ–होळी-दोळी[1] परदषणा दे।[2] सु जोगी कड़ाह माहे नांषतो[3] थौ सु इण दीठौ। तरै जोगी नु नांषीयौ। जोगी रौ पोरसौ[4] हुवौ पण जोगी री हीत्या सुं गळत कोढ[5] हुवौ।

८. नाहड़राव मंडोवर धणी हुवौ। वाराह[1] एक मंडोवर री वाड़ी[6] वीगाड़ै। तिण री घणी पुकार होई रही छै। नै एक दिन नाहड़राव डेरै होतौ थौ सु वाराह नीसरीयौ। नाहड़राव वांसै हुवौ[7] पोहोकर जी री ठोड़ वाराह मूढा सुं नै पगां सुं षरल षावड़ौ[8] एक पाणी रौ कर अलोप हुवौ।[9] नाहड़राव उण ऊपर आयौ। नै उठै उतर नै हाथ धोया, तरै हाथ रौ कोढ़ गयौ। मुहडौ धोयौ तरै मुहडै रौ कोढ़ गयौ। पछै वागो[10] उतार सारो डील[11] क····सीया सु नाहौ[12] सारा डील रौ कोढ गयौ। पछै नाहड़राव पोहोकरजी रौ कुंड बंधाय नै वाराहजी रौ देहरो कराय नै थापना कीवी।

९. तठा पछै कनवज थी राठोड़ सीहौ सेतरांमोत[13] श्री द्वारकाजी री जात[14] नुं आवै छै। अणहलवाड़ै पाटण सोलंकी मूळराज राज करै छै, सु मूळराज रौ बाप लाषौ फूलांणी[15] जाड़ेचौ[16] मारीयौ छै। सु मूळराज लाषै नु मारण रा उपाव घणा ही करै छै। लाषो केला-कोट भुज नगर थी कोस दस छै, तठै रहै छै। सु मूळराज वेळा[17] दस बीस कटक कर नै लाषै फूलांणी ऊपर गयौ छै। सु मूळराज फजीत[18] होय पाछौ आवै। सु इण फेरै[19] मूळराज पाटण देवी भद्र-काळी छै तिण ऊपर धरणै बैठौ छै।[20] सु देवी कहौ – तूं कासुं कहै छै? तरै मूळराज देवी सुं वीनती करै छै–का तौ लाषौ माहरै हाथ

---

१. वाहारा (प्र.)।

---

1. चारो ओर। 2. परिक्रमा लगा। 3. डालता। 4. स्वर्ण पुरुष। 5. गलित कुष्ठ। 6. बाग। 7. पीछे चला। 8. छोटा गड्ढा। 9. लुप्त हो गया। 10. पहिनने का वस्त्र। 11. शरीर। 12. स्नान किया। 13. सेतराम का पुत्र। 14. देवता की अभ्यर्थना के लिए। 15. फूल का बेटा। 16. चंद्रवंशी राजपूतों की एक शाखा। 17. बार। 18. अपमानित। 19. इस बार। 20. अभीष्ट फल की प्राप्ति के लिए पूर्ण विश्वास के साथ धरना देकर बैठ गया।

आवै । देवीजी माहारै माथै हाथ देवौ ।[1] नहीं तौ हूं देवीजी ऊपर कंवळ पूजा करसुं[2] । तरै देवीजी कहै छै – लाषो तो देवता रौ अवतार छै, तूं मांणस रौ अवतार छै । लाषो थारै हाथ आवण रौ नहीं । तरै इण निपट गाढ़ कीयौ[3], दिन ७ पांणी धांन विगर लंघण कीया ।[4] देवी प्रसन्न हुवै' तरै सातमै दिन री रात आधी'क गई, तरै देहुरा[5] आडा कींवाड़ जड़ नै तरवार काढ़ नै नस[6] ऊपर धरो, तरै देवीजी हाथ झालीया । कहै – तुं मती मरै, थारै हाथ तो लाषा री मीच[7] नहीं नै तै अतरौ[१] हठ मांडीयौ म्हे तोनुं लाषा मारण रौ उपाव वतावां छां । राठोड़ सीहौ सेतरांमोत कनवज थी दुवारकाजी रो जात नुं चालीयौ छै । सु फलांणै[8] दिन पाटण आवसी, थे सांम्हा आदमी मेल्हौ । सीहौ महादेव रौ अवतार छै । सीहा रै हाथ लाषा फूलाणी री मोत छै । मूळराज रै देवीजी वांसे हाथ देनै सीष दीवी ।[9] कहौ – लाषौ मारण री करै छै तौ सीहा नुं राजी कर नै साथ ले लाषा ऊपर जावौ, लाषौ थांहरै हाथ आवसी । मूळराज देवी रा देहरा थो घरे आया । सीहा री षबर रै वासतै एक आपरो ईतबारी[10] चाकर छांनौ[11] आदमी ४० साथे देनै रा. सीहाजी साम्हौ चलायौ नै कहौ – दिन रौ दिन[12] डेरौ जठै हुवै तठा री षबर म्हांनुं मेलजौ । नै वह मजल दस पांच सीहा जी भेळा हुवौ । जठै जठै डेरौ हुवै तठा री षबर मूळराज नुं लष मेल्है छै ।[13] जिण दिन पाटण नजीक आया तरै डेरा री ठोड़ अठै सारी तयारी आपरा परधांनां नुं कहै कराई ।

१०. आप घणौ साथ साथे लेनै राठोड़ सीहा सांम्हा चढ़ीया । कोस पांच माथै मूळराज जाय सीहा सुं मिळीयौ । घणौ आदरभाव वडा ठाकुरां रौ वडा ठाकुर करै तिण तरै मूळराज जाय सीहाजी सुं

१, न हुवै । २. अवडो ।

---

1. सिर पर हाथ रख कर आशिष दो । 2. वरना मेरा सिर आपके अर्पण कर आपकी पूजा करूंगा । 3. दृढ संकल्प कर लिया । 4. भूखा प्यासा रहा । 5. मन्दिर । 6. गर्दन । 7. मृत्यु । 8. अमुक । 9. पीठ पर अभय हस्त देकर विदा किया । 10. विश्वासपात्र । 11. गुप्त । 12. प्रति दिन । 13. लिख कर भेजता है ।

कीयौ । साथ हुवा थका डेरा री तयारी कीवी थी तठै डेरौ करायौ । सीधौ-वाधौ[1] चार-बोर[2] अमल-पांणी[3] सारी तयारी कराई । म्हैमांनी राजा पातसाह री कीजे छै तिसड़ी कीवी छै । राठोड़ सीहोजी आप, नै चाकर सीहा रा सारा ही राजी हुवा । म्हे कुण अै कुण, अै म्हांरी इतरी अगत सुं अगत[4] करै छै, सु कुंण वासतै ? चाकरां कामदारां नुं तौ चाकरां कांमदार पूछ दीठौ ।[1] उवै तौ सारा कहण लागा – म्हे तौ जांणां नहीं ।

११. आथण रौ[5] वळे मूळराज सीहाजी रै डेरै आयौ, वीनती घणी कीवी । संवारे मुकांम कीजे । म्हारौ घर पवीत्र कीजे । मोनुं मोटौ कीजे ।[6] सीहाजी तौ घणौ ही नाहाकारौ कीयौ ।[7] पण मूळराज घणौ हठ कर राषीया । संवारै दिन पोहर चढ़तां आप रै घरे पाटण माहे मूळराज सीहाजी नुं सारै साथ सुधा[8] मोहौला[9] [2] में ले गया । बडा म्हैमांनी कीवी । घोड़ा काछी[10] बीस नजर गुदराया नै कपड़ौ गुदरायौ । सीहाजी री दाय आयौ[11] सु तौ राषीयौ । तठा पछै साथे हुवौ डेरै आयौ । पछै सीहौजी तौ आपरै डेरै माहे गयौ नै मूळराज नुं बारे बेसांण[12] नै बीच आपरा परधांन हुता सु फेरनै पुछायौ – थे म्हांसु इतरी हळभळ[13] करौ छौ, सु म्हांसुं थांहारै कोई कांम हुवै सु फुरमावौ । तरै मूळराज कहौ – हूं म्हारी बेटी री नाळेर राज नुं देवां छां नै लाषै फूलांणो कछ रै घणी कन्है म्हारै बाप रौ बैर रहै छै सु...[3] वेळा ५ तथा ७ सात लाषाजी ऊपरै धरणौ कीयौ तरै देवीजी ऊपर धरणौ कीयौ तरै देवीजी मोनुं हुकम कीयौ—लाषा री मीच रा: सीहाजी सेतरांमोत रै हाथ छै । सारी बात मांड कही ।

१२ – सीहे कहौ—हिमार[14] बात परगट करणी नहीं । हुं रिणछोड़जी

---

१. पुछ दीठौ । २. मोहाले । ३. हूतौ ।

---

1. रसोई आदि । 2. घोड़ों के लिए घास-दाना । 3. अफीम, तंबाखू, कलेवा आदि । 4. बढ़ बढ़ कर स्वागत । 5. सायंकाल । 6. मुझे गौरवान्वित करो । 7. इनकार किया । 8. सहित । 9. महलों । 10. कच्छ देश के । 11. पसन्द आया । 12. बैठा कर । 13. आवभगत, हेलमेल । 14. इस समय ।

री जात कर आऊं। पछै लाषा ऊपर जासां। जिकुं परमेसुरजी की आग्या छै सु हुसी। पछै सीहौ दुवारकाजी जात करण गयौ। मूळराज आपरा आदमी आगु[1] साथे दीया। सीहौ जाय दुवारका रिणछोडजी भेटीया। जात कर पाछा आया। मूळराज असवारी री तयारी की छै। तिण समै राषाईच मूळराज री भाई लाषा कनै भाणेज थकौ रहै छै। तिण पण आण सारी उठा रो षबर दी छै। दीयाळी री ठीक[2] की छै। तिण दिन उपर मूळराज सीहौ चढ दोड़ीया छै। लाषा रौ साथ सारौ दीवाळी ऊपर आय आपरै घरे गयौ छे। लाषा नै षबर हुई – सोलंषी मूळराज नै राठौड़ सीहौ थां ऊपर आया। तरै लाषो ही आय मैदान में षड़ो रह्यौ। अतरै वेढ़ हुई। तरै सीहा रौ लौहौ[3] लाषौ मार लीयौ। राषाईच बाज[4] कांम आयौ। मैहद झाला री बरछी लाषा रा हाथी चढण वाळा रै लागी। तिण दिन मूळराज मैहद झाला नुं मौजरी हळवद दी। ऊलो पैलो[5] साथ घणौ कांम आयौ। पिण वेढ मूळराज जीतौ। नै राजा सीहा रौ वडौ सोभाग हुवौ। लाषौ मार नै मूळराज सीहौ कुसळे पाटण आया। मूळराज आप री बेहन राजां सोलंकणी[1] सीहा नुं घणा लाड-कोड कर परणाई नै दिन १० राषीया। पाटण रा सीहा नुं घणा हीड़ा कीया[6]। दिन १० पछै सीहै मूळराज कनै सीष[7] मांगी। मूळराज डायजो[8] घणौ देनै सीष दी। सीहौ सोलंकणी नुं ले कनवज आयौ। तठा पछैली सीहा रै पटराणी और हुती। तिण रै पेट रा बेटा ४ हुता, तिण माहे वडो बेटो टीकायत साहबी रौ धणी मुदाइत[9] छै। तठा पछै सोलंकणी राजां रै बेटा ३ हुआ। तिणां रा नांव,—

१. आसथांन १. सोनग १. अज

---

१. सोलकणी।

---

1. अगुवा, पहले से ही। 2. निश्चय। 3. शस्त्र। 4. पराक्रम दिखा कर। 5. इधर-उधर दोनों तरफ का। 6. हृदय से स्वागत-सत्कार किया। 7. विदाई। 8. दहेज। 9. निश्चित।

बरस २० सोलंकणी परणी पछै राठोड़ सीहै रांम कहौ ।[1]

१३. राठोड़ सीहा री बडी बैर रै टीकाइत बेटै षरषसौ ईण सुं निपट जोर मांडीयौ । अठै-उठै रह न सकै । तरै सोलंकणी आसथांन नुं समझाय नै कहौ—अठै थांहांरौ टिकाव कोई नहीं[2] । अै सांम्हौ कोहीक ऊपाव[3] कर मारसी । आंपे हालौ, म्हांरै पीहर पाटण जावां । तरै इण हलाणा[4] री दिन ५ तथा ६ माहे तयारी कर, दस मांणस रजपूत ाष नै पाटण नै चालीया । आवतां आवतां पाली आया, ऊतरीया ।

१४. तिण दिन पाली पलीवाळ बांभण राणे रा गुर बसै छै, सु लाषेसुरी[5] कोड़ीधज[6] धनवंत लोक रहै छै। तिण समै मेर पाली रौ बिगाड़ घणौ करै छै । बीजा ही चोर चांरूं तरफ रा लागै छै । सु इणे आण गांव बारे गाडा छांडीया । अठै पुहुण[१] ढाळीया छै ।[7] तरै पाली रै लोगां आसथांन रै गुढ़ा रा लोगां नुं कहौ—अठै मेर[२] चोर घणा लागै छै, थे गांव बारे मत ऊतरौ, गांव माहे डेरौ करौ । तरै आ बात गुढ़ै रा लोगां आसथांन आगै कही । तरै आसथांन कहौ—आज अै आंपां नुं गांव माहे दया कर ऊतारै छै, सुहारे[8] डेरौ बीजै गांव करसां तरै आंपां नै कुण डेरा गांव में करण देसी ? इतरी बात करतां मेरां आसथांन रै गुढ़ा[9] रा तीन पुहुण[३] लीया । इण रा गुढ़ा रा लोग पुकारता इणां आगे आया । इणां रा घोड़ा काईजै[10] हीज ऊभा था, इणां पागड़ै पग दे चढीया ।[४] कोस माहे मेरां नुं अपड़ीया । अठै मामलौ हुवौ । इणां रौ दिन पाधरौ[11], मेर ४० मार लीया । आसथांन रै साथ रै छोतीवाड़ो हुवौ नहीं ।[12] उरा आया[५] , अै कांम सुं जीत नै कुसळे पाछा पाली आया । पाली रा लोग सारा हैरांन हुवा ।

---

१. ऊंठ–पुरण २. मारे ३. पुरण ४. चढ वजाया ५. घोडा बीच पडाहू आया ।

---

1. मृत्यु को प्राप्त हुआ । 2. निर्वाह नहीं । 3. उपाय । 4. प्रस्थाना । 5. लखपती । 6. करोडपति । 7. ऊंट घोडे गाड़ी आदि प्रवहण छोड़े हैं । 8. कल प्रातः । 9. रहने का स्थान । 10. जीन आदि सहित । 11. अनुकूल समय । 12. क्षति नही हुई ।

१५. तठा पछै इण नुं पाली रै लोगां हकीकत पूछी—थे कुण छौ, थे कठै जावौ छौ ? तरै इण आपरी हकीकत पाली रा लोगां नै सारो मांड कही। जु म्हे रोजगार नुं गुजरात जावां छां। तरै आथूण रा गांव माहे वडा आदमी था, तिणां सारां भेळा होय नै बिचार कीयौ। आंपणा गांव चोरां आगै रांधी हांडी रह सकै नहीं।[1] आंपां सासता[2] विचार करां हीज छां, दस कोस जाय नै हेक चौकी पहरै रै वासतै भेळौ रजपूत ले आवां। सु आंपणे भागे[3] घरे वैठां इसड़ो-बड़ौ रजपूत भूषीयौ वडा घर रौ छौरू[4] आयौ छै। इण नुं रोजगार कर नै अवस अठै राषीजै। आ बात सारां रै दाय[5] आई। तरै पंच भेळा होय नै चार साणां[6] आदमी आसथांनजी रै डेरै मेलीया। राज संवारे कूच मतो करौ। म्हें राज रौ रोजगार कर नै अठै ही राषसां।[7] आसथांनजी पिण आ बात कबूल कीवी।

१६. पछै दिन दो पाली डेरौ रह्यौ। इणां रै नै अणां रै रदवदळ हुई।[8] टका ४५। काली आसथान सौनग अज रौ पालीवाळां बांभणां कीयौ। अै पण राजी हुवा। हवेली १ गांव माहे बांभणे इण तीनां भायां नुं दीवी। चाकर साथे था तिणां नुं और ठौड़ दीवी। अै चौकी पहरौ रात दिन इण भांत करण लागा जु पाली री सीव[9] माहे कोई चोर बाट बहतो[10] नीसरै नहीं। कोई आसथांन रै नांवै लीयां[11] पाली रौ लोग कठै ही जाय आवै तिण सांम्हौ कोई जोई सकै नहीं।[12]

१७. लोग बरस १ माहे घणौ सुष पायौ। हथाळी दुयां आसथांन सोनग अज तीनां भाई पाली माहे रहैं छै।[13] आसथांन रौ बडौ तिगवेड़ो नवसाद काठै जावतौ बाभ गयौ छै।[14] पाली री पाषती गांव छै।

---

1. खाना खाना तक हाथ की वात नही। 2. निरंतर। 3. अपने भाग्य से। 4. लड़का, वंशज। 5. पसन्द। 6. सयाने। 7. रखेंगे। 8. विचार-विमर्श हुआ। 9. सीमा। 10. रास्ते चलता। 11. नाम लेकर भी। 12. आंख उठा कर नही देख सकता। 13. तीनो भाई बड़े आराम और आदर के साथ पाली में रहते हैं। 14 ससैन्य सुरक्षा की अच्छी व्यवस्था प्रसिद्धि प्राप्त हुई।

तिण रा पिण चौधरी वडेरा आसथांन सुं आय मिळीया, सारां वीनती कीवी–जु राज पाली रौ चौकी पहरौ कीयौ छौ तिण तरै राज माहारौ पिण चौकी पहरौ करौ। गांव गांव मे आदमी १ लार आसथांन रा साथे कर ले गया नै सारा गांवां घुघरी कीवी।[1] सारा गांवां ऊपरै चीठी चलण लागी।[2] बरस २ तथा ३ इण भांत रहा। सारी परजा सुष पायौ। कोई पाली रौ पड़ीयौ तीणौ[3] उपाड़ सकै न छै। इसड़ौ जाबतौ कीयौ।

१८. सोनगजी नै अजजी पिण मोटा हुवा। इणां आसथांन सुं कहाव कीयौ–[4] अठै रावळै[5] ही षरच रौ पूरौ न छै। म्हांनु हुकम करौ तौ कठी नुं जाय नै पेट भरां। तरै आसथांन पण कहौ–माहारौ ही अठै पड़पाव[6] कोई नही। वरस २ तथा ३ म्हे पड़ीया रहै नै आघा काढीया। आंपां भेळा हीज कठै'क जावसां। तरै हालण री तयारी हूण लागी। तरै पाली सहर रा लोग पाषती रा गांवां रा लोग सगळा दलगीर हुआ।[7] सारा बडेरां चोधरीयां कन्है गया। कहौ–जे थे मांहरौ नै थांहरौ भलौ चाहौ छौ तौ आसथांन नु हर भांत कर अठै राषौ, मांगे सु देवौ, नै थे कबूल करसौ सु म्हे गाढ़ा राजी थका[8] परौ देसां। तरै पंचां मिळ नै आसथांनजी कन्है आया। म्हे थांनै चालण नहीं देवां। तरै आसथांन कहौ – माहारै सीरबंधी लोग नहीं। म्हे राजा रावां रा राणां रा छोरू थे ऊधड़े रीजक[9] राषौ सु म्हे पड़पण रा नही[10]। माहारा चाकर षेत–पात बिगर पड़पण रा नहीं। माहारा घोड़ा तीन वरस हुआ कोरड़[11] जव चिणा' आंषीये दीठा नहीं। माहारा छोरू राजलोक पूंष[12] फळीयां री हौसां मरै।[13] तिण सुं म्हे इण भांत रहण रा नहीं। अै हालण री उतावळ करै। लोग हालण

---

१. चांचड़

---

1. खर्च का हिस्सा देना मजूर किया। 2. हुक्म चलने लगा। 3. तिनका। 4. निवेदन किया। 5. आपके। 6. निर्वाह। 7, दिल में दुखित हुए। 8. पूर्ण प्रसन्नता के साथ। 9. निश्चित तनख्वाह। 10. मानने के नहीं। 11. एक प्रकार की घास। 12. कच्चे सिट्टे। 13. अभाव में ललचाते रहते है।

दे नहीं। घणौ गाढ हुवौ।[1] तरै पलीवाळां सारां हळ दीठ[2] द्रु. १५ माळ री हळ १ धांन मण ५ जायां परणीयां कर दीयौ। १ होळी दीवाळी दसराहै री तहवारी मिलणो सारौं कबूल कीयौ। घर षेत चाकरां नुं पाली माहे दीया। गांव-गांव दीठ हळवा ५ धरती उन्हाळी[3] दीन्ही। कोरड़ चांचड़ा[4] सारा वायदे। इतरौ रोजगार कर नै आसथांन नुं पाली राषीया। सोनग अज रौ लोग सांम्हौं कर चालीयौ। सोनग ईडर गयौ। अज सषोधार गयौ।

१६. आसथांन रै गांव ५० तथा ६० भोग पड़ीया।[5] दिन-दिन घणी रैत वाळौ मारग हुवौ।[6] असवार ४०० री ठकुराइत हुई। सासता घोड़ा आवै। दिन पाधरौ[7] जिकुं करै सु बोल ऊपर आवतौ जाय।

२०. तिण समै षेड़ माहे गोहलां री ठकुराई छै। उणे आसथांनजी नै बेटी रो नाळेर राजा प्रतापसी गोहल मेलीयौ। इणां नाळेर बधाय उरो लीयौ। उठै साहौ थापीयौ।[8] तिण साहा ऊपर जाय परणीया। माहौ-माह घणौ सुष हुवौ। आसथांन वेगो[1] [9] जावै षेड़। गोहल घणा हीड़ा करै।[10] दिन दस पन्दरै उठै रहै नै सारी वात सुं उठा रा भौमीया[11] हुवा। गोहल ठाकुर आप तिकौ आळसु अमली।[12] जेहली परधान डाभी तिकौ घणा कबीला रौ नै भणीयौ रजपूत, तिकौ भलो भांत कांम चलावै छै। सु औ आसथांन उठै आवै जाय। तरै घणो वेळा आसथांन रै डेरै जाय आवै। आसथांन उण सुं मया करै।[13] एक दिन आसथांन रै डेरै डाभी गोहलां रौ परधांन आयौ हुतौ तरै किणहीक चारण भाट डाभी री वडाई कीवी। कहौ – राजा तौ आळसु छै पिण औ भलौ परधांन

---

१. वेगो वेगो।

---

1. बहुत अधिक आग्रह हुआ। 2. प्रत्येक हल के अनुसार। 3. सिंचाई की धरती। 4. बाजरी के सिट्टे। 5. आमदनी की दृष्टि से अधिकार में आए। 6. प्रजा बढने लगी। 7. दिनमान अच्छे। 8. विवाह की तिथि निश्चित की। 9. जल्दी-जल्दी। 10. खूब आदर सत्कार करते है। 11. पूर्ण रूप से जानकार, अधिकारी। 12. अफीमची। 13. कृपा रखता है।

छै । तिण सुं आ साहबी चालै छै । तरै डाभी फेर कां न कहौ । डाभी रै लागुवे आ वात राजा कन्है कही । तरै डाभी परधान नुं परतापसी परौ काढ़ीयौ । औ छांड आसथांन कन्है आयौ । आसथांन घणौ आदर कर राषीयौ । कितराहेक दिन आसथांन षेड़ौ लेण[१] री मन में धारी ।[1] असवार ७०० री जोड़ कीवी । डाभी रौ मन हाथ लेनै[2] कुवात जीताई ।[3] तरै पहली तौ डाभी हां-नाह वेळा दस वार कहौ । पछै डाभी नुं लालच दिषाळीयौ ।[4] आधी धरती षेड़ै री म्हे म्हांरै हासल लेसां । आधी धरती आधो हासल म्हे थांनु देसां । डाभी इण तरै सु वात कबूल कीवी । पछै डाभी घात वताई–[5] इण रै गोठ दीवाळी री षेड़ै थी कोस ४ छै तठै हुवै छै । तठै आंपां जाय ऊभा रहीयां सुं वेह आंपां सुं छुटी चाळां[6] मिलण आवसी । तरै आंपां इण भांत मार लेसां । म्हांरौ कबीलौ उठै घणौ छै, तिणां नुं डाभी एक तरफ समझाय नै ऊभा राषसां । पछै असवार ७०० सुं दीवाळी री गोठ ऊपरे आसथांन षेड़ै ऊपर लड़ाई रै मतै गयौ । उह जांणे नहीं । झगल माहे ज़ी रहै छांनी सीव काढी ।[7] उठै नजीक गया तरै डाभी परधांन आगै गयौ । जाय नै कहौ–आसथांनजी आया छै । तरै राजा आप भाई बेटा वडा उमराव सारा ही छूटीयां चाळां सुं सांम्हा मिलण नु आया । डाभीयां नुं उण समझाया था–थे डाभी ऊभा रहीजौ । गोहलां रौ साथ जीवणौ छै । परधान डाभी मिळतां आसथांन नु समझायौ–डाभी डावा नै गोहल जीवणा । इतरा मांहे लोह बूहौ । गोहल मांणस २०० तथा ३०० सुं राजा कंवर भाई-बंध राहाणां[२][8] सुधा मार लिया । तरवार एक धारी बुही ।[9] आसथांन रौ आदमी घणौ कांम कोई आयौ नहीं । इण नुं मार नै षेड़ा ऊपर वाग ली ।[10]

१. षेड़ लेण । २. राहवरण ।

1. गांव लेने का मन में विचार किया । 2. मन की बात जान करके । 3. षड़यंत्र प्रकट किया । 4. दिखलाया । 5. धोखे की तरकीब बतलाई । 6. बिना शस्त्र, बाहें पसार कर । 7. चुपचाप रास्ता तय किया । 8. दरोगे आदि । 9. एक गति से बिना किसी रुकावट के । 10. घोड़ों को फुर्ती से चलाया ।

कोई आडौ आयौ नहीं ।[1] पोळ माहे पैठा, रावळा घर आप वसुं कीया ।[2] मारणहारा था सु मुवा । बीजा आदमो था सु नास गया ।[3] भार-भरत[4] साहबो हाथ आई । षेड़ै रा लोग सारां रौ डाभी परधांन दिलासा कीवी । डाभी था कांई वात छांनी न हुती । जिकां जांणीयौ बाहर नीसरीयां पछै ही दुष देसो । तिण ऊपरां सुवारे[5] फौज मेल नै मारीया । बीजा नास गया । धरती सारी डाभी परधांन दिलासा कर बसती राषी । सारौ मुदौ[6] साहबी रौ डाभी ऊपर राषीयौ । हासल आवै सु आधौ आसथांनजी रै लीजे नै आधौ डाभी रै लीजे छै । बरस २ इण भांत हालीयौ । आसथांन पिण सैंलगा[7] सिकार रै मिस कर-कर सारी धरती दीठी । धरती रौ भौमीयौ हुवौ ।[8] आपरा रजपूत गांव गांव मांहे राषण लागौ । परधांन परधांन पण कांम ऊपर आदमी ४ आपरा कीया । डाभीयां नुं सासता दबावता गया । पछै आसथांन री बहु गोहलणी समझायौ–इण धरती रै वासतै आपरा सगा सह मारीया[9], तौ हमै डाभीयां कन्है आधो धरती षुवाड़ीजे सु कुण वासतै । तरै डाभीयां नुं पण चूक करनै[10] आसथांन मारीया । धरती सारी भोग घाती ।[11]

२१. गोहल एक वार छांड नै जेसलमेर गया । भाटीयां सुं सगाई हुती । जेसलमेर रा गढ ऊपर एक ठौड़ गोहल टूंक कहीजै छ । पछै उठै ही रह न सकै, तरै सोरठ नुं सेत्रुंजै पालीताणे सीहोर जाय रहा, सु अजेस उठै छै । मारवा राव कहीजै छै । आसथांन रै षेड़ै गांव १४० भोग पडीया । तठा पछै गांव १४० कोढणें रा आसथांन षाटीया ।[11] गांव १४० देवराज गोगादे चाहड़देआं रा पिण आसथांन षाटीया । गांव ४२० राठोड़ां रै तद रा छै ।

---

1. किसी ने सामना नही किया । 2. अपने अधिकार में कर लिये । 3. भाग गये । 4. माल ताल । 5. दूसरे दिन । 6. मुदार, अधिकार । 7. सब जगह । 8. पूरा जानकार हो गया । 9. सभी ससुराल के रिश्तेदारो को मार डाला । 10. धोखे से । 11. सारी भूमि का उपभोग खुद करने लगा । 12. जीते ।

२२. इतरी धरती आसथांन षाट नै पछै पाट धुहड़ बैठौ, सु आसथांन धरती षाटवी थी सु भोगवी छै। पछै धुहड़ नागाणै[१] गायां री बाहर कांम आया। धुहड़ रै पाट रायपाळ[२] बैठौ। सु रायपाळ दातार जुझार संसार सरोमण[1] हुवौ। जिण दिन सारौ संसार उरण कीयौ। बाहड़मेर षाटीयौ। महेवौ कोढणौ थळ बापी तिकी धरती आसथांन षाटी पहली हुती। रायपाळ मैहरेलण कहाणौ। ठाकुराई जोर चढ़ी।[2] बाहड़मेर गांव ५६० नवी पंवार री वडी ठौड़ हाथ आई।

पंवारां री पीढ़ीयां... .....

२३. मागा बुध नुं चारण रोहड़ीयौ कीयौ। आपरै पाट बाहरैट कीयौ, तिण मागा रै पेट चांद्रीयौ वडौ बीदावत[3] हुऔ।

२४. रायपाळ वडौ माहाराज हुवौ। रायपाळ रांम रांम कहौ। पाट कान्हड़राव बैठौ, सु पिण वडौ रजपूत हुवौ। रायपाळ री षाटी धरती भोगवी। तठा पछै कान्हड़राव रै पाट जाल्हण बैठौ, भलौ ठाकुर हुवौ। पछै धरती ऊपर तुरकां री फौज आई। जाल्हण कांम आयौ।[4] पाट छाडौ बैठौ, वडौ रजपूत हुवौ। रायपाळ री षाटी धरती भोगवी। सोनगरां सुं मामला घणा कीया। पछै सोनगरे धरती महेवा री मारी। छाडौ वांसै अपड़[5] कांम आयौ। पाट तीडोजी बैठौ। बाप रै बैर रै वासतै सोनगरां सुं घणा मामला कीया।[6] भीलमाळ मारी। सोनगरां सुं वेढ़ हुई! सोनगरा भागा, भाटीयां सोळंकीयां सु वडा-वडा मामला कीया। पछै आलावदी पातसाह सीवाणा ऊपर आयौ। तरै सातलसोम कांम आयौ। तद तीडौ सीवाणै कांम आयौ। पाट कान्हड़दे छाडावत बैठौ। सलषा नुं टीकौ न हुवौ। सलषा रै बेटा चार वड़ो नाधां बलाय हुआ।[7]

---

१. नागणै। २. रावपाल।

---

1. शिरोमणि। 2 शासन ने खूब शक्ति हासिल की। 3. विद्वान्? 4. वीर गति को प्राप्त हुआ। 5. पीछा करके। 6. अनेक बार युद्ध किया। 7. आतंकित करने वाले वीर हुए।

२५. मालौ सलषावत वडौ राहावेधी[1] हुग्रौ, देवकळा[2] हुई। कान्हड़दे छाडावत सुं विरस[3] कर नैं जाळौर रा षांन कन्हा गयौ। उठा सुं फोज आण नै कान्हड़दे नुं मुगलां कन्है मराय नै टीको मालै लीयौ। महेवे बाहड़मेर रौ धणी।

२६. जैतमाल सळषावत वडौ रजपूत हुग्रौ। रावळ माला रै सारी साहबी री मुदार रौ धणी हुवौ। रावळ मालै सीवाणो लीयौ पछै जैतमाल नुं दीयौ।

२७. वीरम सलषावत वडौ औनाड़[4] रजपूत हुग्रौ। आसंख प्रवाड़े जैतवादी हुग्रौ।[5] महेवैं बाहड़मेर री धरती मालै भोगवी छै। वीरम नुं गांव ५ तथा ७ भाई-वंटा रा मालै दीया छै, सु षाय छै। घणा घोड़ा रजपूत वीरम राषै छै। पारका[6] धाड़ा आण षाय छै। पातसाही मारग मारैं छै।[7] वीरम संसार रा माल लूट षाय छै। माला नै वीरम घणी आपणत[1] छै। तिण समै सोहंण दुकाळ पड़ीयौ छै। सु देपाळ लूण आंण जोयो, महेवै गाडा २०० लें षड़ चर थकौ[8] आय रहौ छै। इण रै बित[9] घोड़ा सांड गायां निपट घणी छै सु मालै जगमाल आगै किणहीक घात घाती[10]—कठाही रा सींधु आया छै। तिणां नुं धरती बिगाड़तां बरस १ हुग्रौ। इण रौ माल षौस लीजे। मालै जगमाल रै वात दाय[11] आई। किणहीक कांमदार नुं हुकम हुग्रौ—रात पाछली घड़ी ४ लेनैं[12] थे जाय गाडा रोकजौ। पछै जगमाल कहौ म्हे उठै आवसां, माल बित संभाळ उरो लेसां। सु आ षबर जोयां नै किणहीक दीवी। जोये आपरा सैणां नुं पूछीयौ—कांई उगरण ठौड़ ?[13] तरै जिके उणां रा सैण था तिणे कहौ—थांहरा गुढा सुं

१. अणबण।

1. भविष्य की जानने वाला। 2. देवताओं का चमत्कार प्राप्त हुआ। 3. अनबन। 4. कब्जे में न आने वाला। 5. असंख्य युद्धों में विजयी हुआ। 6. दूरके पराये। 7. लूटता है। 8. चारे आदि के लिए। 9. वित्त। 10. धोखे की बात सुझाई। 11. पसन्द। 12. चार घड़ी रात रहते हुए। 13. बचाव की कोई जगह है क्या ?

तीरबा[1] २ रा: वीरम सलषावत रा गुढा छै। तठै ले जाय रात आधी रा थे गाडा वीरम रै सरणै छोडौ। संवारै जाय वीरम नुं मिळौ, आपरी हकीकत कहौ। वीरम सरणायां बीजै पांजर छै। तरै जोयां रात आधी रा गाडा वीरम रा बास आगै छोडीया। रात पाछली पहोर १ थका वीरम रा परधान दोलीया सुं जाय मिळीया। आपरी सारी बिध कही। दोलीये रात घड़ी ४ पाछली थकी सारी हकीकत वीरम नुं गुदराई। वीरम जोयां रा गाडा रषवाळी करण आदमी १० राषीया। देपाळ रीं घणी दिलासा कीवी[2]। कहौ – थे षा–रौ हमै थां सांहमौ कोई जोई न सकै। जगमाल आदमियां नुं हुकम कियौ हुतौ, तिके रात घड़ी २ पाछली थी, तरै जोयां रा गाडां री ठौड़ आया। आगे देषै तौ गाडा नहीं। इणां गाडां रा चीलां वांसै[3] षड़ीया। आगे जाय देषै तौ गाडा वीरम रै वासै[4] आगै छूटा छै। ऊपर वीरम रा आदमी रषवाळा बैठा छै। आ षबर जगमाल रै चाकर मालै जगमाल नुं मेल्ही, अठै तौ औ बीचार छै, म्हांनुं कासुं हुकम छै। तरै आ बात सुणीयां मालौ जगमाल घणू ही बळीयौ[5]। पण वोरम सुं जोर कोई चलै नहीं। साथ तौ उरौ तेड़ाय लियौ[6]। वीरम कनै परधांन २ भला आदमी मेलीया। कहौ – इण म्हारौ सारौ देस षाधौ छै। इण कन्है माहरौ षड़ चरीयौ छै[7]। खड़ चराई रौ मामलो रहै छै। हासल[8] रहै छै। इण नुं उरा मेल देवौ। तरै वीरम माला रा परधानां नुं कहौ – म्हे इणां नुं तेड़ण[9] गया न हुता नै हिमैं तौ म्हां माहे आय पड़ीया तौ म्हे कासुं करां। म्हांथा काढ दीया जाय नही[a]। औ जबाब बीच आदमी था तिकौ पाछा जाय माला जगमाल नुं कहौ। बात सुण नै घणौ हीं बळीयौ। पिण वीरम सुं पौच सकै नहीं[10]। बैस रहा।

---

१. घात रज जमें करो। २. माथा काठिया जाय नही।

---

1. वह दूरी जहां तक तीर पहुचे। 2. आश्वस्त किया। 3. पीछे। 4. निवास स्थान। 5. खूब जला। 6. वापिस बुला लिया। 7. मेरी सीमा में घास आदि चराया है। 8. खेती की आमदनी का हिस्सा। 9. बुलाने। 10. बराबरी करने में या सामना करने में असमर्थ है।

२८. तठा पछै जोयां देपाळ वीरम सुं बीनती कीवी—हमें म्हांरौ अठै टीकाव कोई नहीं । म्हां पागा[1] [1] राज रै नै जगमाल रै उपाव[2] होसी । म्हांनुं राज कोस ४० फळोधी री पैली सींव सुधा[3] पौंहचाय दीजे । तरै वीरम तौं जोयां रो दिलासा कराई । कहौ – थांनुं अठै डर कोई नहीं, मजाल किण री छै माहारी बाड़ माहे थकां कोई साम्हौ जोय न सकै । पिण जोया आतुर हुवा–म्हांनुं[2] सीष देवौ । तरै जोयां रा गाडा जुता वीरम आपरौ साथ लेनै[3] जौयां रै साथ हुवौ । बीकानेर रै कांकड़ सुधा कुसले पौंचाया । वोरम सीष कीवी । समध वछेरी[4] पड़ाई आंरी देपाळ वीरम आगै फेरी, वीरम तौ घणी ही वेळां ना कहौ । पण देपाळ मांडे[5] समध दी, वीरम पाछौ आयौ । पहला ही माले वीरम चित षांत हुती[4] । इण मामले हुआं पछै उकट आक हुआ[5] ।

२९ इण भांत चलीयौ जाय छै । तितरा माहे वीरम गुजरात री कतार सोंबठी[6] घोड़ां री आगरा नुं जावती हुती सु षंडप कन्हा मार उरी लीवो । तिण ऊपर गुजरात रौ पातसाह महाबलीषान नुं असवार हजार बाहरै १२००० देनै विदा कीयौ । महेवा ऊपरा विदा कीयौ । पातसाह हुकम कीयौ – कै तौ राव मालौ वीरम नुं काढ देवौ । का महेवा री धरती मारौ[7] महाबलोषान जाळोर आय नै रावळ माला कन्है परधान मेलीया । का तौ वीरम नुं काढ देवौ माहारौ वीरम चोर छै, जठै[8] जासी तठै वांसौ कर[9] मार लेसां । काढ नहीं देवौ तौ म्हे थां ऊपरै आया[6] छां । मालो[7] आगै ही वीरम सुं लागतौ थौ । इतरी हीज घात जोवतौ थौ । वीरम नुं आदमी मेल कहाड़ीयौ – का तौ थे जाय जवाब करौ, का माहारी धरती छांड देवौ । तरै एक वार तौ वोरम मारणौ[8] बिचार

---

१ पगां । २. म्हानुं (प्र.) । ३. लेनै (प्र.) । ४. समघा वछेरी । ५. मांड । ६. आवा । ७. मालो (प्र.) । ८. मरण रौ ।

---

1. लिये, कारण । 2. विरोध । 3 सीमा तक । 4. मानसिक तनाव । 5. पूरा वैमनस्य हो गया । 6. बड़ी सारी । 7. जीत लो । 8. जहा भी । 9. पीछा करके ।

कीयौ थौ। पछै बीरम रै चाकर बाबरा[1] समझायौ। कह्यौ – दुसमण पूरौ[२] कांप दौ। तरै आपरी वसती थी सु तौ देवराज साथे देनै पुंगलीया सेत्रावे दिसा लोग माहाजनां नै मेलीयौ। मांगळीयांणी नुं सेझवाळां[1] २ बेसांण घोड़ा जोतर नै आप असवार २० साथे ले दोलीयो गेहलोत कंवळो मोहल माणक हरीयो मीढो[3] रादो साथ आपरौ ले जांगळु नुं नीसरीया। फौज बांसै हुई, आगे वीरम इण भांत जांगळु सांखला ऊदा मुजायत[४] कन्हे आयौ। रा: बीरम सलषावत नुं ऊदौ साम्हौ आयौ। घणौ आदर कीयौ। कोट माहे राषीयौ, घणा हीड़ा करै छै[2]। तितरै बांसां सुं महाबलीषांन आयौ। ऊदौ सांषलो साम्हौ आय मिळीयौ। डेरौ करायौ, घणी महमांनी कीवी। वीरम नुं तौ रात आसुदा पुहण[3] देनै, षरची देनै, साथे साथ देनै सोहण नुं चलायौ। संवार हुऔ सांषलो ऊदो जाय नै महाबलीषांन सुं हाजर हुऔ नै षांन कह्यौ – वीरम लाव। तरै ऊदे कह्यौ – सुरज छाबड़ीया[4] हेठा दाबीयौ रहै नहीं। माहारा घर माहे वीरम समावै नहीं। एक वार तौ षांन रोसांणौ, ऊदा नुं हाथ घालीयौ। षाल पड़ावण रौ हुकम कीयौ। पछै ऊदा रौ सत आकीदो[5] देष राजी हुऔ। ऊदा नै महरवान होय नै छोड़ दियौ। उठा सुधौ माहाबलीषांन वीरम रौ बांसौ करनै[6] अठा थी पाछौ वाळीयौ।[7] वीरम सोहण गयौ। देपाळ घणै आदर साम्हौ आयौ। वीरम नुं सोहण माहे राषीयौ। गांव वडेरण बीकानेर रै देस माहाजन वडौ गांव छै। तिण सुं कोस ३ बडी ठौड़ वसी नुं वडेरण दीवी। गांव १० तथा २० दीया।[५] तिण दिन जोयां रै दांण रौ हासल वडौ मारग रौ वहतीयाण[8] रा पारपषै[9] पईसा आवै। सु ढाल सुं आथूण देपाळ रा भाई दस मुदफरी वांट लै। सु देपाळ कह्यौ – म्हे दस बेटा लुणा रा

---

१. बबरे। १. पूळो। ३. मीठो। ४. सुजावत। ५. बीजा दिया।

---

1. एक प्रकार का रथ। 2. खूब आवभगत करता है। 3. ताजी सवारी। 4. टोकरी। 5. बल विक्रम। 6. पीछा कर के। 7. लौटा। 8. राहगीर। 9. खूब, अत्यधिक।

छां त्यां वीरम माहारै भाई छै, दांण माहे एक हेसौ वीरम री कीयौ। वीरम उठै जाय नै बास कीयौ। सांस बांधीयौ[१] पईसो पारपषै आवै।
३०. वीरम मारवाड़ था आपरौ साथ बुलाय लीयौ। और पिण भला-भला रजपूत था जिण जिठै रा तठा-तठा रा तेड़ भेळा कीया। बरस १ माहे बड़ी जमीत[1] भेळी कीवी। असवार ७०० री जोड़[२] हुई। जोया तौ घणा हीड़ा करै छै। पिण वीरम राहवेधी सु जांणे छै, जोयां नुं मार नै आ धरती लेऊं। पछै जोयां रा बीगाड़[2] करावणा मांडीया। वीरम उपाव[3] करण माथै हुऔ।[३] देपाळ घणा ही दिनां टाळौ कीयौ।[4] उठै वीरम वसत बुकण[४] भाटी वेरसीयोत तलबड़ी लाहौर नजीक मारीयौ। घणो बित लायौ।

३१. पछै जोयां रौ वीरधवळपुर वास। उणां रै पूजनीक थौ सु वाढीयौ।[५] तिण ऊपरा उपाव[5] हुऔ। दलै जोये आगे आय वीरम री गायां लीवी। बीजौ साथ थोड़ौ कर वांसै रह्यौ। वीरम आपड़ीयौ।[6] तठै बेढ[7] हुई। इतरौ साथ राठोड़ा रौ कांम आयौ—

१. रा. वीरम सलषावत
२. मीढो रांदो
३. कंवळौ मोहल
४. गेहलोत दोलीयौ गेहन रौ
५. आहेड़ी पुनौ
६. मांणक हरीयो गेहलोत

इतरौ साथ जोयां रौ कांम आयौ, सिरदार—

१. देपाळ लुणयांण
२. ....
३. जसौ लुणयांण
४. मदौ लुणयांण

षेत जोयां रै हाथ आयौ।[8] मांगळीयांणी वीरम री बैर नुं बेटा सुधी बांहण[9] १ में बैसांण नै देवराजां वाळै थळ ताउ[10] आदमी ४ चार पोहौंचाय गया। मांगळीयांणी छांनी गांव काळउ में मजूरणी होय

१. खाधो। २. फौज। ३. आयो। ४. बुकरण। ५. वढायौ।

1. जमात। 2. नुक्सान। 3. उपद्रव। 4. टालता रहा। 5. अनबन हुई। 6. पकड़ा। 7. युद्ध। 8. जोयों की जीत हुई। 9. वाहन। 10. तक।

रही। आपौ किण ही नुं जणायौ नहीं।[1] चूंडौ चारण रा टोघड़ा[2] चरावै छै।

३२. कितरा हीक दिन बितीत[3] हुवा। पछै चूंडौ हेक दिन टोघड़ा चरावतौ थकौ सूतौ हुतौ, सु सांप माथै ऊपर काळंदर कर रह्यौ छै। तिण समै चारण आल्हौ रोहड़ीयौ किणी कांम आयौ हुतौ। आगै देषै तौ छोकरौ सूतौ छै ऊपर सांप फण कीयौ छै। चारण देष नै हैरांन हुवौ। औ आल्हौ सीवणी थौ।[4] इण जांणीयौ इण रै माथै तौ छत्र मंडसी, औ कुंण छै? तरै डावड़ा[5] नै जगायौ नै पूछीयौ—तूं कुण छै? इण कह्यौ—हूं तौ कुंही समझूं नहीं। तरै इण नूं पूछीयौ—थारा मां बाप कुण छै? तरै चूंडै कह्यौ—बाप तौ कोई नहीं, नै माहारी मां थांहरा गांव में छै। तरै आल्है कह्यौ—मोनुं दीषावौ। तरै चूंडै नुं साथे कर आल्हौ गांव माहे आयौ। चूंडै आपरी मां नूं दीषाळी। तरै आल्है मांगळीयांणी नुं कह्यौ—थे कुण छौ? तरै पहली तौ कह्यौ—म्हे कुण हुवां, मजूर छां। तरै आल्है घणौ षोज पूछीयौ[6] पोहर १ बैस रह्यौ। तरै मांगळीयांणी आपौ परकासीयौ।[7] आल्है कह्यौ—थे बुरी कीवी, तद होज मोनुं कह्यौ नहीं। पछै मांगळीयांणी नुं चवरा[8] २ आपरा रहण नुं दीया। कोठी माहे धांन षावण नुं घात दीयौ।

३३. चूंडा नुं नवा कपड़ा सीवाड़ नै हथीयार बंधाय नै साथे कर महेवै रावळ माला कन्है चूंडा नुं पगे लगायौ।[9] पण वीरम माला नुं घणौ दुष दीयौ थौ तिण ता वडौ आदर न कीयौ। बुलायौ चलायौ नहीं। आल्हौ तौ चूंडा नुं माला सुं मिळाय नै आप आप रै घरै गयौ। चूंडौ उठै ही रहै छै। पेटीयौ कर दीयौ छै। घणौ सूल[10] कोई नहीं।

३४. एक दिन भोपो[1] नाई रावळ माला रै परधांन हुतौ। भोपो

१. भोबो।

1. अपना परिचय किसी को नहीं होने दिया। 2. बछड़े। 3. व्यतीत। 4. शकुन का जानकार था। 5. लड़का। 6. गहराई से पूछताछ की। 7. अपना पूरा परिचय दिया। 8. एक प्रकार की झोपड़ियें। 9. सेवार्थ प्रस्तुत किया। 10. ठीक, अच्छा।

कठी'क नुं ऊठीयौ तरै चूंडै पैजार[1] भोपा री ले आगै धरी, तरै भोपै चूंडा नुं कह्यौ—तूं माहारी पैजार आघी करै सु आ बात जुगत री नहीं।[2] तरै चूंडै आपरी बीनती कीवी। कह्यौ—भूषां मरां छां, का तौ माहारी बदळी रावळजी नु कहै नै म्हारौ सलूक करावौ। पछै दिन २ तथा ४ आडा घात नै रावळजी सुं भोपै चूंडा री वीनती कीवी। तरै रावळ मालै कह्यौ—इण नुं हेठा घातो' [3] कुंही दुष रौ फळ छै। तरै भोपै कह्यौ—सालोड़ी थांणै आंपणौं फलाणौं रहै छै। तठै रावळ जो हुकम करै तौ चूंडा नु मैलां। मंडोवर मुगलां रौ थांणौ रहै छै, औ कांईक उपाध कीयां बिगर नहीं रहै। वेह कूट मारसी, विगरह उस विध[२] चूकसी। तरै मालै नीठ'रे हुकम कीयौं। भोपै कुहीक रोजगार कर नै चूंडा नै सालोड़ी थांणै मेलीयौ।

३५. चूडौ उठै गयौं, भाग जागीयौ। दिन-दिन बात रस आवती गई।[4] चांत्रडा देवीजी री सेवा राव चूंडै निपट घणी मांडी। मारग बहतौ तिण सुं दस गुणौ इधकौ बहण लागौं। रूपा री नदो बहण लागी। चूंडा नु वीभौ जुडतौ गयौं।[5] घोड़ां रजपूतां री जोड़ होती गई।[6] चूंडै आचार झालीयौ।[7] भुंजाई करणी मांडी।[8] नै त्याग देणौ मांडयौ।[9] चूंडौ वजवजीयौ।[10] रावळ माला नुं षबर हुई। तरै मालै भोपा नुं ओळंभौ[11] दीयौ। कह्यौ—एक वार सालोड़ी जावसां। तरै भोपै चूंडा नुं कहाड़ीयौ—रावळ मालौ उठे आवै छै। तूं डफोळ[12] किणी बात री राषे मती सादी भांत रहै। कांई डफोळ हुवै सु दिन ४ अळगी मेल्हे। पछै रावळ मालौ उठे आयौ तरै चूंडौं तौ पहला हीज जिसड़े सांमे[13] माला कन्है था गयौ थौ, तिण भांत हुई रहौ छै।

---

१. नाखो। २. आपे आप।

---

1. जूती। 2. युक्ति संगत नहीं। 3. इसे उपेक्षित ही रखो। 4. परिस्थितियां अनुकूल होती गई। 5. वैभव बढ़ता ही गया। 6. घोड़े और रजपूतों की संख्या बढ़ती गई। 7 राज्याचार प्रारभ किया 8. सेना आदि के लिए नियमित भुना हुआ खाना बनने लगा। 9. चारणो आदि को दान देने लगा। 10. चूडे की प्रसिद्धि फैली। 11 उलाहना। 12. मूर्ख। 13. जिस समय।

मालै आप दोठौ अठै तौ कुंही नहीं। तरै भोपै कहौ—म्हे तौ राज नुं पहली ही कहौ, राज पिण माहारौ कहै रौ इतबार मानीयौ नहीं। हिमै राज आंषां दीठौ, भलो बात हुई।

३५. रावळ पाछौ गयौ। वांसै चूंडै चांवडाजी रो सेवा इधकी-इधकी[1] कीवी, दिन २ कीवी। देवोजी चूडा नुं प्रसन हुई। चूंडा सुं देवीजी परतष[2] बात करण लागा। देवीजी चूंडा नुं कहौ—आज थी दिन चौथै फलाणी ठौड़ मारग में पोठोया[3] १० सोना रा भरीया आवसो, तिण साथे आदमी ४ मुसला छै, ऊपर फाटा गूदड़ा नांषोयां छै। नीचै छाटीयां[4] माहे सोनौ छै। थे उणां नुं मार नै उरो लेवौ। चूंडा नै देवीजी वताया तठै जाय पोठीया उरा लीया। मुसला मार नांषोया सोनौ थौ सु गड़कीयौ।[5] पोठोया १० लतां[6] सुधा रावळ माला नुं मेल्ह दीया। कहौ—इण नै म्हां उपाव[7] हुआौ। इणे लोह कीयौ[8] तरै इण नुं मारोया। वात आ हीज रही। सोना रौ कोई उडाव हुवौ नहीं।[9] चूंडा रै दिन २ साथ घोड़ा रजपूत री जोड़ हुती गई। देवीजी चूंडा नुं हुकम कीयो—तोनुं एक गढपती करसां।

३६. तिण दिन मंडोवर पातसाहो थांणौ छै, सिरदार मुगल अेबक छै। तिण दिन मारवाड़ माहे रैत[10] घणी कांई न छै। ठौड़ ठौड़ रजपूत वसै छै। इतरी तौ चौरासी कहाड़ै छै। तठै रजपूत वसै छै।

ईंदांरी चौरासी बहेळावसु, ईंदा री चौरासी कहावै छे।
एक सींधळां री चौरासी चोटीले झांवर सुं।
एक सांषलां री चौरासी गांव रेईया[1] सुं।
एक कौटेचां री चौरासी बाल्हरवा सुं[2] केलंण कोट।
एक आसायचां री चौरासी।

---

१. रयां। २. सीवलदहा सुं।

---

1. अच्छी से अच्छी, बढ़ बढ़ कर। 2. प्रत्यक्ष में। 3. माल की पोटें। 4. बकरी आदि के बालो की डोरीयो से बनी बोरी। 5. जमीन में छिपा दिया। 6. कपड़े आदि सामान। 7. झगड़ा। 8. शस्त्र चलाया। 9. बात फैली नही। 10. प्रजा।

३७. सु मुगल अेबक सारा रजपूतां नुं कहै छै–घोड़ां रै वासतै गांव गांव बेठ गाडा ५ सीताब लावौ ।[1] तरै सारा भेळा हुय नैं कहौ–म्हां माहे ईंदा बडेरा छै, अेह पहली आंणसी[2] तौ पछै सै कोई आंणसी । तरै मुगलां ईंदां नुं तेड़ाय मेलीया ।[3] तिण दिन ईंदां माहे वडेरौ राणो टोहौ छै । सारां ईंदां नै लेनैं मंडोवर अेबक कन्है आया । कांमदार सुं मिळीया । मिळ नै बीनती कीवी–म्हे हंसौ[4] मुकातौ[5] हुवै छै तिकौ तौ परौ देवां छां । वळे जांणौ सु रोकड़ देवां । तरै मुगल अेबक आ बात मानी नहीं । ईंदां दीठौ छूटां नहीं । अै माहारी लार पड़ीया ।[6] तरै षड़हरी गांव सारां री कर[1] गयौ । पछै षड़हरीया[7] गांव माहे आदमी ५०० जीनसालीया[8] बैसांण नै ल्यायौ । आगै रांणो टोहौ मंडोवर आया । अेबक नुं कहौ–थे पधार नै षड़हरीया देषौ, म्हे मुजरा लायक[9] भरी छै । तरै मुगल अेबक देषण आयौ । तरै अेबक नुं ईंदां कूट मारीयौ । डेरै मुगल छा तिणां नै फिर-फिर नै कूट मारीया । मंडोवर टोहै राणै आपरै वसु कीयौ ।[10] माल-बित सारौ संभाळ नै हाथ वसु कीयौ ।

३८. ईंदां सारां मिळ विचार कीयौ, नागोर तुरक छै, अठी रांणा छै, पातसाह छै । आ ठौड़ निपट सबळी ।[11] माहारै पांचे दिनां रहण री नहीं । तरै सारां बिचारीयौ–आज राठोड़ां रौ चढ़तौ कांटौ छै ।[12] रावळ माला रौ भतीजौ सालोड़ी छै । चूंडौ बीरमोत छै सु निपट वडौ रजपूत छै, दातार जुंजार छै । गढ़ चूंडा नुं दीजे । आ बात सारां री दाय[13] आई । तरै राणो टोहौ रायधवळ उगवडावत चूंडा कन्है सालोड़ी गया । उठै जाय गुदरायो–मंडोवर रौ गढ़ म्हे तुरक मार नै लीयौ छै । औ गढ़ म्हें राज नुं देवां छां । राज म्हारै धणी छौ ।

१. १०० कर ।

1. वेगार में प्रत्येक गाव से ५ गाड़ीयां शीघ्र लाओ । 2. लाएँगे । 3. बुलवाया । 4. खेत की उपज का निश्चित भाग जो कर के रूप में वसूल होता था । 5. रुपये आदि रोकड सिक्कों के रूप में लिया जाने वाला कर । 6. पीछे पड़ गये हैं । 7. घास लाने वाली गाड़ियां । 8. शस्त्र बन्द । 9. आपके नजर करने योग्य । 10. अधिकार में कर लिया । 11. बहुत महत्वपूर्ण, ताकतवर । 12. उन्नति पर हैं । 13. पसन्द ।

म्हे राज रा चाकर। तिण दिन तौ चूंडै पाछौ जबाब दीयौ नहीं। रात देवीजी रै थांन जाय सुतो। सुपना मांहै देवीजी हुकम कीयौ—थे मंडोवर ईंदा देवै छै सु उरी लौ। थांहांरौ इण ठौड़ वडौ परताप होसी[1]। पछै चूंडै बात कबूल कीवी।

३९. ईंदा गांगदेब वडावत[1] री बेटी लीला री नाळेर राव चूंडा नुं दीयौ। एक ईंदा बीनती कीवी—माहरां चौरासी गांव छै, तिण री राज तलाक पहै[2]। [2]रावळौ बेटौ पोतौ पांचै दीने कोई लोपै नहीं[3]। ईंदे आय बीनती की सु राव चूंडै मानी। सालोड़ी था राव चूंडै मंडोवर आयौ। पाट बैठां धरती रा सारा रजपूत तेड़'नै दिलासा कीवो। माल राव चूंडा रै सोनौ घणौ ही छै। बरस बीए[4] किणां कना मांगीयौ नहीं। जिणां रा गांव था तिणां रजपूतां नै राषीया नै सूना गांव था सु बसता कीया[5]। नै केईक आपरै षालसे कीया। आपरा चाकरां नै देता गया। बरस ४ हुवां साहबी जमी[6] तरे रजपूत आठ दस चोरासी थी तिणां मांहला आधा आधा गांव सषरा[7] हासल वाळा था सु तौ आप षालसै कीया। इण भांत सारी धरती हळवै-हळवै भोग घाती[8]।

४०. राव चूंडौ मंडोवर घणौ तपीयौ नै मंडोवर ही राजथान[9] राषीयौ। पछै राव चूंडौ मंडोवर भोगवतै नागौर षाटीयौ[10]। आप जाय नागौर राजथान कीयौ नै नागौर जाय बसीयौ। मोहिलांणी बूढा हुवां परणी नै डीडवाणौ पिण राव चूंडै लीयौ। नै मंडोवर इतरी पीढ़ी रहौ—

१. राव चूंडौ बीरमौत
१. राव रिड़मल चूंडावत[3]
१. राय कन्हा चूंडावत
१. राव सतो चूंडावत

---

१. ऊगडावत। २. कहावी। ३. 'ख' प्रति में चूडा के बाद कान्हा तथा सता है।

---

1. बल वैभव बढेगा। 2. तलका लो। 3. तोड़े नही। 4. दो। 5. बसादिये। 6. राज्याधिकार जमा। 7. अच्छे। 8. धीरे-धीरे सीधी अपने अधिकार में करली। 9. राजधानी। 10. जीत लिया।

४१. पछै राव चूंडे नै भाटीयां माहोमाह[1] अदावत[2] हुई। पछै राव केलण मुलतान जाय नै राव चूंडा ऊपर सलेमषान नै ले आयौ। राव चूंडौ आदमी १२ सु संवत १४२८ नागोर कांम आयौ। आप कांम आयौ नै कंवर नै काढीयौ। तरै राव रिणमल नैं चूंडै कह्यौ—येक बात तो कनां मांगु जो माहारी कही मानै तौ। तरै रिणमल कह्यौ—राज कहौ सु करसां। तरै चूंडै कह्यौ—टीको मंडोवर रौ थे कान्हा मोहलाणी रा बेटा नै देजौ। पछै रिणमल मंडोवर आय नै कान्हा नुं पाट बैठाण टीकौ काढ़ नै आप राणा मोकल कनैं मेवाड़ गयौ। तरै राणै सोभत रौ गांव धणलो कितरा'क गांवां सुं दीयौ। नै सलेमषांन राव चूंडा नै मार नै अजमेर जात फरमाण नै आयौ। मास १ अजमेर रह्यौ। पछै अजमेर सुं पाछो बळतो[3] सांडुडै आण डेरा किया। तरै राव रिड़मल साथ भेळौ करनै सलेमषान नै रातीवाहौ दियौ[4]। एक बात सुणी सलेमषान घणा साथ सुं मारीयौ। नै एक बात आ ही सुणी सलेमषान रौ साथ घणौ मरण गयौ।[1] नै सलेमषान भागौ। राव चूडा साथै काम आया—

१. पूना दोलोया री गहलोत

२. चूडां हरभु पांचाउत तोला रा पोतरो

४२. रिणमल तौ मेवाड़ जाय भाणेज राणा कुभां कनै नै मोकल कनै रह्यौ। नै कान्हौ चूंडावत राव नीमलौसौ[2] [5]हुवौ। पछै कान्हा कनै सेती चूंडावत राव रिणधीर चूंडावत मंडोवर षोस लीयौ[6]। नै सतो राव हुवौ। नै साहबी[7] री मदार सारी रिणधीर माथै। रिणधीर नै रावताई री खिताब छै। पछै रिणधीर भली भांत साहबी वरस पांच दस चलाई।

४३. सता रै वेटौ नरवद काळ-पूंछीयौ भंवराळौ हुवौ[8]। तिण रावत

---

१. मराणो। २. नीवलौसो।

---

1. आपस में। 2. दुश्मनी। 3. वापिस लौटते समय। 4. रात के समय हमला किया। 5. कमजोर। 6. छीन लिया। 7. हकूमत। 8. खराब लक्षणो वाला हुआ।

रिणधीर सुं अदावद मांडी। सासता[1] रिणधीर मारण रा चूक करै। पछै रिणधीर दीठौ अठै रहां फायदौ कोई नहीं। तरै रावत रिणधीर छाड अठा थी घणलै रिणमल कन्है गयौ। रिणमल रै मारवाड़ लेण री बात नहीं। नै कह्यौ–मोनुं राव चूंडै कह्यौ–थे मारवाड़ सुं असीबेध[2] मत करौ। राय रिणधीर जाय रिणमल नुं समझायौ–थानै राव चुंडै री भोळावण दी थी सु सतो कुण थकौं मंडोवर षाय। पछै राव रिड़मल नुं रिणधीर बळ वधांयौ[3]। नै राणा मोकल कनै ले गया नै उठै जाय बिनती कीवी–जु दीवाण ऊपर करै[4] नै मदत साथ दै तौ म्हे सता कनै मंडोवर उरो लां। तरै दीवांण बात कबूल कीवी, सीरोपाव घोड़ौ फौज असवार १००० मदत दीया। और साथ राव रिड़मल रिणधीर आपरौ कीयौ नै मंडोवर ऊपर आया। तरै सतो तो अण बीढियो[5] ही नीसर गयौ, नै लड़ाई १ मंडोवर था कोस ४ नरबद साम्है आय नैं कीवी। नरबद घांवां पड़ीयौ[6] नै नरबद री आंष १ गई। सीसोदियां री फौज नुं मंडोवर आंणीया ही नही। ईणां नु अठा थी ही सीष दीवी।

४४. सीसोदिया घणौ बुरौ मांनीयौ। जातां नरबद नुं उपाड़ नै मेवाड़ रा धणी राणा री हजूर ले गया। नरबद घावे साजौ हुऔ। रांणै[7] रौ चाकर हुवौ। राव रिणमल मंडोवर वापरी थी भौगवै छै। नै रांणै रो ही पटौ भोगवै छै।

४५. तिण समै रांणा मोकल नुं पूछ नै सीसोदीया चाचे मेरै पई रै भाषर उपर घर कराया। राव रिणमल राणा मोकल नुं पुछणा माहे छै। एक दिन एकंत रांणा मोकल नुं समझाय नै कह्यौ–चाचा मेरा रा घर इण मगरै मांहे हुवा तरै मगरा रा धणी थंहांरा छोरू[8] नहीं। मगरा चाचा मेरा रा छोरूवां नुं[1] ऐकळिंगजी[9] आ जायगा दीवी।

१. वानुं।

1. लगातार। 2. दुश्मनी, झगड़ा। 3. हिम्मत बंधाई। 4. हिमायत करें। 5. बिना युद्ध किये ही। 6. घायल हुआ। 7. ठीक हुआ। 8. वंशज। 9. एकलिंगजी महाराज।

तरै रांणै मोकल ही दीठौ जु आ बात सांची छै कही। तरै, रांणै मोकल चाचा मेरां नुं कही–आ थांहरा घरां लायक ठौड़ नहीं। थे थांहारा पटा रा गांव छै तठै जाय रहौ। तरै चाचे छांडतां[1] ढील ढाल कीवी। तरै रिणमल नै साथे मेल्ह नै हाथियां कन्है[2] घर पड़ाया। तरै वेह वळे रहै छे[3]।

४६. तितरै एकण दिन राणौ मोकल कठै'क गयौ थौ। भाड़ १ असौंधौ[4] दीठौ तरै किण हीक फुरमायौ[1] नै रांणा नै पुछीयौ दीवाण इंण भाड़ रौ नांव कासुं छै ? तरै रांणै कहौ–म्हे तौ जांणां नहीं काकोजी जाणंता होसी। सु उवै षांतण रा पेट रा था, सु उण वात रौ पण उणां घणौ दरद राषीयौ[5]।

४७. षीची अचळदास भोजावत ऊपर गागरण पातसाह मांडव रौ[2] आयौ छै। सु अचलदास रांणा मोकल रै जंवाई छै। सु राणा जी कनै आदमी आया छै। सु दीवांन उठा नुं चढ़ण री तयारी करै छै। तरै दीवांण राव रिड़मल नुं कहौ छै–थे मारवाड़ जाय साथ ले आवौ। राव रिणमल कहै छै–हूं दीवांण था इण बेळां में अळगौ नही होऊं। तरै दीवांण घणीज हैत कीवी तरै राव रिड़मल कहौ–म्हे चाचा मेरा रौ इसड़ो घाट देषां छां,[6] अै आज सुहार माहे थांनुं मारसी। तरै राव रिणमल नुं दीवांण कहै छै–थे तौ चालौ। तरै राव रिणमल कहौ–म्हे थांनुं पांणी देनै[7] चालां छां। राव रिणमल मारवाड़ नुं चढ़ीयौ। बांसै कीतरैहेक दिनां पछै रांणै मोकल बाघौर[3] डेरौ कीयौ। तठै चाचै मेरे दीवाण रा डेरा ऊपर आवण री तयारी कीवी छै। तरै बाघोर रै भाट दीवांण नुं आय कहौ–चाचा मेरां रौ साथ सीलहै पहरै छै।[8] तरै राणै ही जाणीयौ जु राव रिणमल बात कही थी सु सांची हुई। रांणा नुं किणहीक कहौ–राज नीसरौ[9]। तरै दीवांण कहौ–हूं

---

१. पूरबिये राणा नू पूछियौ। २. माडव रौ (प्र.) ३. वगोर।

---

1. जगह छोड़ते समय। 2. से। 3. जलते है। 4. अनजान। 5. बहुत बुरा महसूस किया। 6. ऐसा ढंग देखता हूं। 7. जलांजलि देकर। 8. शस्त्र-बदी कर रहे है। 9. भाग जाओ।

षांतण रा बेटां आगै काय नीसरूं । तरै कंवर कुंभै नुं काढीयौ[1] । कुंभौ चीतोड़ पोहौतो[2] । रांणा मोकल नुं चाचै मेर उजळै घावां मारीयौ[3] । नै चीतोड़ जाय घेरियौ । राव रिणमल नुं कुंभै षबर मेलवी[4] — दीवांण नुं तौ मारीयौ नै मोनुं इण भांत घेरियौ छै । थे मों मारियां ऊपर बेगा आवजौ ।

४८. राव रिणमल नागौर था, उठै कुंभा रा आदमी आया, राव रिणमल समाचार सुण नै खान-पांण री सुस लीवी[१] । तुरत चार हजार असवार सुं चढ़ीयौ । राव रिणमल घोड़ां नै कूटतै लांजणै आयौ[5] । चाचो मेरौ चीतोड़ छांड नै पई रै मगरै चढीयौ । भाषर सझीयौ[6] । राव रिणमल भाषर घेर नै चाचो मेरो मारीयौ । सीसोदियां री बेटी[२] बरछां री चंवरी कर नै राठोड़ आपरै दाय आवणी[7] परणीया । मालबित पारपषौ[8] लुटीयौ । रांणा कुंभा नुं चीतोड़ धणी कीयौ । चाचे मेरै री फोज जठै जठै[9] हुती सु कूट मारी ।

४९. चीतोड़ धणी रांणो कुंभो, हाल हुंकम सारो राव रिणमल रौ छै । राव रिणमल साहबी बणाई छै । रावजी रौ साथ भाई बेटां असवार ७०० सात सौ तलैटी[10] र'वै छै । आप राव रिणमल कुभा रांणा री दोढी[11] सोवै छै । सीसोदीया बडेरा छांड ने चूंडा सारीषा था सु मंडाव[३] गया, बीजा मन मठा हुई[12] रहा छै । रांणा नुं सगळौ मेवाड़ रौ लोग भषावै छै[13] । मेवाड़ री साहबी[14] सीसोदीयां रा घरां सुं गई । राठोड़ां हेठे साहबी आई । काहे'क वाहर करौ[15], सीसोदीया री बेटी बरछां री चंवरी कर दांय आई तिण राठोड़ परणी सु ईंण बात मांहे आपणौ घणौ भंडी दीठौ[16] । ईण भांत भषावै छै । तरै कुंभै पिण

---

१. धंन खाण री सुस खायौ । २. वेटियां । ३. मांडवे ।

---

1. वहां से निकाल दिया । 2. पहुचा । 3. सहज ही मे शस्त्र से प्राणान्त कर दिया । 4. भेजी । 5. बिना ठहरे लगातार घोड़े दौड़ाता हुआ आया । 6. पहाड़ को सुरक्षित किया । 7. पसन्द आई जैसी । 8. खूब । 9. जहां-जहा । 10. किले से नीचे । 11. डयोढी । 12. मन को कुंद करके । 13. सिखाता है, कहता हैं । 14. हकूमत । 15. कुछ तो उपाय करो । 16. अपनी बहुत अप्रतिष्ठा हुई ।

बात कबूल कीवी । मांडव था छांनां चूंडौ लषावत सीसोदीयो तेड़ीयौ[1] । महैपौ पंवार तेडीयौ । राव रिणमल सूतां नुं ऊपर डोरां सु बांधे ने नजाणर[2] ५[१] घाव कीया इतरै घाव लागै ही राव रिणमल सीरांणा सुं[3] कटारी ले नै वाही, राव मारीयौ । तठै भाः सता लूणकरणौत रौ गीत—

पूगी मांळीयां मंडलीकं ।
पूगी आभ लगे उभांईं ।।
लूणकरणोत तणी थई ।
लंबी कलहण बार कटारी ।।१।।

पोहर एक रीड़मा पहैली ।
पाय षांडूधर पषाळी ।।
लाग अवासां कुंभे लांगी ।
मांडधणी परतमाळी ।।२।।

उंचा गोषां बीच आवसां ।
आहाड़ो रै आधी ।।
तेण परजाळ सती ते षीली ।
बीजळ हुतां बांधी ।।३।।

५०. सु तिण[२] भुरज ऊपर चढनै राव जोधा रा डेरा ऊपर साद कर कहौ – थांकौ रिणमल मारियौ जोधा नास सकै तौ नास[4] । राव जोधा रै पिरा नीसरण री तयारी हुती । राव रिणमल साथ कांम आया—

१. भाटी सतौ लूणकरन हमीर रौ ।
१. रा. रिणधीर सुरावत सूर कान्हो चुडो[४] ।
१. बींजो बीकमादित राजगपाळ ।

---

१. २५ । २. राव रिणमल रा रजपूत अेकण सुं किण ही छोकरी सुं हालंवो थो सु तीरा । ३. सूर कान्हा उत रौ ।

---

1. बुलाया । 2. नेजाधारी । 3. सिरहाने से । 4. भाग सके तो भाग ।

५१. रा. भींव चुंडावत दारू पीयां सुतौ थौ सु उठै नहीं। घड़ी षांड भांव जगावण नु षसीयां[1], भींव चूंडावत जागे नहीं। तरै भींव नै सूतौ मेल नै[2] नीसरिया। जोधै चढ़ षड़ीया। नै रांणा रौ साथ बांसै लागौ आयौ[3]। सु चीतोड़ थी कोस ८ तथा १० मांहे बेढ़ १ हुई तठै असवार २०० जोधा रा कांम आया, नै आदमी ५०० रांणा कुंभा रा कांम आया। नै बेढ १ एक चीतोड़ थी कोस ३० उपरां हुई तठै कितरो ही सांथ कांम आयौ। लड़तां विढ़तां सौमेस्वर रै घाटै जोधौ आयौ। अठा सुधा[4] असवार २०० तथा २५० जोधा साथे छै। जोधौ घाटै सुधौ आयौ तरै सीसोदीयां री फोज जोधा नै घणौ दबायौ। जांणीयौ घाटै उतरीयौ[1] तौ जोधौ कुसळे घरां गयौ। नै राठोड़ां दीठौ राव रिणमल नु तौ मारीयौ नै जोधौ माराणौ तौ माहारी साहबी सारी ही जावै छै[2]। तरै बिचार नै बडा-बडा राठोड़ां घाटां ऊपर पागड़ा छांडीया[5]। नै जोधा नु कुसळे घाटौ लंघायौ[6]। रा. बरजांग भींवोत पूरै घावां पड़ीयौ[7]। षौळां ऊपड़ौयौ रा. चरड़ो[3] चांदराव अरड़कमल चूंडावत रै बेटौ रांणौ पीथौ, ईंदो पोकरणो, सीवराज ओर घणौ साथ कांम आयौ। असवार सात सुं कहै छै, जोधौ घाटै पार कुसळां ऊतरियौ। अठै घणौ चकारौ पड़ियौ[8]। वाढीयां री आरेण हुई[9]। राणा री फोज ही घाटा थी रिण सोझ नै[10] बरजांग भींवोत नुं उपाड़ नै[11] पाछा बळीया। राव जोधौ मंडोवर आया। तुरत आपरौ थौ सु लेनै बीकानेर दिसी[12] आगै जांगळु सांषलो नापौ मांणक रावउत मांडौ धणी छै, तिण री बेटी नापा री नांरगदे सांषली बीका बीदा री मा परणी हुती, सु तिण परसंग एक वार उठी गया। भाटीयां केलणां सुं पिण सगाई थी।

५२. बीकानेर परै कोस ७ पूंगळ रै मारग काहु नी छै, तठै जाण रौ

१. लघिया। २. पार पड़ी। ३. चूडो।

1. प्रयत्न किया। 2. सोता हुआ छोड़ कर। 3. पीछा करता हुआ आया। 4. यहां तक। 5. घोड़ों से नीचे उतरे। 6. सकुशल घाटे से पार उतार दिया। 7. अत्यधिक घायल होकर गिरा। 8. दूर-दूर तक युद्धक्षेत्र हुआ। 9. जंगल लाशों से भर गया। 10. झाड़ी में ढूंढ़ कर। 11. उठा कर। 12. की ओर।

बीचार कियौ। राव रिणमल रै बारीया री किरीया[1] कोड़मदेसर तळांव हमें छै तठै कीवी। राव जोधा रा हुता सु सारा काहु नी आया[2]।

५३. रांणै कुंभै मारवाड़ लेण नुं वांसा करण इतरौ साथ मेलियौ। रा. राघवदे सिहसमलोत, सहेसमल चूंडावत नुं ग्रासीयौ जाण चाकर राषीयौ। सोझत इण नुं पटै दीवी। सोझत मांहे लषमीनारांइणजी रौ देहुरौ छै। जोधपुर फळसै इण रौ तणा दिन रौ करायौ छै। साष जोधायण[1] रौ दूहौ—

राघवदे सु मेंल्हीयो, कुंभकरण दळ चाड़॥
मंडोवर वास करण जी, कुसतत मेवाड़॥

५४. मुदौ सारौ आका सीसोदीया, हींगलौ आहाड़ा, रेणायर मुहतां ऊपर छै। रा. नरबद सतावत सतो चूंडावत रा नुं कायलांणौ घणौ गांव सुं देनै चाकर कर इण साथे मेलोयौ—जोधौ वेगौ मरावौ[3]। जोधौ मारीया म्हे थांनुं मंडोवर देसां। रांणै रौ वडौ थांणौ आय मंडोवर बेठौ मंडोवर वसीयौ चोकड़ी रै थांणै रावत राठौड़ रायवदे[4] सहस-मलोत नुं राषीयौ।

५५. १ झालो १. सोढो १ घोड़रो[3] भा. वणीर पुनावत पुनौ बीसलदे रौ, बीसलदे रायल दुदा रौ, पिण इण थांणे माहे छै। बोजा ठौड़२ थाणां राषण री ठौड़ थी अठै थाणो राषीयौ, धरती आधीहेक वसी। राव जोधो सामान सुं लतुर[4] गयौ। भाई म्हाना थां जोर बीपत छै[4]। तौ ही राव जोधो काहु नीं थको दौड़ धाव करै छै[5]। पण पाधरौ कांम कोई नहीं आवै छै। बरस १२ बारै राणा रै धरती रहो। बेळां एक तथा दोय राय जोधा ऊपर फोज नरबद आगे होय नै

---

१. जोधाणीयारी। २. राघवदे। ३. धवेचो। ४. सामान सूं सुल तूट।

---

1. राव रिड़मल की मृत्यु के बारह दिन पूरे होने पर क्रिया कर्म आदि। 2. सभी लोग नही आ सके। 3. जोधे को शीघ्र मरवाओ। 4. अत्यधिक विपत्ति है। 5. दौड़ भाग करता है।

ले गयौ। उठै एक वार राव जोधौ नीठ नीसरीयो। गुढो सारो लूटाणौ।

५६. औ करतां राव जोधौ भाईपण मोटी कीवी[1]। भाई आप भेळा हुवा। भेळा होय बिचार कीयौ। आंपे धरती गमाई, धरती वाळां[2] सु मांमूर नहीं। तरै सेतरावा रावत लूणौ, राजावत राजो देवराजोत रा घोड़ा १४० तिण दिनां छै। सु राव जोधै धरती वाळण रौ बिचार कीयौ। काहू नी थी[3] चढ नै सीरहड़ भाटीयां री आया। तिण दिन सारी धरती माहे दुकाळ पड़ीयौ छै। धांन कठैहो नहीं छै। सु सोढी मुलवाणी[1] वडी सतवादण छै, रजपूतांणी थी। तिण रै पिराहुणा होया, नै उण मजीठ री लापसी कर नै जीमाई। पछै फळोधी रै परगनै कसब थी कोस ५ पांच सांषलो हरभु महैराजोत तिकौ पिण रहै छै, सु कमाई रौ धणी छै[4] तिण नुं पहली करामात थी षबर हुई छै। सु हरभु पहली सारी जीमण री तयारो कीवी छै। घणी मूंग बाजरी रौ षीच रांद दाळ रोटीयां पहैत षीर गोरस सारौ तयार कर नै राषीया छै। नै पांतीया दीया छै। नै बाजां[5] ऊपर धरी छै। तितरै राव जोधौ आयौ। आय हरभू साह सुं जाय मिळीया नै कहौ–पड़वै माहे साथ सुधा पधारौ। माहै जातां सुधां पांतीये बेसांणीया, बडी भगत कीवी।[6] धांन मिळीयां दिन ४ तथा ५ हुवा हुता। जितरा मैं धांन धाया हुता। षीर षांड गोरस सारी बातां तिरपत[7] हुवा हुता।[7] राव जोधौ हेरान हुवौ। हरभू नै[3] किणी भांत आगै षबर हुई। माहौ-माह[8] बात करण नुं लागा। तरै सारां ही कहौ–हरभू पीर छै, इणमें वडी करामात छै। इण नुं सारी षबर पड़ै छै। तरै राव जोधै हरभू नुं पूछीयौं–हरभूजी थे तौ कमाई रा धणी छौ, थांसु कांई बात छांनी नहीं छै, कदे'क माहारौ दिन वळसी[9], कदेक माहारी

१. मुलाणी। २. आपत। ३. हरभंम नु।

---

1. भाईचारा रखने वालों की सख्या बढाई। 2. वापिस लें। 3. बिना किसी सेना के। 4. ईश्वर का कृपापात्र है। 5. खाना खाने की चौकी। 6. बड़ा स्वागत किया। 7. तृप्त हुए। 8. आपस में। 9. कभी हमारे दिनमान अच्छे आयेंगे।

धरती वळसी ? तरै हरभू कह्यौ—जोधा थारौ आज सुं दिन वळीयौ । थे पागड़ै पग देवौ ।[1] म्हारा मूंग थांहरै पेट माहे थकां जितरी धरती माहे घोड़ौ फिरसी तितरी धरती थांरी । बेटां पोतरां सुं कदे धरती जावसी नहीं ।

५७. राव जोधै सेत्रावै जाय रावत लूणा कन्है घोड़ा १४० मांगीया उणे दीया नहीं । तरै घोड़ा १४० पलांण सुधा मांडै लूणे री बेर रै भेदे लीया[2] चढ नै आथण रा षड़ीया । रात घड़ी २ थकां मंडोवर था नजीक आया, ऊभा रहा । तद मांगळीओ काले मंडोवर रौ हेरा चारौ कीयौ ।[3] इण रै कोई सगो थौ तिण रै डेरै आदमीयां २ सुं जाय रह्यौ । एक जणै पोळ रौ कींवाड़[4] षोलीयौ नै कह्यौ—मोनुं आकेजी फलांणै कांम मेलीया छै सुं सोताबी[5] पोळ षोलौ । तरै एक जणौ मांहेसी कांनी पोळ रै मुंहडै ऊभौ रह्यौ छै । नै राव जोधा नै जाय षबर दीवी—बेगा आवौ सारा अमल ऊतरीयां[6] सूता पड़ीया छै । राव जोधौ आय पोळ रै नजीक जेळ कर नै कोट माहे आदमी चारसै सुं पेठौ । हींगोळौ अहाड़ौ मारीयौ । मुः रेणायर ही जोधौ रेणीयो[1] आको सीसोदीयौ बीजौ घणौ साथ मारीयौ । तिण हींगोला आहाड़ा री छतरी १ बाळसमंद ऊपरै छै । राणा रौ साथ अठा रौ मार, भर भरत[2] [7] मंडोवर हाथ आयौ के राणा रौ साथ नाठौ छै । राव जोधौ एक आपरौ भाई कोई बीजो साथ मंडोवर राष नै चौकड़ी रौ थाणै रावत रा.[3] घोड़ा सैसहसमलोत और भाटी वणवीर को झालो सोढौ सीसोदीया था तिणां ऊपरा षड़ीया । दिन पौहर १।। चढतां चौकड़ी रै थांणै नुं झूब्रीया[8] रावत राघवदास नै और राणा रौ साथ नीसरीयौ भा: वणवीर कांम आयौ । कौसांणै रा थांणा रा घोड़ा जीनसाभ सारौ सामान राव जोधा रै हाथ आयौ । राणै रौ साथ नीसरीयौ

---

१. रणियौ । २. भार भरथ । ३. राघव दे ।

---

1. घोड़े पर चढ़ो । 2. स्त्री के भेद से प्राप्त किये । 3. गुप्त रूप से पता लगाया । 4. दरवाजा । 5. शीघ्रता से । 6. अफीम के उतरे हुए नशे में । 7. सारा माल-ताल । 8. हमला किया ।

तिणै वांसै सोझत री तरफ नुं राव जोधौ हुवौ। मेड़ता री तरफ अजमेर दिसा रा कांधल रिड़मलोत नुं फोज दे नै मेलियौ। राव जोधौ सोझत माहे कर नै इणां साथ सुं वांसौ कीयौ।[1] गांव घणा ले सुधा आय आपड़ीया सु मार नै वाग षांची[2], तीजो दिन हुवौ, धांन षाधां नुं। तीसरै दिन धणलै वळ कीवी।[3] रा: कांधळ मेड़ता दिसां वांसौ कीयौं थौ सु भैरूदा ताउं वांसौं कीयौं नै आपड़ीया। आपड़ नै मारीया, मार नै वळ कीवी। उठा थी कांधळ ही पिण पाछा वळीया। राव जोधौ ही आप पाछौ आयौ। सोझत डेरौ कीयौ। रा: कांधळ नुं पण सोझत बुलाय लीयौ। सारा राठोड़ भेळा हुवा वड़ी फतै हुई। वडो उछाह[4] हुऔ। पछै सारा ही राठौड़ां बिचार करनै, राव जोधै सोझत बास कीयौ। बरस २ सोझत रहा, पछै मंडोवर थाणौ राषीयौ।

५८. पछै एक वार राणौ कुंभौ सारौ साथ मेवाड़ रौ भेळौ कर नै[5] पाली आय ऊतरीयौ। राव जोधा नुं षबर हुई। तरै राव जोधा रै घोड़ा थोड़ा हुता। तरै गाडा हजार २०००, राठोड़ हजार १०००० मरण रै मतै हुवा।[6] नै डेरा पाली रै ऊपर राव जोधै जाय कीया। तरै राणा नुं षबर हुई–जोधौ गाडै बैठ आयौ छै। सु इण बात रौ सोच हुवौ। तरै सारा ही सीसोदीया दरबार भेळा कर नै सगळां नुं पूछीयौ–राव जोधौं गाडै बैठ इण मतै आयौ छै। तरै सारा ही बिचार कहौ–राव जोधौ गाडै बैस आयौ तिण रौ भाजण रौ मतौ[1] नहीं।[7] अै दस हजार आदमी मरतां काहू जांणां कांई'क करसी। तरै राणौ राव जोधा आवतै पैली ही नीसर गयौ।[8] तरै राणै कुंभा रा डेरा री ठौड़ राव जोधै डेरा कीया। सैदांना जैत रा[9] राव जोधै बजाड़ीया। पछै वळै पाली रौ साथ सगळौ ही भेळौ कर नै राव जौधै सारी

---

१. मंड।

---

1. पीछा किया। 2. घोड़ों को चलाया। 3. अधिकार में। 4. खुशी। 5. शामिल करके। 6. प्राणोत्सर्ग के लिए तैयार हुए। 7. भाग कर वापिस जाने का विचार नहीं है। 8. प्रस्थान कर गया। 9. विजय के बाजे।

गोढ़वाड़ मारी[1], नै लूट लीवी। पछै मेवाड़ मार नै पीछोळै घोड़ा पाया। तिण समीया री नीसांणी :—

तें सिर किण ही न निवावतां तें छत्र न वाधा ।।
जाळोरी जौषमत जें वळ भोजे लाया ।।
कछहावां अरू भाटीयां नाळेर पठाया ।।
बूंदी नाळबंदी दीये राव रिड़मल जाया ।।
घाणौराव उजड़ किया गुदौच बसाया।
सतरेचां अर सिरोहीयां सिर आंक सहाया ।।
धर तेती राणां धणी धर तेती धाया ।।
किया पंवाड़ा राठवड़ चंद ढाढी गाया ।।
जोधे जंगम आपरा पीछोळै पाया ।।१।।

पीछोळै घोड़ा पाय नै डेरा कीया। सहर उदेपुर तद बसती नहीं थी। पछै चीतोड़ ऊपरै चलाया। नै चीतोड़ री तळहटी सारी मारी। राणौ कुंभौ गढ़ री पोळ जड़ नै माहे बैस रहौ।[2] तरै राव रिणमल रै माळीये राव जोधौ जाय नै कांध निवाई।[3] बडौ दावौ काढ नै पाछा सोभत आया नै मंडोवर बापौती[4] हुती सु षाटवी।[5] नै राव रिणमल रा वैर माहै राणा री धरती इतरी राव जोधै दावी। माहौ-माह आमा सांमा बसीटाळा फिरीया।[6] तरै अठा री आंवळ आंवळ राणा रा[7] नौ बांवळ बांबळ रावां रा[8] तिण दिन री आ केहावत[9] छै। तठा सुं षत री साल सुं सोभत जैतारण राणा री थी सु राव जोधै रिणमल रा वैर माहे राणा नुं दवाय नै जोधपुर वांसै घाली[10] सु सोभत जैतारण जोधपुर वांसै इण तरै सुं पड़ी छै।

---

1. हस्तगत की। 2. अदर बैठ गया। 3. श्रद्धा पूर्वक नमन किया। 4. वंशानुगत संपत्ति। 5. जीती। 6. अंदर ही अदर वहां के लोग समझौता कराने के लिए आने जाने लगे। 7. इस तरफ की धरती में जहां तक आंवले के पेड़ है वह राणा की। 8. बबूल वाली सारी धरती राव जोधा की। 9. कहावत। 10. जोधपुर के शामिल कर ली।

५६. राव रिणमल नुं कुंभै मार नै लोथ पड़ी राषी दाग देवण दीयौ नहीं।[1] तिण समैं चारण १ चांदण षड़ीयो लुबट[1] रौ बेटौ पाघड़ी गांव सुराचंद री राणे मोकळ कन्है आयौ रांणे गांव २ मेवाड़ रा देनै राषीयौ थौ।

१. कचुंबरो १ गुलछरो

पछै चांदण षड़ीये मरण री अषतीयारी कर नै[2] रिणमल री लोथ उपाड़ नै दाग दीयौ। पछै फूल गळै बांध नै गंगाजी ले गयौ। पछै चांदण मेवाड़ कोई गयौ नहीं नै मारवाड़ आयौ। तठा पछै षड़ीया चांदण रा बेटा पोतां नुं नै आप नुं राव रिणमल रा बेटां पोतां इतरा गांव उण उपगार[3] रा दीया।

राव जोधौ षिड़ीया चांदण नुं गांव दीया—

१. परगना जोधपुर रा—

१ संषड़ी जोधपुर रौ पैरवा रीं।

१ जाजीवाळ भींवा वाळी तिका मोटै राजा लोपी।

२. परगना सोझत रा—

१ गांव बींठोरो षुरद १ गांव गोधेळाव।

राव उदैसिंघ[2] जोधावत रा दिया गांव मेड़ता रा—

१. गांव कांवलीया तफै अणंदपुर षड़ीया धरमा चांदणौत नुं दीयौ।

१. गांव षंडाड़ी तफै अणंदपुर षड़ीया लुंभा चांदणोत नुं दीयौ।
राव सीहै सेतरांमोत दीया दत्त प्रगनै मेड़ता रा गांव—

१. मोडरीयो तफै मोडरै षड़ोया सीहा चांदणोत नुं दीयौ।

राव मालदे रौ दत्त मेड़ता रौ गांव १ मोहलावास तफै अणंद-पुर षड़ीये सूरै अचळावत नुं।

---

१. लुषट। २. बरसीघ।

---

1. दाह-संस्कार नही करने दिया। 2. जोखम लेकर, निश्चय करके। 3. उपकार।

६०. राव जोधौ पड़िहारां री भांणेज पड़िहार जेसल राणा सु पड़िहारां री बेटी हंसा बाई रा पेट रौ जायौ। संवत १४७२ रा बैसाष सुद ४ बुधवार रौ जनम छै। नै संवत १५१२ रै टाणै सै धरती पाछी वाळी।[1] पछै संवत १५१५ रा जेठ सुद ११ सनीवार सवात नषत्र[2] बीरष लगन[3] चिड़ीया टूंक रै भाषर ऊपर गढ़ मंडायौ। राव जोधा रै इतरी धरती, परगना छै।

१ जोधपुर १ मेड़तो १ सोझत १ जैतारण १ जांगळु बीकानेर री।

६१. एक बात आ सुणी छै–राव रिणमल नुं राव राणगदे पूंगळ रै धणी चूंडा रा बैर माहे[4] परणायौ थौ। तिण रौ नांव कोड़मदे थौ। तिण रा पेट रौ राव जोधौ छै, सु कहै छै।

६२. तठा पछै इतरी पीढीयां इतरा बरस भोगवी छै। संवत १५१५ रा जेठ सुद ११ सनीवार गढ मांडीयौ राव जोधै, नै सं: १५४१ राव जोधै काळ कीयौ।[5] बरस २६ छाईस राव जोधै जोधपुर राज कीयौ। भायां नै धरती बास[6] गांव बांट दीया। तिण री विगत—

१. रा: अषैराज रिणमलोत नुं प्रा० सोझत रो बगड़ी सा: चरड़ा तद धणी थौ सु अषैराज चरड़ा नुं मार नै बगड़ी लीवी।

१ रा: चांपौ रिणमलोत नुं कापरड़ो बणाड़।

१ रा: डूंगर रिणमलोत नुं भाद्राजण सींधलां रौ उतन।[7]

१ रा: बाला भाषर रा नुं षरला[1] साहली षारड़ी।

१ रा: रूपौ रिणमलोत नुं चाडाल[2] हुवा[3] रौ उतन।

१ रा: मंडला रिणमलोत नुं सांडुड़ो बीकानेर रौ।

१ रा: करना रिणमलोत नुं लुणावास।

१ रा: पाता रिणमलोत नुं करणु।

---

१. षेरला। २. चाडी। ३. लहुआं।

---

1. पुनः प्राप्त की। 2. स्वाति नक्षत्र। 3. वृष लग्न। 4. चूंडा के बैर के बदले। 5. प्राणान्त हुआ। 6. बसा कर। 7. वतन।

१ रा: वैरा रिणमलोत नुं प्रा: सोझत दुधवड़ ।

१ रा: जगमाल रिणमलोत मोटीयार.थको मुवौ ।[1] तिण रै बेटौ षेतसी तिण नुं गांव नेतड़ां ।[१]

६३. राव जोधै आपरा बेटां नै धरती दीवी तिण री बिगत–१ राव सातल सूजौ जसमादे हाडी रांणो रा पेट रा नुं जोधपुर दीवी ।

१ नींबो जोधावत सु टीकायत थौ ।[2] जसमादे हाडी रा पेट रौ सु राव जोधै जीवतां सींधल जेसौ मारीयौ तद घाव लागौ थौ । पछै एक बार घाव साजो हुवौ[3] थौ । पछै घाव फेर ऊपड़ीयौ[4] तरै मुवौ । बेटौ नीबा रै कोई नहीं । सोझत री भाषरो ऊपरलौ कोट नींबा रौ करायौ छै । प्रा: फळोधो री बावड़ी २ नीबा रौ दत प्रोहतां नुं छै ।

वरसंघ दुदो[२] जोधावत सगा भाई सोनगरी चांपां सोनगरा षींवा सतावत री बेटी तिण रै पेट रा, तिणां नुं मेड़तौ दीयौ ।

२. बीका बीदा जोधावत नै सगा भाई सांषली नारंगदे रा पेट रा राणा मडाजेतसोत[३] री बेटी रा । तिणां नुं बीकानेर जांगळु दीवी । राव बीकौ टीकै बैठौ । नै बीदा नुं लाडणु दूणपुर मोहलां री धरती गांव १४० सुं दीवी । राव जोधौ गया गयौ । तद राव जोधौ जीवतां नारंगदे भाग री कूंडी कुराय[5] नै गंगाजी में जळ प्रवेस कीयौ ।

२. भारमल जोगो जोधावत सगा भाई जमना हुलणी रा बेटा । हुल बणवीर भोजावत रा दोहीता । इणां नुं कोढणौ ऊहड़ां वाळौ दीयौ ।

१. सिवराज जोधावत बाघेली वना रौ बेटौ बाघेलै उरजन भीमराजोत रौ दोहतरौ छै । तिण नुं राव जोधै एक वार सीवाणौ जैतमाल वाळौ दीयौ थौ । पछै सवराड[४] रा गाडा दुनाड़ै पहौता । तितरै देवीदास राणे राव रौ थाणौ मार नै गढ़ लियौ । पछै राव जोधै नुं आ षबर हुई तरै सिवराज नुं दूनाड़ौ दीयौ ।

---

१. नेतड़िया । २. ऊदो । ३. माडासिघोत । ४. सिवराज ।

---

1. जवानी में ही मर गया । 2. टीके का हकदार । 3. ठीक हो गया । 4. उघड़ गया । 5. विशिष्ट धार्मिक संस्कार ।

२. करमसी रायपाल जोधावत सगा भाई भटीयांणी पूरा[1] रै पेट रा, राव बैरसील चाचावत भाटी रा दोहीता। तिणां नुं राव जोधै नाहाढसरौ दीयौ थौ। पछै इणां जाय नै नागोर रा सल्हैषान[2] नुं आपरी बेहन भार्गा परणाई। सल्हैषांन आसोप षींवसर साळा कटारी[1] रा दीया था सु जोधपुर वांसै पड़ाया। तद रा जोधपुर लारै पड़ीया छै। संवत १५२१ रा चैत बदि १२ प्रौः दमां हरपाल रा नुं गांव तिंवरी दत्त माहे दीवी। लुढावस, मथाणीयौ. बडीपण बारट गया दत्त माहे दीया छै।

६४. राव सातल जोधावत, जोधै काळ कीयां संवत १५४१ पनरै सौ इकताळीसै, जोधपुर पाट बैठो।[2] बरस ४ चार राज भोगवीयौ नै संवत १५४५ रा सातल काळ कीयौ। वेढ एक कुसांणै अजमेर सुं बाईतु मलुषांन हुतौ, मांडव रै पातसाह रौ उमराव, तिण सुं कीवी। आ वेढ[3] वरसिंघ जोधावत सांभर मारी। तिण ऊपर मलुषांन चढ मेड़ते ऊपर आयौ। तरै बरसिंघ दूदौ जोधपुर आय सातल भेळा हुवा। मलुषांन फौज लीयां वांसै हुवौ आयौ।[4] सारी जोधपुर री धरती मार नै कोसांणै तळाव ऊपरै ऊतरीया। अठै राव सातल सुजै वरसिंघ दुदै भेळा हुय नै रातीबाहो दीयौ।[5] राः बरजांग भींवोत रौ घणौ साथ भेळौ[3] हुवौ। बरजांग नै गांव भावी तद सुं पटै दीवी। इण वेढ माहे राव सूजो पूरै घावां पडीयौ।[6] मुगल भागीया। राव सातल री वडी फतै हुई। मलूषांन जोधपुर रै गांवां री घणी बंध पकड़ी थी[7] सु छूटी।

६५. राव सातल रै बेटौ कोई न थौ नै नरौ सूजावत षौहळै[8] हुतौ।

---

१ उरां। २. सालघ ३. भलौ।

---

1 विवाह के अवसर पर अदा की जाने वाली विशिष्ट रस्म जिसमें बहनोई की ओर से साले को विशिष्ट वस्तु या जागीर आदि दी जाती थी। 2. राज्यगद्दी पर बैठा। 3 लड़ाई। 4. पीछा करता हुआ आया। 5. रात्रि को हमला किया। 6. बुरी तरह घायल हुआ। 7. बहुत सी भूमि अधिकार में करली थी। 8. गोद।

पछै नरै जीवतां सुजे पोकरण रा षीया लुंका कन्है लीयौ वो लुंक छांड नै बाहड़मेर कोटड़ै गयौ। उठै जाय सातळमेर री षेर[1] री गायां लीवी। नरौ वांसे आपड़ मुवौ[2]।[1] राव सुजो तिण दावे बाहड़मेर कोटड़ौ नालवौ सारा मारीया। गोईद नरावत नुं पोकरण दीवी। नै हमीर नरावत नुं फळोधी दीवी। इतरी धरती हुई—

१ जोधपुर १ फळोधी १ पोकरण १ सोभत १ जैतारण

६६. कुवर बाघौ सूजावत मांगळीयांणी सबरंगदे[3] रौ बेटौ नै मांगळीयो पांचु बीरमदेयोत रौ दोहीतरौ। रात्र सुजै जीवतां काळ कीयौ। टीकै बैठौ नहीं। संवत १५१४ रा पोस बद ६ रौ जनम छै। नै संवत १५७१ पनरा सौ इकतरा रै भादवा सुद १४ काळ कीयौ। नै हाथी १ कुंवर पदै[2] थकां दान कीयौ हुतौ।

६७. राव गांगौ वाघावत चहुवाण उदां रा पेट रौ नै चहुवाण रांमकरण रावत रौ दोहीतरौ। राव सुजै काळ कीयौ, राव गांगौ टीकै जोधपुर बैठौ। संवत १५४० पनरै सौ चालीसै रा बैसाष सुदि १ रौ जनम छै। संवत १५७२ रा मंगसर सुद ३ जोधपुर ईडर सुं रजपूत आंण नै टीकै बैसाणीयौ।[3] संवत १५८८ रा जेठ बद १ काळ कीयौ। बरस १६ बरस सोळै नै मास ५॥, साढी पांच नै दिन दोय[4] राज भोगवीयौ—१ जोधपुर २ सोभत।

६८. राव गांगा रा प्रवाड़ा[4]—नागोर री फौज सुं सेवको वेढ़ कीवी। रा: सेषो सूजावत मारीयो। हाथी वेढ में आया, आ वेढ गांव सेवकी संवत १५८६ रा मंगसर सुदि १ हुई। राव रा चाकर रा: किसनौ सगतावत चांपावत पूरै लोहां पड़ीयो।[5] तरै दुनाड़ौ दीयौ छौ। पछै दन ६ नव दिन पछै मुओ। रा: सेषै रा चाकर कांम आया। रा. अमरो मंडलावत नै रा. चेहथ[5] अडवळ रा पोतरा बाघावत। बीरमदे

१. खेड़। २. आय भूंबियो। ३. सारंगदे। ४. ख. प्रति में नही। ५. चोथ-वाघोत

1. पीछा करते हुए वीरगति को प्राप्त हुआ। 2. कुंवर पदवी में। 3. बैठाया 4. प्रसिद्ध वीरोचित कार्य। 5. बुरी तरह घायल होकर गिरा।

बाघावत कन्है मूवौ । रायमल षेतावत मार नै संबत १५६१[१] रा चैत सुदि १० सोझत लीवी । तद राव रौ चाकर रा: बेणो सहेसो तेजसोत रौ बरसिंघोत कांम आयौं ।[२]

६६. ईडर एक वार गुजराती पातसाह दबायौ ।[1] पछै राणौ सांगै राव गांगै बीरमदे मेड़तोये पातसाह मुदफरषां सुं अहमदनगर जाय नै बेढ कीवी । ईडर उग्रही साष—

दोहा—गांगौ गोतर रो गवाळ, ईडर उग्रहीया तणौ ।
सोहै तौ सहपाळ, बडौ प्रवाड़ो बाघउत ।।१।।

राव गांगा नुं तेड़णे[2] डूंगरसी बागरोयो राणां रौ मेल्हीयौ आयौ हुतो मास ४ चार जोधपुर रहै नै राव गांगा नुं ले गयौ । चौः डूंगरसी वाळा रौ, इण वेढ डूगरसी रौ बेटौ कान्ह कींवाड़[3] बीच आयौ, कींवाड़ त्रुटा ।[4]

७०. राव मालदे गांगावत देवड़ी पदमा रा पेट रौ राव जगमाल लषणीत[३] रौ दोहीतरौ । संबत १५६८ रा पोस वदि १ सुकरवार रौ जनम छै । नै संबत १५८८ रा जेठ सुद ४ बुधवार टीकै बेठौ । संबत १६१६ रा काती सुद १२ जोधपुर काळ कीयौ । बरस ३१ राज भोगवौ ।

७१. राव मालदे सारीषौ भागबळी[5] परताप बळी[6] जोधपुर कौ राजवी पाट बेठौ नहीं । गढ री रांग जोधपुर राव जोधै सूजै गांगै किण ही गढ तिसड़ौ कुं सुंवरायौ[7] न थौ । सारी अमारत झरणा री गढ री पोळ री मोहळ[8] री राव मालदे री कराई, गढ ऊपरै छै । राव मालदे पाषती री[9] धरती सारो लीवो बवली, मलाणौ[४] सुधी[10] हद कीवी ।

---

१. १६६७ । २. वीरमदे रौ चाकर धवळहर झूबियौ, पायगां लीवी भवरड़ा घोड़ौ लियौ, तठ काम आयौ रा. रूपो मालावत सा. रायपाल वीकावत संगा री काकौ । ३. लखावत । ४. मलारणौ ।

---

1. कब्जे में कर लिया । 2. बुलाने के लिए । 3. कपाट । 4. टूटे । 5. भाग्यशाली 6. बल व पराक्रम में श्रेष्ठ । 7. सजाया, नये मकान बनवायें । 8. महल । 9 आस-पास की । 10. तक ।

रायधनपुर सुधी गुजरात दिस ली। राव मालदे टीकै बेठो तद इतरी धरती गांगा री षाटी छै[1]—

१. जोधपुर १ सोझत १ जैतारण उदावतां नुं छै, पिण ग्रै चाकरी करै छै।

नागोर लीयौ तठै भा: प्रथीराज जेतसीयोत केल्हण काम आयौ। पछै प्रथीराज री बेटी पंचायण रावजी नुं परणाई तिण रौ भाणेज मालदेउत। इतरा गढ राव मालदे लीया,

नवागढ मालदे लीया तिण री बिगत—

१ मेड़तौ मेड़तीयां कन्हा सुं बेळा २ दोय[2] लीयौ।

१ संबत १५९९ बीरमदे कन्हा सुं लीयौ।

१ संबत १६१३ रा: जैमल कन्हा सुं लीयो।

३

१ नागौर संबत १६९२ रा माहा वद २ रा: कूंपा रै पटै।

१ अजमेर रा. महेस घड़सोयोत कना पटै छौ सु लीयौ।

१ महेस घड़ीसयोत कनां।

१ बीरमदे कनां लीयौ संबत १५९० री साल मैं।

५ विगत—

१ सांभर

१ बांवळ

१ मालपुरौ पंवारां वाळौ

१ सांचौर संबत १५९७ री साल में

१ सीवाणो राणा डूंगरसोत कन्हा लीयौ संबत १५९५ रा आसाढ बद ९ बुधवार।

५

१ डीडवाणो रा: कूंपा रै पटै छै।

२ जाळौर गढ बार २ लीवी[1]।

---

१. 'ख' प्रति में गढ़ों को प्राप्त करने का वृत्तान्त भिन्न क्रम से रखा नया, संवत व नाम समान है।

---

1. गांगा की जीती हुई है। 2. दो बार ली।

१ संबत १५९७

१ संबत १६१९ रा आसाढ वद ७ री साल में।

२

१. फळोधी संबत १६०४ राव डूंगरसी नुं झाल नै[1] लोवी।

१ पोकरण संबत १६०७ रा काती माहे राव जेतमाल कन्हा लीवी।

१ षाटु।

१ जाजपुर राः घड़सी भारमळोत रै पटै।

१ बधनौर राः जैतसी उदावत रैं पटै।

१ गोढवाड़ राणा री—

१ नाडोळाई[1] राणौ पंचायण।

१ कोसीथळ राः जैतसी।

१ बीसलपुर राः जैतसी।

१ मदारीयौ राः कूंपा नुं।

४

१ कोटड़ौ

१ राधणपुर

१ वाहतखड़ गूजरां री राव रै थी भाः तेजसी[2] बणबीरोत फोजदार।

१ बीकानेर राव लीयौ तद राः रायमल जेठमल[3] मांडणोत री साष[2] माहे कांम आयौ, दुजणसाल रा बेटा। संबत १५९९ रा चैत बदि १२ राव आप बीकानेर पधारीया।

१ राजपुरौ

१ चाटसु

१ नराणो

१ रेवासौ

१ भीणाय भाः सांकर सुरावत

१ टुक

तौडी[4]

१ कासली

१. नादुल। २. जैतसी। ३. जगमाल। ४. तोडो।

1. पकड़ कर। 2 साक्षी।

१ रायपुर सींधलां रौ ।

१ बाहड़मेर ।

१ सलेमांवाद पां: अभा नुं कागदां माहे ।

१ भादराजण सा: बीरो[1] मार लीवी संबत १५९६ रा ।

इतरा कोट राव मालदे पाड़ीया[1]—

१ षाटू रौ गढ १ सातलमेर १ मेड़ता री कोटड़ी १ राजपुर ।

इतरा कोट मालदे संवराया छै, विगत—

१ जोधपुर १ अजमेर १ नागोर १ बीकानेर १ सीवाणौ ।

राव मालदे इतरा कोट संवराया नवा कराया[2]—

१ पोकरण मालगढ

१ मालगढ़ पीपळणेर[2] भाषर

१ भादराजण

१ कुंडल

१ पीपाड़

१ नाडुल

१ सीवाणौ गांव दौलु

१ पोकर

१ मेड़तै मालगढ़ दुंहा १९७ लाग[3]

१ रायपुर

१ दुनाड़ो

१ रेयां कोटड़ी

१ फळोधी

१ सोभत

१ गुदवौ

---

१. सीवी रै । पीपल रै भाखर । ३. रिपिया १९००० लागा ।

---

1. गिराये । 2. बनवाये, ठीक करवाये ।

राव मालदे री बार[1] री बारता—

७२. रा: अचळौ पंचायणोत नुं राव रड़ौद थांणे राषीयौ थौ । पछै नागोर रा षांन ऊपर आया । रा: अचळौ कांम आयौ तिण वेळा रिणमल घणौ दोड़ियौ ।[2] नागोर बस सकै नहीं । तरै रा: जैता पंचायणोत नुं टाकां री बेटी परणाई नै राव नुं गांव १२ सुं हरसोळाव नागोर रा दे नै बैर भांगीयौ ।[3]

गांव दीयां री विगत, गांव २१ दीया—

१ गांव हरसोळाव ६०००)
१ गांव गारावासणी
१ गांव षजवाणौ १२०००)
१ गांव रायसळवास
१ सीहू[1]
१ गांव भांवडा[2]
१ गांव धारणवाय
१ गांव भटेरो, गोहूं हुवै[4] ७०००)
१ गांव बेरावास भटेरा री
१ गांव वौड़वो
१ गांव छींकणवास
१ गांव जायल ३०००)
१ गांव संषवाय ७८००)
१ गांव अंबावास
१ गांव बाघु
१ गांव चीनड़ी
१ गांव धींगावास
१ गांव सुहाणो ५०००)
१ गांव गीरावड़ी[3]

---

१. सीड । २. भांडवा । ३. ग्रवड़ी ।

---

1. समय । 2. खूब भाग-दौड़ की । 3. बैर समाप्त किया । 4. गेहूँ पैदा होते हैं ।

१ गांव पीलवण
१ गांव चखड़ १५००)
२१

७३. संबत १६१७ नागोर री सा. मेहो रावजी रा: देवीदास रा बोल देराय नै जोधपुर आंण बैसायौ[1] हुतौ । पछै रावजी उण नुं गढ़ ऊपर रा: चंदो बीरमदेवोत नुं राषीयौ थौ । पछै रा: देवीदास छोडायौ।

७४. संबत १५६३ रावजी सीरवी गोयंद झालीयौ। सीरवी १२० तूटा ।[1] संबत १५६३ राव मालदे जेसलमेर उमादे भटीयांणी परणीयौ थो सु संबत १५६५ रूसणौ हुग्रौ ।[2] पछै संबत १६०४ कंवर रांमा नुं देसौटौ[3] हुवौ । सु रांमो उमादे रै षोळै[4] छै, सु रांमा साथे उमादे मेवाड़ रे कैलवै गई । संबत १६१६ रा काती सुद १२ राव काळ कीयौ तरै संबत १६१६ रा काती सुद १५ रावजी रा समाचार सुण नै रावजी रै वांसै गांव कैलवै बळी, सती हुई ।

७५. राव मालदे झालै जैत री बेटी सरूपदे परणीया था । सु झालौ अजौ जेतौ रावजी रै वांसै था, षैरवौ पटै हुतौ । पछै एकर सुं सरूपदे नुं साथे ले नै रावजी षैरवै आया, झाळां रै पांहुणा[5] थका आया हुता । पछै झाळै मेहमांनी कीवी । सरूपदे साथे हुती नै बीजौ पिण राज लोग साथ हुतौ । सु सरूपदे री बेहन थी सु निपट रूपवत[6] थी । सो सौकां रावजी कन्है घात घाली ।[7] नै रावजी नै कहौ—सरूपदे री बेहन इसड़ी फूटरी[8] छै, उण सारसी[9] बीजी कोई फूटरी नहीं । जिसड़ै[2] ही रावजी एक वार देषै । पछै रावजी दीठी, 'मन मांहे बिचारीयौ इण नै परणजे तौ सषरो हेक मोहौळ हुवै ।[10] आ मन में बिचार नैं रावजी झालां नुं कहाव कीयौ ।[11] नै कहौ—आ थांहांरी[12] छोटी बेटी मोनुं परणावौ । तरै झालै कहौ—म्हां तौ मांहारी डावड़ी

१. बसियो । २. जिसडी ।

1. अलग हो गए । 2. राणी का रूठना हुआ । 3. देशनिकाला । 4. गोद । 5. मेहमान । 6. अत्यधिक रूपवती । 7. सौतिनो ने रावजी को बहकाया । 8 सुन्दर 9. जैसी । 10. अच्छा आनन्द रहे । 11. कहलवाया । 12. तुम्हारी ।

हेक रावजी नुं परणाईज छै। इण बात रौ झालै उत्तर दीयौ पछै घणौ हठ हुवौ, तौ पिण झालै मानी नहीं। तरै राव कह्यौ–हूं तौ माडां परणीज सुं।[1] तरै झाली सरूपदे भाई बापां नुं समझाया। हमार री बिळीयां आटौ षेसौ।[2] पछै झाला आ बात झूंठा थकां कबूल कीवी। कह्यौ–हमार तौ थां ऊभै भाल साहा न हुवै। रावजी जोधपुर पधारौ। साहौ जोवाड़ कर नै रावजी नुं गढा घाल नै[3] मास १।। दोढ नुं साहौ थापियौ।[4] तरै रावजी जोधपुर गयौ।

७६. पछै वांसा थी झालै राणै उदैसिंघ सुं कहाव कीयौ, अठा थी छांडीयौ। गुढौ कीयौ उठै राणौ उदैसिंघ आय नै सरूपदे री बेहन परणीया। तिण ठोड़ १ एक बडौ बड़ छै तिकौ बड़ अजे'स[5] झाली रौ बड़ कहीजे छै। पछै राणै उदैसिंघ नै रावमालदे रै बेध बंधीयौ।[6] ऊपदरै पैदा हुई।[7] पछ गोढवाड़ सारै ही राव रा थाणा बैठाया। नाडोळ जोजावर वासलपुर¹ बैठौ। पछै संबत १६९७ राव कुंभलमेर लेण नुं साथ पैसारे मेलीयो थौ।[8] रा. पंचायण करमसीयोत नै राः वीदौ भारमलौत और ही पिण साथ हुतौ सु नीसरणी मांड नै चढता था। पछै इतरा माहे गढ माहे गढ रा थाणदारां जांणीयौ, तरै गढ हाथ आयौ कोई नहीं।

७७. बालेसौ² सूजौ सांवतोत एकवार राणा उदैसिंघ सुं रीसाय नै जोधपुर राव मालदे रै बास आय बसीयौ। तरै राव घणौ आदर कर नै राषीयौ। षेरवौ पटै दीयौ। रावजी निपट घणी मया[9] करनै बात बिगत पूछै-गाछै। तिण दिनां रावजी रै नै राणाजी रै माहौमाह घणौ असुष छै। तरै रावजी राणाज़ी री धरती ऊपर साथ बिदा करै छै। तरै बालेसा सूजा नुं पण हुकम करै छै–थे पिण इण साथे भेळा बिदा

१. वीसलपुर। २. बालीसो।

1. बलपूर्वक शादी करूंगा। 2. जैसे तैसे इस समय को निकाल दो। 3. लिहाज में डाल कर। 4. विवाह का लग्न निश्चित किया। 5. अभी तक। 6. दुश्मनी हुई। 7. उपद्रव पैदा हुआ। 8. अन्दर घुसने के लिए भेजा। 9. कृपा।

हुवौ । तरै सुजै रावजी आगै व्हेणां सुं[1] बेळां ५ तथा ७ कहौ—म्हे मेवाड़ री पौळ रा चाकर छां ।[2] रावजी और ही तरै रा हजार कांम छै, तिण ठौड़ मोनुं बिदा कीजे, पिण आ षिजमत[3] मोनुं माफ कीजे । आगेवाणे पण मालम कीयौ । पण रावजी इण हीज हठ पड़ीया ।[4] तरै सूजे मुहडै तौ कहौ—भला म्हांनुं आगै सीष देवौ । कटक[5] आवै छै जितरै आगै जाय तयार हुवां । तरै बिदा होय नै पैरवै आया । सु अठै रहतां पाषती चांपावतां रा गांव था, तिणां सुं उपाव[6] हुवौ नै औ सु परदेसी थकौ आयौ, काढता था सु अठै आय नै छांडण री तयारी दिन २ माहे कीवी । नै गांव २ चांपावतां रा पटा रा जावतौ मारतौ गयौ ।[7] मारवाड़ रा रजपूत २० बीस मार गयौ ।

७८. तरै आ बात रावजी सुणी तरै घणौ दुष पायौ । बालीसे सुजै राणा री धरती माहे गाडा छोडीया नै राणाजी कन्है आपरा परधांन मेलीया । तिणे हकीकत सारी मालम कीवी । राणौ उदैसिंघ बोहोत राजी हुवौ । नै बालीसा सुजा कन्है आपरा आदमी तुरत सिरोपाव दे नै मेलीया । घोड़ौ पण दीयौ । नै कहौ—सूजा नै म्हां कन्है बेगौ[8] ले नै आवौ । तरै उण आदमीए जाय घोड़ौ सीरोपाव दे दिलासा कर नै[9] सुजै नुं तेड़ आयौ ।[10] बालीसा रौ पटौ आगै थौ सु दीयौ । नै तिण सिवाय गांव १२ सुं नाडुल बधारा[11] में दीवी ।

७९. राव मालदे घणौ दरद सूजा सुं राषीयौ छै । पछै रा. वीजो नगौ धनौ भारमलोत बालाउत तिण दिन वडा रजपूत हुता । राव नगा नुं एकंत तेड़ नै कहौ—म्हारै पेट माहै सूजा सुं घणौ दरद छै । थे नाडुल जाय नै सूजौ हर भांत कर मारौ । पछै रा. नागो बींजौ धनौ बिदा हुवा । घरे आया । रा. दासौ पातलौत उ. जैमल नुं इण ठाकुरे षबर मेल्ही । म्हारै फलांणौ[12] कांम छै, थे सिताब आवजौ । औ पण आया । पछै औ असवार ५०० तथा पाळा ले नै नाडुलै थी कोस अध-

---

1. रवाना होने से पहले । 2. मैं मेवाड़ राजघराने का नौकर हू । 3. कार्य, चाकरी । 4. यही हठ पकड़ लिया । 5. फौज । 6. अनबन । 7. नुक्सान कर गया । 8. शीघ्र । 9. विश्वास दिला कर । 10. बुला लाया । 11. जागीर बढ़ की दृष्टि से । 12. अमुक ।

कोस माथै दबीया ।[1] असवार २० तथा २५ नुं कह्यौ–थे जाय नै नाडुल रै फळसै आगे[2] पणीहारां पांणी भरै छै तिणां रा बेहड़ा[3] फोड़ौ नै उछरतौ चोंपौ ले आवौ ।[4] वे थांहारै वांसै छांना आवसी । तरै आंपां मार लेसां । जिण तरै उणां असवारां नै कह्यौ थौ–तिण ही तरै कीयौ । गांव में बुब फूटी[5] तरै बालीसा सुजा रा भाई बेटा सारा ही चढ आया, तरै सुजै पूछीयौ–कसी बात छै ? तरै सारा लोगां कह्यौ–असवार २० फळसै बेहड़ा पांणी रा फोड़ीया नै चोंपौ लीयौ । तरै सुजै बालीसै कह्यौ आंपणौ असवार पाळौ कौई मती दोड़ौ । पाषती रा गांवां रौ सारौ साथ बुलावौ । आंपणै नाडुल माहे च्यार सौ असवार न हजार पाळा छै । इसड़ी किणी री छाती छै जिकौ बीस असवारां सुं नाडुल रौ चोंपौ लेवै । कोईक तौत छै ।[6] घणा ठाकुर कुमया करै छे ।[7] दिन पहौर १॥ दोढ चढीयौ तरै सुजा रौ साथ भेळौ हुवौ । तरै सुजौ असवार पाळा आदमी हजार २००० दोय भेळा कर नै वांसै षड़ीया । सु नाडुल था कोस १० जातां थकां तीजै पोहर आपड़ीया । बालवत[१] ही वळ ऊभा रहा ।[8] अठै बडी बेढ हुई । आदमी १४० सुं राः बींजौ भारमलौत नै धनौ भारमलोत कांम आया । राः नगै रै हळवासा लौह लागा ।[9] घोड़ौ आपरौ चढण रौ कांम आयौ । षेत सूजा रे हाथ आयौ । राः दासौ पातळोत[२] नै ऊहड़ जैमल और साथ नीसरोयौ ।[10] सु डेहड़ै आय ऊतरीया । नगौ आरण माहे घाव लागां बेठौ छै । पछे इण रै रजपूत किणहीक नगा नै कह्यौ–तूं परौ नीसर, काय वैरीयां पूळौ देवै ।[11] एक तौ बींजौ धनौ कांम आया छै नै तूं पिण मुवौ तौ बालाउतां री ठकुराई तोटै पड़सी ।[13] तरै नगै घणौ हठ कीयौ । हूं बींजै मारीयां कठी जाऊं । नै म्हारौ घोड़ौ कांम आयौ,

१. वलावत । २. पात ।

---

1. चुपके से ठहर गये । 2. मुख्य द्वार के आगे । 3. पानी के घड़े । 4. गायें आदि चरने को निकलें सो ले आओ । 5. हल्ला हो गया । 6. कोई धोखा है । 7. दुश्मनी रखते है । 8. सामने होकर खड़े रहे । 9. साधारण से घाव लगे । 10. निकल भागा । 12 रणस्थल । 11. क्यों दुश्मनों को उकसाता है । 13. राज्याधिकार में कमी पड़ेगी ।

मोसुं घोड़ै चढीयौ जाय नहीं। तरै उण ऊठ नै घोड़ौ बींजा रै चढण रौ आछौसो घावै लागौ ऊभौ थौ, पछै झाल नै ले आयौ। आप उण रजपूत गुडाळीयां होय नै[1] नगा नुं घोड़ै ऊपर चढ़ायौ।

८०. तठा ताऊं[2] बालीसा देषै न छै। नगौ घोड़ै चढ नै चालीयौ तरै पांवडा[3] ४० गयौ तरै सुजा रै भाई भतीजां भाणेजे सल्होते[1] नगा नुं जावतां दीठौ तरै सुजा नुं कहण लागा—असवार एक सिरदार रिण म्हां था नीसरीयौ जाय छै, औ कुंण छै? तरै सुजै कहौ—औ कोई जाय छै, तिण नुं जावण देवौं। तरै इण हठ कर पूछीयौ—राज तौ मारवाड़ बसीया छौ सारां नै ओळषौ[2] छौ, राज म्हांनु कहौ औ कुण छै। तर सुजै कहौ—नगौ भारमलोत छै। तरै भतीज २ भाणेज २ सेहलोत १ ऊभा था तिका कहेण लागा—नगा नुं तौ म्हे जाण कोई देवां नहीं। सुजे घणौ ही बरजीया।[4] नै कहौ—आपणै नै ईणां रै हाडां बैर कोई छै नहीं[5], थे नगा रै वांसै मती जावौ। नै इसड़ौ रजपुत न छै जु नीसरै पिण कही माडां[6] चाकर भाई-बंध समझाय काढीयौं छै [[3] बड़ी बलाय छै[7] इण रौ नांव (न) लीजे। उणे वरजीयौ, मानीयौ नहीं, असवार ५ तथा ६ वांसै षड़ीया नगा सुं नेड़ा गया। नगौ पाछौ वळीयौ[8] सांम्हां आवतां नुं घोड़ौ षुरी कर नै[9] अेकण रै छाती माहे बरछी री दोवी सु छाती माहे लाग नै घोड़ा रौ भेवड़ो[10] फाड़ नै घोड़ा रै पोतावळौ[11] नीसरो। बरछी बाहतै काढ़तै हाक कीवी[12] तिण सुं दोय आदमीयां रा तौ कहै छै सांस नीसर गया। दोय आदमी इसड़ा बी'णा[13] जिके अचेत हुय पड़ीया, सु मास ६

---

१. सेहलोत। २. बोळखौ। ३. इन कोष्ठकों के बीच का अंश 'क' प्रति के पत्र त्रुटित होने से केवल 'ख' प्रति से लिया गया है।

---

1. घुटनो के बल बैठकर। 2. तब तक। 3. कदम। 4. मना किया। 5. जानी दुश्मनी नही हैं। 6. जबर्दस्ती से। 7. असाधारण वीर है। 8. पीछे मुडा। 9. घोड़े को एक जगह ठहरा कर वार करने के लिए उद्यत करके। 10. घोड़े का पिछला हिस्सा। 11. अंडकोश। 12. बुलंद आवाज में ललकार की। 13. डर गये।

बोलीया नहीं। मांचै माहे पड़ीया रहा। नगौ इतरौ कांम कर नैं दासा जैमल भेळौ[1] हुवौ।

८१. रा: दासा रै षबर घर सुं उण बेळा आई। पातल नुं कुंडल मलकअलीसेर जाळोर रै मारीयौ रा: बींजौ धनौ भारमलोत रै दावे बालावते तौ बालीसा सुजा रौ वीगाड़ कीयौ कुं सुणीयौ नहीं। समत १६१३ रा फागुण हरमाड़े राणौ उदेसिंघ नैं हाजीषान बेढ हुई तद रा: देवीदास जैतावत बालीसा सुजा नुं कह्यौ–सुजा हुसीयार, हुं आज रा: वींजो धनो मांगू। सुजा नुं देवीदास मारीयौ।

८२. राव मालदे रै बेटीयां हुई सु इणे ठौड़े परणाई—

१ अरधां झाली (री) नोरंगदे अठा रौ नांव कनकावती, गुजरात पातसाह म्हेमंद नुं परणाई थी। पछै पातसाह मुवौ तरै उवा आपरी बेहन सजनां कन्है घणौ माल लेनै जेसलमेर आय रही हुती।

१ सजना रावळ हरराज नुं परणाई हुती तिण रै पेट रौ रावळ भींव।

१ पोहपावती हलवद रा राणा आसकरन नुं परणाई। पछै रांणौ आसकरन मुवौ तरै वांसै बळी।[2]

१ हंसां बाई का: लुणकरण सेषावत अमरसर रा धणी नु परणाई हुती। तिण रौ मन्हौर।

१ रतनावती बाई हाजीषां नुं परणाई थी, हाजीषांन मुवौ तरै राव चद्रसेन कन्है विषा माहे[3] आई। समत १६४६ मुई, नागोर गुमट।[4]

१ बालाह बाई अमरकोट रा धणी सोढा वरसिंघ नुं परणाई हुती पछै वा बाई जोधपुर हीज आय रही हुती। गांव सांवतकुवौ पटै हुतौ।

---

1. शामिल। 2. पीछे सती हुई। 3. दुखित अवस्था में। 4. स्मारक के रूप में नागोर में छतरी बनी हुई है।

१ राजकंवर बूंदी हाडा सुरतांण नुं परणाई हुती । पछै राव मालदे हाडी रंभावती मारी तरै इणां उण नुं मारी ।

१ राव मालदे री अेक बेटी बाघवरा बाघेलां नुं परणाई थी उठे डोळौ मेलीयौ ।

८३. राव मालदे कन्है बारट आसौ दीतावत भाद्रेसो कोड़ रावळजी माः बारट ईसर सुरावत नुं दीवी तरै राव मालदे रौ बडौ दिन बडौ देष नै ऊमेद कर जोधपुर आयौ । घणा गीत गाया तिण सुं कंवर चद्रसेन नुं बारट आसै गुण चौरासी रूपक[1] बंध रौ कहौ छै । तिण समै रावजी नागोर षांन कन्है लीयौ सु बारट आसै आगे षांन रा दीया गांव २ घुघरीयाळी टीकौ छै । सु राव बीजा सांसण षांन रा दिया बीजा चारणां नुं कहै नहीं दीन्हा । तरै अै पण गांव दे नहीं । तरै आसा नै वीनती कराई–म्हे तौ युं ऊमेद राषां छां म्हे घणौ पावसां । सु अै तौ गांव म्हांरा बाप दादां रा लीधा छै तिण री रावजी चौलाग[2] कुं करै तरै रावजी सुं आगेबांणे[3] मालम कीयौ । रावजी कहौ–षान रा दीया न पलै[4] ने म्हे नवा गांव सांसण देसां सु लौ । तरै आसौ राघव और ही पांचे ही दीत रा बेटा आय भेळा हुवा । इणां रै बेहन अेक देपु छै तिका ही आय इणां धरणौ कीयौ ।[5] कोई दिन रौ फेर राव हठ चढीयौ]

८४. तरै कहौं–अै हीज जायगा चाहै छै तौ म्हारौ उदक कर ल्यौ ।[6] आसै राघव' कहौ–आ बात कदेई नहीं हुई, आज थांहारौ उदक कर लेवां नै संवारे नागोर किणी और नुं होसी तरै आ कहसी हमें म्हारौ उदक कर लेवौ । आ म्हां थां न हुवै ।[7] तरै आसै राघव चागौ मेहा-जळ पांचे ही भाईयां बहन देपु जोधपुर गळै घाती ।[8] पछै भटीयांणी

१. रधे ।

1. काव्य का एक प्रकार । 2. अधिक । 3. आगे करने वाले । 4. नही माने जाएगे । 5. धरना दे दिया । 6. मेरी ओर से ये गांव भी दान में लेलो । 7. यह हमारे से नहीं होगी । 8. गले में घाव किये ।

उमादे उठाड़ीया पाटा बांधीया। घणा हीड़ा कीया।[1] पांचे ही भाई इणां री बेहन देपु साजा सारा हुआ।[2] भटीयांणी उमादे कपड़ा पहैरावणी दे नै सीष दीवी। इणां पण उमादे सुं घणी हळभळ कीवी[3] कहौ–राज म्हांनुं नवौ जनम दीयौ छै। उमादे पण वीनती कराई मोसुं षुसीयाळ[4] हुवा छौ तौ इतरौ, हुं मांगु छुं रावजी नुं भलौ बुरौ कांइं मत कहौ। इणां कहौ–म्हे नहीं कहां।

८५. संबत १६१९ रा काती सुद १२ राव मालदे जोधपुर काळ कीयौ। तिण दिन उमादे कुंवर राम साथे केलवे मेवाड़ रै गई थी सु काती सुद १५ उमादे केलवै बळी, उठै छत्री छै। तिण दिन बारट आसौ जीयतो[1] थौ। बारट आसै कवत १२ उण उपगार रा उमादे भटीयाणी नुं कहा छै।

राव मालदे गांव नागोर रा षांन रा दीया लोपीया हुता[5] सु पछै कंवर जगतसिंघ नुं नागोर हुवौ तरै बारट जैमल राघवोत नुं पाछा दीया। कुंवर जगतसिंघ दीया तिके हिंदवांणे ही में ही पलीजै छै।[6]
राव मालदे री बार री छुटक[7] बात—

८६. पंचोळी अभा नुं पटै गांव २ नंदवाण नहेड़वौ[2] हुतौ। नै गांव १९ रजपूतां रा उमरावां रा दीया था। नै कागळ री लीषावणी सलेमा-वाद हुती।

रावळ मेघराज नुं महेवा ऊपर गांव ३ जोधपुर रा पटै हुता—

१ गांव झांवर १ गांव बावळली १ आगोळाई

८७. भाटी राव जेसौ पुंगळीयौ आयौ तठै इतरौ साथ राव रौ कांम आयौ—

१ भाः किसनो नींबावत

१ भाः धनौ आसावत

---

१. जावतो। २. नेहनड़ो।

---

1. बडी सेवा की। 2. सभी ठीक होगए। 3. विनयशीलता प्रकट की। 4. प्रसन्न। 5. जब्त कर लिए थे। 6. हिन्दू शासक का दिया हुआ दान ही माना जाता है। 7. फुटकर।

१ भा: आंबौ मालावत

१ भा: जगमाल पंचायणोत[1]

१ चाचग कन्हड़ लीलावत

राव रै साथ नै जैसलमेर रै साथ बेढ हुई तटै काम आयौ, रा: मूळो नीबावम[2]।

रा: अचळौ पंचायणोत पेहली तौ नागौर री पौळ रा कींवाड़ लोह रा आंण जोधपुर चाढीया, पछै अचळा नुं नागोर राष नै मारीयौ, कींवाड़ लोहाड़ा री पोळ वाळा।

राव रौ साथ नागोर भागौ तठै भाटी दुरजण जोधावत कांम आयौ। रा: जोगो सादावत और ही घणै साथ रा पग छूटा[1]।

८८. राव मालदे रै इतरी बेरां[3] हुई[2]—

१ सरूपदे झाली, झालै जैता री बेटी

१ रावचद्रसैण १ मोटौ राजा

१ उमादे भटियांणी रावळ लूणकरण री बेटी।

[[4] १ अरधां झाली, नोरंगदे नांव तिण रै बेटी हुई।

१ हीरां झाली, झाला रायसिंघ री बेटी, हलवद।

१ रा: रायमल मालेवोत

१ रंभावती हाडी, हाडा सुरजमल री बेटी।

१ वीकमादीत

१ कछवाही लाछळदे का: रतनसि सेषावत री बेटी।

१ राव रांम

१ टांकणी जमन किसन कल्हणोत री।[3]

१ लाछ आहाड़ी, आहड़ा प्रीथीराज गांगावत री बेटी।

१ भोजराज १ रतनसी

---

१. जोधावत रो। २. नीबावत। ३. राणिया। ४. कोष्ठको के बीच का अंश 'ख' प्रति का है।

---

1. भाग खड़े हुए। 2. स्त्रियां, रानियें। 3. कल्हण के पुत्र की लड़की।

१ जामवाली, जगमाल सुरावत ।

१ सोनगरी, सोनगरा अखेराज री बेटी, नांव पूरा ।

१ धार बाई, भाटी प्रीथीराज री बेटी जैतसी री पोतरी केल्हण मंडवर परणी हुती ।

१ भांण

१ चहुवांण इंद

१ जादम

१ सोढी, मंडोवर परणी थी ।

१ जसड़, मेड़ते परणी थी ।

८८. समत १६०० रा बीरमदे उदावत रावळ किल्याणमल बीकानेरीयौ[1] राव मालदे ऊपर पठांण सेरसा पातसाह कन्हा पुरब माहे सेहसरांम तठै जाय फिरियादी हुवा । पातसाह राव मालदे री सारी हकीकत बुजी[2], इणे कही पातसाह सेहसरांम थी आमरे आया । पछै मारवाड़ ऊपर चढ़ण री तयारी हुई । राव रै पण षबर आई ।[3] रावजी रै ही साथ भेळौ हुवौ । पातसाह ही डीड़वाणा रै पाषती आया तरै राव ही जोधपुर सुं चढ नै मेड़ते आया । पातसाह ही भोजावाद आयौ । रावजी ही कहै छै अजमेर आया । पातसाह रौ डेरौ कुचीळ हुवौ । आगलौ पेसषानो हरोळ[4] घुघरा री घाटी कीयौ । तरै राव डेरौ पाछौ कियौ ।[5]

समत १६०१ रै पोस माहे बड़ी बेढ[6] गीररी-समेल बीच भाषरी २ छै तठै हुई । इतरौ साथ रावजी रौ कांम आयौ तिण री विगत—

१ राः जेतौ पंचाईणोत अषैराजोत ।

१ राः कूंभौ मेहराजोत अषैराजोत ।

१ राः षींवौ ऊदा सुजावत रौ ।

१ राः सोनगरौ अषैराज रिणधिरोत ।

---

1. बीकानेर वाला । 2. पूछी । 3. राव (मालदे) को भी सूचना हुई । 4. फौज के आगे का हिस्सा । 5. पीछे सरकाया । 6. युद्ध ।

१ रा: पंचाईण करमसीयोत ।
१ राः पतौ कान्हावत अषैराजोत ।
१ राः बैरसी रांणावत अषैराजोत ।
१ जोगौ रावळोत अषैराजोत ।
१ रा: ऊदेसिंघ जैतावत अषैराजोत ।
१ राः भोजौ पंचाईणोत अषैराजोत ।
१ रा: हमीर सोहावत अषैराजोत ।
१ रा: बीदो भारमलोत बालावत ।
१ रा: रायमल अषैराजोत रिणमल ।
१ राः सुरतांण गांगावत डूंगरोत ।
१ रा: भवानीदास सुरावत अषैराजोत ।
१ रा: जैमल वीदा परब्रतोत रौ डूंगरोत ।
१ रा: नींबौ अणदोत जेसौ ।
१ भींवोत कलौ सुरजनोत ।
१ भा: पंचाइण जोधावत ।

१. इतरौ साथ कांम न आयौ, नीसरीया[1], नांवजाद[2]—
१ रा: जेसौ भैरवदासोत चांपावत]
१ रा: महेस घड़सीहोत ।
१ रा: राव कांन्हौ चूडावत रौ पोतरौ ।
१ रा: जैतसी बाधावत ।
१ राः बींजौ जैतमालौ गोयंद रौ, नरौ पोकरण रौ धणी ।
१ रा: ऊदैसिघ कूंपावत ।
१ रा: ऊहड़ नैतसी कौजावत कौढण[1] धणी ।

८६. इतरौ साथ जोधपुर कांम आयौ—

---

१. कोढणा ।

---

1. निकल भागे । 2. मुख्य-मुख्य ।

१ राः अचळौ सिवराजोत। सिवराज जोधावत री छतरी गढ ऊपर मसीत[1] कन्है कहै छै। अचळै ममारकषांन मारीयौ साष–"बाधौ अचळ ममारक षांन।"

१ राः तीलोकसी बरजांगोत[1] उदावत, गढ ऊपर छतरी मसीत कनारै छै।

१ भाः मालौ जोधावत, जेसावत समेळ[2] लोह पड़ीयौ थौ[3] सु कांम आयौ।

१ राः पतौ दुरजणसाळोत चरड़ौ अरड़कमल चूंडा रौ, साख—

पातल लग पतसाह, बात हुई बढबा तणी।
गढ मांडू गजगाह[4], रहियौ दुरजणसाल रौ॥

१ भाः सांकर सुरावत जेसौ, गढ़ ऊपर छतरी भाः गोयंदासोत[2] काराई। अजमेर थांणै हुतौ चाकर, सु ऊपाड़ ले आया पछै गढ कांम आयौ।[5]

१ सीधण षेतसीहोत।

१ चहुवांण भीषन रौ भाई नाथौ कांम आया, तिकौ फुल नायक रौ काकौ बाबौ हुवै छै।

१ भाटी भोजौ जोधावत।

२ सोहड़ भैरव भींवराज सीहावत।

१ भाः नाथौ मालावत।

१ राः राणौ बीरमोत गढ़ री पाज[6] कांम आयौ।[3]

गढ ऊपर मसीत सूरसाह पातसाह री कराई। संवत १६०१ रा पौस वदि ५ गोवल[4] दिसलो पाज बंधाई।

---

१. तिलोक सिवराजोत। २. गोयंददासजी। ३. 'ख' प्रति में संकर जैतसियोत उदावत तथा ईंदा सेखो घणराजोत, ये दो नाम और हैं। ४. गोळ।

---

1. मस्जिद। 2. साथ, शामिल। 3. घायल होकर गिरा था। 4. युद्ध। 5. गढ पर मृत्यु हुई। 6. किनारे पर, दीवार पर।

९०, संबत १६१० रा बैसाख वदि २ मेड़ता ऊपर राय मालदेजी कटक कर आयौ। रा: जैमल बीरमदेवोत मेड़तौ सहर झालीयौ तद दोय अणी[1] कर चालीयौ। सु रा: जैमल बारै नीसर नै बड़ी लड़ाई कीवी तरै रावजी गई कर नै[2] जोधपुर पधारीया। रा: प्रीथीराज कितराक साथ सुं कांम आया।

इतरौ साथ रावजी रौ कांम आयौ—

१ रा: प्रीथीराज जैतावत।
१ रा: जगमल उदैकरणोत षींवसर।
१ रा: जगमाल उदैकरणोत।
१ रा: डूंगरसी।
१ पा: रतौ[१] अभै रौ।
१ रा: भारमल देबीदासोत।
१ रा: राघवदे बरसलोत उदावत।
२ रा: नेतो[२] धनौ भारमलोत बालाउत।
१ चो: मेघौ भेरूंदासोत।
१ रा: धनराज भारमलोत।
१ पा: अभौ झाझावत।
१ रांमौ षींवाड़ौ[३]।
१ सौहड़ पीथौ जगावत।

दूजी अणी रा: रतनसी षींवावत और साथ सुं दूदासर[४] रै फळसै दिसा[3] कांम आया।

९१. इतरौ साथ रा: जैमल रौ कांम आयौ, रा: जैमल[५] उदा रा पोतारा जणा ५ नै—

---

१. रतनो। २. नगो। ३. भैरवदासोत चांपो (रामो पीपाड़ो)। ४. उदासर। ५. जैतमाल।

---

1. फौज के दो हिस्से। 2. हठ छोड़कर। 3. दुदासर की फाटक की तरफ।

१ अषैराज भादावत ।

१ रावत सगतौ सांगावत ।

१ राः मोटौ जोगै रौ ।

१ राः चांद्राराव जोधावत ।

१ राः नारणदास चांद्रावत रौ ।

१ राः सांगौ भोजावत ।

६

६२. संबत १६१३ रा फागुण वदी ६ हरमाड़े राणै उदैसिंघ नै हाजीषांन रै वेढ़ हुई । राव मालदे, राः देवीदास जैतावत रावळ मेघराज, राः जगमाल बीरमदेवोत और राः जैतमाल जेसावत, राः लषमण भादावत आदमी १५०० दोढ हजार हाजीषांन री भीर मेलीया[1] था । पछै उण तरफ मेड़तीया[१] नै वीकानेरीयौ राव श्री कल्याणमल जी ईडर बास बंसवाळ नै डुंगरपुर बूंदी देवलीया रौ धणी देसौत १० दस राणा भेळा था ।[2] सु बेढ हुई, हाजीषांन जीतौ, राणौ हारीयौ । राणा रो तरफ राः तेजसी डूगरसियोत बालीसौ सुजौ कांम आया । नै जैमल रा मांणस मेड़तै था सु मेड़तौ छोड नै बधनौर री बावड़ी री तरफ गया । राव जैतारण था पाधरा[3] मेड़तै फागुण बदि १२ पधारीया, नै कोटड़ी जैमल री पाड़ नै मूळा माहे बवाड़ीया ।[4] संबत १६१४ मालकोट कुंडल ऊपर मंडायौ । संबत १६१६ मालकोट पूरौ हुवौ ।[5] रावजी आधौ मेड़तौ राः जगमाल बीरमदेवोत नुं पटै दीयौ । पछै रा, जैमल पटै दीयौ । पछै राः जैमल दरगाह गयौ ।[6] संबत १६१८ पातसाहजी मदत[7] सरफदीन मुगल री मेल्हीयौ । राः देवीदास मालकोट माहे थौ । सु पातसाह रो फौज आवतो सुणी तरै इतरी आसांमी[8] नै मेल नै बुलायौ—

---

१. मेडतियो जैमल ।

---

1. सहायतार्थ भेजे । 2. शामिल थे । 3. सीधा । 4. बोवाए । 5. संपूर्ण हुआ । 6. बादशाह के पास हाजिर हुआ । 7. सहायतार्थ । 8. विशिष्ट व्यक्तियों ।

१ कुंवर चंद्रसेण १ राः प्रथीराज कूंपावत ।
१ सोः मानसिंघ अषैराजोत ।
१ राः देवीदास ।

सु इतरी आसांमी लेण नु मेलीया था । सु फौज नैड़ी आई तरै कंवर चंद्रसेण पाछा डेरा कीया । नै रव देवीदास नु घणौ ही कहौ–थे आवौ । सु पिण देवीदास कहौ मानै नहीं । नै आपरी ताबीन रौ साथ थौ तिण साथ नै साथे लेनै सारा ही साथ सुधो[1] मुरड नै मालकोट माहे पेठौ ।[2] मुगल नै मुगलां ...... सारी फौज नै जैमल फागुण वद ७ मालकोट आ घेरीयौ । पछै रावजी देवीदास नुं घणो ही कहाड़ीयौ तुं–आचड़ करै छै ।[3] म्हांरी साहिबी षोवै.........।[१] बुरज पिण गोळां री मार सुं[२] सिताब[4] उडीयौ । पछै राः देवीदास पिण बात कर नै नीसरीयौ पछै जैमलजी मुगल सरफदीन नुं भषायौ[5] कहौ–नीसरीयो जाय छै । तरै वांसै[6] लगा चढ़ीया, नगारौ हुवौ । राः देवीदास गांव सातलवास कनै फिर ऊभौ रहौ[7], तरै उठै वेढ हुई । संबत १६१९ रा चैत सुद १५[3] इतरौ साथ रावजी रौ कांम आयौ, तिण रो विगत—

१ राः देवीदास जैतावत बरसडोत[४] ।
१ राः तेजसी[५] उरजन पंचाणोत ।
१ राः ईसरदास राणा अषैराजोत रौ ।
१ राः भाषरसी जैतावत ।
१ राः पुरणमल प्रीथीराज जैतावत रौ ।[६]
[[७]१ सेहसो उरजन पंचाईणोत ।
१ गोईंद राणा अषैराजोत रौ ।
१ भांण भोजराज सादा रूपावत रौ ।

---

१. छै । २. साबात । ३. ५ । ४. बरस ३५ । ५. जैतसी । ६. 'ख' प्रति में नामों का क्रम भिन्न है । ७. कोष्ठकों के बीच का अश केवल 'ख' प्रति का है ।

---

1. सहित । 2. गुस्से में कटिबद्ध होकर किले में ही रहा । 3. जबरदस्त जिद्द कर रहा है । 4. शीघ्र ही । 5. ललकारा, कहा । 6. पीछे । 7. सामने डटकर खड़ा रहा ।

१ राः नेतसी सीहावत अखैराज ।
१ राः रांमौ भेरवदासोत ।
१ राः अचळौ भांणोत ।
१ राः जैंमल पंचाइणोत, पंचाइण ऊदावत ।
१ राः महेस घड़सीयोत ।
१ राः राजसिंघ घड़सोयोत ।
१ मांगळीयौ वीरम देवावत ।
१ साः तेजसी भोजुवोत ।
१ भाः तीलोकसी परबत अणदोत ।
१ राः पतौ कूंपौ महेराजोत रौ ।
१ राः अमरा रांमावत ।
१ राः सेहसौं रांमावत ।
१ राः जैंमल तेजसीयोत ।
१ राः महेस पंचाईणोत ।
१ राः भाखरसी डूंगरसीयोत ।
१ राः रिणरायसलोत मेड़तीया जगमाल रौ चाकर ।
१ राः सांगौ रणधीरोत ।
१ ईसर घड़सीयोत ।
१ राणौ जगनाथोत ।
१ भाः पिराग भारमलोत ।
१ भाः पीथौ अणदोत ।
१ सुतहार भांनीदास ।
१ बाहरट जीवौ ।
१ बाहरट चोळौ ।
१ हमीर ऊदावत वालावत ।
१ राः अखौ जगमालोत कान्हा चूंडावतरौ ।
१ मांगळीयौ देदौ ।
१ तुरक हमजौ ।

१ बाहरट जालप ।
१ राः प्रीथीराज सीधण अषेराजोत ।
१ चहुवांण वीरम ऊदावत ।
१ राः भींव ऊदावत बालौ ।
आदमी १२० राव रा कांम आया ।

६३. पातसाह सूरा रौ थांणौ भागेसर हाजी आलीफतै षांन तिण ऊपर राव पीपलण थकै राः जेसौ भैरवदासोत रावळ आयौ वरसिघोत रावत अभीअड़ भींवड़ रा मेल्होया । आदमी ५००० पठाण था । आदमी २००० राव रौ साथ हुतौ, वेढ राव रै साथ जीती, तठै काम आया—

रा. ऊगो वरसिघ रौ रावळ हाण रौ चाकर आदमी ४०० षेत रहो[1], आदमी १००० महेवा रा था ।
१ राः महो जगहथोत पातौ ।
१ रावत अभीअड़ भींवड़ रौ ।
१ भाः वीसो चणविरोत ।
इतरो साथ घावे[2]—
१ राः जेसो भेरवदासोत ।
१ रावळ हापौ वरसिघोत ।
१ भाः किसनौ रांमावत ।

६४. राव मालदे संबत १६०० रा पोस माहे पातसाहा सुं वेढ हुई । राः जैता कूंपा मराया । पछै बरस ३ जोधपुर पाछा आया । पछै संबत १६०४ फळोधी डूंगरसी कन्हा लीवी । तठा पछै संबत १६०७ रा काती माहे पोकरण सातलमेर राव जैतमाल कन्हा लीवी । पछै पछिम नुं चलाया । बाहड़मेर कोटड़ौ लीयौ । राः रतनसी षींवावत राः सिघ जेतसीयोत घणा साथ सु बाहड़मेर थांणौ हुतौ । कोटड़ै राः भोजौ मंडळावत थांणै हुतौ । पछै रावत भींवौ जाय जेसलमेर मिळीयौ ।[3] जेसलमेर रा चाकर हुय नै कंवर हरराज नुं मदत लेनै बाहड़मेर ऊपर आया । राः रतनसी षींवावत राः सिघ सारौ साथ

1. मारे गये । 2. घायल हुआ । 3. मिला ।

भूडे हवाल नीसरीया डेरा डांडा[1]] सारा लूटाणा, नै मामलौ संबत १६०८ हुवौ। पछै तिण दावै राव मालदे संबत १६०९ रा सांवण सुद १५ राव मंडोवर रावजी पधारीया नै राषड़ी कीवी।

६५. कंवर रायमल नै प्रोः रायमल प्रोः नेतौ राः प्रीथीराज जैतावत मंडोवर पधार नै जेसलमेर ऊपर बिदा कीयौ। भादवा बदि ३ रावजी जोधपुर पधारीया, काती बदि ९ फोज रावजी री छैत समंद जाय डेरौ कीयौ। काती बदि ११ वाड़ीयां बाढणी मांडी[2] सु दीबाळी रावजी रै साथ ऊठै ही कीवी। नै जेसलमेर री तळैहटी[3] सारी मारी नै लूटी। रावळ गढ जड़ नै बैस रह्यौ। तठै भाटी मूळौ नीबावत राव रौ चाकर कांम आयौ। तिण बेळियां रौ साष नै दूहौ कह्यौ छै।

रा प्रथीराज जैतावत रौ—

> गा भाटी भाजेह[4] गोष गोरहरां तणौ।
> ताप[5] न सहीयौ तेह, जोध तम्हीणे[6] जैतउत ॥१॥

१६१६ रा आसोज बदि ७ राः देवीदास जैतावत राः पतौ बालौ[1] नेतावत[2] जाळोर रौ गढ लीयौ। नै मलक छुटंण नीसरीयौ।[3] नै कंवर चद्रसेन आसोज सुद १ गढ जाळोर रै चढीयौ।

राव जैसौ पूंगळीयौ फळोधी ऊपर आयौ। तठै रावजी रौ साथ कांम आयौ—

१ भाटी किसनौ नींबावत अणंदोत।

१ भाटी धनौ आसावत, आसौ जोधौ जेसौ

१ चाचग कान्हड़ लोळावत।

१ भाटी अंबौ मालावत जोधौ जेसौ।

१ भाटी जगमाल पंचायणोत जोधावत।

६६. राव मालदे री बाहर री[7] बारता—

---

१. ख. में नहीं। २. नगावत। ३. मालक छुट्टण नीकल गयौ।

---

1. सभी माल असबाव। 2. बगीचों को काटना प्रारंभ किया। 3. किले के बाहर की बस्ती। 4. भाग गये। 5. पराक्रम। 6. तुम्हारे। 7. समय की।

६७. संबत १६०० रा पोस माहे सूर पातसाह सुं समेळ बेढ हुई रा: कूंपौ जैतौ कांम आया। नै पातसाह जोधपुर आयौ अठै रा: अचळौ सिवराजोत नै रा: तीलोकसी बरजांगोत कांम आया।

६८. संबत १६१० रा बैसाष बदि २ राव मालदे मेड़ता ऊपरै आयौ। रा: जैमल बीरमदेवोत ऊपर आया। बेढ़ मेड़तीया जीतीया। रा: प्रीथीराज जैतावत रा: नगौ भारमलौत और ही राव रौ साथ कांम आयौ। मेड़तीयां रौ रा: अषैराज भादावत रावत सकतौ सांगावत कांम आया।

६९. संबत १६१३ रा फागण वदि ९ रिववार हरमाड़ै रा: देवीदास जैतावत रावजी हाजीषांन री मदत मेलीयौ थौ सु बेढ हुई। तरै राणौ भागौ हाजीषान जीतीयौ। नै राव जी रौ साथ बोल-बाला हुवौ[1]। रा: देवीदास जैतावत बालीसा सुजा नूं मारीयौ। रावजी रा: देवीदास नूं बिदा जैतारण थी करनै जैतारण आय रहा था, नै आ बेढ़ हुई तरै रा: जैमल बीरमदास राव किल्याणमल राणा भेळा हर-माड़ै हुवा। सु जैमल इण बेढ राणौ हारीयौ। मेड़तौ रातूंरात छोड दीयौं।

१००. राव संमत १६१३ रा फागुण सुदि १२ जैतारण थी मेड़तै पधारीया। मेड़तौ हाथ आयौ। नै जैमल रा घरां री ठौड़ मूळा बुहा-ड़ीया। घर पाड़ीया। संबत १६१४ सोळा सै चौधोतरै लागतां मालगढ मंडायौ। नै संबत १६१६ री साल मालगढ़ पूरौ हुवौ। नै आधौ मेड़तौ रा: जगमाल बीरमदेवोत नुं पटै दीयौ। नै रा: देवीदास जैता-वत नुं मालगढ़ थांणै राषीयौ।

१०१. पछै रा: जैमल सरफदीन नुं लेनै मेड़ता ऊपर आयौ। राव रौ बीजौ साथ नीसरीयौ। रा: देवीदास गढ झालीयौ।[2] संबत १६१९ रा चैत सुद १५ कांम आयौ।

१०२. राव चंदरसेन मालदेवोत झाली सरुपदे रा पेट रौ झाला अजा रौ दोहीतरौ संबत १५९८ रा सांवण सुद ८ रौ जनम नै संबत १६१९

1. खूब प्रसिद्धि प्राप्त की। 2. किले में आ पहुँचा।

रा पोस सुद ७[१] जोधपुर रै पाट बिराजीया, नै संबत १६३७[२] सचीया री गाळ[1] मैं काळ कीयौ।[2]

१०३. राव मालदे काळ कीयौ तद चंद्रसेन सीवाणै हुतौ, सु काती सुद १३ रै दिन उगतां संवौ[3] आयौ। झाली सरूपदे नुं बेटा समझावण रै वासतै झाली राषी[4]। नै ऊदैसिघ नु फळोधी दिराय नै मंगसर वदि २ सरूपदे बळी[5], दिन ६ पाणी नही पीयौ। राव मालदे काळ कीयौ तरै चंदरसेन सीवाणा थी आयौ। संबत १६२२ रा मंगसर सुदि १० गढ़ छांडीयौ तद इतरौ साथ गढ रै हाथौ दे अर कांम आयौ। राव चंद्रसेन रा कांम आया—

१ राः बरसल पातावत
१ भाटी आसौ जोधावत
१ राः राणौ बीरमदेवोत
१ भाटी गांगौ नीबावत
१ भाटी जगमाल[३] आसावत
१ राः सूरौ गांगावत
१ राः बींजौ बीरमोत
१ ईंदो बेणौ[४] धरमावत
१ भाटी जोधौ[५] आसावत
१ ईंदौ रासौ जगावत
१ ईंदौ सुजौ बरजांगोत

११ इतरा कांम आया।

१०४. राव मालदे काळ कीयौ तरै इतरी धरती एकवार राव चंदरसैन नुं हुई, तिण री बिगत—

---

१. गुरुवार कुंभ लगन। २. माह सुद ७। ३. जैमल। ४. विणधीर। ५. जोगो।

---

1. पाटी। 2. मृत्यु हुई। 3. दिन उगते ही। 4. पकड़ कर रखी। 5. सती हुई।

१ पाया तषतगढ जोधपुर। संबत १६२२ रा मंगसर सुद ४ गढ़ छुटौ, भादराजण गया, गढ हसनकुळी नुं सौंपीयौ।

१ सोझत संबत १६२० रा आसाढ वदि २ राव रांम नुं मुगलां दिराई।

जैतारण।

१ पौहोकरण संबत १६३३ रा फागुण वदि १४ भाटीयां रै अडाणे।[1] भाः मानै मांगळीयै भोजु घाती तद राव मुडाड़े हुतौ।

१ सीवांणै संबत १६३२ मुं: पतौ कांम आयौ। पछै बांसला[2] ठाकुरां बात करनै मुगलां नु दीयौ। सहबाजषांन कांबोलीयौ[3] इण फौज साथे, राजा श्री रायसिंघ बीकानेरीयौ छै, पातसाही फौज में सिरदार साहबषांन[1] कंबौ साहकुली छै।

१०५. जाळौर राव काळ कीयौ तद हुती। संबत १६१८ रा आसाढ वदि ७ राव मालदे नुं मु. गांगदास फौज तेड़ायी[4] तरै पां. पतौ नेतावत नै मुं: भींवौ गढ़ लीयौ। पछै कुंवर चंदरसेन नुं गढ़ देषण नुं मेलीयो थौ। पछै संबत १६१८ रा काती सुद १२ राव मालदे काळ कीयौ। पछै संबत १६१६ रा पोस सुद ६ राव रै चाकर अकबर पातसाह रा उमरावां मीरजाहां नुं कूंची देनै उरा आया।[5]

राव चंदरसैन री बाहार री बात

१०६. संबत १६२० रा जेठ रा साल राः जैतमाल जैसावत रै मामले रिणमल दिलगीर[6] हुआ। तरै राव रांम नु भषायौ[7] रांम दरगाह गयौ। संबत १६२० रा जेठ सुदि १२ हसनकुळी नुं लेनै जोधपुर आया। रांम बावड़ी री तरफ ऊतरीयौ दिन १८ गांव राव बीग्रहै कीयौ[8] पछै रिणमल बीच कर नै[9] संबत १६२० रा आसाढ बदि २ बात

---

१. सहबाज खांन।

---

1. रहन। 2. पीछे वाले। 3. काबुल वाला। 4. बुलाई। 5. चले आये। 6. दुखित। 7. सिखाया। 8. झगड़ा किया। 9. बीच-बचाव करके।

कीवो। राव रांम नुं सोभत देणी कीवी।

१०७. असाढ बद ३ मुगलां रौ कटक रांम ऊपाड़ीयौ। दिन २ मंडोवर रहा। पछै बोहोरावास डेरौ कीयौ। असाढ सुद ५ बीसलपुर डेरौ कीयौ। असाढ सुद ७ बीसलपुर था सोभत गया। रांम सोभत आय बैठौ।[१] चाकर हुवा। मुगल नै चंद्रसैन नुं लागाई दीया। संबत १६२१ रा चैत सुदि १२ वळे मुगल फौज ले आया। जोधपुर आय लागा। राव गढ झालीयौ।[1] माहे रजपूत बडेरा ठाकुर सु साथ रा सारा बडा छै। पिण राव आपरै डील गाढ निपट घणौ।[2] राव रै कन्है भींव लादेवत तोबची[3] हीडागर[4] मांणस ६०० छै तिण लीयां घणा मामला कीया। रांणीसर मुगलां भेळ दीयौ[5] तरै राः बरसल पातलोत मुंः दूदौ[२] कांम आया। राः किसनदास गांगावत करनोत मास ९ राव गढ राषीयौ। पछै साथ बडौ दीठौ तरै संबत १६२२ रा मंगसर सुदि १० रिववार रावजी मुगलां सुं बात कीवी। मंगसर सुदि ११ मुगल गढ़ चढीया। राव चंद्रसेन भाद्राजण गयौ। सोः मानसिंघ राः पतौ नगावत राः तीलोकसी कूंपावत साथे गया।

१०८. एक वार राजा रायसिंघजी बीकानेरीया नुं जोधपुर पातसाह दीयौ छै। संबत १६३१ था बरस १॥ या २ रहौ, संबत १६३४ तांई। नै कंवर दलपत काच रा माळीया रा गोषां[6] आ[३] पड़ोयो[7] पिण मुओ नहीं। नै घणा दिन जोधपुर तुरकां रौ थांणौ रहौ।

१०९. संबत १६२४ माहा सुद १० रा लषमण भदावत रौ गढ जोरावर[४] कन्है था सु मुगल इसमाईल कुली मारीयौ। गढ भार भरत[8] माल सुधो मरीयौ हाथ आयौ। पछै लूटाणौ माणस बद न हुयां पछै नीसरीया पछै राः लषमण सांवळदासोत रांमोत राः सादुळ

---

१. ख. प्रति में अधिक—रिणमल राव चंदरसेन कन्है हुतो सु सारा राम कन्है सोजत आय बैठा। २. उदौ। ३. ता। ४. जोजावर।

---

1. किले मे सुरक्षित रहा। 2. परंतु स्वयं राव के शरीर में अत्यधिक शक्ति एवं स्फूर्ति है। 3. तोपची। 4. युद्ध सेवा करने वाले। 5. राणीसर तालाव कब्जे में करके अशुद्ध कर दिया। 6. महल के गवाक्ष। 7. गिरा। 8. बहुत सी सामग्री।

रामसीहोत[1] सुनसीहोत[2] कादु कन्ही पाछौ वळतौ आपड़ीयौं[1] मुगल घणा मारीया। हाथी ४ इणां रै हाथ आया।

११०. संबत १६२५ रा फागुण सुदि ५ राव चंदरसेन हाडी सुरजन री बेटी रिणथंभोर परणीया था। घोड़ा १५ हाथी दायजै दीया नै गहणौ रूपिया १५०००) पनेरै हजार रौ दीयौ।

१११. संबत १६२७ रा मंगसर माहे अकबर पातसाह षुवाजे पीर री जात आया। पछै राव चंदरसेन पातसाह नुं मिलण रै वासतै भाद्राजण था असवार ५०० चैत[3] बदि ९ चढीया। नागोर संबत १६२७ रा पौस वदि १ मिळियौ। पातसाह जी सुरत देष राजी हुवा। नै मोटौ राजा पिण अठै आय मिळिया। पछै कंवर उगरसैन रायसिंघ नै पातसाह कन्है राषीयौ।

११२. संबत १६२६ मंगसर सुदि ३ राणौ उदैसिंघ जेसलमेर नुं जातौ नवसर आयौ। पछै राव चंदरसेन नुं साथे लेनै जेसलमेर गयौ। भाटीयां सुं कहाव कीयौं[2]—मोनुं परणावौ। भाटीयां बात मानी नहीं। दिन ५ तथा १० उठै रहा, पछै परणीयौ नहीं। तरै पाछा नोसरतौ नुं राव चंदरसेन भादराजण राणा नुं आंण नै आपरी बेटी बाई करमैती परणाई, मिती पौस सुद १।

११३. १६२७ राव चंदरसेन भाद्राजण छांड नै सीवाणे पीपलण रै भाषरे आया। पछै धरती ऊपर कळाषांन आयौ। बेढ १ राः देस पातलोत राव रा हुकम सुं कळाषांन सु गांव महेली कीवी। मुगल रौ साथ मारीयौ। लूणी हद हुई।[3] तरै कुंही'क बात हुई, धरती माथै डंड कीयौ।[4] पांः सारण भाः धनौ पईसौ ऊलै दीयौ।

११४. सबत १६२९[4] राव चंदरसेन काणुजै आपरी बसी माहाजनां सुधा आय रहा। पछै तिणां दिनां राः रतनसी षींवावत रा बेटा

---

१. सलोत। २. सुजो रायसलोत। ३. मीगसर। ४. सं० १६२८।

---

1. पकड़ लिया। 2. भाटियो को कहलवाया। 3. लूनी नदी की हद कायम हुई। 4. दंड लगाया।

मुगलां सुं मिळ नै आसरलाई रहा था। सु राव चंदरसेन इणां नुं कहाड़ीयौ–थे गांव सूना कर नै वसी मगरै आंणौ, नै थे कन्है आवौ। तरै इण कहौ–म्हां था हीमार[1] मास ४ आयौ न जाय। तरै राव बुरौ मानीयौ। राः किलाणदास गोपाळदास नरहरदास राम री वसी आसरलाई थी, तठा ऊपर राव आप चढीयौ। असरलाई मारी नै रजपूत ऊदावत दिलगीर हुया, नै मारीया। राः रतनसी षींवावत रौ बेटौ गोपाळदास किलाणदास रांम तिण बात पगा[2] ऊदावत दिलगीर हुआ। तिण समै जोधपुर रा बांणीयां कन्हा सुं कुंही'क रावजी मांगीयौ, दुष दीयौ। तरै लूंकड़ संषलेचा भंडसाली पिण मुगल नुं आय मिळीया। बीकानेरीया मेड़तीया मुगल भेळा छै। पछै ऊदावतां नै जोधपुर रा बांणीया भेळा होय नै रावजी ऊपरां मुगल आंणिया। तठा पछै बेढ़ हुई। देहरासरी[1] तीलोकौ कांन्हावत राः ठाकुरसी रिणधीरोत और ही बीजौ साथ कांम आया, नै गुढौ[3] लूटांणौ। इण समै रावत पंचायण घणा हीड़ा कीया।

११५. तठा पछै मास[1] राव मुडाड़ै मेवाड़ रै संबत १६३१ रै टांणै[4] गया। आगे गांव राणा ऊदैसिंघ री बेटी चांदा सीसोदणी राव परणीयौ थौ तिण रै पटै हुतौ, पछै राव सीरोही रै कोरटै रहा। बरस १॥ कोरटै रहा। संबत १६३३ रा फागण वदि १४ भाः मान भाः भोजु पोकरण रौ कोट कुं लेनै[3] भाटीयां नुं सौपीयौ। संबत १६३२ सीवाणौ मु. पता ऊरजनोत रै गोळी लागी। पछै राव रा चाकर राः पतो नगावत ऊ. जैमल नैतसीहोत राः किसनदास गांगावत भाः वीरमदे रामावत मुगल सुं बात कर नै मु. पतो कांम आया। पछै मास १। नुं गढ तुरकां नुं दे नै राव कन्है मुडाड़े आया। राव चंदरसेन सुं मामला कराया तिकां संषलेचां अहेमदावाद पाटण साः विमलसी

१. देरासरी। २. नास। ३. कुछ लेकर।

1. अभी। 2. लिये। 3. रहने का सुरक्षित स्थान। 4. समय।

पटणी सा: नाथौ हुतौ। कहीके सहसकरण रा: भणसाली धनराज मुहोम छै। पाछौ नाया।

११६. संबत १६२० रा जेठ सुदि १२ राव रांम नुं मुगलां सोझत दिराई। संबत १६२९ साके १५९५ रा जेठ सुदि ३ राम मालदेवोत काळ कीयौ। जोगीयां सुं मामलौ हुऔ।[1] पछै वडौ बेटौ रांम रौं मदायती करन थौ। सु रजपूतां वडेरां नै षातर में ल्यावै नहीं।[2] पछै लोहड़ा[3] बेटा कला नै रा: आसकरण नै देवीदासोत रा: महेस कूंपावत मुदाइत हुतौ सु कला रांमोत री भीर हुआ।[4] पछै केई'क रजपूत रा: सूरजमल प्रीथीराजोत के बीजा करने री भीर हुआ। दोनुं भाई दरगाह गया। पछै तिण समै रा: प्रीथीराज कूंपावत पातसाही चाकर छै, तरै पातसाह अकबर मारवाड़ री हकीकत सारी सदाबद[5] प्रीथीराज नुं पूछै। तासुं रा: प्रीथीराज आगे रा: महेस कूंपावत गळगळौ[6] हुवा। तरै महेसदास नै प्रीथीराज कहौ—थे कौण वासतै गळगळा हुवा। तरै महेस कहौ—म्हां नै आसकरन राव कला री भीर हुवा छै। नै करन जोरावर लायक छै। तरै प्रीथीराज कहौ—म्हे अरज पातसाहजी सुं कर नै टीकौ कला नै दिरावसां। पिण थे म्हांरी बसी नुं षैरवौ दीज्यौ। तरै इण कहौ—भलां। तरै पछै पातसाहजी दिन २ तथा ४ नुं प्रीथीराज नै पूछीयौ—टीकौ किण नुं दीजे। तरै प्रीथीराज अरज कर कहौ—रजपूत सारा रा: आसकरन रा: महेस सकोई[7] कला री तरफ छै। तरै पातसाहजी गांव ६० सुं सुराईतो करन नुं दीयौ, नै सोझत राव कला नुं दीवो। पछै इण नुं सीष दीवी। तरै अै जातां रा: महेस कूंपावत रा: आसकरन प्रीथीराज सुं षैरवा रै वासतै मिळीया ही नहीं। विगर सला चालीया।[8] पछै दिन १० पांच आडा घात नै प्रीथीराज पातसाहजी सुं मालम कीयौ। षैरवौ जोधपुर रै वांसै तफौ छै दिन १० हिमार दबाय नै सोझत वांसै घातीयौ छै।[9] पछै पातसाहजी जोधपुर सैदां नुं हुतौ सु लिष भेजियौ, षेरवौ जोधपुर रै वांसै कीजौ।

---

1. युद्ध हुआ। 2. मान्यता देना नही। 3. छोटा। 4. पक्ष में हुए। 5. प्रारम से ही। 6. दुख विह्वल। 7. सभी। 8. बिना सलाह चल दिये। 9. सोझत की जागीर के साथ कर लिया है।

११७. संबत १६२६ सोझत कलौ राव छै। एक वार सोझत आय नै फेर दरगाह गयौ। पछै उठै किणीहीक सुं[1] पातसाह री हुरम नै कला री नजर लागी। राव कलौ बैर[2] रौ रूप कर नै उण री सहेलीयां साथे मांहे गयौ। पछै उण री पाषती एक और हुरम थी, तिण जांणीयौ।[3] पछै उण हुरम पातसाहजी सुं मालम कीवी। पछै पातसाहजी उण हुरम नै कुंही'क डराई। तरै हुरम डरती थकी पातसाह जी कनै राव कला रौ नांव पारीयौ।[१] नै कलौ तौ तठा पहले ही सोझत आयौ। सोझत भाजी नै ड़ीघोड़ जाय वसीया। तिण दिन सेष ईभरायम[२] नाडुल पातसाही उमराव थांणौ छौ। इण तरफ मदार सारी उण रै माथै छै। तरै पातसाहजी सेष ईभरायम नै लिषीयौ— राव कला नै ललौपतौ करनै[4] दरगाह मेल दीजौ, नहींतर[5] कला नुं उठै ही कूट मारौ। इण तरै सुं पातसाह रौ लिषीयौ आयौ। पछै सेष कला री घणी हळभळ कर नै[6] नाडुल कला नु बुलायौ। पछै कलौ घोड़ा बहेल बैस[३] नै थोड़ा सा साथ सुं नाडुल आया। पछै सेष ईभरायम कला सुं चूक कर नै संबत १६३४ रा फागण राव कला नुं मारीयौ। तठै इतरौ साथ कला रौ कांम आयौ तिण री बिगत[४]—

१ रा: सादूल रायसलौत डूंगरोत।

१ चोषौ धायभाई।

१ राठोड़ हींगोलौ।

१ ढोली ऊदा रौ बेटौ।

तठा पछै धरती मांहे धणी कोई नहीं। तरै रा: सादूळ महेसोत रा: आसकरन देवीदासोत सारा मिळ नै राव चंदरसेन डूंगरपुर गयौ हुतौ उठै डूंगरपुर रै धणी गळीयौ कोट दीयौ थौ तठै गया था। बरस २॥ तथा उठै रहा। सारौ राव मालदे रौं रहाणा रौ लोग[7] कांमदार वगेरै

---

१. पारियो। २. ईबरांम। ३ वेस। ४. गेहलड़ो नदो, रा. साहाणी रामदास डुगरावत ये दो नाम अधिक।

---

1. किसी प्रकार से। 2. स्त्री। 3. उसे मालूम होगया। 4. जैसे तैसे समझा बुझाकर। 5. वरना। 6. अनेक प्रकार से राजी करके। 7. वशिष्ट व्यक्ति।

राव साथै उठै हुता। पछै रिणमल रा आदमी आया। राज बेगा पधारौ अठै धरती षाली छै। पछै मोटौ राजा कुंवर भोपत साथे साथ सीवाणै हुतौ। विगत—

1 मेघराज
1 रा: आसकरन
1 बिहारी मुहमदषां
1 रा: भोजराज कलुटा
1 भाटी मांनौ
1 ऊः जैतसिंघ
1 रा: रासल प्रीथीराजोत
1 रा: केसौदास
1 केसौदास

११८. संबत १६३५ रा सांवण वदि ११ राव चंदरसेन मुगलां सुं गांव सीवराड़[1] बेढ कीवी तरै साथ कांम आयौ तिण री विगत—

१. ऊहड़ जैमल नैतसीहोत। १. करमसी मालावत।
१ सांः दुदौ सांषलौ। १ माणोत[2] अचळौ सूजावत।
१ राः रायसिंघ भानीदासोत चांपावत। १ राः जसवंत जोगावत मांडणोत।
१ ऊहड़ जैतमल जैमल रौ। १ भाः भगवानदास बीरमदोत।
१ राः डूंगरसी मालावत। १ राः सांगो उरजनोत।
१ केसोदास जोगावत मांडणोत। १ ईंदौ बैणौ[3]।
१ देवड़ा बींजा रा साथे राजपूत १७ कांम आया।

११९. श्री मोटौ राजाजी नुं जैतारण रा ६५ गांव जागीरी माहे था। पछै राजा जी काळ कीयौ तरै अै गांव इंण भांत श्री पातसाहजी बांट नै पटै कर दिया। विगत—

२८॥ राव सगतसिंघ उदैसिघोत।

१२ गिररी जागीरी रा।

1 गिररी
1 देवली हुलां
1 वरांटीयौ बडो
1 लोहमाली
1 रामावास
1 चड़ीयाहारौ

---

१. सवराड़। २ मुहणोत। ३ भाटी सुरतांण दूदावत (अधिक)।

१ टीकड़ौ १ टूंकड़ौ
१ नादणौ १ दागुलो
१ बरांटौ षुरद[1] १ हाजीवाळ[2]

१२

१६॥ षालसा रा गांवां मांहला—

१ छीपीयौ १ बेहड़ौ १ देवली पीरां[4]
१ रामावस १ लांटावासणी १ कुड़ाहड़ौ
३ आसरलाई ॥ बीकरलाई १ मोड़रो
१ करमावास १ बाहलीबड़ी १ बाहली षुरद
१ बसीयो १ पानुवास[3] १ पाटवौ

१६॥

२८॥

१८॥ राव दलपत उदैसिंघोत—

१४ षालसा लायक

१ आगेवो १ बोघांणी[5]
१ महेलवो १ मुरड़ाहो
१ नींबोल १ रातड़ीयो
१ गळणीयो १ रांमपुर
१ चावड़ीयो १ रहेलड़ौ
१ रामावास बडौ १ नीबोड़ो
१ कोटड़ो १ बलाहड़ा

१४

४॥ सांसणां रा पटै लिष दीया—

१ भाषर वासणी[6] १ रोजा[7] री बासणी
१ बेतावास १ बोहोगुण री बासणी
॥ बीकरलाई

४॥

१८॥

१ बरांटियो खुरद। २ हाजीवास। ३ पातुवास। ४ पिरागरी। ५ बेघाणी
६ भाखर वासणी। ७ तेजारी बासणी।

११ राव भोपत उदैसिघोत

१ सांगवास	१ जवा वासणी[1] बांभणां
१ ठाकुरवास	१ लोटोधरी[2]
१ नीलांबो	१ पपिळीयौ
१ मालणा	१ चीतार
१ लुलकोट[3]	१ राषडायथो[4]
१ गुदरड़ो[5]	

११

३ राः माधोसिंघ ऊदैसिघोत—

१ गांव देहूरीयौ १ लातरीयौ।

१ गांव लुंभड़ावस

३

३ राव मोहणदास ऊदैसिघोत—

१ बागाकुडा[6] १ राणीवाळा

१ बीबाहलो[7]

३

६५

मोटा राजा री बाहार रो वारता

१२० राः किलाणदास रायमलोत ऊपर मोटा राजा री फौज कुंवर भोपतसिंघ री साथे मेलिया था। संबत १६४६ रा मिति मंगसर वदि ७ गढ़ घेरीयौ। पछै रा किलांणदास रातीवाही दीयौ[1]। तरै इतरौ साथ मोटा राजा रौ कांम आयौ। नै मगसर वदि ७ गढ लीयो, संबत १६४६ रा।

७ रावळौ साथ थो तिण मांहला रजपूत कांम आया—

१ रा० राणौ मालावत।

१ पींपाड़ौ कान्हौ दुरजणसलोत कु० भोपत रो साकर[2]

१. जन-वासणी। २. लोटोधरी। ३. घुलकोट। ४. राबड़िया। ५. गुनरड़ो। ६. बांजाकुड़ी। ७. बहेलो।

1. रात को हमला किया। 2. चाकर।

१ रा० ईसरदास नेतसीयोत राण री चाकर।
१ रा० कलो बरसलोत रूपौ।
१ रा० जेसौ जगमालोत रा० जेतसी री साकर[1]।
१ रा० कलो जेसावत रा० रांमौ री साकर।
१ दाहवौ परबतसिंघ मेहाजलोत नवसर पटै[2]।

७

११ रा० किलांणदास रा चाकर कलाणदास मारीयौ तद कांम आया

१ रा० गोपाळदास भींवोत।
१ भा० भाषरसी कूंपावत।
१ भाईल लालौ रातीबाहो[3]।
३ भा० पंचायण वींसावत।
१ गोधौ भादौ हेमावत।
१ अपटौ[4]।
१ चहुवाण गोपाळदास झाझणोत।
१ दहीयौ।
१ धाय भाई कड़वौ।

११

१२१. साथ राजाजी रौ नीसरीयौ पछै मोटौ राजाजी आप पधारीया। पछै गढ़ रा पौळीयां[1] रै[5] भेद साथ चढीयौ संबत १६४४[6] रा मंगसर वदि ७ गढ़ लीयौ। संबत १६४० रा भादवा वदि १२ पातसाह अकबर फतैपुर जोधपुर दीयौ। पछै आसोज वदि २ राजलोक सीकंदार सुं जोधपुर आया। नै पछै काती वदि ६ राजाजी पधारीया।

१२२. राजा ऊदैसिंघ मालदेवोत देवड़ी पदमा रै पेट रौ राव जगमाल रौ दोहीतरौ। चंद्रसेन ऊदैसिंग सगा भाई, गई भौम रा वाहरू।

---

१. चाकर। २. नवसर पटे। ३. रातीबाहे। ४. सेपेटो। ५. नाम नहीं दिए गए। ६. १६४५।

---

1. मुख्य द्वार के पहरेदार। 2. खोई धरती को पुन. प्राप्त करने वाले।

संबत १५८४ रा माहा सुदि १३ राव रौ जनम नै संबत १६३९ रा जेठ माहे अकबर पातसाह जोधपुर दे बिदा किया। संबत १६४० रा काती वदि ८ सोमवार पुनरवस नषत्र जोधपुर रै गढ़ आप पाट बैठा। संबत १६५१ रा आसाढ वद १ लाहोर काळ कीयौ। पछै आसाढ़ वदि १३ बुधवार राजा सूरसिंघ पाट बैठौ, जोधपुर।

१२३. पातसाह मुनसब हजारी जात आठ सौ असवारं रौ मुनसब दीयौ। जोधपुर संबत १६३९ रा जेठ मांहे दीयौ। तद तफा[1] २ बारै था। आसोप तफा सुधौ रा० भांण कूंपावत नुं थौ। बीलाड़ौ रा० वाघ प्रथीराजोत नुं, तफा २ जुदा था एक जोधपुर तफौ १९ सुं हुऔ थौ। पछै सीधल देवराजोत[1] पिण जुदौ हुतौ। सोभत संबत १६४९ नबाब षांनषांना मुदफर पातसाह ऊपर जाय था तद मोटा राजा नुं साथे लीयौ। तद सोभत नबाब दीवी। संबत १६४० रा पोस वदि ९ राजापीपले[2] मुदफर सुं बेढ़ हुई।

१२४. सीवांणौ राणौ किल्याणदास मार नै लीयौ। संबत १६४६ रा मंगसर बदि ७। कोटौ हाडां वाळौ संबत १६५० रा० गोपाळदास मांडणोत फौजदार। वधनौर कोटौ छोड नै लीयौ संबत १६५१ रा० चांदौ ईसरदासोत फौजदार। समावली जिका पातसाहजी पहली मोटा राजा नुं दीवी थी उठै मोटौ राजा वरस…विषाइत थकौ रहौ थौ[2]। गुवालेर नजीक छै। गांव ४४ लारै लागै छै। चमारी पंजाब[3] लाहोर सोबौ नजीक छै। सातलमेर पोकरण पातसाही तरफ जागीर मैं मंडी थी। अमल न हुवौ[3] तरै मोटै राजा लवेरौ गांव १ बेमगळौ सीवांणा रौ दीयौ। संबत १६४० रा मगसर सुदि १ मोटौ राजा जोसी परषोतम रा बेटां नु चांडीदास भैरूदास संकरदास नुं गांव मोड़ी दीवी सु पतर माहे नांवौ छै[4]।

१२५. मोटौ राजा जीवतां कुंवर सुरजसिंघ भा० गोयंददास मांनावत सुं मया[5] घणो करै छै। गांव बासणी १ तुंवरां री पटै छै। पछै राजा

---

१. साथल-देवराज रै। २. राजपीपले। ३. चमा पचारी।

---

1. राज्याधिकार। 2. सकटापन्न स्थिति मे। 3. अधिकार नहीं हुआ। 4. ताम्र पत्र में उल्लेख है। 5. कृपा।

जी कहीं देष—औ किसड़ीक सांणो[1] छै। तिण दिनां आसोप जोधपुर बारै छै। पछै आसोप रै वांसै दीवांन बगसीयां नुं कागळ[2] लिख दीयौ। भा० गोयंददास उठै कोईक दिनां रहौ, कांम आषर कर आयौ।

१२६. रायसिंघ चन्द्रसेनौत रै वैर सुं सिरोही ऊपर गया। सीरोही रौ देस मारीयौ। देवड़ौ सांवतसिंघ पतौ तोगौ सुरावत चूक कर नै मारीया[3]। चीबौ जैतौ षीमा भारमलोत रौ इण भेळा[1] मारीयौ। संबत १६४४ रा फागुण माहे रा० वरसल प्रीथीराजोत रा बोल सुं देवड़ा आया था, सु चूक कर मारीया। तरै वरसल गुजरात नबाब षांनषांना साथे गया। मुदफुर सुं बेढ हुई तठै घणौ भलौ हुऔ, तठै साथ कांम आयौ।

१ भा० सादूळ मानावत सोर मैं बळीयो[4]

१ भा० गोपाळदास राणावत रूपसोत[2]

१२७. बांभण चारण राव रांम कला री वाहर माहे रजपूतां रां दीया घणा गांव सांसण लीया हुता तिण वासतै चारणां सुं घणी अदावद हुई। आढ़ा दुरसौ नै दुणली[3] रा० आसकरण देवीदासोत रौ दीयौ थौ। पछै दुरसौ बाहारट अषा कन्है गयौ। पछै अषौ भलौ हुऔ। मोटौ राजा गुजरात नुं चालतौ हुतौ। आय सोभत डेरौ थौ। ऊठै काजेसर माहादेव चारणां तागो कीयौ[5]। बारहट अषौ भांण रौ घणा चारणां सुं मुवौ।[6] घणा जणां गळै घाती। दुरसै गळै घाती[7] थी, सु ऊबरीयौ[4]। संबत १६४३ रा चैत माहे इतरा गांव लोपाणा[8] परगनै जोधपुर रा[5]:—

१ बीरलोषौ तफै औसीयां--प्रो० राजो बालवतां री।

१ गांव केलावौ तफै लवेरै रौ--प्रो० रामदास षेतावत दत[9],

---

१. सेलां। २. रूपसीयोत। ३. दुणलो आघो। ४. ऊपड़ियौ। ५. 'ख' प्रति में नाम व्यवस्थित नहीं।

---

1. सयाना। 2. व्यक्तिगत पत्र। 3 छल से मार डाला। 4. बारूद से जल गया। 5. त्रागा, आत्म-हत्या के लिए शरीर पर शस्त्र से घाव कर खून छिड़का। 6. अनेक चारणों सहित मरा। 7. आत्महत्या के लिए फांसी डाली, प्रहार किए। 8. जब्त हुए। 9. दान।

रा० बरसंघ जोधावत रौ प्रो० कान्हा रूपावत नु[1] ।

१ गांव तंणावडौ[2] तफै हवेलो सिरीमाली लहुवादेव रौ राव जोधा रौ दत ।

१ गांव कड़वड़ रौ वास, तफै हवेली प्रो० सुजौ गंगादासोत[3] रौ दत रा० पंचाईण अषेराजोत रौ ।

१ आकड़वास, तफै पाली रौ बांभण पलीवाळ आचारजां रौ ।

१ नीबलौ तफै पाली वि० लोहटा[4] रौ राव जोधा री बेटी लाला[5] नुं परणाई तीण रौ ।

१ गांव बोहौड़ा नडौ तफै हवेली सिरमालौ अनंत रा ।

१ गांव जाजीवाळ भींवौता रो तफै हवेली षिड़िया भांना जेता-सिहोत[6] नुं ।

१ गांव कड़वड़ रौ वास तफै हवेली अषैमलौत रौ दत वा० अषा नु पंचाईण अषैराजोत रौ ।

१ गांव ऊजळीयौ तफै हवेली कड़वड़ रौ वास दत राव गांगा रौ ऊजळ सगतावत बाकुलीया नुं ।

१ गांव जाइतरो तफै ईसर ढौलकीया रौ ।

१ गांव कौटड़ी तफै चारण देदा[7] भैरवा रौ ।

१ गाव रांमावट तफै हवेली वीरामणां रै[8] सीर रौ ।

१ गांव बरीयां[9] तफै भादराजण दत राव मालदे रौ देरासरी कांन्हा रंगावत रौ ।

१ गांव सुगाळीयौ तफै भादराजण रौ दत राव मालदे रौ देरासरी कान्हा रौ ।

१२८. संबत १६४४ रा फागुण माहे मोटौ राजा[1] सीरोही गयौ । जाम-वेग साथै छै । पछै फागुण सुदि ५ गांव नेतड़ौ मारीयौ[2] । मास एक

---

१. जोगावत रौ बीका नै दूदावत नुं । २. तोलावड़ो । ३. गगादासाणी । ४. सलेट । ५. सोनगरा लाले नु । ६. नेतसिहोत । ७. देवा । ८. बारट सायर रौ । ९. गिरवरियौ ।

---

1. उदैसिंह । 2. जीता, प्राप्त किया ।

उठै रहा । पछै राः बरसल प्रीथीराजोत राः बोल दे नै राः[1] पतौ तौगौ सांवतसोत[2] चीबौ जैतौ षीमां रौ राड़बरौ हमीर कुंभावत राड़बरौ बीदो सकतो[3] तरै आंण मारीयौ । पछै बीजौ जांमबेग नुं भीतररोठ मारण मेलीयौ । तठै देवड़ो बीजौ मारण नै जांमबेग रौ भाई लोहोड़ौ पड़ीयौ[1] ।

१२९. बेढ १ गांव लाहीआवट[2] फळोधी रौ गांव बेढ हुई । रांव चंदरसेन था, नै मोटा राजा रौ चाकर राः गोपाळदास प्रीथीरांजोत घावां पड़ीयौ । राः जैतमालजी ऊठायौ राव चंदरसेन तरै साथ माहे छै । राः लषमण भींवोत अरड़कमल चूंडावत रौ पोतरौ कांम आयौ[3] । राव साथे वडेरा ठाकुर—

१ राः जसवंत डूंगरसोत ।

१ राः जैतमाल जसवंतोत ।

१ तिलोकसी कूंपावत ।

१ रावळ मेघराव[4] ।

१ राः प्रीथीराज कूंपावत ।

१ सौः मांनसिंघ ।

१ राः पतौ नगावत ।

१

१३०. ईण वेढ़ माहे मोटा राजा रै हाथ री बरछी राव रै लागी नै रावळ मेघराज रै हाथ री बरछी मोटा राजा रै लागी । राव चंदरसेन नै मोटै राजा रै गांव लोहीयावट वेढ हुई । तिण जायगा[4] साथ कांम आयौ तिण री विगत—

१ राः जोगौ[5] सादावत मांडणोत ।

१ राः षीची हदौ केळणौत ।

१ राः पंचायण टोहावत थाथारीयौ ।

---

१. देवड़ो । २. सांवतसी सूरावत । ३. भवरो बींदो संकरोत । ४. मेघराज । ५. जैतों ।

1. घायल होकर गिरा । 2. लोहावट । 3. वीरगति को प्राप्त हुआ । 4. स्थान ।

१ रा: ईसरदास आसरवोत मंडलौ[1] ।
१ रा: षींवराज आभमलोत थाथरीयौ ।
१ भाः सांकर दुरजनसलोत[2] ।
१ सांहणी करमौ जेसावत रौ ।
१ रा: कलांणदास महेसोत करमसियोत ।
१ रा: वरसल सांकरोत ।
१ रा:[3] जैमल तीलोकसौत परबतोत ।
रा: हींगोलौ नेतावत[4] ।
१ रा: जालमसिंघ ।

१३१. परगनै सोझत रा सांसण[1] रा गांव इतरा लोपाणा—
१ गांव बेणीयावस, जोसो जगमाल पोकरणै नुं दत राव रायसिंघ रौ ।
१ गांव वासणी, राईमल री उछत श्रीमाली राव जोधा रौ दत ।
१ गांव गोड़गड़ी देरासरी कांना रा बेटां पोतरां नै ।
१ षारची बांभण आचारज पालीवाळ री राव गांगा रौ दत । प्रो० मोडण सीवड़ जात षेतावतां मांहे ।
१ गांव रहानड़ी ओझा श्रीमाळी गदाधर[5] री, राव मालदे रौ दत ।
२ प्रोः सांवतसी, दत राव गांगा रौ १ बाहड़सौ १ गोधावाळ ।[6]
१ जानौदौ बांभण गुदवचा रौ ।
१ षारीयौ बांभण सोढा रौ ।
१ गांव भेवळीयौ[7] प्रोः षेतावतां रौ ।
१ गांव बीरावास वांभण भाडी सुजा जागर वाळा रौ ।
१ गांव हीगावास, जोसी ।

१. अमरावत मंडलो । २. राजाजी रो साळो (अधिक) । ३. भाटी । ४. नीबावत । ५. गंगाधर । ६. गोधावास । ७. भेंवली ।

१. दान की हुई भूमि ।

१ गांव षारीयो, फदर रौ।

चारणां रा नै गांव सांसण—

१ बाहारेट अषौ भाणावत रा १ रासाणीयो १ भाल्हीयौ[१]

१ आढा दुरसा मेहावता रा १ रूणलो[२] नाथल कुड़ी।

१ गांव बोल, सादू माला ऊदावत री।

१ गांव हापत, बाहारैट दाना रतनु नै राव रामसिंघ री दत।

१ गांव गोघेळाव[३] षिड़िया डूंगरसी रौ दत राव जोधा रौ।
षिड़िया चांदण नु राव रिणमल रा फूल गंगाजी ले गयौ[1] तरै रौ।

१ गांव बीठोरौ षुरद षिड़िया भाना नेतावत रौ राः आसकरन देबीदासोत रौ दत।

१ गांव मोहेड़ा सोः बाहारैट केसौ जीवावत रौ।

१ जोगरावास धीरांणा किसना भाना जीजावत नुं राव रायसिंघ रौ दत।

१ गांव जोधड़ावास दुधवड़ रौ, षिड़िया मेहौ डुंगरसोत।

१ गांव बूटेळाव, एक आसीया करमसी नुं सोः अषैराज रौ दत।

१ गांव लोळावास १ अषावास २ राजगीयावास
३ सांदू धरमं रौ बेटौ रांमा रा।

१ पलासळी राव रांमा री दत।

१ गांव गुजरावास राव रायसिंघ रौ दत।

१ रांमावासणी राः प्रीथीराज कूंपावत रो दत।

१ गांव धागड़ावास षिड़ोया भांना नेतसियोत रौ।

संबत १६४३ कंवर भोपत भगवानदास जैतसिंघ सींधल मारीयौ तठै फळसै भळतां[2] उः रांमो जैतमलोत कांम आयौ।

---

१. भाणीयो। २. दुणलो। ४. गोधेळाव।

---

1. अस्थियां गंगा प्रवेश के लिए ले गया। 2. मुख्य द्वार पर युद्ध करते समय।

१३२. मोटा राजा परगना पाया तिणां री बिगत—

१५३६९५) जोधपुर तफा

३७५००) सीवाणो

१२५०००) सोझत

जैतारण रा गांव ६६५ मोटा राजा नुं था, नै गांव ७२ राः गोपाळदास कलांणदास रतनसोत नुं, आधौ-आध कसबौ इणां नुं।

१३३. मोटा राजा नुं राव मालदे रै मरण फळोधी झाली सरूपदे दिराय, पछै चंदरसेन नुं जोधपुर रौ टीकौ हुओ। फळोधी थकां री वात कोई कहै छै कोई गांघाणी रौ हासल लीयौ। एक वार मोट राजा नै रिणमल भषायौ,[1] कहौ—थे अठै बैठा कासुं करौ[2]। तरै गाघाणी कन्है[1] लगाड़ मारी[3]। चंदरसेन सारण रौ चढ़ीयौ, लोहीया-वट आय पहौतौ। तठा पछै वेढ़ हुई। राः जोगौ दासावत[2] मांडणोत कांम आयौ। राजा उदैसिंघ वडौ पराक्रम कीयौ। राव चंदरसेन रै डील इतरौ साथ फाड़ नै लोह कीयौ[4]। रजपूतां केईक टाळौ कीयौ[5], मोटा राजा रौ घोड़ौ वढीयौ, आपनै षीची हदै आपरा घोड़ा ऊपर चाढ़ नै काढीयौ। राव चंदरसेन वेढ जीती[6]। उठी सुं रजपुत राव चंदरसेन नै लेनै पाछा वळीया[7]। राः जैमल[3] जेसावत राः जसवंत डूंगरसोत साथे, रावल मेघराज राः पतौ नगावत सौ. मानसिंघ राः प्रीथीराज कूंपावत नै तिलोक कूंपावत।

[[4] १ रा. जैतौ सदावत मांडलोत।

१ रा. हींगोलो नींबावत पातावत।

१ भा. बैरसल सकरोत।

१ भा. संकर दुरजणसालोत, राजाजी रौ साळो।

१ राः षीवराज आभमलोत थाथरीयो।

१ षीची हदो केलणोत।

---

१. बावड़ी। २. सदावत। ३. जैतमल। ४. 'ख' प्रतिका अंश।

---

1. सिखाया। 2. क्या करते हो। 3. हमला किया। 4. वार किया। 5. टालम-टोल की। 6. युद्ध जीता। 7. लौटे।

१ रा. ईसरदास अमरावत मांडणोत ।
१ रा: कील्याण दास महेसोत करमसोत ।
१ भा: जैमल तिलोकसी परबतोत री भाई ।
१ रा: मोकल गंगादासोत थाथीयां री ।
१ रा: पंचाईण टोहावत थाथरीयो ।

भाटीयां केलण नै मोटै राजा बेढ़ १ हुई तिण री बात—

१३४. मोटौ राजा फळोधी छै। राव डूंगरसी दुजणसलोत बीकूंपुर धणी छै। समत १६१६ रा मिगसर में मोटौ राजा फळोधी आयौ। बरस ५ तथा ७ तौ पाधरा चालिया पछै भाटीयां सुं सोबत[1] घोड़ां री रादांण पगां[2] ऊपाव हुवौ[3]। सोबत बीकानेर कनें आय ऊतरी। सोदागरे बींकूंपुर ही खबर मेली। फळौधी षबर मेली। म्हांनुं सांम्हा आय कुं छूट मेल कर[4] तेड़ जाय तठै म्हे आवां। राव डूंगरसी तौ आपरौ भाई भा: भानीदास दुजणसालोत मेलीयौ। मोटै राजा रा: वैरौ जेसावत रा: रांमौ रतनसीयोत रा: गोपाळदास रतनसीयोत रा: जोगौ भाणोत रुपावत नीबो, दुजणसालोत मांडणोत, रा: हींगोलौ वैरसीयोत, रुपौ चा. रतनसी म्हेकरणोत, रा. जैमल भांणोत, रूपौ असवार १०० मेलिया सु सोबत तौ पेहली सोदारी री दीलासा कर नै भा: भांनीदास चलाय मांडणसर बीकानेर था कोस ६ पीलाय था कोस दो ऊतरीयौ थौ। अै जाय मोटा राजा रौ साथ उठै ऊतरीयौ थौ इण रा ओठी आगे गया था तिणे षबर आंण दी—सोबत तौ इणे आधी चलाय नै भानीदास मांडणसर ऊतरीयौ छै। इणे चढ़ नै भा: भानीदास कूट मारीयौ। भाटीये इणे लंक लागी[5], तौ पण भाटी आघौ काढै छै[6]। ऊदैसिंघ रा: मालदे रौ छोरू छै, इण सुं न कीजे। पछै मोटै राजा बीच आदमी भांटीयां रै फेरिया। तिण समै भा: किसनौ वाघावत षारव रौ छांड नै मोटै राजा

1. समूह, कतार। 2. कर आदि के लिये। 3. वैमनस्य हुआ। 4. कुछ कर आदि के सम्बंध में निश्चय कर। 5. वैर-भाव बढ़ा। 6. टालमटोल करते हैं।

कनै वास आय रहौ छै। पछै इणां नुं पण कहै छै—बैर परौ भंजाय दौ। भाटीयां वात कबूल कीवी। तरै राव ही षीरवा री बोरनाडी फळोधो था कोस ५ छै तठै आय नाडो री अेकण तीर ऊतरीया। अेकण तीर मोटौ राजा आय ऊतरीयौ। बैर भांजण नुं बीच आदमी फिरीया तिण मांहले किणहीक कह्यौ—भाटीयां कनै साथ को न छै। तरै मोटै राजा किणहीक आपरा इतबारी[1] चाकर नुं मेलीयौ, राव डुंगरसी रौ साथ गिण आव। औ गिण आयौ। कह्यौ—आपण थी आधौ ही साथ नहीं। तरै मोटौ राजा फिर गयौ[2]। तरै वीच भाटी किसनौ वाघावत बीजा के फिरता था तिणां नुं कह्यौ—कै तौ राव आपरै चढ़णा रौ फलांणौ[3] घोड़ौ म्हांनु दै नहीं तरै म्हे राव नुं मारमां। तरै राव तौ कुजोर मरण रौ करतौ हुतौ पण भा: किसनौ वाघावत घोड़ौ राव रा चाकर रै हाथ सुं षोस नै[4] उरौ लेनै आंण दोयौ[5]। राव डूंगरसी आण जुहार कीयौ। तरै वळे फेर मंडी[6] कही—म्हारै नरा सुजावत री की फळोधी नै बीकूंपुर सींव छै, नोषा परै कोस २ नरा री जाळ कहीजै छै तठै सींव करौ। साष—'नरीये घाती नोषा सींव सलष हरै[7] धणी'।

भाटीये आपरौ दाव दीठौ कह्यौ वा बात कबूल छै। तरै मोटै राजा कह्यौ सींव में इतरा गांव आवै छै सु लिष दौ—

१. वाय २. सीरहड़ १. वावड़ी १. सर १. षीरवो १. सेवड़ो नोषौ।

१३५. तरै भाटी किसनै वाघावत वह्यौ—राव नुं सीष दौ[8]। परधांन फळौधी था साथै आवै छै। तरै राव नुं तौ सोष दीवी। भाटी नेतौ बींजावत नोष सेवड़ा वाळौ नै भा: डूंगरसी नेतावत नै राव रा परधांन मोटौ राजा साथे लीया फळौधी आया। संवारे कह्यौ—इतरा गांव म्हांनु लिष देवौ। तरै उणै आपरौ दाव देष नै गांव लिष दोया।

---

1. भरोसे का। 2. मुकर गया। 3. अमुक। 4. छीन कर। 5. ला दिया। 6. नई समस्या उत्पन्न हुई। 7. राव सलखा का वंशज। 8. विदा करो।

तरै परधांन नै सीष दीवी नै सिरोपाव दीयौ ।[1] परधांन सीष कर नै षड़ीया । किणहीक कहौ–श्रै षोटा थका लिष देवै छै । तरै कहौ–तौ इण परधांन नुं मारौ । सु श्रै तौं[1] पहली नीसर गया ।[2] तरै केईक वांसे[3] दौड़ीया था सु फिर डेरै उरा आया । तौ ही भाटी टाळौ करै[2] छै ।

१३६. मोटो राजा दिन दिन रौ सवायौ छै ।[4] वळे भाटीये परधांनां नै मेलीया । भाटी नेतौ वींजावत राः नींबा रै डेरै आया । कहौ–म्हां सुं घणी गैर करौ छौ[5] तौ ही म्हे हीड़ा करां छां ।[6] । गांव कोई मती मांगौ । नै राः अषैराज कूंपावत नुं राव डुंगरसी री बेटी परणावां छां । आ वात सांभळी तरै परधांन उठै थकां मोटै राजा सुणीयौ, भाटी गाढ़ा[7] दबीया, कहिसौ[8] त्यां[3] करसी, तरै चढ नै नीबली मारी । उठै भाः डूगरसी रौ भाः भांडौ गजुवोत भुणकमल मारीयौ, आदमीया ६ सुं मारीयौ नै घणा बित[9] लीया । इण पछै जाय राव डूंगरसी नुं कहौ–का तौ थे बळ बांधौ[10] नहींतर रात रा अठा सूं कठै ही कोस दोय सौ ऊपर परा जावौ । नहींतर ऊदैसिघ थांनै छोडै नहीं । तरै राव डूंगरसी बळ बांधौ । सारां केल्हण बीकूंपुर वैरसलपुर षरड़ा रा नुं तेड़ौ मेलीयौ ।[3] जेसलमेर रावळ हरराज कन्है आदमी मेल्हीया–म्हांरी मदत घणी करजौ । तरै रावळ पिण साथ बिदा कीया, सु पोकरण सुधां आया नै आधा नहीं आया, नै राव मंडळीक वरसलपुर थी आयो । षरड री गाडळां केल्हण सारा आया । वीकूंपुर राः वरसिंघ नेतावत भुणकमल सींधराव बोडाणां मांणस हजार २००० तथा २५०० भेळा हुवा, संबत १६२७ आसोज सुद ५ रौ टांणौ[11] छै । कितराहेक भाटी कहै छै–दसराहौ घरे करौ । राव मंडळीक घणौ बळ कीयौ, कहौ–हमै किसा दसरावा, नीबलीयां नाडीयां ऊपर

---

१. तां । २. तिकुं । ३. कियो ।

---

1. सम्मानसूचक भेंट विशेप । 2. निकल गये । 3. पीछे । 4. अधिक जोश में आया । 5. दुर्व्यवहार । 6. सेवा-चाकरी करते । 7. पूरी तरह से । 8. जैसा कहोगे । 9. मवेशी । 10. युद्ध की तैयारी करो । 11. समय ।

दसराहो करसां। पछै नोबलो आय ऊतरीया। दसरावौ अठै कर नै काति वदि १ रै टांणै सेषासर डेरौ कीयौ। दिन २ अठै रहा।

कटक री षबर मोटा राजा नुं ही हुई छै। सु मोटौ राजा ही लड़ाई रो तयारी करै छै। तिण टांणै राव चंद्रसेन कांणुज रै भाषर छै। नै पातसाही थांणौ जोधपुर मुगल नासीरदी छै। तिण रा तोबची ६० तथा ८० मोटा राजा तेड़ीया छै। सेषासर था भाटीयां रौ कटक बहगटी हरभम रै पांवै आयौ। उठा थी आसोर[1] तळाव डेरौ १ कीयौ।

१३७. तिण दिनां अकबर पातसाह नागौर संबत १६२७ आयौ हुतौ तद राव चंद्रसेन भाद्राजन सुं मिळणै गयौ। तद मोटा राजा भाणै रतनसी पण जाय मिळीया, नै रायमल पिण मिळीया।[2] पछै मोटा राजा चढ नै आदमी ५०० तथा ७०० भाटीयां ऊपरै गया। तठै बेढ[I] हुई, भाटी जीता नै मोटा राजा बेढ हारीया। तरै इतरौ साथ मोटा राजा रौ कांम आयौ। विगत[3]—

१ वैरौ जसावत चांपावत।
१ राः नींबौ दुजणसळोत।[4]
१ धायभाई केसर।
१ चो. रतनसी म्हैकरनोत।
१ रा. रायसल[5] दुरजणसलोत।
१ भाटो हमीर संकर रौ।
१ ईंदो कलौ चूंडावत।
१ भाटी पिराग।
१ भाटी सुरतांण दुजणोत।[6]
१ चौः रायसल महेकरण रौ।

---

१. आसां रै। २ 'ख' प्रति में अकबर का वृत्तांत यहां नहीं है। ३. 'ख' प्रति में क्रम भिन्न है। ४. दुजणसलोत मांडणोत। ५. रायसी। ६. दुरजणसालोत।

I. युद्ध।

१ भाटी षेतौ ।
१ राः जोग भाणोत रूपावत ।[१]
१ राः हींगोलौ बरसोत ।[२]
१ भाः रतनसी[३] पीथा रौ ।
१ राः देबीदास भाडावत ।
१ भाः रायचंद जोधावत ।
१ भाः सुरजमल किसनावत ।
१ भाः सुरतांण दुजणसळोत ।
१ मांगळीयौ रांमौ ।
१ सो[४] नेतसी जैसिंघोत ।
१ भाटी मीर आसावत ।[५]
२१

इतरौ साथ भाटीयां री कांम आयौ—
१ राव मंडळीक वरसलपुर धणी ।
१ भुणकमल देपौ गांगावत ।
१ भाटी सुरतांण नेतावत ।
१ भा. कांनौ किसनावत मुवौ, लोहड़ै पड़ीयौ[1], पैली ऊपाड़ीयौ । मोटौ राजा तौ बेढ हार नै फळोधी रै कोट आया । भाटीयां रौ साथ दिन ७ कुंडल मै उठै हीज रहौ । फळौदी सैहर ऊपर तौ आया नहीं नै धरती बीजी सारी लूटी नै पछै परा गया ।

१३८. इण बेढ पछै पिण मोटौ राजा वरस ३ तथा ४ फळोधी रहीया । संवत १६३१ अकबर पातसाह फळोधी भाः भाषरसी हरराजोत नुं दीवी । पछै मोटौ राजा फळोधी छोड नै नीसरीया । सु बीकुंकोहर गाडा छूटाणा । तरै राव डूंगरसी आपरा आदमी मेल्हीया नै राः अषैराज उदैसिंघोत नुं तेड़ीया, बेटी परणाई । पछै अषैराज षीची चांदा री घाटी कांम आयौ तरै भटीयांणी अषैराज बांसै बळी[2] ।

१. रूपो । २. वैरसियोत रूपो । ३. रतनो । ४. सोः । ५. राः हमीर आसावत ।

1. शस्त्रों के प्रहार से गिर कर मरा । 2. सती हुई ।

१३९. मोटा राजा नुं संबत १६४० जोधपुर हुवौ। संबत १६५१ काळ कीयौ, बरस ११ जोधपुर भोगवीयौ।[1] पिण इण बैर रौ नांव न लीयौ।

१४०. मोटै राजा मैं मेणौ हरराजीयौ संबत १६४१ रा जेठ माहे आदमी १६ मारीया तठै राः सुरजमल षींवावत रै गोडा ऊपरै घाव लागीयौ।

१४१. मोटा राजा री बेटी धनाबाई नागोर रा चिरमषान नुं परणाई थी उणरी मदत आई थी।[1] समवली षवास पासवान माहे मोटा राजा साथ हुता। साहणी नांदौ पीथौ लालौ टीलौ डील ५ घायल, नाथौ धायभाई बेणौ खीची हदौ ऊः बेळौ कोचर मुः रोहोतास सदा-रंग समदड़ीयौ साथे हुता।

१४२. मोटौ राजा समावळी, तद गूजरां सुं मामलौ हुवौ।[2] तठै गह-लोत अचळौ धरमावत नै पुरबीयौ जांमणी भाणकपुर चंदोत जात रौ बैंस देवसेन रौ भाई कांम आयौ। साहाणी नांदौ पूरै लोहां पड़ीयौ।[3]

१४३. संबत १६४० पौस वदि ८ राजपींपळै मोटै राजा पातसाह मुदफरषांन भागौ। भाः गोईंददास मांनावत रौ सगौ भाई सादुळ सोर सुं बळीयौ।[4] भाः रूपसोत री साष मैं भाः गोपाळदास रांणावत कांम आयौ।

१४४. रायसिंघ चंद्रसेनोत संबत १६४० रा काती सुदि ११ सीरोही माराणौ। पछै मोटै राजा नुं नबाब सोझत दीवी। तद भीमा नै पाः नेतौ राव रायसिंघ रौ राजलोक सारौ सोझत थौ। पछै मोटौ राजा सोझत आया नै गाडा वाळीया। राजालोक सारा ही रहावणां नुं[5] जोधपुर रषाया नै पाः नेतौ ही ले आयौ राः आसकरन रावजी राः प्रीग मांडणोत राः षींवौ मांडणोत उठै थौ, सु बीजा ठाकुर राषीयौ।

---

१. उणरा साथ मदत आया था ('ख' प्रति में यह वृतांत अन्यत्र है)

---

1. उपभोग किया। 2. झगड़ा हुआ। 3. बुरी तरह घायल होकर गिरा 4. जल गया। 5. नौकर-चाकर आदि।

१४५. मोटा राजा नै जोधपुर हुवौ। पछै सोभत हुई तरै राजाजी गुजरात नुं पधारै। तद धरती राः आसकरन देवीदासोत नुं, निपट वडौ रजपुत देसरौ भड़ कीवाड़[1] थौ, सु आसकरन नुं आदमो २ तथा ४ षवास पासवान तेड़ा मेलीया[2], पिण आसकरण आवै नहीं। तरै कंवर सुरजसिंघ उठै मेलीयौ, तरै तेड़ लाया। तद राः आसकरन कोरै कागळ[3] सही पटा में घाल मंगाई, नै घोड़ौ १ सिरपाव १ तरवार १ मगरबी १ हाथी १ सुदरौ दीयौ पीरोजा[1] १०००० रोक देनै पटौ दीयौ। इतरा गांव पटै दीया, तिणां गांवां री विगत—

३४ परगनै जौधपुर रा गांव दीया—[2]

११ षैरवारा तफै रा दीया　　　　रेष १६४००)

१ षैरवो	६०००)	१ सुकाळवो	२००)
१ सौनेवी	१०००)	१ आईची	१०००)
१ बुधवाड़ौ	५००)	१ हींगोळो षुरद	४००)
१ धांमळी	३५००)	१ हींगोळो बडौ	१०००)
१ बापुनी	२००)	१ लांषीया[3]	२०००)
१ सांषड़ो			
११			

लवेरा रै तफै रौ—　　　　गांव अंणवाड़ौ रेष १७००)

५ तफै हवेली रा—

१ पालावासणी	४०००)
१ लोहरड़ी[4]	१०००)
१ वाघल[5]	३०००)
१ वीरावास	४००)
१ दांतीवाड़ौ	
	८४००

---

१. पीरोजी। २. 'ख' प्रति में गांवा की रेष अंकित नहीं। ३. लांबी। ४. वोहरड़ी। ५. बाघण।

---

1. देश का रक्षक। 2. बुलाने के लिए भेजा। 3. कागज।

१० तफै पींपाड़ रा—

१ काळाऊनो ३३००)	१ कागल ४००)
१ रांमपुरौ ७००)	१ सरगीयौ ६००)
१ लांबौ ५०००)	१ रावळी अल[1]
१ षेजड़ली ३०००)	१ रतकूड़ीयौ २५००)
१ षंडप[2] २०००)	१ तीलवाणी[3] ३०००)
	२०,५००)

५ बाहाला रा तफा रा—

१ बाहलौ ४०००) रावर ३०००) वाघावस ५००)
१ ओलवी[4] २०००) १ मोकळावासणी
९५००

२ तफै बीलाड़ै रा

१ हरस १०००) १ बींजीयावासणी १५००)
२५००)

गांव ३४ रेष ५९०००)

३१ गांव सोझत रा—

११ गांव चंडावळ रा पटा रा रेष...।

१ चंडावळ ५०००)	१ करमावास १५००)
१ सीसवादो ११००)	१ छीतरीयौ ११००)
१ राजलवौ ६००)	१ डोईनडी १२००)
१ भैसांणौ २०००)	१ चौवबडी ८००)
१ भेवली १५००)	१ संषावास[5] २०००)

२० बीजा गांव दीया—

१ सीहाट ५०००)	१ भुपेलाव[6] १६००)
सुराईतो ४५००)	१ अटबड़ौ ५५००)

---

१. रावणियाणो। २. तीलवासणी। ३. खारीयो। ४. आलवी। ५. सेखावास। ६. भुपेळाव।

१ मुळांपूरीयौ ४०००)
१ बरणों २३००)
१ बासणौ २७००)
१ आल्हावास २०००)
१ रांमावासणी १०००)
१ बोल १५००)
१ कीराड़ी १२००)
१ दुधीयौ ६००)
२० ३८८००)
३१ ५५६००)
गांव ६५, रेष : ११४६००)

१ सांडींयो ५५००)
१ गागुरड़ २०००)
१ भींवासीयो
१ सीलको[1] ३०००)
१ षारीयो २१००)
१ बीरावास ५००)
१ नाथल कुड़ी ५००)

राजा सुरजसिंघ ऊदैसिघोत रै वार री वात

१४६. राणी मनरंगदे कछवाई रै पेट रो, राजा आसकरन भारमलोत री दोहीतौ। संबत १६२७, सोळासौ सताइसै वैसाष बदि ६[2] मंगलवार कुंभ लग्न श्रेतका नोषग[1] जनम हुवौ। संवत १६५१ रा आसाढ वदि १३ बुध पातसाह सुं मिळीया। संबत १६७६ रा भादवा सुदि ६ काळ मेहकर कीयौ। जनम फळोधी रै कोट माहे। संमत १६५२ जोधपुर पधार पाट बैठा।[2] दिन ८ जोधपुर रहा। पछै गुजरात नै पधारीया। कौरटी चाटीये[3] राव सुरतांण कन्हा डंड लीयी। मोटा राजा रा इतरा बेटा था सु एक एक सुं इधको[3] था। पिण राजा ऊदैसिंघ आप जीवतां ही राजा सुरजसिंघ रै माथै मदार[4] राषी थी।

१४७. पातसा साथे ले गया था। एक दिन पातसाहजी कासमीर पधारीथा तद और कोई पहोती[5] नहीं। तद भाः गोयंदास मोड़ौ[6] रात पोहर १ गयां कासमीर जाय पौंहतौ। तरै सुरजसिंघ कंवर कहण

१. सीएलो। २. (सातम) ३. मारियो।

1. नक्षत्र। 2. राज्य-गद्दी पर बैठे। 3. बढ़ कर। 4. जिम्मेदारी। 5. पहुँचा। 6. विलंब से।

लागौ–आज अवस दरबार पधारौ, थांहांरौ वडौ मुजरौ होसी । सु पातसाहजी सुं चौकीनवेसां गुदरायौ ।[1] आज तौ चौकी नुं कोई मुनसपदार आयौ नहीं । इतरी अरज चौकी बैस पातसाजी सुं करी छै । इतरा में दोढी जाय हाजर हुआ । मांहे मुजरौ दरवांनां जाय कीयौ । पातसाहजी तुरत हजूर बुलायौ, बोहोत राजी हुआ । तारीफ कीवी । आप फुरमायौ–आज री रात थे षासी दोढी चौकी रहौ । सु इण भांत री चाकरी कुंवर कर नै पातसाह जी नुं राजी कर राषीया था, सु मोटै राजा मरतां थकां तुरत टीकौ पातसाहजी राजा सुरजसिंघ नुं दीयौ । जागीर टीकै बैसतां सिवाय पाई—

१ जोधपुर　　१ सीवाणौ　　१ सोझत

माहाराजा काळ कीयौ[2] तिण दीन उमराव ४ छांडीया था । पछै भाः गोयंददास राजा सुरजसिंघ सुं अरज कर राषीया था, १ राः वलु तेजसोत १ राः रामदास ऊदावत १ जसवंत मानसिंघोत सौनगरौ १ रा [¹नराणदास पातावत ।

१४८. परगने जाळोर संमत १६७४ इतरा परगनां रै बदळै पातसाह जांहगीर पाहड़षांन री तागीर दीयौ सु संबत १६७४ रै भादवा सुद ९ गढ़ हाथ आयौ ।

१ बडनगर　　१ षोरालु　　१ रतलाम
१ फळोधी　　१ पीसांगण

बीहारी कांम आया—

१ जबदलषां　　१ सीलारषां　　१ मुगराजसी
१ ताजु अछु री

इतरौ साथ राजाजी रौ कांम आंयौ—

१ साहांणो रायसि पांचावत
१ मांगळीयौ सरणावत

---

१. कोष्ठकों के बीच का वृत्तान्त 'ख' प्रति का है ।

1. अर्ज की । 2. मृत्यु को प्राप्त हुए ।

१ नायक षांन मेहमद फुल री।

सांचोर संबत १६७४ हुवौ, जाळोर लीयौ तरै पछै अमल हुवौ[1], संबत १६७५ तागीर कीयौ।

१४६. परगने फळोधी संबत १६७२ हुई। राजा सुरजसिंघोत रै मरण रा: सबळसिंघ सुरजसिंघोत नुं पातसाह दीवी।

पोकरण सातलमेर पातसाही तरफ था दांम ५७५०००) जागीरी में मंडता रहा[2] पिण अमल न हुवौ।

१५०. अेक वार राजा सुरजसिंघ जोसी देवदत, रा: चंदो वीरमोद तेरवाड़ो-मेरवाड़ा री अरज वासतै दुरगाह[3] मेलीया था—म्हारौ उठै अमल नहीं तौ अै परगना म्हांरै नांवे कुण वासतै जागीर में मांडौ। म्हांनुं दूजी ठौड़ बदळै दो, नहींतर[4] मसादव[5] मां इणरा पईसा काटौ, कुंही न दौ तौ ही परा करौ।[6] पण अरज मानी नहीं।

तेरवाड़ो-मेरवाड़ो रु० ६३०००) मांहे पाया था रा: लुणौ दासावत उठै थांणै हूतौ सु उठै कांम आयौ। सींधवा मेहा रै हवालै थौ, पछै संबत १६७४ मु: रांम रै हवालै सांचोर भेळौ कीयौ थौ। मु: जोधौ उठै रहतौ, पछै राजा सुरजसिंघ मरण उरा आया, इतरा परगना वळै हुवा, चढीया ऊतरीया—

बड़नगर गुजरात रौ मु: जैमल जेसावत थौ, पछै संबत १६७२ मु: रांमा नुं सौपीयौ, मुकाते रु० २००००) रेष रुपीया ६९०००)।

षेरालु गुजरात रौ पेहली भा जैमल मनावत नुं थौ, पछै संबत १६७२ मु: रामां नुं सौपीयौ। गांव ११० मुकाते रुपीया ४०,०००)। मु: रांमौ षेरालु बड़नगर था जाळौर आयौ, रुपीया ११२०००)]

रतलाम मालवा री भाटी ईसरदास हरदासौत पा: चुतरभुज भावसिंघोत रु० १०००००)।

पीसांगण रा: सांवळदास किलांणदासोत रै पटै हुतो, मेड़तीयां नुं रूपिया २००००)।

---

1. राज्य-दस्तूर हुआ। 2. लिखे जाते रहे। 3. बादशाह के दरबार में। 4. वरना। 5. मसविदा। 6. हटाओ।

रजणो गुजरात री सीः भेरव हाकम थौ।
इतरी ठौड़ दिषण में जागीर रही—

१ बौरगा[1] १ राजौरी।

१५१. राजा सुरजसिंघ मरण तांऊ[1] पांच हजारी जात पंच हजार असवार पूरा हुआ नहीं। संबत १६७५ काती[2] सुदि १५ असमाध आई। तठा पछै पांच सौ असवार इजाफौ पातसाहजी फुरमायौ थौ। फुरमान माहे लीषीयौ आयौ थौ पिण जागीर नहीं पाई।

१५२. श्री म्हाराजा जी संबत १६७६ भादवा सुदि ९ काळ कीयौ। तद महैकर वहुजो अहाड़ी कुंवर सबळसिंघ हुता। पछै दरगाह सुं जोधपुर जैतारण सोभत सीवांणौ राजा श्री गजसिंघ नुं मुनसब माहे दोया न राः सबळ नुं दरगाह थी दीया छै दांम २७००००० फळोधी सबळसिंघ नु दरगाह थी दीया छै।

१५३. राजा गजसिंघ बिराहनपुर गया तरै बहूजी आहाड़ी जी सबळसिंघ नुं तेड़ लीया। पछै बहूजी डेरौ अळघौ कीयौ। तरै राजा गजसिंघजी कहाड़ीयौ, कहौ—थे कां जावौ, राजा सुरजसिंघ मोटा राजा रै मरणै राः किसनसिंघ जी नुं दीयौ थौ, सु पटौ म्हे थांनुं देवां छां। पिण बहूजी वात मानी नहीं। सबळसिंघ नुं ले नै दरगाह गया। उठै जाय अरज मालम पातसाहजी सुं कीवी, पिण अरज लागी नहीं।[2] राजा भींव नु पातसाहजी पूछीयौ—थांहारै कासुं रीत छै कुं सबळसिंघ नु आवै?[3] तरै भींव कहौ—कुं आवै नहीं। तरै रु० २००००) दिराया।

१५४. सोभत संबत १६५६ राः सकतसिंघ ऊदैसिघोत नुं हुई, बरस रही। पछै राणै अमरसिंघ मालपुरौ मार नै[4] सोभत रौ गांव सेषावास डेरौ कीयौ। तिण मामले ऊतरी।[5] राः जैतमालोत नै सोभत

---

१. बोरगाव। २. फागण।

---

1. मृत्यु होने तक। 2. कार-गुजार नही हुई। 3. क्या सबलसिंह के हिस्से में कुछ आता है। 4. कब्जे कर। 5. जब्त हुई।

हुई। तरै छापलै आयौ। भा: मांन[1] बिगर हुकम राजाजी रै अमल दीयौ। पछै राजाजी बुरौ मानीयौ। पछै राजाजी री फौज मानो भंडारी लैनै भा: सुरतांण मांनावत रा: किसनसिंघ रा: रामदास चांदावत रा: गोपाळदास मांडणोत रा: कान्हौ तेजसोत घणौ साथ हुतौ। सोभत[2] आण लागौ। रा: भांण सोझत असवार ६०० झूलि, रातीबाहौ दीयौ। पछै रा: सकतसिंघ आयौ। राजा [[3]जी साथ गयौ। संमत १६६४ रा वैसाष सुद ३ सोझत रा: करमसेण उगरसेणोत नुं हुई। संमत १६६५ रा काती सुद[४] पाछी राजा सुरजसिंघ नुं हुई। पछै भा: गोयंददास मनावत छापले आया। रा: करमसेण सोझत माहे थौ। असवार ६०० तथा ७०० करमसेण कन्है था। राठौड़ कुंभकरण वाघोत करमसेण रौ चाकर थौ। सोलकी कुंभा रौ ओल हाथो[1] तिण समै रौ छै।

१५५. नबाब मोहबतषांन नुं रांणां ऊषर साहब मदार कर मेलीयौ। तरै रांणा रो लोग घणौ मारवाड़ रै गांवा माहे आय रहौ। तिको गिलो[2] दरगाह नुं लीष नै सोझत म्होबतषांन संमत १६६४ उतराई, रा: करमसेण नुं दिराई। मास रही तितरै म्होबतषांन सूं सोबो ऊतरीयौ।

१५६. अवदुलाषांन नुं सोबो हुवौ तरै भा: गोयंददास अबदुला सूं मिळ नै थांणा ११ झालीया।[3] सोझत लीवी। संमत १६५८ रा जेठ बद ७ दिषण अमरचंपु नै राजाजी बेढ हुई। बेढ राजाजी जीती। हिमें श्री माहाराजाजी रै वांनो लाल सुपेद[4] छै, सु तद रौ छै। हाथी ४ म्हाराजाजी रै आया। राजाजी रौ साथ इतरौ कांम आयौ।

१ भा: वैरसी रायमलोत रायमल अचळौ भैरव जेसौ।

१ रा: भाण संसीरचंदोत वेठवासीयो।

इण बेढ रै मुजरै पातसाहा आधो मेड़तौ दीयौ। संमत १६६३ रा मंगसर सुदि १५ रा: भोपत उदैसिघोत नै पंवार सादूळसिघ मालदेवोत

१. मने। २. सोझण (प्र)। ३. 'ख' प्रति का अंश है।

1. आहाता। 2. शिकायत। 3. प्राप्त किये। 4. सम्मानसूचक रंग।

मामलो हुवौ। रा: भोपत कांम आयौ। संमत १६६८ पंवारां सुं बैर भागौ। राजा सुरजसिंघ परणीयौ संमत १६६१।

१५७. राजाजी दिषण री मुहम[1] छै। तरै भा: गोयंददास मांनावत अकबर पातसाह सुं अरज कर नै राजाजी नुं पातसाह री हजूर तेड़ाया।[2] आप गोयंददास महेकर थांणै रहै। पछै राजा सुरजसिंघ पातसाही री हजूर आया। पातसाहजी राजाजी नुं देस री विदा रौ हुकम कीयौ। तरै राजाजी अरज कीवी–हूं घरे जाय कासुं करूं[3], हूं तौ घर री वात माहे समझूं नहीं। म्हारै घर री मदार सारी गोयंददास माथै छै, गोयंददास विगर हूं देस जाय कासुं करूं। तरै पातसाहजी भा: गोयंददास नुं पण हजूर तेड़ाय नै राजाजी नुं आधौ मेड़तौ नै जैतारण दरो बसत पातसाहजी वधारे[4] दीवी। संमत १६६१ रा असाढ बद ८ जोधपुर आया। संमत १६६२ रा काती सुद ४ अकबर काळ कीयौ।

संमत १६६२ पातसाहजी जांहगीर गुजरात रौ सोबौ दीयौ।

१५८. गुजरात रौ पातसाह बाहादर मांडवे कोलीलाल बांसे घात राषीयौ। राजाजी मांडवा ऊपर पधारीया म्हाराजा मांडवे नजीक डेरा कीया। अणी[5] २ कर नै मांडवा ऊपर फौज २ मेली। अेकण अणी भा: गोयंददासजो था नै अेकण अणी रा: सुरजमल जैतमालोत हुता, नै म्हाराजा तौ डेरै हुता। फौज जाय गांव घेरीयौ, गांव पाड़ीयौ, लूटीयौ। उवे कोली सीसरगा कोतरा माहे गया था। पछै उण रा: सुरजमल रै अणी दिसी दीषाई दी। रा: गोपाळदास ही डरीयौ। घणा ही बरजीया–इण वांसै मती जावौ ठौड़ कोतरा निपट अेढा छै[6] इणां ठांकुरां वात मांनी नही. पछे झाड़ाकोतू माहे मामलौ हुवौ,[7] इतरौ साथ राजाजी रौ कांम आयौ।—

१ रा: सुरजमल जैमालोत चांपा।

१ रा: जैसिघदे करमसीयोत वीकावत।

---

1. फौजी दौरा। 2. बुलाया। 3. क्या करूं। 4. अतिरिक्त 5. फौज 6. बड़े विकट है। 7. युद्ध हुआ।

१ रा: गोपाळदास ईडरीयौ ।
१ साहाणी ठाकुरसी रामदासोत ।
१ मांगळीयौ माधोदास सादुळोत ।
१ मीहतो भोपत मांनसिंघोत ।
१ रा: रांमदास चांपावत ।
१ रा: सांवळदास रांणावत ।
१ रा: भोपत रांणावत ।
१ भा: भणकलावत ।
१ रा: तिलोकसी म्हेसोत ।
१ रा: गोपाळदास मांडणोत जैसावत ।
१ रा: हरीसिंघ चांदावत मेड़तीयौ ।
१ साहाणी पांचो नंदावत ।
१ रा: माधोवदास गोपाळदासोत ।
१ चौहाण कुंभो गोईंदोत ।
१ रा: ईसरदास नींबावत करनोत ।
१ भा: रायसिंघ जेसावत ।
१ रा: जसवंत कला जेसावत रा रौ ।
१ रा: किसनदास म्होजलोत ।
१ रा: रायसिंघ ईसरदासोत ।
१ रा: कचारौ सिवराजोत ।
१ रा: भोपत हींगोलावोत ।

१५९. जोसी चंडु दमोदर रै टीपणै माहे लोषीयौ छै– संमत १६६२ रै आसाढ सुद १५ अेहमदावाद आया । संमत १६६३ रै पोस सुद १५ अेहमदावाद सुं जोथपुर नै कूच कीयौ । काकरोयै तळाब डेरा कीया था । फागण सुद ७ जोधपुर पधारीया । संमत १६५२ रा म्हा सुद ५ जोघपुर पधारीया । पाट बैठा । दिन ८ जोघपुर रहा पछै गुजरात पधारीया । बीच पधारतां रोव सुरताण कनै लीयौ, कोरटो मारीयो[1]

1. जीता ।

बरस ३ इण फेरै गुजरात रहा। पछै पातसाहजी रौ हुकम आयौ–दीषण सताब[1] जावौ। कुं ढील तरै संमत १६५६ सोबो ऊतरीयौ[2]। संमत १६६९ रै चैत सुद १ बुहरानपुर सुं अेहमदावाद पधारीया। चैत सुद १० सोबो तागीर[3] हुऔ। सोबो दिन ९ रहौ पाछा आया। पाछा आय तळाब कांकरीयै डेरा कीया। संमत १६६९ रै जेठ बद ११ जोधपुर पधारीया।

संमत १६६६ रांणी सोभागदे काळ कीयौ।

१६०. संमत १६६९ रै जेठ सुद ७ भाः सुरतांण मांनावत नुं राः सुंदरदास सूरसिंघ रांमदासोत रा॰ नरसिंघदास किल्याणदासोत राः गोपाळदास भगवानदासोत ऊपर आय मारीयौ। राःसुंदरदास सूरसिंघ नरसिंघदासोत सुरतांण मरतौ ले मुवौ[4]।

राः गोपाळदास घावे लागे नीसरीयौ[5]। कंवर गजसिंघ भाः गोयंददास आपड़ कुड़षी मारीयौ।

१६१. संमत १६७० पोस सुद ११ कंवर अमरसिंघ जायौ[6]। संमत १६७१ जेठ सुद ९ अजमेर राः किसनसिंघ उदेसिंघोत राः करन सकत राजा सुरजसिंघ रा डेरा ऊपर आया। भाः गोयंददास मनावत नुं मारीयौ। राः किसनसिंघ राः करन पण कांम आयौ।

इतरौ साथ राजाजी रौ कांम आयौ–

१ भाः गोयंददास मांनावत।
१ भाः प्रिथीराज करनोत।
१ भाः सुजौ भैरवदासोत।
१ भाः कुंभौ पातावत।
१ हुल पतौ भादावत।
१ राः गोयंददास रांणावत पातावत।
१ राः केसोदास सांवळदासोत।
१ चौ॰ नरहर पिरागोत।

---

1. शीघ्र 2. सूबा जब्त कर लिया गया। 3. मिला। 4. मरते मरते उसे भी मार लिया। 5. घायल होकर निकल भागा। 6. जन्मा।

१ गौड़ माधौ केसो धाय भाई ।
१ भा: कलु कान्होत ।
१ भा: भादो नराइणदासोत ।
१ भा: गोईंददास जेसावत ।
१ भा: मांनो मनोहरदास गोयंददासोत ।
१ रा: तीलोकसी सुजावत ।
१ रा: भोपत कलो जोगावत रांवळोत ।
१ पंवार केसो
१ चौ: साजण सीवावत ।
१ सा: केसौदास पूनो सांषलो ।

इतरा घायल हुआ—

१ रा: राजसिंघ षींवावत ।
१ भा: नरहरदास गोयंददासोत जेसावत रो ।
१ रा: जगनाथ किल्यांणदासोत ।
१ रा: ऊदो भैरवदासोत ।
१ मो: हरीदास रांणावत ।
१ रा: भींव किल्यांणदासोत ।
१ रा: ऊदो पातावत ।
१ भा: वीठल गोपदोत ।
१ म्हो: नराईण पतावत ।
१ कांधळ दहीयौ ।

इतरां सुं रा: किसनसिंघ कांम आयौ—

१ रा: किसनसिंघ राजावत ।
१ रा: माधोदास रांमदासोत मेडतीयौ ।
१ रा: षेतसो गोपाळदासोत ।
१ का: दुह कचरावत ।
१ भा: जीवौ ।
१ रा: पिरागदास सुरतांणरांमोत रा ।
१ को: सुरनर नोरतोत ।

१ रा: सांवळदास रासावत ।
४ सेहलोत ।
१ रागो १ हींगोलो १ थीरौ १ सेषौ ।
१ सा: भारमल ।
१ माल लषमणोत ।
१ माजबी लाडषां ।
१ रा: करन सकतसिंघोत ।
१ रा: गोपाळदास वाघोत जेसावत ।
१ रा: वाघौ षेतसीयोत ।
१ भा: धनौ करनसेन रौ चाकर ।
१ भा: मांनसिंघ किल्यांणदास जैमलोत ।
१ को: वाघौ रा: किसोरदास किल्यांणदास जैमलोत रौ ।
१ दहीयौ नापौ ।
१ ईंदो महेस ।
३ हुल ।
१ मकवांणो १ किसनौ १ चौ: कान्हौ १ बेठवासीयो]

१६२. इण मामलै हुवां पछै । एक वार पातसाहजी माहाराजाजी नुं असाढ माहे बिदा कीया । मास २ अठै देस माहे रहा । पछै दसराहै हैईयान[1] षांन अहैदी परवानौ ले आयौ, सिताब अजमेर आवौ, तरै उण च्यार दिन रहण न दीया । दसराहौ सोझत कीयौ । पछै मेड़ता माहे होय नै अजमेर पधारिया । पातसाहजी घणी दिलासा कर नै बिदा कीया । दीवाळी अजमेर कीवी । श्री राजाजी नुं बिदा दिषण नुं कीया, डेरा पीसांगण हुआ दिन ५ मुकाम अठै हुआ । कुंवर गजसिंघ रा: राजसिंघ षींवावत भा: नुं देस नुं विदा किया आप दिषण नुं विदा हुआ । कांम देसरा रौ मुदौ सारौ लूणा ऊपर राषीयौ ।

१६३. भंडारी मांनौ डावरोत[2] रायसिंघ चंद्रसेनोत कन्है सोझत था सु राव रायसिंघ सोरोही कांम आया । पछै मोटा राजा नुं धरती हुई नै

---

१. हयायत । २. झंवरोत ।

सोझत पिण हुई। सु रायसिंघ रा कबीला नुं जोधपुर ल्याया नै भंडारी मांनौ संमत १६४० राः ऊनाळी साष रै टाणै[1] आया। आवतां समां भाः मांना नुं देस सौंपीयौ, मवेला रै हवालै दाण हुतौ। एक वार भाः मांनौ जोधपुर थी नीसरीयौ। संमत १६५१ टाणै बळूंदे गयौ। सांवळ लाहोर थी नीसरीयौ। पछै बीकानेर गया, मास ५ तथा ७ उठै रह्यौ, पछै घांणोरै[1] आया, पछै रांणा कन्है चांवड जाय मिळीया।

१६४. तठा पछै राजा उदैसिंघजी काळ कीयौ। राजा सुरजसिंघ पाट बैठा संमत १६५२ माहे। राजा सुरजसिंघ जोधपुर पधारीया। तरै भाः मांना कन्है मनावण नुं भाः लूणा नुं परधांन राजाजी मेलीयौ। कह्यौ–बात वणाय आवौ। बोलचाल री अरज कराई थी पछै गांव षैरवै डेरौ हुवौ। तरै राः भोपत देवीदासोत सोः जसवंत अपैराजोत ठाकुर ४ घणोड़े जाय नै ले आया। सिरपाव देनै भंडारी मांना नुं देस सौपीयौ। भाः सांवळ साथे लीयौ, राः वाघ पिरथीराजोत।

१६५. संब्रत १६७२ नागोर रा गांव ३ राजा श्री सुरजसिंघजी री वार में[2] मोजा चंपा सुं दावीया।[3] पछै नागोर असपपांन नुं हुवौ। पछै भाः लूणौ नागोर जाय नै गजसिंघपुरौ मुकातै लायौ। सालीना रा रूपिया ३१००) कीया। गांव आसोप रै तफै भेळा कीया।

१६६. संबत १६७४ रा भादवा सुदि ९ कंवर गजसिंघ जाळोर फतै कीयौ। पछै भाः गोपाळदास आसावत राः दयाळदास गोपाळदासोत जाळोर फौजदार कीया। तिण सुं रात्र राजसिंघ सुरतांणोत सीरोही अै बात कीवी। देवड़ौ प्रथीराज सुजावत देवल रा भापरां माहे पैठो छै।[4] सु इण नुं आंपां मिळ नै परौ काढां।[5] म्हां भेळा थे हुवौ तौ गांव १४ म्हे कोरटा सूं राजाजी नुं देवां। पछै दयाळदास साथे लेनै राव भेळा हुआ। देवड़ा पिरथीराज नुं भापरां माहां सुं परौ काढीयौ। वरस १ पीरोजी[6] ९००० गोहू[7] में १३०००) आया था। आगलै

---

१. घाणोड़े।

---

1. समय। 2. समय में। 3. हस्तगत किये। 4. जम गया है। 5. निकाल दे। 6. सिक्का विशेष। 7. गेहूं।

वरस न दीयौ । संमत १६७५ गांवां री वीगत—

१ कोरटो १ पालड़ी १ नंमी १ रहचाड़ौ[1]
१ मंचाल[2] १ आलोपौ १ पोसांणी[3] १ बासड़ो
१ वाघार १ षेजड़ीयौ १ भवि १ अणंदोरो[4]
१ नाराघणो[5] १ अरहटवाड़ौ
१४

१६७. भाटी गोयंदास मांनावत कांम आयौ । पछै राजा सुरजसिंघ रावळ तेजसी दुदावत कन्हा इतरौ लीयौ—गांव ३– १ मंडांपड़ो १ फळसूंड १ आगौळाइ नै हाथी १, रूः ५०००) ।[6]

१६८. भाटी गोयंदास मांनावत राजा सुरजसिंघ रै बदळै दिषण रहौ नै राजाजी पातसाहजी री हजुर आया । पछै साहजादा दांनसाह नुं दिषण रौ सूबौ हुतौ । सु गोलकुंडा री पातसाह आपरी बेटी रौ डोळौ दांनसाह साहजादै नुं मेल्हीयौ थौ सु दौलतावाद बीजापुर रौ पातसाह आवण नहीं देवै । तरै दांनसाह डोळा रै वासतै भाः गोयंददास नुं मेलीयौ, डोळौ ले आयौ । मुजरा रौ धणी हुऔ, संमत १६५८ रै टांणै ।

१६९. जोसो देवदत पोकरणा नुं राजा सुरजसिंघजी चाकर राषीयौ । संबत १६७२ तथा संमत १६७३ रै टांणै राषीयो । रू० ६०००) तथा ७०००) रोजगार कीयौ । दीवांनगी री षिजमत सौंपी थी । बरस २ राजा गजसिंघ रै ही रहौ, वडो आदमी थौ ।

१७०. संमत १६६९ कुंवर श्री गजसिंघजी जोधपुर हुता । भाः गोयंददास मांनावत नुडुल[7] रै थांणै थौ । राणा अमरसिंघ अंबाई रै भाषर[1] था । तठा थी कुंवर उरजन अमरसिघोत नुं सिरदार[2] कर नै[8] दोय हजार असवार साथे दे नै अहमदाबाद री कतार आवती थी नै आगरै जावती थी तिण ऊपरां बिदा कियौ सु कतार निकळ गई । कतार नुं राणा री षबर हुई, जु साथ[3] म्हां ऊपरै आवै, तरै निकळ गई । फौज दुनाड़ा तांई गई, षाली पड़ीया[4], तरै पाछा

१. रेवाड़ो । २. माचाल । ३. षोसाणो । ४. अणदोर । ५. नारायणो । ६. एक हाथी रा रुपीया ५००) । ७. नाडुलं । ८. करबी ।

1. पहाड़ । 2. मुखिया । 3. फौज । 4. कुछ हाथ नही लगा ।

फिरीया । तरै भा: गोयंददास साथ भेळौ कर नै राणा री फ़ौज ऊपरै आउवै[1] लड़ाई कीवी । गोयंददासजी रै साथै च्यार सौ असवार नै तीन सौ पाळा था । तिकां आगै रांणा रा दोय हजार असवार पाळा[1] भागा । श्रीजी रै फतै हुई । रांणा री साथ भागौ, तिण री विगत:—

१ सीसौदौ अरजन[2] अमरावत ।
१ सेसौ[3] परतापोत ।
१ रा: हरीसिंघ बलुवोत ।
१ सींधल देवौ सुजावत ।
१ सीवाधौ अमरावत ।
१ सी: माधोसिंघ रांणा ऊदैसिंघ रै ।
१ रा: भींव किलांणदास ।
१ सींधल सांवळदास मानावत ।
१ सी: सेषौ परतापोत ।
१ देवड़ौ पत्तौ कलावत ।
१ सोनगरौ सांवतसी नारांणदासोत ।

६ रांणा रा कांम आया

श्री राजाजी रै साथे चार सौ असवार तीन सौ पाळा तिकां मैं सिरदार इतरा:—

१ भा: गोयंददास मानावत ।
१ रा: माधोदास पूरणसलोत ।
१ रा: जैतसिंघ ऊदैसिंघ राव रौ ।
१ रा: लषमण नारणोत ।
१ पंचोळी जीवराज सारणोत ।
१ रा: किलांणदास मानावत ।

१. आउवेहे । २. दुरजन । ३. सेषो ।

1. पैदल ।

१ राः सांकरदास भाणोत।
आसीयौ चारण मनोहर रौ।[1]
१ सो[:]सुरजमल षींवसोत।
१ सांदू मालौ उदैसोत[2] चारण।
१०

राजा सुरजसिंघ रा दीया गांव पातसाही उमरावां नै था—
१ राः षींवा भांडणोत नु ईडवो मेड़ता रौ।
१ भाः गोपाळदास आसावत नु षेजड़लौ।
१ रा. मान षिजमतीया नु रतनपुरौ जैतारण रौ।

१७१. माहाराजाजी श्री गजसिंघजी रांणी सोभागदे कछवाही रौ बेटौ राव दुरजणसाल रौ दोहीतरौ। संबत १६५२ रा काती वदि ८ गुरवार रौ जनम छै। संबत १६७६ रा आसोज सुदि ९ गुर मेहकर पाट बैठा।[1] संबत १६९४ रा जेठ सुदि ३ आगरै काळ कीयौ।[2] संबत १६७६ रा मंगसर माहे पातसाहजी री हजूर सुं टीकौ आयौ, मुनसप आयौ। पहलो टीकै बैसतां[3] तीन हजारी जात दोय हजार असवार मनसप हुओ, तिण माहे जागीर पाई:—

१ पाईतषत गढ जोधपुर तफा १९ सुं रु० १९९१२५) माहे।
१ सोझत रौ परगनौ रु० १२५०००) माहे।
१ जैतारण रौ परगनौ रुपीया ९८५०८) माहे।
१ सीवाणै रौ परगनौ रु० ३७५००) माहे।
सातलमेर पोकरण जागीर में मंडी, अमल न हुवौ। रु० १५०००)
१ तेरवाड़ौ मेरवाड़ौ गुजरात रौ रु० ६३२८९)

तठा पछै परगना हुआ:—
१ जाळोर संमत १६७७ रा बैसाष माहे षुरम दियौ रु० २८७०५८)

१. सांमावत। २. उदावत।

1. गद्दी पर बैठे। 2. मृत्यु हुई। 3. बैठते समय।

१ सांचोर संमत १६७९ रा भादवै में षुरम दीयौ रु० ६४५००)
१ फळोधी संमत १६७९ पातसाह जांहांगीर दीवी रु० ६७५००)
१ मेड़तौ संमत १६८० रा भादवा वदि ९ परवेज दीयौ रु० २०००००)
१ जळगांव षेराड़[1] री संमत १६८१ रा काती सुदि १६ रु० १७८०००)

इतरी ठौड़ राजा सुरजसिंघ रै मरणै ऊतरी—

१ फळोधी राः सबळसिंघ सुरजसिंघोत नुं दीवी। पछै संबत १६७९ रा पातसाहा जाहांगीर षुरम वांसै अजमेर आयौ तद राः सबळसिंघ नायौ[1] तरै फेर राजाजी नुं दीवी।

१ जाळोर संमत १६७६ रा गावस[2] मारी था।[2] साहजादो षुरम नुं हुऔः षुरम राजा भींव अमरावत नुं दीयौ। पछै संमत १६७७ रा फागुण माहे राजाजी नुं दिषण में[3] षुरम हीज दीयौ।

१ सांचोर संमत १६७९ रा भादुवा माहे माडवा थी षुरम देस नुं बीदा कियौ।[3]

१ मेड़तौ संमत १६७६ घासमारी था साहजादै षुरम नुं हुऔ। करोड़ी षोजौ हाजी ईतबार नुं आयौ नै मीरसफा नुं आयौ। अमोन अबु बरस २ अबुदषल[4] परगनौ रहौ। पछै मेड़तौ साहाजादे जागीरदारां नुं बांट दीयौ।

२०४ कसबे मेड़तौ राजा भींव अमरावत नुं।

१७२. टीकै हुआं पछै राजाजी मुजरौ कीयौ, तिण ऊपरां बधारौ हुवौ। संमत १६७६ रा आसोज में राजाजी टीकै बैठा। पछै दीषणीया सूबा रा लोग ऊपर चढ आया। सारा हींदू तुरक कोट माहे पैठा।[4] राजाजी डेरा छांडीया नहीं। दिषणी घोड़ा हजार ३०,००० सुं राजाजी रा डेरा ऊपर चढ आया। राजाजी उणां सुं डेरा बारै नीसर चढ ऊभा रहा। बेढ कीवी। पोहोर २ लड़ाई हुई, दिषणी षिस परा

१. बराड़। २. गास। ३. तद दियौ। ४. अबदाषल।

1. नही आया। 2. घासमारी (चराई) की आमदनी से। 3. दक्षिण मे रहते हुए। 4. घुस गये।

गया ।[1] मदत तिण बेळां किणी न कीवी । नबाब षांनषांनौ सारा बेडा[1] हुता इणरौ बीगड़ीयौ कुंही नहीं । सारां री षबरदार बीच नायक वाड़ी फिरता था। पोहोर २ पछै सारा उमराव आया तठै दळथंभण नांव पायौ ।[2] तठा संमत १६७७ रा बैसाष माहे साहजादो खुरम दिषण रै सूबे आयौ । पछै साहजादाजी नुं श्री माहाराजाजी मोहलो दियौ । तरै संवत १६७७ रा बैसाख माहे हजारी जात हजार असवार ईजाफे कीयौ, तिण दिन परगनौ जाळोर रौ दियौ । भाः गोपाळदास आसावत मुः जैमल हाकम परगनां रा कीया रु० २८७७५८) तठा पछै संमत १६७८ रा फागुण माहे साहाजादै षुरम बोजपुर साहाजादा षुसरू नुं मारियौ आप फिरण रीकी, आप ब्रीहनपुर सु मांडवै आया। राजाजी तीमरणी था, तठा पछै मांडवै तेड़ नै दिलासा कीवी । देस री सीष देणी मांडी । तरै राजाजी साहजादाजी सु अरज कीवी मो नुं जाळोर साहजांहजी इनायत कीवी छै । पिण ऊहा ठौड़ सांचोर विगर रस पड़ै न छै ।[3] दोनुं ठौड़ एकण जायगां हुवै तौ परगनौ सभ आवै ।[4] तरै संवत १६७९ रा भादुवा माहे सांचोर दे नै विदा कीया, देस नुं । भादवा सुदि १० जोधपुर आया। संमत १६७९ रा मंगसर माहे कुवर अमरसिंघ उदैपुर परणीया । संमत १६७९ रा चैत में जोधपुर भागौ । संमत १६७९ श्री पातसाह जांहांगीर नु वैसाष में चाटसु कन्है मिळीया, रु० ६४०००) ।

१७३. संमत १६७९ माहै साहजादौ षुरम पातसाह सुं फिरीयौ, चढ़ ऊपर आयौ । महाबतषांन पातसाह जांहांगोर नुं घणौ बळ बधायौ । बेढ कोवी । राजा विक्रमादीत बांभण माराणौ । षुरम भागौ । पुरब थी साहिजादो परवेज बुलायौ । पातसाह अजमेर आयौ । राजाजी चाटसु कनै पांवां लागा, साथे हुवा थका अजमेर आया । परवेज नुं

---

१. उवेड़ा ।

---

1. हार खा-कर चले गये । 2. उपाधि मिली (शत्रु-दल को रोकने वाला) । 3. कब्जे में नही आती, पूरा लाभ उठाया नही जा सकता । 4. ठीक बन्दोबस्त हो ।

वली अहदी[1] कीयौ । माहाबतषांन नुं सारी मदार दे परवेज रै मुंहडै आगै देसां री हींदू ताबीन दे षुरम बांसै[1] विदा कीयौ । तद नबाब माहाबतषांन राजाजी री घणी सुपारस कर नै हजारी जात हजार असवार ईजाफे करायौ । परवेज साथे लीया, तिण माहे परगनौ फळोधी रौ । रा: सबळसिंघ अजमेर नहीं आयौ तरै फळोधी रूपीया ६७५००) री रेष में दीवी । बोजी तलब रही ।

१७४. संबत १६८० राजाजी साहिजादौ परवेज माहाबतषांन री ताबीन छै । अजमेर रै सूबै सारा परगना परवेज री जागीर माहे हुवा छै । सु मेड़तौ परवेज री जागीर माहे हुवौ छै । सु मेड़तौ सैदां नै देवण रौ डोळ हुवै छै ।[2] पछै राजाजी माहाबतषांन बीच राजसिंघजी नुं फेर नै अरज कराई—इतरा दिन म्हे मेड़ता री ऊमेद माथै राजा सुरजसिंघ री[2] जमीयत राषी थी हमैं मेड़तौ थे किणी ही और नुं देवौ छौ तौ माहारी जमीयत सारी परी जावै छै । तरै नबाब ही दीठौ आज इणां नुं दलगीर[3] करणा नहीं । तरैं बाई मनभावती[3] परवेज नुं परणावणो बात कबूल करनै मेड़तौं संमत १६८० रै सांवण माहे परवेज आपरी तरफ आपरी जागीरी माहे दीन्ही । दरगाह मनसप माहे लिषाणौ नहीं । संमत १६८० रा भादुवा वदि ८ राठौड़ कान्ह षींवावत नै भंडारी लूणौ मेड़तै आया, अमल कीयौ । परवेज रा आदमी था सु परा गया । रूपीया २०००००) ।

१७५. संमत १६८१ रा काती सुदि १५ टुस नदी ऊपर साहजादे परवेज नुं पुरम लड़ाई हुई । राजाजी नुं हरौळ कीया था, फते पाई । राजा भींव मारीयौ । मुजरौ हुवौ तरै हजार असवार रौ ईजाफौ हुवौ । इण वधारै पांच हजारी जात पांच हजार असवार पूरा हुवा । तिण में दिषण रौ जळगांव बरड़[4] रौ पायौ । ब्रीहानपुर सु कोस ३० छै, रू: १७८०००) । भाटी सिंघ रूपसीवोत फौजदार थौ ।

---

१. हद । २. सारी । ३. मीनभावती (प्र.) । ४. वराड़े ।

---

1. पीछे । 2. परिस्थिति बन गई । 3. नाराज ।

१७६. [[1]समत १६८२ माहाबतषांन नुं षुरासांणीये रै भषायां[1] ब्रिहन-पुर सुं तागीर कीयौ। हजूर बुलायौ, उठै फिदाईषांन भेजीयौ। सारा उमरावां नुं परवेज नुं फरमांन हुवौ–कोई इणां साथे मत आवौ। अेक बार तौ परवेज और सारे उमरावे डेरा बारै माहाबतषांन साथे कीया था। राजाजी तौ आपरी हवेली बैठा रहा। पछै फिदाईषांन सारां नुं समझाया पण को मांनै नहीं। पछै राजाजी रहा, तरै सारा रहा। पिण फिदाईषांन नुं राजाजी कहै–म्हे पातसाहजी रा हुकम सुं थांरै कहै रहीस[2] पिण माहाबतषांन दरगाह जाय छै उठे जाय म्हांरी बंदगीई करसी तरै फीदाईषांन कह्यौ–मो साथे राः राजसिंघ भेज देषौ। थांहारौ किसड़ौ मुजरौ करू छूं। माहाबतषांन पिण चालीया फिदाईषांन राजसिंघजी इलगार दरगाह गया। उठे फिदाईषांन घणौ राजाजी रौ मुजरौ कीयौ। तिण दिन पातसाहजी रै कचेड़ी दीवान षोजो अवलहुसेन छै सो राजाजी सुं षुणस राषे छै।[3] सु उणे जागीरी रौ हिसाब कीयौ। तठै मेड़तौ जागीर माहे मंडीयौ नहीं, कह्यौ–औ माहाबतषान थांनुं हीमायत कर दीरायौ थौ, दरगाही मनसप माहै दीयौ नहीं। षालसे मंडीयौ। पछै पातसाहजी सुं फिदाईषांन अरज की। अे तो ईजाफे रा ऊमेदवार था सारा उमराव ऊठे साहजादा सुधा[4] आवता हुता, इण रहतां सारा रहा। तठै साम्हो मेड़तौ तागीर करौ। तरे पातसाहजी आप बजद होय मेड़तौ फेर दीरायौ। तरै अवलहुसेन अरज की–रूपीया २०००००) माहै मेड़तौ इण नुं दीयौ छै, रूपीया ४०००००) ऊपजतां री ठौड़ छै। पछै पातसाहजी आप राजसिंघजी नु फुरमायौ–कुं तो षोजा री रवा राषौ[5]। तरै दांम २००००० मेड़ता ऊपर ईजाफे कीया। तद सुं रूपीया २५००००)।

१७७. माहाबतषांन नजीक आयौ, तरै राः राजसिंघजी पातसाहजी सुं ऊतावळ[6] कर विदा हुवा, संमत १६९२ जोधपुर आया।

---

१. 'ख' प्रति का अंश।

---

1. सिखाने से। 2. रहूंगा। 3. दुर्भाव रखता था। 4. सहित। 5. कुछ तो खोजा की भी बात रखो। 6. जल्दबाजी।

परगनौ जळगांव दिषण में ब्रिहानपुर था कोस ३० बराड़ में रूपीया १७८६२६) भगसिंघ रूपसोयोत पटी ६ राजा सूरजसिंघ भुरटोया नुं दीराई थी, पण दी नहीं, तितरै नागोर हीज ऊतरीया।

१ भदोणो १ ईदाणों १ लाडणु १ सडालो १ परड़ोद
१ जाषोड़ो ।

१७८. संमत १६८३ रा माहा बद ४ मंगलवार कंवर जसवंतसिंघ रौ जनम ब्रिहानपुर हुवौ ।

संमत १६८३ रा काती में परवेज मुवौ। माहाबतषांन नै पातसाह जांहांगीर विरस हुवौ ।[1] माहाबतषांन नीसरीयौ, वांसे फौज बड़गुजर आंणी। राव आगा नुं विदा हुवौ। ऊकोले भगवान साजस कर नै कंवर अमरसिंघ रा: राजसिंघ इण फौज साथे असवार १५०० ले हुवा। संमत १६८३ माह मास माहे षांनषाना नवाब री तागीर पायौ। मु: रामौ हाकम कर मेलीयौ। कंवर अमरसिंघजी रा: गजसिंघजी अै देवळीया सुं अणी राव आगा कनै सीष कर आया। उठे अेक वार मु: जैमल नुं राष आया। पछै रा: माधौदास पूरणमलोत सा: सुषमल उठे मेलीया। मु: जैमल उरौ आयौ पछै मदनसोर परे लषमड़ी गांव षनाजंगी हुई।[2] रा: माधौदास पूरणमलोत कांम आयौ ।

१७९. कंवर अमरसिघ रा: राजसिंघ घरे आयां री षबर दरगाह हुई। तरै नागोर री पटी ६ राजा सूरसिंघ वीकानेरीया नुं दी। संमत १६८४ काती बद १३ माहे पातसाहा जांहांगीर फौत हुआ। जुनेर था साहजादा माहाबतषांन हींदुसथांन नुं आया। अजमेर आवतां पेहली महावतषांन पातसाह साहजहां सुं मालम कीयौ–जु राजा गजसिंघ म्हांरौ माथौ वाढ़ण रे वासतै नागोर लियौ हुतौ सु हूं पाऊं। सु पातसाहाजी माहवतषांन नुं फुरमांन कर दीयौ जु अजमेर साहजहां आवत पेहली[3] माहवतषांन रा आदमी आया, पोस माहे अमल कीयौ।

---

1. विरोध हुआ। 2. युद्ध हुआ। 3. आने से पहले।

१८०. साहजहां अेक वार तौ ऊदैपुर आयौ। रांणौ करन मिळीयौ, साथे कूच हुवौ। तरै कंवर जगतसिंघ भेजीयौ, साहजहां अजमेर आयौ। पछै दिन २ अजमेर रह नै साहजहां रीणथंबर[1] री पाषती[2] होय आगरै आयौ। संमत १६८४ रा माह माहे तषत बेठौ। साहजांह जुनेर थी ब्रीहनपुर जीमणो[3] में हुय गुजरात सुं ईडर में होय उदैपुर आयौ।

१८१. श्री माहाराजाजी और ही हिंदू नबाबषांन जहकनाह पातसाह जांहगीर रै मरण सीष कर घरे ऊठ आया। राव सकतसिंघ री बेटी लीलावती बाई जुनेर साहजहां कनें हुती, तिण बाई लीलावती नुं पातसाह साहजहां श्रीजी री दोलासा[4] करण मेलो सु अेकण तरफ श्रीजी जोधपुर आण चौगान डेरा कीया। अेकण तरफ चौगान डेरै बाई आई। सिरपाव १ बींटी २ पातसाह साहजहां श्रीजी नुं मेलीया था सु दीया। मन री गलाण[5] मेटण री वात कुहाड़ी थी सु कही। षातर जमे हुई, बाई नुं तो सीख दीवी। आप दिन ८ जोधपुर रहा। आठवें दिन कूच कीयौ माह सुद ५ लापोळाई की, सारौ साथ भेळौ कीयौ। राः राजसिंघ महेसदास राः प्रिथीराज बलुवोत राः भींव कल्याणदासोत और ही सारा राठौड़ भेळा हुवा। उठा थी ईलगार षड़ीया कोस २० री मजल कीवी। फागुण वद १३ जाय डहरा रै वाग डेरा कीया। फागुण बद ४ बुध आगरे पातसाहजी रै पांवे लागण गया। रजु बाहदर सांमौ आयौ। कहौ–उमराव १०० सुं कटेहड़ा[6] माहे आवौ। पछै जाय मुलाजमती की, बोहत दिलासा कीवी। घोड़ौ सिरपाव हाथी दे, डेरा नुं विदा कीया। दिन ९ डेहरा रया। गहरा पछै हिमें आ हवेली दी अठै आप रहा।

राजा गजसिंह रै वार री बात

संमत ६७९ रा काती सुद १२ कछवाई सुरजदे आंबेर परणीया।

---

1. रणथंभोर। 2. पास से। 3. दाहिना। 4. आश्वासन देने के लिए। 5 ग्लानि, वहम। 6. दरबार में खड़े रहने का स्थान विशेष।

१८२. संमत १६७६ रा मंगसर सुद ५ राः भगवानदास वाघोत नुं राः आसकरन देवीदासोत था बगड़ी तागीर कीवो । साहजादो षुरम दिषण नुं जातौ हुतौ। चांदा रो घाटी कनै ऊंट १७ षासे जवाहर रा चागवोर बारा धीनड़ा ले गया। माल पारपषे ले गया। तिण रै तलास रै वासतै साहजादे आपरै इतबारी चाकर उमराव मेहमद मुराद बधनोर नुं बिदा कीयौ। अजमेर रौ सोबायत नुं फरमांन हुवौ—औ कहै सु कांम सरभरा[1] कर देजौ। पाषतो जागीरदारां सारां नुं फरमांन कीयौ। मेहमद मुराद बुलावै तठै आय हाजर हूजौ। तद राणां बधनोर छै। मेहमद मुराद बधनोर आयौ। सारा परगना रा जागीरदार कांमदार घरे था तिणां नै तेड़ाय लीया। आप बधनोर था पाटण, बधनोर था कोस ३ बोरवात छै तठै आंण डेरौ कीयौ। मांणस हजार ४००० भेळा कीया। तिण में पंवार सादूळ मालदेवोत राः नरसिंघदास भोपतोत, मसुदा रौ जागीरदार राव सकतसिंघ रा बेटा पोतां रा सारा भेळा कीया। ठौड़-ठौड़ रा सुनार पाषती रा सेहरां रा पकड़ मंगया छै। माल रौ तलास करै छै। वांसा थी[2] साहजादाजी सुं किणहीक मालम कीयौ, कांबो अबु मेड़ते बरस २ रह्यौ छै, उठा रौ वाकप[3] छै। तरै अबु नुं पण मेहमद मुराद कनै भेळौ फरमांन हुवो, थांनै अबु भेळा होय तलास करजो। अबु पण पाटण आयौ। मेमद मुराद अबु भेळा हुआ आगे मेमद मुराद पंवार सादूळ राः नरसिंघदास रौ कायदौ मुलायजो कोई न करतौ, अळधा बैसांणता। पछै अबु समझायौ, कह्यौ—औ इण तरफ वडा आदमी फैमदार[4] छै। इणां सु आंपणौ कांम आषर कर देसी। तठा पछै इणां रौ आदर भाव विसेक[5] कीयौ। जैतारण था भाः मांनौ आयौ। अबु नुं मेहमद मुराद कह्यौ—राजा रा लोग सुं थे असनाव[6] छौ। इणां री रदळ-बदळ[7] थे करौ। पछै राजाजी रा देस रा सुनार पकड़ीया था सो अबु रै हवालै कीया। भाः मांना नुं पण कह्यौ—राजा भींव सीसोदीया नुं मेड़तौ जागीरी में छै कुं उठे परगना माहे

1. सत्कार आदि। 2. पीछे से। 3. जानकार। 4. विश्वस्त। 5. विशेष। 6. परिचित। 7. बातचीत।

बाकी छै सु तफसील करौ नै राजा रौ लोग छै सु थे साथे ले जावौ। रूपीया २५००) तथा ३०००) रौ माल इणां रै मुलक माहे आयौ छै, सु थे राज रा देस रौ लोग साथे ले जावौ, उण माल रौ जांणौ सु तलास करजौ। पछै अबु भा: मांनौ और ही सुनार रोकीया था तिणां नुं ले नै मेड़तै आयौ। मालगढ मैं डेरौ कीयौ। भा: मांना सुं रद-बदळ कर नै रूपीया २००००) चांग मांनपुरा रै वित[1] रा कीया। तिण रौ षत लिषाय लीयौ। मास १ माहे भरण रौ वादो कीयौ। मास १ हुवौ तरै भा: मांना कनै अबु आदमी भेजीया—पईसा लावौ। तरै मांनौ कहै—पईसा तौ म्हां कनै कोई न छै, म्हे माहाराजाजी नुं लिषीयौ छै, पाछौ जाब आयां पईसां रौ सुल हुसो।[2] अबु ने अवणत[3] हुई तिण दिन देसरा कांम री मदार रा: किसनसिघ षींवावत पा: राघवदास ऊपर छै। सु अै ठाकुर पण आय जैतारण रहा छै। भा: मांना कनै अबु घणा ही आदमी मेड़ता रा सी: पंचाइण भटारक मेलीया, पइसां रौ सुल हुय ना आयौ। तरै अेक वार तौ भा: मांना रौ बेटौ सोढौ भावी लटण गयौ[4] थौ तठै असवार २०० मेलीया हुता। पण तठा पेहली मेड़ता था मांना रै सगे आदमी मेलीया। सोढौ तौ पैदल नोसर गयौ, हुवै षाली पड़ी। तठा पछै अबु असवार चाढ नै नीबोळ रा बोहरा पकड़ीया। आ षबर जैतारण आई। रा: किसनसिंह षींवावत निपट ऊतावळे[5] चढीयौ। साथ कितराक नुं षबर हुई नहीं, किसनसिंघ इण भांत चढीयौ। बळुंदा री पाषती नीसरीया तरै पा: राघवदास रा: रांमदासजी नुं षबर मेली रा: रांमदास, घघवाड़ीयौ माधौदास आय भेळा हुवा। कितरोक साथ ऊमरावां रौ आय भेळौ हुवौ। मुगदड़े आवतां अबु नुं आपड़ीयौ।[6] तठै अबु ही फिर ऊभौ रहौ।[7] तठै बेढ संमत १६७८ रा जेठ सुद ६ हुई। तठै इतरौ साथ म्हाराजाजी रौ कांम आयौ—

१ रा: रांमदास चांदावत।

---

1. मवेशी। 2. पता लगेगा, व्यवस्था होगी। 3. अनबन। 4. कर वसूल करने गया। 5. बड़ी शीघ्रता से। 6. पकड़ा। 7. मुकाबला करने के लिए सम्मुख डटा।

1 राः नराइणदास कलावत ।
1 चारण माधौदास चोंडावत धधवाड़ियौ ।
1 सम्रार षंगार ।
1 राः किसनसिंघ षींवावत ।
1 राः जैतसिंघ सूरसिंघ रांमदासोत ।
1 राः सूजौ हरदासोत सिवराजोत ।

जणा आठ ८ राजपूतां रा चाकर]

इतरा साथ रै घाव लागा—

1 राः गोपाळदास सुंदरदासोत ।[1]
1 राः राजसिंघ सांवळदासोत ।
1 मु रांमौ किसनावत ।
1 राः[2] गोपाळदास आसावत ।[3]
1 पंचोळी राघोदास ।
1 रजपूत जणा १० ।

१८३. अबु रा मांणस १५ तथा २० मुवा ।[1] अबु री भतोज लोदीषां बाहावदी री बेटौ सिरदार कांम आयौ । एक घाव अबु रै हाथ रै सहेलयौ थौ । अबु आपरा री लोथां समाह[2] नै चालतौ हुऔ । मालगढ पैठौ । रावळौ साथ वांसा थो आयौ सु आय इण ऊपर ऊभा रहा । कांम आया तिण नुं दाग दीयौ । बीजौ साथ लोहां थौ[3] सु साथे थौ, तिणां नुं डोळी मैं घाल ऊपाड़ीयौ, जैतारण ले गया । अबु दिन ८ मेड़तै मालकोट में रहा । पछै काः अजमेर था पंवार सादूळ साथे मेलीयौ । मेड़ता थी कुंवर किसनसिंघ भींवोत असवार २०० साथे हुवौ सु बुधवाड़ा सुधा पोंहौचाय नै किसनसिंघ उरौ आयौ । दिन ४ अबु अजमेर रहौ नै आपरै घर मेरठ पुरब माहे छै तठी गयौ ।

---

१. सूरदासोत । २. भाः । ३. इसके पहले-वेणीदास पूरणमलोत ।

---

1. मारे गये । 2. संभाल कर । 3. घायल था ।

पछै संमत १६८२ फाजल मुहमद रा: जगतसिंघ रा: सुजांणसिंघ राई-सिंघोत रा: सुंदरदास ही घणा मेड़तीया राजा गजसिंघ रा चाकर सारा साथे हुता नै सिरदार ३ राजाजी री हजूर रहा। रा: राजसिंघ विसनदासोत, रा: गोपाळ सुंदरदासोत रा: ग्रासकरन मांनसिंघोत ग्रेह साथे भेळा हुता। ग्रबु रौ बेटौ परगना नुं वहतै लसकर विदा कीया था, माडवै परा सुं इण रा हेरा[1] लागा[1] था, सु फाजलषांन नुं मारीयौ।

१८४. १६८४ रा माह सुदि १० साहजहां पातसाह तषत बैठौ। राजा गजसिंघजी ग्रागरै हजूर छै। तिण समै पंवार भोमीया षनवा पचुना कन्है भोमीया रहै, ग्रागरै री गिरद नीवाई रौ वीगाड़ करै[2] छै। तिण री फरियाद सोबाइत ग्रागरै कीवी। तरै उणां ऊपरै बिदा कीया। सीरदार षांन मुगल सिरदार कीयौ। राजाजी नुं कहौ–ग्रसवार ५०० थांहारा महेसदास सुरजमलोत नुं भेजौ। तरै राजाजी कहौ–महेसदास इण भांत रौ नहीं।[3] रा: भगवानदास वाघोत पांचली[2] बलु नुं घणौ साथ साथे दे नै विदा कीया। रा: भगवानदास वाघोत नुं पातसाहजी री हजूर ले गया। हाडा राव रतन रा बेटौ माधौसिंघ नुं राव रौ साथ घणा हाडा दे नै विदा किया।

१८५. संमत १६८४ ग्रासाढ वदि ८ गढ़ जाय लागा नै पंवारां पिण गढ़ी झाली।[4] गांव पहली लगाय दोयौ।[5] सिरदार षांन ऊतावळ कीवो, राठौड़ हाडा कहौ–सुसतेरा हुवौ।[6] ग्राग वळवळ[7] बुझण देवौं। पिण उहै वात मानै नहीं। तरै साथ राठौड़ हाडा ऊरड़ीयौ[8] सु एकण कांनो ग्राग हुई, नै एकण कांनी प्रौळ रै मुंहडै पंवार ग्राया। तरै इतरौ साथ कांम ग्रायौ, तिण री विगत—

---

१. हेला। २. रा.।

---

1. पीछे लगे थे। 2. नुकसान करते है। 3. इस कार्य के उपयुक्त नहीं। 4. सुरक्षित स्थान पकड़ लिये। 5. जला दिया। 6. कुछ विलंब करो। 7. चारों तरफ, इधर-उधर। 8. एकाएक अंदर घुसा।

१ रा: भगवानदास वाघोत ।
१ रा: साहबषांन केसोदासोत ।
१ भाटी[1] नरहरदास भांनीदासोत ।
१ रा: भगवानदास सुरतांणोत ।
१ रा: स्यामसिंघ जसवंतोत ।
१ रा: नरहरदास कलावत ।
१ भीवोत बलु मेघराजोत ।
१ तोडर[2] गोरावत ।
१ रा: गोकळ विसनदासोत ।
१ रा: सुंदरदास नराइणदासोत ।
१ रा: आसकरन नींबावत ।
१ षीची गोइंद रांमदासोत ।

[[3]रा: उदैकरन कुंभकरणोत घावे लागा ऊपड़ीया, निपट भलौ हुवौ ।

हाडां रा आदमी ६० तथा ८० डील कांम आया ।

१८६. इतरौ साथ कांम आयौ, पंवारां री गढी युंहीज रही । गांव बळ बुझीयौ । पछै पा: बलु सारा साथ ले, गढी ऊपर जाय भेळी । पंवार चचा वचा सुधा[2] सारा मारीया ।

१८७. संमत १६६३ रै काती सुद १५ परगनै जाळोर रै रा: किसनसिंघ जसवंतोत कांम आयौ ।

१८८. परगनै जाळोर रा: कीसनसिंघ जसवंतोत भा: जगनाथ लुणावत नुं हजूर था परगनै मेलीया । जाळोर रै देस देवल बणवीर धारावत बडौ भोमीयौ छै सु गांव ४० अेक बेठौ षाय, चाकरी न करै । रा: किसनसिंघ, भा: जगनाथ भीनमाल आयौ । बणवीर सुं कहाव कीयौ ।[3] बणवीर घणा साथ रौ धणी उतन माहे सुधा लोहीयांण सारीषा वांका

---

१. रा. । २. प. तोडर । ३. 'ख' प्रति का अंश है ।

---

1. लूट ली । 2. बाल बच्चों सहित । 3. कहासुनी की ।

भाषर[1] छै। देवड़ौ चांदौ प्रिथीराजोत पण देवल पैली आंण चौषळै राषीया छै सु चांदो अठै बेठौ बीभोग सीरोही रौ दांण[2] आधौ लेसुं। राव अषैराज राजसिंघोत पण इण सु बळै छै।[3] वणवीर भीनमाळ आदमी ४०० नगारौ वजावतौ आयौ। इणां सुं मीळीयौ। घणौ-सो आदर भाव कोई कीयौ नहीं पछै बणवीर विगर मिळीयौ परौ ऊठ गयौ। इणां उणां माहीमाय[4] अवणत हुई। तरै राव अषैराज नै किसनसिंघ अेकौ कर[5] भेळा होय जाय लोहीयांण री तळेहटी मांणस ४००० सुं ऊतरीया। देवल बणवीर देवड़ै चांदे भाषर भालीया।[6]

१८९. अेकण दिन श्री म्हाराजाजी रौ साथ राः किसनसिंघ चोकी गया था, उठै बाज उड़ावता था तठै देवल रै साथ आय टींच मांडी[7] साथ देठाळै हुवौ, आ षबर डेरै पोंहती। भाः जगनाथ राव अषैराज बेहूं चढ़ आया। उणे भाषर री षंभ तिरकारी करणी मांडी। उवे चालता गया इणां वांसौ कीयौ।[8] कोस चार गया तितरै दिन आथ-वण लागौ। तरै उठे रै भोमीये कंहौ—ठौड़ अेकण भांत री छै, बणविर चांदो भाषर थी ऊतरीया छै, वळतां सुं अवस मांमलौ करसी। इणां पाछा वाळीया[9] संजा वेळा हुई। वे वांसा लागा, साथ आप आपरै मतै हुवौ। रात पड़ी यूं वे हाथुके[10] आया। इणां नीसंरतै किण हीं री षबर राषी नहीं। राः किसनसिंघ आप आवतौ थौ तठै मांमलौ हुवौ तरै राः किसनसिंघ इतरा साथ सुं कांम आयौ—

१ राः किसनसिंघ जसवंतोत।
१ सांषलौ गोपी परबतोत।
१ राः करन भावादसोत।
१ सांषलौ जगनाथ धारावत।

१९०. राव रौ ही साथ आदमी कांम आया। श्रीजी री साथ राव रौ साथ घणौ घायल हुवा। सकौ[11] बुरै हवाल डेरै आया। तरै राः

1. विकट पहाड़। 2. कर। 3. जलता है। 4. बीच में। 5. एकता करके। 6. पहाड़ों में शरण ली। 7. खटपट की। 8. पीछा किया। 9. वापिस मुड़े। 10. पास ही। 11. सभी लोग।

किसनसिंघ री षबर ही नहीं। राव जांणै मारवाड़ रा भेळौ छै। राजाजी रा चाकर जांणै राव भेळौ छै। किसनसिंघ डेरां नहीं आयौ। तरै सगळै मुंहडा वीगाड़ीया[1], तरै किणहीक कह्यौ–किसनसिंघ नै तणवर रै साथ फलांणी ठौड़ मांमलौ हुतौ तरै म्हे पाषती[2] होय नीसरीया। तरै सारां जांणीयौ–किसनसिंघ कांम आयौ। तरै डेरा मांहे भाट चारण उणा देसरा था सु षबर करण मेलीया। तिके उठे जाय षबर लाया किसनसिंघ फलांणी ठौड़ पड़ीयौ छै। पछै संवारे दाग हुवौ। अेक वार तो डेरा उठा थी ऊपाड़[3] कोस पाछा कीया। पछै जोधपुर था साथ सीः सुषमल मेळीयौ। सोझत रौ साथ ले राः जसवंत सादुळोत राः अमरौ आसकरणोत दूजा ही आया। राव पिण सारौ सीरोही साथ भेळौ कर नै पाछा लेयांणे आय लागा। भाषरे घिरीयौ सासता ढोवा मांडीया।[4] सीरीहे सीसोदीये परबतसिंघ दे रामे भैरवोत घणौ कस कीयौ। बणवीर पण जांणीयौ म्हारै सबळी[5] ठौड़ सुं वैर लागौ।[6] पछै सोरोहीये बणवीर बीच आदमो फेरीया। कह्यौ–तूं मिळ, राः किसनसिंघ रा बेटां नुं परणाये। बणवीर पण दीठौ म्हां सुं धरती छूटी, मो जीवतां वैर भागै छै तौ आछौ। पांच पांवडा ठाकुरां रा बोल ले[7] मिल्युं। ऊं करतां बोल गया, मोनुं मारीयौ तौ पण भला। पछै धरती म्हारा वेटां भायां नुं रहसी। पछै बणवीर मिलण री वात कबूल कीवी। देवड़ै चांदै घणा ही वरजीया। सीः परबतसिंघ देवड़ा रामा चीवा करमसी रै बोल आदमी १५, तथा २० आया। पछै राः जसवंत रै डेरै मिलण नुं आंणीयौ। उठे लोह बुहा[8] देवल बणवीर धारावळ देवल मेघराज मारीया। मेघराज भलौ प्राक्रम कीयौ। बणवीर मारीयां, लोयाणों वीर रै छोड दीयौ। बेहूं साथ गढ़ जाय नै पछै आप आपरै घरै गया।

१९१. संमत १६६० रै चैत्र १२ बलोच मुगलषांन समायलषांन रा सरोई तिण परगना फळोधी रा गांव २ कीरड़ा कनै छै, मार नै घणा

---

1. मुंह विगाड़ने लगे। 2. पास से। 3. उठाकर। 4. लगातार हमले करने लगा। 5. ताकतवर। 6. वैर हुआ। 7. वचन लेकर। 8. शस्त्र चले।

वित लीया। तिण दिन परगनौ मुः जगनाथ रै हवालै छै, भाः अचळदास सुरतांणोत भाः सकतसिंघ षेतसींघोत थांणेदार छै, सु मुः जगनाथ तौ जोधपुर हुतौ फळौधी रै कोट षबर आई। मुः रूपसी जगनाथ रौ काको वांसै बाहर चढीया, फळोधी था को ४ आसा रा तळाब परै कोस ०।। जाय पोहता[1]। तठै रावळौ साथ कांम आयौ—

१ भाः सकतसिंघ षेतसीयोत।
१ भाः अचळदास सुरतांणोत, आपरा भायबंद आदमीयां साथे।
१ भाः केसोदास अचळदासोत षीवै गैर चाकर २ कालर, ऊदो, घेरू।

१९२. संमत १६९३ रै आसोज बद ९ बलोच समीयांणी फळोधी रा देस ऊपर हैदरअली मदौ फतैअली आय इणे दोय ठौड़ साथ कर धरती मारी।[2] हैदर कुंडल मार नै घणा वित लूटीया। बरसाळै[3] रा दिन हुता, लोग सारौ बांभण बांणीया षेत गोवल कुल कर रहा था। सु सोनो रूपो राछा-पीछ[4] ऊंठ १५० गायां ५००० ले गया। फळोधी सेहर सुं कोस ०। घाटो छै तठा सुधौं फिर नै वित लीयौ।

१९३. मदौ नै फतैअली पेहली चाणु आया। आदमी १९ राः हरराज रांणोत कांम आयौ। गांव लूटीयौ घणौ वित लीयौ। पछै घंटियाळी ऊपर गया। राः ईसरदास रामसिंघोत भाः भांनीदास ईसरदासोत आदमी कांम आया, घणा बित लूटीया।

१९४. संमत १६९४ रा काती बद १२ बलोच मुदाफरषांन मदा रौ बेटौ फळोधी रा गांव ननेऊ ऊपर आयौं। तठै भाः जसवंत सुरजमलोत नै राः दयाळदास जसवंतोत बाप बेटौ आदमीयां सुं मारीया, घणा बित ले गया। तद मुः जगनाथ रै हवालै परगनौ छै। माहाराजाजी श्री गजसिंघजी जोधपुर छै। पातसाहजी दिसा चढण नुं तयारी छै। तद षबर जाय पोहती।

१९५. संवत १६९४ रा काती सुदि ५ मुः नैणसी रै हवालै फळौधी कीवी। तरै काती सुदि १३ नैणसी फळोधो पहौतौ। राजाजी काती

1. पहुचे। 2. जीतली। 3. वर्षा ऋतु। 4. ओजार आदि।

सुदि जोधपुर सुं असवार दरगाह नुं हुवा । संमत १६६४ रा पोस सुदि ५ मुगलषांन सरोई असवार १४० राव मोहणदास ऊपर वाप[१] आयौ । राव नुं तळाव में घड़ासर पाळ ऊपर हेरीयौ[1] थौ । सु राव रा दिन ऊभा[2] सु रात्र मोहणदास फराकतां जाय[3] नै दांतण कर नै सेवा कर नै गांव रै फळसा माहे पैठा नै बलोच आया । तरै इणां फळसौ आडौ दीयौ ।[4] तीरां री वेढ होण लागी । तरै राव वौठी[२] २ गांव वांसा थी वाड़[३] फाड़ नै फळोधी मेलीया । दिन पहौर चढीयौ नै वोठो फळोधी आया । दिन पोहोर १।। चढीयां मुः नैणसी नै षबर आण दीवी । नैणसी आदमीयां १० सुं फळोधो था चढीयो । षीचवद कालर[४] रा गांवां नु षबर दीवी । नै कीरड़ा कन्है जातां आदमी २० वळे भेळा हुवा । कीरड़ा रै पैलै ढाळ नगारौ दीयौ ।[5] मुगलषांन वाप थी नीसरीयो । मुः नैणसी वाप राव भेळौ हुवौ, पूछीयौ—बलोच कठै ? तरै राव कह्यौ—अहै जाय, तितरै उणां जातां थकां वावड़ी दलपत वाळी लगाई । नैणसी राव नुं कह्यौ—हिमैं वांसै षड़ीजे[6], राव कह्यौ—माहरा ही साथ नुं तेड़ा गया छै, नै थांहरै साथ भाटी जोगीदास भैरूंदासोत भाटी हरीसिंघ सकतसिंघोत आया नहीं छै । थे हो डेरौ कर, घोड़ां रा कायजा ढाळौ[7] घोड़ां नै आसुदा[8] करौ । तरै मुः नैणसी तळाव री पाळ ऊतरीयौ, फळोधी री साथ आदमी ६० तथा ७० वांसा थी आया । नै मांणस १०० राव रा भेळा हुवा । तरै दिन आथवतां[9] रा चढीया, सु घोड़ा षड़ीया, तीरवां १ गया । तरै जीवणा साल[५] बोलीया ।[10] तरै राव पिण कह्यौ नै औरां पिण कह्यौ—अै सांवण[11] ले नै आघा षड़जे[६] तरै आघा षडीया, भला नहीं छै । पोस सुदि ५ री रात तौ गांव वाप ही रहा पोस सुदि ६ दिन ऊगत सवा[12] चढीया सु दिन पोहोर १।। चढीयां नोषै[७] तठै गया । जोवणौ तीतर वेळा ५

---

१. वाय । २. ओठी । ३. वसा वाड़ । ४. कालारी । ५. स्याळ । ६. खड़िया । ७. नौष ।

---

1. ढूंढा । 2. अच्छे दिन थे । 3. नित्य कर्म से निवट कर । 4. बन्द किया । 5. युद्ध सूचक नगारा बजाया । 6. पीछा करना चाहिए । 7. जीनें उतारो । 8. ताजा । 9. अस्त होते समय । 10. सियार बोले । 11. शकुन । 12. दिन उगते ही ।

बोल्यो तरै वळे सगळा ठाकुरां कहो, पोहौर २ अठै रहीजे । तरै नौषै ऊतरीया । दाणो-षाणो कीयो । राः वरसळ थळैचो राः किसनो ईसर-दासोत और ही साथ आय पहोतो । मांणस १५० राजाजी रा छै, मांणस २०० राव कन्है छै । तीजै पोहौर चढण री तयारी कीवी । वळे सांवण री पाल हुई ।[1] तरै रात वळे नोषा रा थळां माहे रहा । तितरै राव रै आदमी २ बीकुंपुर सुं आया तिणां कहो–मुगलषांन अठा थी असवार १४० कोट आय ऊतरीया । पैली कांनी था आदमी ५०० वांसलो साथ चढीयो, पाळो कोट आय ऊतरीया छै, साथ पूरै पषै छै । थळां मांहि नास जाजो । दिन ऊगतां संवा बलोच वाप फलोधी नुं आवै छै । अै कागळ[2] राव कनै राजाजी रा साथ कनै आया । कहो–पैलो साथ घणो, नास नै डावा जीवणा थळां[3] माहे पैसां छां । थे पण जाय कोट फळोधी रै पैसो । राजाजी रै साथ आ वात कबूल नहीं कीवी । कहो–म्हे अठारा नाठा कठै जावां ? संवारे बलोचां उपर विकुंपुर जासां । माहरो सिरजीयो[4] छै सु हुसी । तरै राव हीज ठंबीया । रात आधी गई तरै राव मनोहरदास रा ओठी[5] २ आया, कहो–रावळजी आया नै थांनु कहै छै थे संवार रा बीकुंपुर आवो ।

१९६. रावळजी पिण कोट आया छै । सु राव मोहणदास नैणसी रावळ रा आदमीयां नुं रोटी षुवाड़ नै तुरत सीष दीवी । नै ओठी २ दूजा पिण साथे चढीया । राव मोहणदास नै राजाजी रो साथ विकुंपुर नुं झांझरषा[6] रा चढीया । इणां रा दिन ऊभा । इणां जावतां पहलो बलोच चढ षड़ीया । अै जाय वीकुंपुर पोहता नै कहो–वलोच कठै ? राव रै चाकर कहो–दिन ऊगतां सुं पहली टावरीयालै कोहर[7] दिसी गया । तितरै रावळजी कन्है ओठी मेलीया था सु दिन घड़ी ५ चढतां-सै आया । कहो रावळजी थांनुं कहो छै–भारमलसर आवां छां, थे ही सिताब भारमलसर आवजो । पछै तुरत चढीया, दिन पोहर २ चढीयो रावळजी एकण कांन्ही[8] आया । एकण कांन्ही राजाजी रो

---

1. प्रतिकूल शकुन । 2. कागज । 3. रेगिस्तान । 4. जैसा भाग्य में लिखा । 5. सुतर सवार । 6. प्रातःकाल । 7. कुआ । 8. एक तरफ ।

साथ आयो। भारमलसर आय पहोता[1]। रावळजी रै सारो साथ पगै लागो। रावळजी उतर नै पूछीयो राव नुं–मुगलषांन कठै? तरै राव कहो–दिन ऊगतां रो विकूंपुर सुं चढीयो। राव सुं रावळजी घणो बुरो मानीयो। कहो–इण उणै नुं षबर देनै काढीयो छै। तरै राजाजी रै साथ कहो—राव रै भेद माहे गयो नहीं छै। रावळजी षातर जमा करो,[2] राव रावळजी रो सांमधरमी चाकर छै। तरै रावळजी सुसता पड़ीया। तरै कहो–उठाही[1] बेगी षबर मंगावो। तरै राव वोठी[3] २ कटक रै पगै चाढीया। सु कटक देष नै पोस सुदि ७ रात आधी रावळजी री हजूर आया। हकीकत मालूम कीवी। अठा थी कोस ८ अहवाची नदी[2] दिस १ थल[3] १ ऊंचा माथै उतरीयो छै। सु रावळजी चांद आथंमीयो तिण हीज वेळां चढीया। रात घड़ी ४ थकां उण रै डेरा री नजीक कोस १ गया। तठै दमदारो कीयो[4]। फराकतां साथ गयो,[5] नै अमल षाधो। नै जीनसिलै हुती तिणां पहरी नहीं, तिणै गांतरी मारी। आगै रावळजी असवार दौड़ाया था सु षबर लाया। उणां नुं ही उणां रै बाब सु षबर दीवी। सु उहैई लड़ाई री तयारी कीवी छै। रावळजी झालर वेळा[6] था उठा थी षड़ीछाया, सुरज ऊगो तिण वेळां उठै जाय पहोता। वलोचां रै सहनांई बाजै छै। तरवारीयां काढ नै सरम[4] करै छै। सु सुरज री किरण सुं तरवार झबकै[7] छै। रावळजी आगे फतेषांन बलोच नुं मुगळषांन कन्है मेलीयो–रावळ आयो तूं परो नीसर। तरै उण कहो–रावळ राजा दोनु आवो हूं नोसरूं नहीं। थळ ऊंचो झाल रहो[8]। तरै रावळ तीन अणियां[9] कीवी। जीमणी बाजू राजाजी री साथ नै बीच में आपरो साथ नै डावै बाजू राव रो साथ कर चालीया[5]। बलोच पिण सांमा ही नांषीया[10] मूठ तीन तीरां री छूटी, सीहड़ देदो उठै कांम आयो।

---

१. उणारी। २. नुहदी। ३. साथल। ४. सुरु। ५. चलाया

---

1. पहुचे। 2. विश्वास रखो। 3. सुतर सवार। 4. थोड़ा विश्राम किया। 5. नित्य कर्म से निवटा। 6 सूर्य उदय होने के थोड़ा पहले का समय। 7. चमचमाती। 8. ऊंची जगह पर डट गया। 9. फौज के तीन हिस्से किये। 10. सीधा सामना किया।

तीर १ लागौ। तीर १ रावळ रौ टोप फाड़नै निलाड़ रै लागौ। वाग उपाड़ी आदमी १२०। मुगळषांन सिरदार ४ सुं षेत मार लीयौ, बलोच भागा। साथ वांसै दौड़ीयौ कोस ॥ माहे आदमी ५० तथा ६० बलोच रा पाड़ीया। रावळजी वांसै रहा। साथ अणी तीन कर वांसै दौड़ीयौ। कोस ८ ताउ गया उठै जाय साथ पांणी तिसीयौ मरै तरै ऊभा रहा।

१६७. बलोच ३०० सारा मार नै रावळजी पहली बेढ़ हुई तठै रिण १ ईयांरी कांनी रौ आय ऊभा रहा, नै रिण देषण नुं भाः देवीदान गोयंदोत नैहवर रौ कोटवाळ सादूळ मुं. नैणसी नुं साथ देनै मेलीया, रिण सारौ सौझायौ।

१६८. [[1]पहली बेढ हुई तठै हीज मुगलषांन पड़ीयौ थौ सु लाधौ। बरसे ३५ तथा ४०, डीघौ[2] गोरौ जवांन हुवौ। पाछौ आंण रावळजी नुं मुगलषांन मारीयां री षबर दी। रावळजी बोहत कुसी हुवा। दिन आथवते[3] रावळ राजाजी रा साथ नुं सीष दी। सु दिन तीन चार हुवा था घणौ धान चून मांणसां नुं रोटी, पुरण[4] नै दांणौ-षांणौ रन माहे जुड़ीया[5] था सु सारी रात पोस सुद ८ री घड़ीयां दिन पोहर १ चढतां वाप आया। राजाजी रै साथ रै लोगां रै जणा ५ तथा १० रै हळवा-सा[6] लोह था[7]। रावळजी राव रौ ही घणौ को मुवौ नहीं। अेकधारी बुही गई[8]।

महाराजा जसवंतसिंघजी रै समै री बात

१६९. महाराजाधिराज माहाराजा श्री जसवंतसिंघजी रांणी प्रतापदे रै पेट रौ, सीसोदिया भांण सकतावत रौ दोहीतरौ।

संमत १६८३ रै माह बद ४ रौ जनम। संमत १६९४ रै असाढ़ बद ७ सुक्र आगरै पातसाह साहजहां बड़ी ईजत सूं टीकौ दीयौ।

---

१. 'ख' प्रति का अंश।

---

1. तक। 2. लंबा। 3. अस्त होते समय। 4. ऊंट घोड़े आदि। 5. प्राप्त हुए। 6. हल्के से। 7. घाव। 8. एक रफ्तार से सफाया करते चले गए।

मुनसप टीके बैसतां वार हजारी चार हजारी असवार रौ कीयौ। अै प्रगना जागीरी में पाया—

३४३०००) जोधपुर
७५०००) सीवांणौ
३५००००) मेड़तौ
१५००००) सोझत ५००००) संमत १७११ बधीया
६७५००) फळोधी
१४०००) सातलमेर ६०००) संमत १७०७ बधीया

इतरी ठौड़ तागीर हुई—

जाळोर रुपीया २९७५००)
सांचोर रुपीया ६४५००)

२००. जैतारण ऊपर अेक वार रा: भींव किल्याणदासोत चढावौ कीयौ[1]। कहौ–रूपीया १२५०००) राजा गजसिंघ नुं थी, मोनुं रूपीया २५००००) माहे दौ। अेक वार पातसाहजी ही मन धारी थी,[2] पछै रा: राजसिंघ षींवावत अरज पौहचाई–इण रै बड़ी जमीयत नै हसम[3] रा षरच री मदार जैतारण ऊपर छै। जैतारण किण ही और नुं देसी तौ साहबी रौ बंधेज[4] चूक जासी[5]। पछै रूपीया २०००००) मुकाते करनै राजाजी नुं हीज जैतारण दी। वरस १ रा रूपीया २०००००) दरगाह भरीया। पछै संमत १६३५ रा माहा बद ६ में लाहोर सुं देस नै विदा कीया। तरै हजारी जात हजार असवार रौ ईजाफौ हुवौ। तिण में जैतारण रूपीया २५००००) री रेष माहे दी। ५०००० संमत १७११ घटाया।

२०१. संमत १७०२ रै जेठ सुद १३ हजार असवार ईजाफै[6] हुवा तद यौ हिसाब हुवौ–तलब वा मनसब असल पांच हजारी जात पांच

५८००००००) हजार असवार, त्यां मैं अेक हजार दोसपा।
८००००००) ईजाफै हजार असवारां रा।

---

1. कीमत बढाई। 2. इच्छा की थी। 3. फौज। 4. शक्ति। 5. समाप्त हो जायगी। 6. अधिक।

५०५००००० देसरा परगना—

१४३००००० जोधपुर

१४५००००० मेड़तौ गर्जसिंघपुरौ

६०००००० सोझत

१०००००० जैतारण

३०००००० सीवांणौ

२७००००० फळोधी

११७००००० रेवाड़ी

६२२०००००

३८००००० तलब नगदी।

तठा पछै गर्जसिंघपुरौ पांच लाष दाम में पायौ। संमत १७०३ माह बद ११ वळे पांचसौ असवार ईजाफै हुवा। सेसपा दोसपा तिणा रा दांम ४०००००० वधीया। तद तळब ७८००००० हुई तिण री नकदी।

तठा पछै ईजाफौ हुवौ—

२०२. परगनो जैतारण संमत १६९६ माह बद ६ पातसाहाजी कासमीर नुं असवार हुवा श्री माहाराजा जी नुं देस नुं विदा कीया। हजारी जात हजार असवार ईजाफै करनै जैतारण २५००००) माहे दी। श्री माहाराजा जी हरदवार पधार नै जेठ माहे जोधपुर पधारीया। संमत १६९७ रा पोस बद ५ रा: राजसिंघ षींवावत काळ कीयौ,[1] २५००००)।

२०३. संमत १६९७ रा चैत माहे माहाराजाजी रा: महेसदास सुरजमलोत नुं परधांन कीयौ। रा: महेसदास घणौ साथ राष नै पातसाहजी रै पांवे श्रीजी लाहोर पधारीया। साथ असवार २७०० री मोहलो पातसाह जी नुं दीयौ[2]। पातसाहजी बोहत राजी हुवा हजार असवार ईजाफै कीया। तिण री नगदी पायां गया सु बरस ६

---

1. देहान्त हुआ। 2. विशेष सम्मान प्रकट किया।

नकदी पाई। संमत १६९७ वैसाष वद १३ लाष दांम दीठ[1] रूपं
१६६६॥=) मु० ११११११) रूपीया पाया, दर माहे।

२०४. संमत १७०१ रै जेठ सुद १३ माहे पातसाह साहजहां पर
रेवाड़ी रौ दीयौ। साहजहां नांवद ऊरै कोस ३० छै। निपट ब
ठौड़ संभर रा मंगर थी नदी साबी परगना माहे आवै छै। सु आधा
गांव रेलै छै,[2] तिण सुं रबो सेंवज घणी हुवै। गांवे कुवा पण
षुलासा ठौड़ तिका दांम लाष ११७०५००० रूपीया २९२६२
तिका संमत १७१५ रै वरस पुरब कुरड़ा घाटमपुर था फिर आय
तरै माहा माहे तागीर हुई[3]। सीः प्रिथीमल हाकम हुतौ। पछै रा
जैसिंघ नुं दी।

संमत १७०४ रा चैत सुद ७ पांचसै असवार फेर दोसपा कीय
तद पांच हजार असवार तिण में तीन दोसपा दोय वावरदी हुवा।

२०५. संमत १७०५ रा भादवा माहे हजार असवार ईजाफे हुवा। ति
मैं परगनौ ऊदेही पंचवार रौ हींडवाणा कनारै सोबो आगरै रौ दीयौ
आ ठौड़ षराबे हुती। बरसाळी साष निपट बड़ी ठौड़ परगनै
तळाव गांव में निपट घणा। तिणां मोरी छूटै[4] जव चावळ घ
हुवै। कितराहक गांव कुवा छै तठै बाड़ वण हुवै। घण-मेहा[5] निप
बड़ी धरती। विगर मेहां कुवे पांणी को नहीं। दांम ५८००००
तिण रा रूपीया १७००००)। संमत १७०५ बरस आसु माहे
ईसरदास भैरवदास श्रीजी मेलीया तिणं आंण अमल कीयौ। प
संमत १७०५ रा माह सुद ८ पछै मुः ईसरदास मेलीयौ। संम
१७०५ रै बरस रूपीया १२००००) ऊपना[6]। बरस ९ उदेही रही
संमत १७१४ रा भादवा आसु मैं तागीर हुवौ छै। माह री ठोड़ य
ठौड़ हुई। तद इणां रा दांम ५८०००० भरपाया, बाकी ५०००००
पाचास ळाष दांम री तळब रही। सु नकदी।

---

1. अनुसार। 2. पानी से भरते हैं। 3. जब्त हुई। 4. मोरी खुलने पर
5. अधिक वर्षा वाले। 6. पैदा हुए।

संमत १७०७ रै वरस दुकाळ पड़ीयौ तरै पताळ भोग[1] लीया, रूपीया ५,१७००)

९९०७) जोधपुर   १३४) फळोधी

११७३२) मेड़तौ

१६०२१) जैतारण । सोभत ।

संमत १७०५ माह सुद १५ दोय हजार असवार फेर दोसपा हुवा । तिण री भी नकदी पावता । असल ईजाफा समेत पांच हजारी पांच हजार दोसपा । संमत १७०७ काती माहे प्र० पोकरण मारली ।

संमत १७०५ रा बैसाष माहे श्री महाराजजी नुं देस नुं विदा कीया, तरै पातसाहजी फुरमांण दीयौ—दांम लाष ६००००० ।

संमत १७०९ रा फागुण सुद १२ हजारी जात ईजाफे हुई तद मनसब हजारी जात पांच हजार असवार दोसपा रौ ठेहरीयौ ।

२०६. संमत १७०९ रा सांवण माहे श्रीजी नुं बधारौ हुवौ । तिण मैं प्र० मलारणौ सूबे अजमेर सिरकार रणथम्भोर रौ दीयौ । सु सांवण सुद ७ माहे श्रीजी फुरमांन मु० नैणसी नुं ऊदेही भेजीयौ । मु. नैणसी फरमांन ले राय परमाणंद कनै मलारणो बरसंत[2] मेह माहे नदी बहतां सांवण सुद ५ गया । जाय मिळीया । राय अमल दीयौ । निपट बड़ी ठौड़ गांव लागै । षुलासा परगना री धरती कंवळी, बाजरी, जवार, मूंग, मोठ, तिल, कपास, वाड़ घणा हुवै । उनाळी घणै मेह सारै परगनै जव, चिणा, गेहूं हुवै । कुवा परगना माहे घणा को नहीं । नदी १ नीगोह आवै छै । तिण गांव २० तथा २५ रेलै छै[3] । दांम १०००००० माहे दीया । तिण रा रूपीया २५००००) ।

संमत १७१२ रै जेठ-असाढ़ माहे जाळोर दी । मलारणौ तागीर कीयौ ।

२०७. संमत १७११ हजार असवार फेर ईजाफे कीया, तद छ हजार जात छः हजार असवार, तिण में पांच हजार दोसपा अेक हजार

---

1. एक प्रकार का कर जो मूल कर से बहुत कम होता था।   2. बरसते हुए।   3. पानी खेतों में आता है ।

वावरदी तिण रा दांम १०००००००० हुवा। संमत १७११ रै काती सुद ५ माहे राणा राजसिंघ रा परगना ४ पातसाह साहजहां तागीर कीया। तरै बधनोर श्रीजी नुं दी। राः नरहरषान राजसिंघोत नुं अेकवार अमल करण[1] मेलीयौ। पछै मुः आसकरण नुं मेलीयौ। राणा नुं रूपीया १३००००) माहे हुतौ निपट षोटी ठौड़। झाड़ पहाड़ घणौ। धरती माहे भोमीया घणा। पुलास गांव २० छै, धरती बडी। धरती ऊनाळी बरसाळी, बडा षेत। चावळ घाणा गांव हुवै, रूपीया २५००००)।

संमत १७१४ रै बरस बैसाष वद ९ ऊजीणी री बेढ हुई। श्री माहाराजाजी देस माहे पधारीया। संमत १७१७ रा जेठ माहे श्रीजी श्री दरगाह भाः सुंदर नु चलायौ। तिण समै राणा रा परगना फेर राणा नुं सांवण में दीया। तद बधनोर तागीर हुई। मुः भैरवदास कोतावत हाकम थौ। सु आसोज में मेड़तै आयौ।

संमत १७११ भोरूदो ६०००००) में हुवौ। पछै संमत १७१२ रोहतक ६०३००००) हुवौ। पछै संमत १७१४ दांम २८००००० इजाफे हुवा। मु० १३१०००००) में रोहतक।

संमत १७१२ रा काती माहे श्री माहाराजाजी तौ देस माहे हुता नै उठै पंः मनोहरदास सुं दरगाह रदळ–बदल करनै परगनो रोहतक व्रंमो दीयौ। तिण नुं गांव लागै, अेकसपो मुळक लोग मुटमरद[2] गौड़ षरावै। जाहानावाद था कोस ३० मूह माथै कोस १२ छै। पंः हरीदास राघावदासोत हाकम कर मेलीया। हासल अेक बरस रूपीया १५१५००) ऊपना[3]। पण ठौड़ षोटी। पछै संमत १७१४ रा पोस माहे श्रीजी नुं आगरा थी ऊजीण नुं विदा कीया। हजारी जात हजार असवार ईजाफे हुवा।

सात हजारी जात सात हजार असवार मुनसप हुवौ। पांच हजार असवार दोसपा।]

---

1. राज्याधिकार का दस्तूर। 2. घमंड वाले। 3. पैदा हुए।

दोय हजार एक सपा छै। तिण दिन रोहतक छोड़नै' देपाळपुर माळवा रौ परगनौ लीयौ। रोहतक संमत १७१४ रा पोस माहे छांडीयौ।

संवत १७१३ रा सांवणु था जाळोर पाई, मलारण री एवज दांम १०००००० । मलारणौ तगीर, ११५००००० जाळोर हुई।

२०८. संबत १७१२ रा जेठ माहे रा: रतन महेसदासोत थी जाळोर सभी नहीं[1] नै उपजत कुंही नहीं। भूषां मरै। तरै छोड नै रतलांब[2] नौलाई लीवी। तरै पातसाहजी सारी वात रौ जांणणहार थौ, विचार दोठौ–जाळोर जिण ही जागीरदार नुं दीवी तिण रै सूल पड़ै नहीं।[3] तरै राजाजी नुं दीवी। फुरमायो–थे जाळोर लौ नै मलारणौ फिटौ करौ।[4] श्रीजी अरज की–उठै उपजै कुंही नहीं। जो रतलांब ठौड़ गाढ़ी सासती जमीयत राषी चाहीजे। माहारै हजूर चाकरी कीवो चाहिजे पण पातसाहजी मांड जाळोर दीयौ। मुः सुंदरदास जैमलौत रैवाड़ी थौ, सु तेड़ नै जाळोर नुं विदा कीयौ नै सुंदरदास पहला मीया फरीसत जाय अमल कीयौ। संमत १७१२ आ०[2] वदि २ मु० सुंदरदास जाळोर थकै संमत १७१३ रा चैत सुदि १२ सींधलां रौ पांच कोटों[3] मारीयौ। पछै वैसाष वदि ३[4] कंवळा मारीया। सींधल सिरदार २३[5] मारीया। रजपूत ३०० मारीया। सींधल वाघ वीदावत नीसरीयौ।

पटी कसबै नागौर सुं हुई—

दांम	रूपीया	आसांमी[6]
३०००००	७५००)	हवली
६४५०००	१६१२५)	प्राः षाटु
३५००००	८७५०)	प्राः परड़ौद

---

१. 'श्रीजी' और। २. आसाढ़। ३. पांचोटो। ४. १३। ५. ३। ६. क्रम भिन्न है।

---

1. समुचित व्यवस्था नही हो सकी। 2. रतलाम। 3. ठीक नही रहती। 4. छोड़ दो।

९४५०००	२३६२५)	प्राः भदाणौ
४५००००	११२५०)	प्राः नौषौ
१२०००००	३००००)	कसबै नागोर
६०००००	१५०००)	प्राः वलदु
१७४००००	४३५००)	प्राः सांडीलौ
१०४६०००	२६१५०)	प्राः लाडणुं
२१०००००	५२५००)	प्राः कुचेरौ

२०९. १७१४ आसु०[1] माहे नागोर पटी ७ सुं हुवौ। पातसाहजी हुकम कर नै मुहमद अमी मुगल नुं मेलीयौ। तठा पछै पटी २ लाडणू भदाणौ वळे पाया। दांम लाष ९३७६ ०० रूपीया २३४४००), पछै संवत १७१४ रा वैसाष माहे श्रीजी नै औरंगजेब बेढ़[1] हुई। राजाजी मारवाड़ पधारीया। पातसाह औरंगजेब तषत लीयौ।[2] राजा जेसिंघ रायसिंघ अमरसिंघोत हजूर आया। तरै राव रायसिंघ नुं पातसाहजी नागौर राजाजी सुं तगीर कर नै[3] दीयौ। तद सिंघवी रायमल मीरजौ मुहमद अमी हाकम था। संमत १७१५ रा सांवण[2] सुदि १० तगीर हुवौ। संमत १७१४ रा पोस वदि ८ श्रीजी नुं पातसाहजी उजीण नुं विदा कीया तरै हजारी जात हजार असवार ईजाफौ कीयौ नै रोहतक छांडीयौ तरै इतरी ठौड़ दीवी—

२५००००) उजीण, १८२५००) देपालपुर, ४९७७५) पटी २ नागोर री लाडणू भदाणा री, तागीर राः रायसिंघ री ४९७७५)

[[3]संमत १७१४ रा भादवा सुद १० सोम पातसाह साहजहां नुं असमाध[4] जाहानावाद आई। कातो बद ७ नवाड़े बैस नै आगरा नुं चालीया। मंगसर बद ५ आगरै पोहता[5], पोस बद ७ श्रीजी नुं उजीण नुं विदा कीया, माहा बद १३ उजीण पोहता।

---

१. आसोज सुध। २. आसाढ़। ३. 'ख' प्रति का अंश।

---

1. युद्ध। 2. राज्यगद्दी प्राप्त की। 3. जब्त करके। 4. बीमारी। 5. पहुंचे।

संमत १७१५ रै पोस बद ७ माहे उजीण नुं विदा कीया। तद सात हजारी जात सात हजार असवार तिण में असवार हजार पांच दोसपा असवार हजार दोय अेकसपा छै। तिण रा दांम ११००००००० करोड़ ईंआंरै। माह सुद १३ उजीणी पधारीया।

तिण रो हिसाब—

दांम	रूपीया	आसामी
१४००००००	३५००००)	जात सात हजारी
९६००००००	२४०००००)	असवार हजार १२००० अेकसपा।

तिण मैं जागीर—

दांम	रूपीया	आसामी
१४७२५०००	३६८१२५)	परगनौ जोधपुर
१४००००००	३५००००)	मेड़तौ
८००००००	२०००००)	सोझत
८००००००	२०००००)	जैतारण
३००००००	७५०००)	सीवांणौं
२७०००००	६७५००)	फळोधी
९००००००	२०००००)	पोकरण
११५०००००	२८७५००)	जाळोर
१००००००००	२५००००)	रेवाड़ी
५००००००	१२५००)	गजसिंघपुरी
९९९६५६६	२४९९१४)	उजीण
७३०००००	१८२५००)	देपाळपुर
९३७६०००	२३४४००)	नागोर री पटी २३२४२५)
१००००००००	२५००००)	बधनोर
१०८९९७५६६	२७४७४३९)	
१०२४३४	२५६१	तलब रही

इतरी ठौड़ श्रीजी बैसाष सुद ७ देस माहे पधारीया संमत १७१५ रै भादवा बद १३ पांवै लागा तिण बीच ऊतरी—

२४६६१४) उजीण ।
२५०००००) बधनोर ।
१८२५००) देपालपुर ।
२३४४००) नागोर । ६३७६००० दांम

९१६८१४

संमत १७१४ रा बैसाष सुद ७ श्री माहाराजाजी उजीण री लड़ाई कर नै देस माहे पधारीया, औरंगजेब आगरे दिसा[1] आय धौलपुर लड़ाई दारासाह सुं कीवी । संमत १७१४ रै जेठ सुद ६ दारासाह भागौ । औरंगजेब आगरै गयौ, कोट[2] हाथ आयौ। संमत १७१४ जेठ बद ५ जोधपुर सुं असवार हुवा। जेठ बद ६ मेड़तै पधारीया। वेजयां रै मोहलै डेरा हुवा। जेठ बद १२ मु: नैणसी सुंदरदास नुं देस री हजूर री षिजमत सूंपी । जेठ बद १० थांवळा था असवार हुआ । रा: राजसिंघ सुरजमलोत मु: नैणसी मेड़ता नुं विदा कीया । श्रीजी रौ डेरौ पोकरजी[3] हुवौ । जेठ सुद १३ अजमेर पधारीया । दिन ४० अजमेर रहा । पछै सांवण वदि ६ कूच कीयौ। सांवण बदि ६ कुचील डेरौ हुवौ । सांवण बदि ११ सुरसुरै ड़ेरा हुवा । सांवण वदि १२ सांभर डेरौ हुवौ । सांवण सुदि १ सांभर सुं कूच कियौ ।

सा: सुदि १ भेसलाणै ।
सा: सुदि ८ सोभांचादर री सराह ।
सा: सुदि १० रूपा री नागल ।
सा: सुदि १२ षोहरी ।
भा: वदि ३ षारषंदो ।
भा: वदि ६ मुसतावाद ।

२११. भा: वदि १३ सतलज री नदी ऊपर तोपीसा पातसाहजी सुं

1. तरफ । 2. किला । 3. पुष्कर ।

मिळीया । पातसाहजी घणो आदर कियो । इतरो मिळतो दीयो । दिन ५ हजूर रहा पछे भादवा सुदि जहानावाद नुं विदा किया—

भादवा सुद ६ सींहनद ।

भादवा सुद १० करनाल ।

२११. संमत १७१४ रा भादवा सुदि १० सोमवार पातसाहजी साहजहां नुं असमाय, जाहानावाद आया । काती वदि ७ नवाड़ै वैस नै आगरै नुं चालीया मगसर वदि ५ आगरै पोहौता । पोस वदि ७ श्रीजी नुं उजीण नुं विदा कीया । माह वदि १३ उजीण जाय पहौता । संमत १७१५ रा पोस वदि ७ उजीण नुं विदा कीया तद सात हजारी जात सात हजार असवार तिण मैं असवार हजार पांच दोसपा नै दोय हजार असवार एकसपा छै तिण रा दांम किरोड़ ११०००००० हुवा, नै माह सुदि १३ उजीण पौहता ।

तिण रो हिसाब—

दांम	रुपया	आसांमी
१४०००००००	३५००००)	जात सात हजारी
९६०००००००	२४०००००)	असवार हजार १२००० एकसपा हुवा ।
११००००००००	२७५००००)	

तिण मैं जागीर री विगत—

दांम	रुपया	आसांमी
१४७२५०००	३६८१२५)	प्रः जोधपुर
१४००००००	३५००००)	मेड़तो
८००००००	२०००००)	सोभत
८००००००	२०००००)	जैतारण
३००००००	७५०००)	सीवांणो
२७०००००	६७५००)	फळोधी
८०००००	२००००)	पोकरण

११५०००००	२८७५००)	जाळोर
१०००००००	२५००००)	रेवाड़ी
९९९६५६६	२४९९१४)	उजीण
७३०००००	१९२५००)	देपाळपुर
१०००००००	२५००००)	वधनौर
९३७६००	२३४२००)	नागोर री पटी

इतरा परगना दीया—

२९०२९६)	नारनोल	१५७७५०)	रोहतक
३२५०००)	केथल	१२९०७९)	मुहमजु
	२०००००)		
१७२५०)	षाड़ो		

———————
९१९३७५
———————
२७६००००)

२१२. संमत १७१५ रै भादवा सुद २ श्री पातसाहजी लाहोर नुं पधारीया माहाराजाजी नुं जाहानावाद नुं विदा कीया। पातसाहा लाहोर रै वार रै डेरौ कर नै मुल्तान गया। श्रीजी पाछा भादवा सुद ६ सींहनद पधारीया, आसोज बद १ करनाल डेरौ हुवौ। आसोज बद ६ सुन पछै माहे होय आसोज सुद १ जाहानावाद पधारीया।

२१३. तठा पछै मास १ नुं सुलतांन म्हेमद आगरा थी जाहानावाद आयौ। मुजरी अेक रूप साहाजादे रौ कीयौ। तठा पछै पातसाहजी दिली पधारीया। उठै मुलाजमत कीवी, पातसाहजी उठै हीज रहा। श्रीजी नुं हुकम कियौ—दिन २ थे डेरै जावो पछै माहराजाजी जाहानावाद आप री हवेली आया। पछै कितरैहक दिनों पातसाह जाहानावाद रै कोट दाषल हुवौ।[1] पछै कितरैहक दिने तौ श्रीजी मुजरा कीया तठा पछै अेक दिन इतमाम जोर हुवो। तरै श्रीजी नुं किणहीक कह्यौ—थांहां सुं चूक छै।[2] तठा पछै श्रीजी डील रौ वाहानौ[3] कर नै

1. किले में प्रवेश किया। 2. धोखा है। 3. शारीरिक अस्वस्थता का बहाना।

डेरै बैस रहा ।[1] जाहानावाद तौ मुजरै पधारीया नहीं ।

२१३. पछै साहजादा सूजा री षबर आई सूजौ चलायां आवै छै। तरै पोस बद ४ टांणै पातसाहजी पुरब नुं असवार हुवा । तठा पछै पोस बद ७ श्री माहाराजाजी जाहानावाद सुं असवार हुवा सु पोस सुंद २ सोरभजी डेरा हुवा । पछै लसकर[2] सोरभजी थी कोस २० कोपीला छै तठै हुय पछै कुरड़े घाट मैं कर पातसाहजी जाय पोहौता । कुरड़ो आगरा थी कोस १०० आगे, कोस १ सुजौ हुतौ । माहा बद ४ साहजादा सुजा सुं बेढ पड़ी छै ।[3] श्रीजी नुं आपरी जीवणी बाजू[4] राषीया छै दाऊदषांन कुरेसी श्रीजी नुं पातसाहजी वीच छै। हाडौ भींवसिंघ श्रीजी री जीमणी बाजू आघेरौ छै। सुलतांन म्हेमद असवार हजार ७००० सुं हरोळ छै।[5] नै रोल हुवौ पछे माहा बद ५ री रात पाछली पोहर १ छैं। तरै श्री माहाराजाजी मुरड़ नै नासरीया ।[6] दिन ऊगते पहली कोस ७ आया । डेरा डांडा सारा ऊभा मेलीया ।[7] कोस २० आया माहा बद ६ आय दिन सारौ आसी हुवौ । इण दिन पातसाही बहीर लूटी । पातसाही उमराव साथै छै ।

२१५. माह बद ६ रात घड़ी ४ गयां डेरै आया रात घड़ी २ पाछली ले कूच हुवा । कोसे २ राजा जैसिंघ साम्हो हुवौ, तठे उतर नै मिळीया । दड़ै[8] १ ऊपर बैस नै श्रीजी नै राजा जैसिंघ महेसदासजी वात कीवी। घड़ी १ पछै श्रीजी असवार हुवा । कोस ४ डेरा षड़ा था तठै आया, पोहर १।। चढ़ीयौ घेलु माल परसुवां साथी नीठ आया, साथ मांहे सोर हुवौ । इण रौ लसकर बहीर परसु री षोसी पछै परसु श्रीजी री हजूर आयौ । तरै कुं षोसीयौ थौ[9] सु परौ दीरायौ । पछै माहा बद ७ रात पाछली पोहर १ लेनै कूच कीयौ । पछै आगरा था कोस ३ नीसरीया । सभोगर री तरफ हुय नदी जमना उतर नै कोस ४ डेरा कीया । पछै फतैपुर षांनवै माहे हुय हीडवांण आंण डेरौ कीयौ ।

---

1. बैठे रहे । 2. फौज । 3 युद्ध हुआ । 4. दाहिनी तरफ । 5. आगे का हिस्सा । 6. जबरदस्ती करके निकले । 7. सारा सामान जहां का तहां छोड़ा । 8. टीले पर । 9. छीना था ।

उठारा ऊठीया ऊदेही रै गांव मुगल री सराह आया । पछै लालसोठ डेरौ हुवौ । पछै उठा थी-भायल माहे हूय चाटसु माहै हुय कोस २ डेरौ कीयौ । पछै मोजावाद माहे हुय सलेमावाद आया । माहा सुद ५ बसंत पंचमी सलेमावाद की । उठा रौ डेरौ भोरूंदे कीयौ । उठै राः रूघनाथ सुंदरदासोत मेहमांनी हुई। पछै माह सुद ७ चांवडीये पधारीया उठै देस रौ साथ लांपोळाई राः नाहरषांन मुः नैणसी पगे लागा । माह सुद ७ कितराहेक साथ नुं घर री सीष दी । मुः नैणसी नुं मेड़ता नुं विदा कीयौ । श्री माहाराजाजी जोधपुर पधारीया । माह सुद १० नः रोहिणी ।

२१६. जीधपुर थी फागण सुद ६ राबड़ीयाक नुं असवार हुवा । पालीह वासणी पधारीया । फागण सुद १५ होळी भावी की । उठै नाहरषांन राजसींघोत पेट भार मुवौ ।[1] भावी रौ डेरौ बीलाड़ै हुवौ । उठे दारासाह री बेटौ सपरसको श्रीजी कनै आयौ । श्रीजी साथे पधारीया नहीं, सपरसको नै सीष दी । चैत बद १० मुः बद ५ रावड़ीयाक श्रीजी पधारीया । चैत बद १२ आघोळीयौ आसौ औरंगसाह कनै मेलीयौ थौ सु फरमांन दिलासा रौ ले आयौ, राजा जेसिंघ रौ कागळ ल्यायौ, सलाह हुई । श्रीजी कूच कीयौ । डेरौ जैतारण हुवौ, जैतारण रौ डेरौ सोभत हुवौ । चैत बद ७ चोपड़ै डेरौ हुवौ । सुद ३ चारणां री बासणी हुवौ । उठा रौ डेरौ चैत सुद ४ प्रथम डेरौ बाळसमंद हुवौ, ऊठै मेड़ता थी सरतांण बेग आयौ । कहौ-दारासाह नै औरंगसाह चेत सुद २ मेड़ते आया । हमें श्रीजी कनै आवसी । पछै श्रीजी मीया फरासत साम्हौ मेल मने कहायौ[2], कहौ अठै मत आवे । पछै का काळा गुढा माहे हुय दारासाह जाळोर नुं गयौ । पातसाहजी रौ फरमांन श्रीजी नुं आयौ—थांनु गुजरात रौ सोबो दीयौ । राजा जसिंघ नवाब बादरषांन दारासाह वांसै[3] आवै छै, थे सताब[4] आगे चालजो । श्रीजी चैत सुद ५ असवार बाळसंमद थी हुवा, जोधपुर गढ़ पधार नै घड़ी २॥ रहा । पछै गुजरात नुं असवार हुवा, डेरौ सालावास हुवौ ।

1. पेट की बीमारी से मरा । 2. मना करवाया । 3. पीछे । 4. जल्दी

दिन रहा पछै कूच हुवौ सथलांणे। चैत सुद ७ पधारीया, उठे दसराहा री भुंजाई[1] चैत सुद ९ हुई। देस रौ साथ विदा कीयौ। राजा जेसिंघ बाहादरषांन री षबर पींपाड़ री आई तरै आपरौ तौ कूच हुवौ, डेरौ दुनाड़ै हुवौ।

२१७. राः महेसदास नु नै मा. नैणसी नुं राजा जैसिंघ बाहादरषांन सांमा मेलीया[2]। चैत सुदि १० पालावासणी जाय मिळिया, राजा जैसीघ राः महेसदास नुं कह्यौ—रूः १००००) नबाब बाहादरषांन नुं मैहमानी रा दिराया। श्री राजाजी तौ दुनाड़ै थी वखा[1] डेरौ कीयौ। वखै रौ वाळै डैरौ कीयौ। आगै भंवराणी डेरौ हुवौ। आगै जाळोर पधारीया। जाळोर थी भीनमाळ पधारीया।

राजा जैसिंघ बाहादरषांन रा डेरा—
चैत सुदि १० पालावासणी
चैत सुदि ११ काकांणी हुवा
चैत सुदि १२ सथलाणे
चैत सुदि १३ दुनाड़ौ षंडप पहली
चैत सुदि १४ देळु डेरा हुवा
चैत सुदि १५ वाघरै
वैः वदि १ सैणै

२१८. संवत १७१५ रा वैसाष वदि १ राजा जैसिंघ बाहादरषांन सैणै डेरा कीया। दिन पोहौर २ चढीयां भीनमाळ थी श्री राजाजो सैणै आया। आप माहे मिळीया। तिण दिन जोधपुर थी ओठी[3] २ आया। चैत सुदि १३ भाटीयां रै साथ आदमी २००० पोकरण घेरी। वैसाष वदि २ सीरोही रै गांव वैसाष वदि ३ गांव वेउडै[2] डेरा हुवा। गांव मणोहरै डेरा हुवा।[3]

---

१. बखे। २. डडेड़। ३. 'ख' प्रति में अधिक—पोकरण रा कोट माहे विग्रह रै दीन इतरो साथ कोट में छै—२ भां. वीठळदास सही हेक, २ पीथल सूजो भींवराज १ रा. चंद्रसेन सबळ सिघोत, १ रा. माधोदास जसवंतोत, ४ मांगळिया ईसरू वेदू रौ, १ भा. जोगीदास कालावचो, १ रा. जगमाल मनोहरदासोत, १ रा. रुघनाथ लिखमीदासोत, १ रा. सादूळ सूजावत, ४० तोपची।

---

1. भोज विशेष। 2. सामने भेजा। 3. सुतर सवार।

२१९. संबत १७१५ रा वैसाष वदि ३ श्रीजी परणीजण[1] नुं सीरोही पधारीया। राः राजसिंघ सुरजमलोत मुः नैणसी राः सबळसिंघ प्रागदासोत नुं पोकरण री मदत वासतै घणा साथ सुं विदा कीया। राः लषधीर वीठळदासोत राः भींव गोपाळदासोत नुं परवाना लिख दीया—थे पोकरण री मदत जावजो। सु वैसाष वदि ४ मुः नैणसी सैणै डेरौ कीयौ। वैसाष वदि ५ जाळोर आयौ, वैसाष वदि ६ वाळे डेरौ कीयौ। राः लषधीर वीठळदासोत भाद्राजण श्रीजी रा पांवां नुं चालण सारूं तयार हुवौ, आयौ हुतौ। राः केसरीसिंघ अमरावत राः लषधीर भेळौ थौ सु नैणसी कन्है वाळै आयौ, तरै षबर हुई, लषधीर भाद्राजण छै। तरै मुः नैणसी राः सोम साहिबषांनोत नुं कागळ लिष नै मेलीयौ नै घणौ कहाड़ीयौ हुतौ। पिण राः लषधीर नहीं आयौ। सोम फिर उरौ आयौ। वैसाष वदि ७ डेरौ दूनाड़े हुवौ। तठै राः केसरीसिंघ अमरावत आय भेळौ हुवौ। वैसाष वदि ९ डेरौ सालावास हुवौ, सु जीम नै आथण रा जोधपुर जाय रहा। दिन ४ मुः नैणसी जोधपुर रहौ, नै सुल सांमांन कटक रौ कीयौ। चारूं तरफ साथ नुं छड़ौ[1] चढोयौ[2] वैसाष वदि १३ डेरौ नैणसी चैनपुरै कीयौ। तठै राः विहारीदास ईसरदासोत अकसमात आय भेळौ हुवौ। तरै डेरौ वैसाष वदि १४ देवीझर रै तळाव हेठै कीयौ। वैसाष वदि १५ डेरौ बालरवै हुवौ। इण डेरै असवार २००, पाळा २०० छै, नै मेह सबळौ वूठौ[3] तळाव पांणी मास ८ रौ आयौ। वैसाष सुदि १ डेरौ घेवड़े प्रोहतां रै, बाहळौ[4] बहतां माहे कूच कर गया।

२२०. वैसाष सुदि २ चेराई हुवौ। बार बुध राः विहारीदास करन आयौ, असवार १०० नै पाळा २००। वैसाष सुदि ३ गुर मुकांम चेराई आषातीज[5] नुं रहा। वैसाष सुदि ४ सवडाल[2] डेरा हुवा। ऊः जगनाथ आयौ, [[3] तोपची ५० मेड़ता थी आया।

---

१. छड़ा। २. संवडाळ। ३. 'ख' प्रति का अंश।

---

1. शादी करने को। 2. एक-एक सवार विदा किया। 3. खूब वर्षा हुई। 4. नाला। 5. अक्षय तृतीया।

२२१. वैसाष सुद ५ कानी लाषणकोहर री सेद[1] तळाई डेरा हुवा। भाः लालचंद सीवांणा रौ साथ आदमी ८०० लेनै आयौ। वैसाष सुद ६ रविः मुः जाळीवाड़े फळोधी रौ साथ ले, सीः जैमल आय भेळौ हुवौ, आदमी ४००। वैसाष सुद ७ सोम ढंढु डेरा हुवा। राः आसौ नीबावत राः स्यामसिंघ गोयंददासोत आया। वैसाष सुद ८ रावळै साथ पोकरण दिन घड़ी ४ चढतै जाय डेरा कीया। भाटीयां रौ साथ गढ छोड नीसर नै रूपा री तळाई गया। प्रोळ कोट री आडा भाठा जड़ीया था सु षोलाया। माहलौ साथ सारौ राः जगमाल राः चंद्रसेन पोकरण आयौ, मीळीयौ। संमत १७१४ चैत्र सुद ५ राः चंद्रसेन पोकरण आयौ। चैत्र सुद ११ मुः हरचंद धाः कांनौ पोकरण थी चालीया। चेत्र सुद १३ भाटीयां पोकरण घेरी दिन २५ वीग्रह रहौ। वैसाष सुद ९ मुकांम पोकरण हुवौ। आघा षड़ण रौ सामान कीयौ। श्री माहाराजाजी री हजूर नुं कासीद री जोड़ी[2] दिन ९ री बोल देनै[3] चलाई। इण दिन असवार १०००, पाळा २००० श्रीजी रौं साथ भेळौ हुवौ[4]।

बैसाष सुद १० तथा ११ तथा १२ पोकरण रहा, अठै दिन ३ माहे देस रौं साथ रावळ भारमल रावळ महेसदास बीजा सारा परगना रा आदमी ४००० आया।

२२२. वैसाष सुद १३ रूपा री तळाई गांव वणीया कोस ६ तठै डेरा हुवा। भाटीयां रा डेरा बचीहाय छै। बीच आदमी फिरिया। चोः रतनसी काः फतैसिंघ राजा जैसिंघ रा चाकर जैसलमेर मेलीया था सु आया। वैसाष सुद १४ रावळा साथ रा डेरा पोकरण री हद लोप नै[5] लाठी नजीक बचीहाय ताळाब डेरा हुवा। बोचा चारण री षणाइ[6] तळाई छै। उठा थी कोस १॥ गांव चारणथळ छै। वैसाष सुद १५ भोम बचीहाय था कूच हुवौ। कोजा री तळाई कोस ५ डेरा

---

1. गांव के ठीक निकट। 2. दो पत्रवाहक। 3. ९ दिन में पहुंचने का आदेश देकर। 4. शामिल हुआ। 5. सीमा का उल्लंघन करके। 6. खुदवाई हुई।

हुवा । इतरा गांव जैसलमेर रा श्री माहाराजाजी रे साथ मारीया—कोजा री तळाई जसहरड़ां[1] रौ उतन जैसलमेर १५ ।

१ डोलासर १ धायसर १ जीवंद १ कोझव रौ गांव १ जेसुरणौ।

जेठ बद १ बुध कोझा री तळाई मुकांम कीयौ ।

जेठ वद २ चांधण डेरा हुवा । भोजक रै तळाव जोगणीहेत डेरा कीया । उठै कोहर वेरा घणा । पांणी हात ८ तथा १० मीठौ[2] । दिन ३ मुकाम हुवा, चारूं तरफ धरती लूटी ।

जेठ वद ६ चांधण था साथे चढीयौ । वासणपी पीर जैसळमेर उरै कोस ५ तिण री लोहर तळाई ऊपर डेरौ हुवौ तद इतरा गांव बाळीया[3] लूटीया—

१ वासणपी १ लोहर रौ गांव १ धनवौ १ भैंसड़ेचरौ गांव ।

जेठ बद ७ डेरा अहप कीया । गांव पाखती रा[4] मरिया ।

जेठ बद ८ अहप सुं फौज चढी । सु देवड़ां रौ गांव छोडौ मारीयौ नै दिन पोहर १॥ चढतां आसाणी कोट डेरौ कर नै इतरा गांव मारीया। घणी लूट हुई । १ आसाणी कोट बड़ी ठौड़ जैसलमेर था कोस १२, घणा माहाजन बांभण, पवन रा घर । जैसलमेर उतरती ठौड़ राव रिणमल मारीयौ थौ ।

६ बीजा गांव—

१ छोडौ देवड़ा रौ १ बोलो १ नाथरौ वास १ संगवणी १ नेडाणौ १ कोटड़ी चारण री ।

२२३. जेठ बद ९ तथा १० भेळी हुई । आसणी कोट था कूच कर नै देग कोस ७ डेरा तळाव री पाषती हुवा । उठे देवी संगवीयां[5] री बडौ थांन छै । वड़ी मेहमा[6] छै । तळाव रौ पांणी मास ८ तथा १० रहै छै । तद इतरा गांव मारीया लूटीया—

---

1. भाटीयों की एक शाखा । 2. ८ तथा १० हाथ की गहराई पर मीठा पानी निकलता है । 3. जलाये । 4. आसपास के । 5. भाटियों की कुलदेवी । 6. महिमा, प्रसिद्धि ।

१ अणंद पढीयांरौ वास १ रायसळ रौ वास १ अचळा जसड़ रौ वास १ वीरदास जसहड़ रौ वास १ केराड़ौ कोसे ३[1] १ सांवत रौ वास १ मुलड़ौ कोसे ३ ।

जेठ वद ११ सुकर, देग था फौंज चढो, सु कोस ६ गांव नेडणा रा वास ४ मारीया, लूटीया । भा: आसौ लषमणोत, जसड़ देवड़ौ साजन, गांव रा धणी सोनगरे मारीया । साकड़ै पोकरण रै चूंडा री कोटड़ी माहे हुय नेता री तळाई डेरौ कीयौ ।

जेठ बद १२ सनरूपा री तळाई डेरौ हुवौ ।

जेठ बद १३ पोकरण आंण[2] डेरा कीया ।

रा: भींव गोपाळदासोत मेड़तीयौ आयौ । मुकाम ६ पोकरण कीया, कोट रौ सामांन कीयौ[3] । इतरौ साथ पोकरण थांणै राषीयौ—

१ रा: सबळसिंघ पिरागदासोत ।

१ रा: रूघनाथ ळिषमीदासोत ।

१ रा: किसनौ ईसरदासोत ।

१ रा: पीथौ षेतसीयोत ।

१ रा: रामचंद गोपाळदासोत ।

१ रा: दयाळदास भोपतोत ।

१ रा: हरीदास गोपाळदासोत ।

१ रा: गोवरधन जगनाथोत ।

१ भा: देईदास सगतसिंघोत ।

१ रा: सुंदरदास नारायणदासोत नै स्यामदास सुंदरदासोत कोट मैं रहै ।

१ ईंदा चौरासीया[4] आदमी ४० कोट मैं रहै ।

१ रा: हमीर देईदासोत ।

१ भा: राघोदास सुरतांणोत ।

१ सींधल दवारकादास जगनाथोत ।

---

1. तीन कोस की दूरी पर । 2. आकर । 3. कोट रहने के लिये सामान आदि की समुचित व्यवस्था की । 4. ईंदों के आदि निवास्थान के वासी ।

१ टाक जगनाथ दलपतोत ।
१ पिढ़ीयार नाथौ सादुळोत ।
१ राः हेमराज गोयंददासोत ।
१ भाः हरीसिंघ सगतसिंघोत ।
१ भाः रतन केसरीसिंघोत ।
१ भाः लाडषांन भेरूंदासोत ।
१ मांगळीया आदमी २० कोट में रहै ।
१ भाः गोकळदाल हरीदासोत ।
१ सींधल लाडषांन रायसिंघोत ।
१ सींधल अषैराज पंचाईणोत ।
१ पिडीयार लषमणदास गोपाळोत ।
१ भाः भांण सैहसमलोत ।

जेठ सुद ४ सनीवार मुः नैणसी दिन घड़ी ४ चढतां पोकरण चालीयौ । कोसे ४ गांव लोहवे पोकरण रै गांव रोटी खाधी । इतरौ साथ अठा थी विदा कीयौ—

१ सीवांणा रौ साथ– भाः लालचंद ।
१ फळोधी रौ साथ ।
१ मेवा रौ साथ—रावळ महेसदास भारमलोत ।

दिन घड़ी २ दो पाछलौ[1] ले चालीया सु जेठ सुद ५ दिन पोहर १ चढतें लोलटै आया ।

२२४. जेठ सुद ५ दिन घड़ी २ पाछलौ ले लोलटै सुं चालीया सु रात घड़ी ६ गयां जेलु रै तळाव पोहर २ रहा । जेठ सुद ६ बाल्हरवै आंण डेरौ कीयौ । आथण रौ पोहर १ दिन ले चालीया भुहरी कनै आवतां सांवण री पाल हुई[2] । जेठ सुद ७ भोम वार जौधपुर आय श्रीकंवरजी रै पांवे लागा ।

२२५. जेठ सुद १५ पोकरण था कासीद आया, भाटीयां रौ साथ भेळौ हुवौ थौ सु रावळ भाः रामसिंघ पंचाईणोत भाः बिहारीदास दयाळ-

1. पीछे का । 2. प्रतिकूल शकुन हुए ।

दासोत भाः गिरधरदास वाघोत षेतसी री पोतरौ चढीया। पाळा मांणस २००० आसणी कोट आय ऊतरीया छै। तिण ऊपर मुः नैणसी ही जोधपुर था साथ नुं सारै देस छड़ा मेलौया[1] आसाढ बद १ फळोधी था षबर आई– भाटीयां रौ साथ पोकरण आयौ। गांव नुं ढोवो कीयौ[2], श्रीजी रै साथ बाहर नीसर बेढ की। ऊवै हाटी तांऊ आया, मंढी कनै बेढ की। तरै राजाजी रौ साथ जीतौ, बेढ भाटीयां हारी। आदमी १० भाटीयां रा मर गया। आदमी २ श्रीजी रा कांम आया। भाटीयां पोकरण गांव लगयौ[3] घर २०० बळीया। भाटीयां पाछा हार नै डूंगरसर ऊतरीया। रात अेक रह नै फळोधी नुं कूच कीयौ। जगीया डेरौ हुवौ। उठा थी चढ नै सांवराज मांहे हुय नै फळोधी सहर आया, तळाब राणीसर ऊतरीया।

आसाढ बद १० मुः नैणसी जोधपुर सुं फळोधी नुं चढीया—
असाढ बद १० चैनपुरे डेरौ।
असाढ बद ११ देवीझर डेरौ।
असाढ बद १२ वाल्हरवा डेरौ।
असाढ बद १३ बिराई डेरो।
असाढ बद १४ भेड़ री तळाई झळेलाई।
असाढ बद ७ जोलीवाडौ।
असाढ सुद १ कसबै फलोधी डेरा।

पछै मुः नैणसी फळोधी रह नै साथ मेल नै जैसलमेर रा गांव मराया। घणा धाड़ा आया।

२२६. पछै राजा करन बीकानेरीयौ जैसलमेर परणीजण जातौ थौ सु रावळा साथ रौ डेरौ कीरड़ै हुतौ। तठा थी राजा नैणसी नुं तेड़ायौ[4]। पछै राः बिहारीदासजी राः राजसिंघ सुरजमलोत राः आसौ नींबावत मुः नैणसी सारौ साथ लेनै सेषासर राते जायर असवारां चढ नै सांमौ कोस १ गया। तठै जाय राजा श्री

1. एक-एक आदमी। 2. गांव पर हमला किया। 3. आग लगादी। 4. बुलाया।

करणजी रै पांवे लागा। रूपीया १०००) मेहमांनी गुदराया[1] कोस १ साथे गया उठे जाय ऊतरीया, बात विगत करनै श्रीजी र साथ नै सीष दी। राजा री डेरो रांमदेरै हुवौ। सांवण सुद मिळ नै पाछा कीरड़ै आया। पछै राजा करण तो जैसलमेर जा परणीयौ दिन २० उठे रह्यौ। वांसै भाटीये वीगड़ १ तथा २ श्रीजं रै देस पोहकरण रा कीया। तिण ऊपर मुः नैंणसी वीगाड़ १० जैसलमेर रै देस रा कराया। राजा जैसलमेर सुं हालतो रावळ सबलसिंह सुं बात कर नै भाः रामसिंघ भाः रूघनाथ नुं भेळा करण नुं साथे ल्यायौ। राजा रौ डेरौ रामदेवरै हुवौ। फळोधी था मुः नैणसी नुं प्रोः ऊदैसिंघ नरहरदासोत नुं तेड़ायौ। भादवा बद ८ श्रीजी रौ साथ देऊरै गया। ऊठे राजा करण वात विगत कराय नै आगली वात सोह गई कराई[2]। लिंषत कराया, पछै भुजाई कराय नै राः विहारीदासजी नै भाः रांमसिंघ नुं राः राजसिंघ नुं नै रूघनाथ भाणावत नुं भेळा बैसांण[3]] षीच भेळो षुवाय नै भेळा कीया। भाः वदि ९ सीष दीवी। रावळो साथ फळौधी आयौ, भाः वदि १२ फळोधी था कूच कीयौ। भाः वदि १३ चेराई डेरो कीयौ। भाः वदि १४ श्री कुंवरजी रै पांवां लागा।

२२७. संवत १७१० रा माह वदि १३ पातसाहजी सालगिरै रै दिन माहाराजा रौ षिताब दीयौ साहजहांनजी, मुनसब छव हजारी जात, असवार हजार ६ तामैं हजार पांच दोसपै नै एक हजार इक सपै[1]।

श्री माहाराजाजी संवत १७१५ रा वैसाष वदि १२ साही वाग डेरो दिन ६ रह्यौ। पछै अहमदावाद पधारीया। वांसै दरगाई उकील मनोहरदास सुं डौळ कीयौ[4]। वैसाष सुदि ४ पातसाही मोहौला पधार डेरो कीयौ।

अहमदावाद माहे डेरो।

---

१. वावरदी।

---

1. नजर किये। 2. पहले की सारी बात समाप्त करवाई। 3. एक ही थाळी पर शामिल बैठकर। 4. कुछ बात बनाई।

२२८. मनसप री विगत, सात हजारी जात। सात हजार असवार। तिण में पांच हजार दोसपै नै दोय हजार असवार एक सपै। तिणां रौ हिसाब—

दांम	रुपिया	आसांमी
१४००००००	३५००००	जात सात हजारी रा हजारी १ नै हजार ५० लेषै वडी जागीर
९६००००००	२४०००००	असवार बारै हजार, राज में पांच हजार दोसपै। दोय हजार एकसपै, असवार १०० दांम लाष ८ तारादु हजार २० रै लेषै हजार १२ लाष २४ हुवा।
११०००००००।	२७५००००)	जमीयत मांगै।

किरोड़ दांम उण डौळ माहे ईनांम रा कटीया, तिण में जागीर तनषावां—

दांम	रुपिया	आसांमी
१४७२५०००)	३६८१२५)	प्राः जोधपुर ६०००००० हवेली मोहल ५ २५००००[1] पींपाड़ ३००००० बाहाळौ बळुंदो मोहोल २ १२००००० म्हेवो[2] १००००० भाद्राजण ६००००० बीलाड़ो ५०००० ईंदावट वहळवौ ४००००० पाली रोहट षारल म्हैल ३

१ ५०००००) २. मेहवो।

१५००००० आसोप
३००००० दुनाड़ौ
२००००० गुदवच
३००००० षैरवो
७५०,०० कोढणौ
३००००० षींवसर

१४७२५०००

८००००० । २००००) प्रा: पोकरण सातलमेर भेळा ही मंडै छै[1]
१४००००००। ३५००००) प्रा: मेड़तौ
८०००००० । २०००००) प्रा: सोभत
८०००००० । २०००००) प्रा: जैतारण
३०००००० । ७५०००) प्रा: सीवाणौ
११५००००० । २८७५००) प्रा: जाळौर
२७००००० । ६७५००) प्रा: फळोधी
५००००० । १२५००) प्रा: गजसिंघपुरौ[1]

६३२२५००० । १५८०६२५)
४३३३५००० । १०८३३७५) परगना गुजरात रा

१०००००००। २५००००) वीरमगांव
२००००० । १५००००) अेहमदनगर
४०००००० । १००००) धुंधकौ
१५००००० । ३७५००) बीरपुर
१२००००० । ३००००) मांसुराबाद
९००००० । २२५००) बालाबारौ
२०००००००। ५०००००) पटलाद
२७३५००० । ६८३७५) बडनगर

१. रुणा (अधिक)।

1. सातलमेर के शामिल ही लिखे जाते है।

१०००००० । २५०००) बीसलनगर

४३३३५००० । १०८३३८५)[1]

१०६५६०००० । २६६४०००)

३४४०००० । ८६०००) तलब रही ।

इण मामलै इतरी ठोड़ तागीर हुई—

दांम	रुपया	आसांमी
१००००००००	२५००००)	परगनो रेवाड़ी
	२६०२६६)	परगनो नारनोल
	१५७७५०)	परगनो रोहतक
	३२५०००)	परगनो केथल
	१२६०७६)	परगनो मुहीम
	१७२५०)	परगनो षंडो
	११६६३७५)	

२२६. संमत १७१७ रा भादवा सुद ४ करोड़ दांम श्री महाराजाजी रा अहमदाबाद मैं ईजाफे हुवा ।

हिसाब—

दांम	रुपियां	आसांमी
१४००००००	३५००००)	जात
९६००००००	२४०००००)	असवार सात हजार तिण मैं पांच हजार दोसपा
१००००००	२५००००)	ईनांम हुवा संमत १७१७ भादवा सुद ४
१२००००००००	३००००००)	

जागीर—

दांम	रुपिया	आसांमी
६३२२५०००	१५८०६२५)	देस रा परगना ९ जोधपुर सुं।

[1] जोड़ (योग) सही नहीं है।

दांम	रुपिया	आसांमी
४३३३५०००	१०८३३७५)	परगना ९ गुजरात रा संमत १७१६ ऊपना संमत १७१७ ऊपना
	१००००००० । २५०००००)	झालावार वारम ३४९००६०) २८६०००)
	४०००००० । १५००००००)	धांधुको ६६०००) ८४३२५)
	२०००००० । ५००००)	अहमदनगर १४१००) १४७००)
	१५००००० । ३७५००)	बीरपुर २०८८६) २२५००)
	१२००००० । ३००००)	मामुरावाद १८९८३) ३१२९६)
	९००००० । २२५००)	वालवारौ ८०००) ४१५८)
	२०००००० । ५०००००)	पटलाद ३६००००) २८६३७०)
	२७३५००० । ६८३७५)	बड़नगर ३२०००) १६७००)
	१०००००० । २५०००)	बीसलनगर १२०००) ४९२३)
४३३३५००० । १०८३३७५)		))

१००७४००० । २५१८५०) परगना ४ पछै हुआ ईजाफे गुजरात रा दांमांपदे । ----

७९७४००० । १९९३५०) बीजापुर

१२००००० । ३००००) तेरवाड़ौ

३००००० । ७५००) मेरवाड़ौ

६००००० । १५०००) काकरेचा

१००७४००० । २५१८५०)

३३६६००० । २९१५८५०) तलबांने रा

८४१५०) तलबां बाकी

१२०००००० । ३०००००)

२३०. संमत १७१८ रा मंगसर वदि ८ गुजरात रौ सूबौ तागीर हुवौ । मंगसर सुदि ५ साही वाग डेरौ हुवौ । दिन १० अठै रहा । श्रीजी दुर्दा री तरफ सुं पधारीया तरै सहर मैं पधारीया नहीं । साही बाग पहलौ डेरौ कीयौ । संमत १७१८ रा पोस बदि ३ श्रीजी गुजरात सुं असवार हुवा, कांकरियै तळाव डेरौ हुवौ । उठा री डेरौ पाटवौ[१] कोस २ हुवौ । तठा पछै कोस १२ महेमदाबाद पोस बदि १० डेरौ हुवौ । पोसवदि १२ नलीयाद[२] डेरौ हुवौ । तठा पछै इण पैंडे[1] पधारीया । पोस वदि १३ जोर वड़ोदौ वडो सेहर छै, कोस ४५, वड़ौदे थी कोस २० नरबदा छै । वासर कोस ३२ नदी रै उलै ढाहे[2] । भड़ौच गुजरात थी कोस ७०, श्रीजी रा डेरा भड़ौच था कोस ३ हुवा । सूरत गुजरात था कोस ९० । तपती नदी सूरत हेठै बहै छै । पोस सुदि १२ नवोपुरौ सूरत था कोस ३६ छै । सालेर-मालेर था कोस ४ डावी तरफ डेरौ हुवौ नै अलुरै माह सुदि ५ ।

२३१. संमत १७१८ रा माह सुदि ६ औरंगावाद राजा जैसिंघ री हवेली मैं पधारीया[३] । पछै चेत्र वदि ३[४] औरंगावाद थी पूनै नुं कूच कीयौ । चैत्र वदि[५] ११ पूनै पधारीया । चैत्र सुदि[६] ३ छांवणी नवी हवेली री ठौड़ पधार नै डेरौ कीयौ संमत १७१९ रा चैत्र सुदि ८ सोम रात आधी ऊपर घड़ी २ गई तरै अमील[७] उमराव सुं मामलौ कीयौ[3] । बेटौ १ अयल फतै[८] कांम आयौ । बेटै १ रै घाव लागा नै

१. थंटवै । २. नाडीयाद । ३. 'ख' प्रति में अधिक—पछै संवत १७१८ रा माह सुद १० री ऊनकी हवेली लीवी तठै अंबराय मांहै डेरा किया । ४. २ । ५. बैसाक बदि । ६. बैसाक सुद । ७. अमीरल । ८. फते अवल ।

1. सफर । 2. नदी के इस ओर । 3. युद्ध किया ।

आपरै हाथ रै झटको लागो, आंगळी १ पड़ी। सहेली १३ मारी आदमी १०० इण रा वगतरीया[1] मारीया और आदमी ४ सीव मुवा। माल कितराहीक ले गयौ। नबाब रौ सूबौ उतरीयौ। संमत १७१९ रा आसाढ सुदि ६ नबाब कूच कीयौ। सूबौ श्री माहाराजा नुं हुवौ।

२३२. संमत १७२० आसाढ सुदि १५ दिन घड़ी १५ चढीयां सूबा दीवान कीयौ। काती वदि ११ सुकरात पूना सुं कुडाणा नुं असवार हुवा, मंगसर सुदि ७ कुडाणै री तळहटी जाय डेरौ कीयौ। गढ़ घणौ ही षसीयां[2] वार दोय सुरंग लगाई सु दषल गढ़ नुं पोहोतौ पिण गढ नहीं आयौ।

२३३. संमत १७२० असाढ वदि ३ पछै पूनै आया। पछै संमत १७२ रा चैत्र वदि १२ राजा जैसिंघ सूबै हुवां पूनै आया। श्रीजी ['कूच कर दिली श्री पातसाहजी कनै आया। जेठ बद १० पगै लागा। देस था श्री कुंवरजी नुं तेड़ाया[3] था सु संमत १७२२ रा प्रा: सांवण सुद ५ आय पगे श्री माहाराजा जी रै श्री पातसाह जी रै लागा.....
संमत १७२२ रा बैसाष वद ८ गौड़ां रै परणीजण नुं विदा कीया। सु कंवरजी जोधपुर आय साहे परणीजीया।

संमत १७२१ रा वैसाष सुद ४ श्रीजी रामपुरै परणीया। संमत १७२१ जेठ बद १२ जादमां रै[4] परणीया।

२३४. श्री महाराजाजी सुं गुजरात रौ सूबौ तागीर हुवौ। दौलताबाद रौ हुकम आयौ सु श्रीजी पोस बद ३ असवार हुवा तद गुजरात रा परगनां री वरसाळी श्रीजी नुं दिराई[5]। तिण रै वासतै मीरजो मेहमद अमीमीया सुंदर पं. गंगादास उठै राषीया तद हिसाब दरगाह हुवौ[6]।

---

१ 'ख' प्रति का अंश।

1. जिरह बख्तर पहने हुए सिपाही। 2. खूब प्रयत्न किया। 3. बुलवाया। 4. यादवों के यहां। 5 उस वर्ष की सावन की फसल की आमदनी दिलवाई। 6. शाही दरबार में हिसाब-किताब हुआ।

दांम रुपिया आसांमी

१२००००००

तलब—

११९०००००० मुनसप सात हजारो
जात सात हजार असवार
तिण मैं असवार ५००० दोसपा।
१४०००००० जात सात हजारी।
९६०००००० आ: १२०००

०००००० ईनांम।

जागीर—

दांम	रुपिया	आसांमी
६३२२५०००	१५८०६२५)	देस रा परगना बरकरार छै।

१४७२५००० । ३६८१२५) जोधपुर
१४०००००० । ३५००००) मेड़तो।
८००००००। २०००००) जैतारण
८००००००। २०००००) सोझत
८०००००। २००००) सातळमेर
११५००००० । २८७५००) जाळोर
३०००००० । ७५००) सीवांणी
२७००००० । ६७५००) फळोधी
५००००० । १२५००) गजसिंघ-पुरो।

इतरा गुजरात रा तगीर हुवा—
२०००००००। ५०००००) परलाद
१००००००० । २५००००) वीरमगांव
१५०००००। ३७५००) वीरपुर

७३५. हंसार री तरफ रा परगना हुवा, गुजरात रा परगनां रै बदळै—

१२००००००। ३००००) ममुरावाद
९०००००। २२५००) छालाबारौ
२७३५०००। ६८३७५) वड़नगर
१००००००। २५०००) वीसलनगर
४००००००। १०००००) धंधुको
२००००००। ५०००००) अहमदनगर
७९७४०००। १९९३५०) बीजापुर
१२०००००। ३००००) तेरवाड़ौ
३००००। ७५००) मेरवाड़ौ
६०००००। १५०००) काकरेची

१३३५२२५)

हंसार री ठौड़ संमत १७१८ री ऊनाळी सुं[1]

६०६३६४०। १५१५५९१)	टोहणौ	६०१९२००
८१२९५४४। २०३२३८॥)	सरसौ	८११००००
३२०००००। ८००००)	साहाबाद	३२००००
६२७४४००। १५६८६०)	जीद	६२६२४००
२४०००००। ६००००)	वेहणीवाल	२४०००००
२००००००। ५०००००)	अठषेड़ौ	२०००००००
११२०००००। २८०००)	षांण्डो	११२००००
५०१९७३२। १२५४९३)	जमालपुर	५०००००
१५६५०००। ३९१२५)	सोरांण	१५६५०००
८०१५६२६। २००३९०)	मुहीम	८००००००
१२५००००। ३१२५०)	अहरोई	१२५००००
१०८२०००। २७०५०)	घातराठ	१०८२०००
५७७७५००। १४४४३७)	रोहीतक	५७७७५००

५१८९७४४२। १२९७४३६)

1. रवी की फसल से।

१२०००००। ३००००) प्रा: बाहलगांव ५ कसबै वरणेल संमत १७१९ री वरसाळी थी[1]।

८८४१३१। २२१०३) प्र: बवाळ मैं संमत १७१९ री ऊनाळी था हुई हुती।

जुमलै दांम १२१४१३१ पछै संमत १७२० रा सांवण मांहे दांम ३३०००० तागीर हुवा।

विगत—

२८००००	रा: व्रिंदावन
५००००	रा: अषैराज

११७२०६५७३। २९३०१६४।)

२७९३४२७। ६९८३५।।।) तलब

नगदी लाष दांम रूपीया १०००) पावै। रूपीया २८६६ दांम ३४४००००० रा हुवै तिण मैं मास १ रूपीया २८६६) हुवै, तिण मैं रूपिया २०२) कसूर गया। बाकी २६६४) लीजैं छै।

१२००००००० । ३००००००)

जागीर रौ डौळ १ पं: मनोहरदास संमत १७२० रै फागुण मैं लिष भेजीयौ। संमत १७२० री षरीफ थी ईण भांत छै—

तनषाह		
दांम	रूपीया	आसांमी
११०००००००।	२७५००००	मुनसप सात हजारी सात हजार असवार तिण में असवार ५००० सेसपा दोसपा, असवार २००० वावरदी अेकसपा। १४००००००० जात सात हजारी ९६००००००० तावोनदार।

1. खरीफ की फसल से।

असवार १२००० रा असवार १०
दांम ८००००० पावै ।

१०००००००। २५०००० ईनांम

१२००००००००। ३००००००)
जागीर रौ हीसाब—

६३२२५०००।

परगनै जोधपुर वगैरै सूबे अजमेर
४८७२५००० सरकार जोधपुर ।
६००००० हवेली
२५००००० पींपाड़
१५००००० आसोप
१००००००० भाद्राजण
१२००००० महेवौ
८००००० सातळमेर
६००००० बीलाड़ो
४००००० पाली रोहठ पारला
३००००० बाहाळी बळुंदो
३००००० षींवसर
३००००० षेरवौ
३०००००० दुनाड़ौ
२००००० गुदवच
७५००० कोठणौ
५०००० ईंदावटो

११५००००० जाळोर
८०००००० जैतारण
८०००००० सोभत
३०००००० सीवांणौ
२७००००० फळोधी

४८७२५०००

१४५०००० सिरकार नागोर
१४०००००० मेड़तौ
५००००० गजसिंघपुरौ

६३२२५०००

प्रगना हंसार रा — मुहीम वगेरे

८०९५६२६ मुंहीम

८०००००० असल १५६२६ ईजाफो संमत १७१६ रबी
६०६३६४० टोहणों ६०१६२०० असल ४४४० ईजाफो

८१२९५४४ सरसो
८११०००० असल
१६५४४ ईजाफो
६२५४४०० जीद
६२४२४०० असल
६२००० ईंजाफो
५०१९७३२ जमालपुर
५०००००० असल
१९७३२ ईजाफो
३२००००० साहावाद
२४००००० वहणीवाल
२०००००० अठषेड़ौ
१५६५००० सोरांण

१२५०००० अहरोई
१६२०००० षांडौ
१०८२००० घातरठ
४६०६६६४२ विगत
४५६८८६०० असल
१११३४२ इजाफौ
षरीफ संमत १७१६

५७७७५०० सरकार जाहानाबाद रोहतक ।

१२०००० प्रः वाहल सरकार सूबे अजमेर ।

८८४१३१ प्रः बंवाळ सरकार सूबे अजमेर ।

गांव १८।। जुः १२१४१३१ तिण में संमत
१७२० री षरीफ सु दांम ३.३००००
तागीर गांव ९ बाकी ८८४१३१
पहले का—
२६०००० संमत १७२० रा बैसाष ।

११४४१३१

११७१८६५७३

२८१३४२७ तलव रहै तिण रा नगदी पावै, दांम १००००० तिण रा रुपीया १०००) रा रुपीपा २८१३४।) हुवै तिण में सूं १०५) कटै, सु बाद रुपीया १४६।।।) बाकी २६७२६।।।) षरा पावै। सु दबाब दाषल षरच ।

२६०००० संमत १७२० रा बैसाष बद
माहे गांव ४।। प्रः बंवाळ रा ताः राः मानसिंघ
रूपसीयोत रा ऊनाळी सुं हुवा ।
२५५३४२७ री तलब रही ।

२३६. संमत १७१६ रौ वरस, श्री माहाराजाजी गुजरात रै सूबै हुता। उठा सुं श्री कंवरजी नुं दरगाह[1] भेजण रौ विचार कीयौ । हजूर सुं राः भींव गोपाळदासोत राः फतैसिंघ नरहरषांनोत मुः सुंदरदास नुं विदा कीया । अै पोस'''जोधपुर आया ।

श्री कंवरजी पोस सुद'''जोधपुर सुं असवार हुवा, पोस सुद १२ गुरवार मेड़तै पधारीया, माह बद ३ मेड़ता थी असवार हुवा । डेरौ अरणीयाळै हुवौ । मुकांम २ उठै हुवा । माह बद ६ नींबाड़ी काला डेरौ हुवौ, दिन १ मुकांम हुवौ । माह बद ८ सोम डेरौ भाषरी हुवौ,

1. बादशाह का दरबार ।

तठै अेक मुकांम हुवौ। माह बद १० बुध जाजोत डेरौ हुवौ। उठै रा: मानसिंघ रूपसिंघोत श्री कंवरजो सुं मिळण आयौ। माह बद ११ देस रा साथ नुं श्री कंवरजी विदा कीयौ। पछै जाहानाबाद श्री कंवरजी पधारीया। पातसाहजी तठा पहली असवार हुवा था। पछै सोरभ पातसाहजी रा डेरा हुवा। तद राह मांहे श्री कंवरजी जाय पातसाहजी रै पांवे लागा। तठा आगे पातसाहजी समसावाद तांऊं[1] पधारीया। उठा थी पाछा फिर आया[2] सु होळी जाहानाबाद परै कोस १० की। चैत वद २ पातसाहजी जाहानाबाद पधारीया।

संमत १७१७ रा मंगसर वद ४ श्री पातसाहजी जाहानाबाद सुं सिरपाव हाथी कलंगी दे विदा कीया। मंगसर सुद १ स्यावलेजी पधारीया उठे मु: नैणसी पांवे लागौ।

मंगसर सुद २ माहरोठ
मंगसर सुद ३ मकड़ाणे
मंगसर सुद ४ कीतलसर
मंगसर सुद ५ मेड़तौ
मंगसर सुद ६ गगड़ाणौ
मंगसर सुद ७ तथा ८ बुचकलै
मंगसर सुद ९ जोधपुर धाय री बावड़ी
मंगसर सुद १० गढ।

संमत १७१९ रा माह सुद ९ कागळ[3] १ उकील मनोहरदास लोषीयौ थौ—दरगाह माहे श्री माहाराजा जी रै माथै इतरौ मुताळबो छै—

६००००००) पातसाह साहजहां दोया था संमत १७१४
१०००००) उजीण नुं विदा हुतां इनांम
५०००००) अजमेर से भरथा दीराया था।

---

1. तक. 2. वापिस लौट आए 3. पत्र।

१४००००) साहजादे दारासाह।
१०००००) पेसषाना रा।

---

२३७. समत १७२१ रा आसोज बद ७ उकील मनोहरदास कागळ आयौ तिण माहे लिषीयौ छै—मुताळब श्री माहाराजाजी रै रूपीया ८०००००) इण भांत छै किसत भाळी[1] नै रूपीया २०००००) कीया छै।

६००००००) पहले का
२ ००००००) संमत १७२० लीया।

परगनै जोधपुर री रकम लागै—

आसांमी	जमे असल	संमत १७१५	१७१६	१७१७	१७१८	१७१९)
सेरीणो	६५६३)	४७७५)	५७१५)	५६६६)	५१७६)	१५५२)
बळ	१११४॥)	७५०)	९३२)	९४२)	८०८)	८६०।)
कड़ब घास	५६०)	२४३)	५५२।)	५६४)	५८८)	७१८)
रसत	१९९८)	१३२५)	०	१५२५)	०	१६०८॥)]
घुमाळो	५७१)	४८८)	४९१)	१९४)	४९४)	५००)
पांनचराई	०	२१०५)	१८५२)	२१८६)	२६७५)	२५१७)

संमत १७२७.

सेरीणो ४२५०)
बळ ४४२)
कड़ब घास ५७७)
रसत ०
धुमाळो ३९७)
पांनचराई २३३९)
लिखावणी ६९१)
रसत ०
फरोही १७१९)
तळबानो १३९)
मीलणो १०९)

---

1. किश्त देखो।

बाड़ ४४७५)

बारलो दांण ३२५२)

बिसवो ५०१०)

परगनै मेड़तै री लागत—

आसांमी । जमा । १७१५ १७१६ १७१७ १७१८ १७१९.

सेरीणो नेंघ असल ७७९४।) ५१०१-) ६४५१॥≡) ५६७४।≡)

घोड़ां काबल ६०१४॥।=) ६४६४)

षीचड़ो ९३४) ५६२) ६७५॥।) ६२५॥) ६२३॥।-) ७०९।)

८७२८।) ५६६३-) ७१२७॥) ६२९९॥।≡) ६६३७॥≡) ७१७३।)

फरौई ऱा— ३०३०)

परगने सोझत री लागत—

आसांमी	जमा आः	सं. १७१५	१७१६	१७१७
सेरीणो	२३९१)	२१०२)३।	२२४१)४।	२०६८)२।
गुघरी	६९३॥)२।	५४१)१।	६००)	५३०॥)
बळ रा	३९७)	२४७)।२५	२८४)१।	२२६)३।
दुमालो	३४३॥।)	१२२।)	१३३॥)	१३४)
अरहट माडलो	१६४॥)	७१॥)१।	११४॥।)	९१॥।)
मुकाती	.	५६॥)	६३।)१।	४५॥)३।
पांनचराइ	.	२४५॥।)१।	५०।)२।	९०॥।)२॥
रसत	१३३३)	८७२॥।)	.	८७२॥)
.	.		.	.

बरस कर— संमत	१७१८ ।	१७१९ ।	१७२० ।
	२१९४॥।)	२१६१-)	९०९२)[1]
	५९३)३।	५७३॥)	५१४)
	२७३॥।)	२४८॥।)	२६०)
	१३४)	१३३॥)	१३३॥)
	९३॥)	९३॥)[2]	८५॥)[3]

---

१. २०८२) । २. ९३॥।) । ३. ५८॥) ।

४७॥)	६१।)२।	३१)
६८॥।)२।	१५४।)२।	१४६।)
०	८८८॥)	०
०	०	४१७)

परगने जैंतारण री लागत—

आसांमी	। जमे असल	संवत १७१५,	१७१६,	१७१७,	१७१८;	१७१९,	१७२०
सेरीणो	१७८१॥)	९४५।)	१५४०)	११०४)	९१९)	१०२४।)	८०७)
सीकिदारी	१३९७॥)	९९६।)[1]	१२९५॥)	९३०॥)	८३८)	९२५)	७४२)
बळ रा	१९५)	१६९)	१६९)	१५९)	१५५)	१४०)	११५)
मिलणो	५६)	३८)	५१)	४६)[2]	४०)	६७।)	३८।)[3]
रसत जगात	५७९॥।)	५३६)[4]	०	५३८)३।	०	५३६)	०
पांन चराई	०	०	०	०	०	०	६७)
	४००९॥।)	२५८५)	३०५५॥)	२७७७॥)३।,	१९५२) –		–

परगनै सीवांणां री लागत—

आसांमी	। असल जमे	संवत १७१५,	१७१६,	१७१७,	१७१८,	१७१९
सेरीणो	६२८)	३५५)	४९४)	४८७॥।)	४८७॥।)	४२८)
घीआई	७२०॥)	२२९)	४३०)	४३२)	४३२)	३९९॥)
वळरा	६९२॥)	३४४)	४९६)	४०५॥)	५०६॥)	४२३)
पानचराई	२७६॥)	२२६)	१००)	१००)	१००)	१००)
सिकदारी	०	२३॥।)५।	३०।)६।	२८।)३।	२८॥)	४७)३।
हुमालो	२६८।)	१६५॥)	२६८)	२६८)	२६८)	२६८)
सांढीया री गिणती	०	८०)	२७५॥।)	२५२)	१९२)	२५०)
रसत	९७)	९५)	०	९१॥)३।	०	८२॥)१।
	०	१५१८।)५	२०९४)६।	२०६५)६	२०१४।।।)	०

परगनै फळोधी री लागत—

आसांमी	जमे असल	संवत १७१५,	१७१६,	१७१७,	१७१८,	१७१९,
मावरा	१६७६॥।)	१३८७।।)	१५८४॥।)	१६९८॥)१।	१७८६॥।)	१८३४॥)४।

---

१. ८९६।)। २. ४५)। ३. ८३)। ४. ५३६।)१।

मेळौ—

आसांमी	कापरड़ो	फळोदी	रामदे
संमत १६६२	०	८२६)	०
,, १६६३	१०५१)	५३६४)	०
,, १६६४	१०४३)	६५०६)	०
,, १६६५	२०१२)	४७५०)	०
,, १६६६	२११२)	१६४१)	०
,, १६६७	२०७४)	४७५०)	०
,, १६६८	०)	७४२८)	०
,, १६६६	३७०१)	६८७०)	०
,, १७००	५६४६)	८४०६)	०
,, १७०१	५२८३)	६०६१४)	०
,, १७०२	६४३७)	६५५४)	०
,, १७०३	६७५४)	१०१८८)	०
,, १७०४	२३०६)	१०३७५)	०
,, १७०५	३७०१)	५८५४)	०
,, १७०६	१०२६२)	७६७७)	०
,, १७०७	१०,४०८)	७२७७)	१२६६)
,, १७०८	१५०५५)	८३३८)	४२१६)
,, १७०६	२०४२०)	१०१२६)	६२११)
,, १७१०	१४८३४)	१०३७२)	३४११)
,, १७११	१८०८४)	१४६०६)	३६६५)
,, १७१२	१४०५२)	६५१२)	२६६१)
,, १७१३	१४५२३)	१२०४४)	४६६५)
,, १७१४	१६०२८)	७५८१)	२६८१)
,, १७१५	०)	१६२३०)	२६६४)
,, १७१६	३७०००)	२४२००)	०
,, १७१७	८८४०)	१५८२०)	३६३२)

संमत	८	१३५००)	११८००)	३७०२)
,,	१७१६	१२७५४)	७२३०)	१७०१)
,,	१७२०	३८५०)	१७२०)	०
,,	१७२१	१३७६२)	७४६४)	०

२३८. परगनै जोधपुर पाय तषत संमत १५१५ रै जेठ बद ११ शने स्वात निषत[1] राव जोधै चिड़ीया टूंक रै भाषर ऊपर मंडायौ[2]

सु इतरा रावराजे जोधपुर भोगवीयौ—

वरस	मास	दिन	आसांमी
३०	०	०	राव जोधा, संमत १५१५ रा जेठ वद ११ शने स्वात निषत व्रष लग्न ।
३	०	०	राव सातळ जोधा रौ ।
२४	०	०	राव सुजो जोधा रौ, संमत १५४८ टीकै बैठौ, संमत १५७२ रा काती वद ६ काळ कीयौ ।
०	०	०	कंवर वाघौ सुजा रौ कंवर पदै हीज मुवौ, टीकै बैठौ नहीं, संमत १५५१ रा पोस वद ७ जनम, संमत १५७१ भादवा सुद १४ काळ कीयौ ।

वरस	मास	दिन	आसांमी
१६	५	१३	राव गांगौ वाघा रौ ।
३०	५	८	राव मालदे गांगा रौ ।
१८	१	०	राव चंद्रसेन मालदे रौ ।
२	५	८	वरस राव चंद्रसेन काळ वस

1. नक्षत्र । 2. चिड़िया टूंक नामक पहाड़ी पर राव जोधा ने किला बनवाया ।

हुवौ[1], नै मोटा राजा नु संमत
१६४० धरती हुई ।

२ वरस ५ मास ८ दिन तुरकांणी[2] धरा
माहे अेकली रही । वरस १।। तथा २
राजा रायसिंघ बीकानेरीया नुं हुई ।

११	११	०	राजा उदैसिंघ
२५	२	११	राजा सूरसिंघ
१८	७	२३	राजा गजसिंघ

राजा जसवंतसिंघ संमत १६८३
माह बद ४ जनम, संमत १६९४
आसाढ बद ७ पाट बैठौ ।

---

२३९. संमत १६४० काती बद ८ मोटौ राजा जोधपुर आयौ, पाट बैठौ, संमत १६३९ रै जेठ, आसाढ माहे अकबर पातसाह इतरा रुपीयां माहे—

आसांमी	मोटा राजा रुपीया	राजा सूरसिंघ रुपीया	राजा गजसिंघ रुपीया	माहाराजा रुपीया
जोधपुर	१५३६७५)	१९९१२५)	२५३५७५)	३६८१२५)
मेड़तौ	०	२००००००)	३०००००)	३५००००)
प्राः जैतारण	०	९८५०७)	१२५०००)	२००००)
अेक वार रुपीया २५००००) दी थो संमत १७११ रुपीया ५००००) घटाया ।				
सोझत टीकौ हुवौ तद रुपीया १५००००) दी हूती ५००००) वधी संमत १७११	१२५०००)	१२५०००)	१५००००)	२०००००)

---

1. काल कवलित हुआ. 2. मुगल शासन ।

सोवाणौ	३७५००)	३७५००)	६२५००)	७५०००
फळोधी	०	६७५००)	६७५००)	६७५००
जाळोर	०	२८७५००)	२८७५००)	२८७५००
पोकरण	०	१४०००)	१४०००)	२००००)
गजसिंघपुरौ	०	०	०	१२५००)

२४०. परगनो जोधपुर रौ तफा १४ पातसाही मांहे तकसीमा[1] मां
छै। तठा पछै संमत १७१९ कांनुगो महेसदास नुं मुः नैणसी प
नरसंघदास इण भांत मंडाया छै, गांव १०९१ मंडाया सांवण बद ४–
तफा—

१ हवेली गांव ५०५

१ पींपाड़ गांव ७९

१ महेवौ गांव १०१

१ भाद्राजण गांव ८०

१ हवेली २६९   १ सेत्रावा २७

१ केतु २३   १ देछु ९

१ आईसा ११०   १ लवेरा ६७

१ आसोप गांव १६   १ बीलाड़ो गांव १५

१ बळुंदौ बाहळौ मोहळ २ गांव ८

१ पाली रोहीठ षारलौ मोहल ३ गांव ३५

१ षेरवौ गांव ११

१ गुदवच गांव १०   १ षींवसर गांव ३८

१ दुनाड़ौ गांव ३०   १ काठणौ गांव ६१

१ ईंदावटी बहळवौ गांव ४९

१ पोकरण सातळमेर गांव ५४ आगे जुदौ हुतौ। संमत १७१९ हाफल
सूर दळ बदळ कर[2] तफो कीयौ।

९

१३६ सोभत   ६९ फळोधी

---

1. हिस्सा। 2. हेरफेर करके।

२४१. इतरा तफा दरगाह न मांडै नै देसी फिरसत[1] मांहे छै पिण अै तफा ५ हवेली माहे मंडाया छै, संमत १७१८ रै असाढ माहे—

१ अईसा गांव ११०

१ सेतरावौ गांव २७

१ रोहीठ पाळी भेळी सदा दरगाह छै ।

१ लवेरौ गांव ६७

१ देछु गांव ६

१ केतु गांव २३

परगनै जोधपुर षालसै हासल जमे बंधी रौ, गोसवारा री ठोक—

८७२६७)	समत	१६६२
७४२८६)	,,	१६६३
६६०६७)	,,	१६६४
८८४२८)	,,	१६६५
८३४८५)	,,	१६६६
६३८०४)	,,	१६६७
७८२१६)	,,	१६६८
१०५६६६)	,,	१६६६
१०६५२६)	,,	१७००
६५७५८)	,,	१७०१
११४५४०)	,,	१७०२
१०२३८६)	,,	१७०३
६५६७२)	,,	१७०४
५४५४६)	,,	१७०५
१३७८५०)	,,	१७०६
६२३८५)	,,	१७०७
८७२५६)	,,	१७०८
१०७६८८)	,,	१७०६
७६६०६)	,,	१७१०
१४५८६८)	,,	१७११

1. फहरिश्त ।

१३६७७१)	संमत	१७१२
१३७६५०)	,,	१७१३
१४५१६२)	,,	१७१४
७२२७१)	,,	१७१५
१२७४३४)	,,	१७१६
१७८०८४)	संमत	१७१७
१६८१४३)	संमत	१७१८
)	संमत	१७१६
६५८०७॥)	संमत	१७२० रै बरस ।

परगनै जोधपुर री सालीनो संमत १७११ पुरवां विगत—

३०४५८२) संमत १७११

१७५३८० बरसाळी ६७६७२) ऊनाळी
२२३८६) घासमारी ६१४४) सांसण

३०४५८२)

२६३०५६) संमत १७१२

१४७३२०) बरसाळी ६२२८४) ऊनाळी
१८१२६) घासमारी ५३२६) सांसण

२६३०५७)

२८६२२१) संमत १७१३)

१५७६६२) बरसाळी १०३७२४) ऊनाळी
१८६४०) घासमारी ६१६५) सांसण

२८६२२१)

२८७८७१६) संमत १७१४

१३४७८२) सांवणु १२७३२४) ऊनाळी
२०६६०) घासमारी ५०६५) सांसण

२८७८७४६)

१५५६६७) संमत १७१५

३५७३४) सांवणु ११२६७२) ऊनाळी
६२९२) घासमारी १२६०) सांसण

१५५९६७)

६८१९४९) संमत १७१६
२४८६८) घासमारी ४४२०२५) सांवणुसांण
११९८५०) ऊनाळी ६१८२४) मापो,
१८७३६) बाजे रकमां १४६४६) सांसण

६८१९४९)

४७८७४४) संमत १७१७
२४२१३) घासमारी १८२३४९) बरसाळी
२११२०) ऊनाळी २८५१४) मापौ
११२७४) सांसण २१२७५) बाजे रकमा

४७८७४४)

७१९७५८) संमत १७१८
२४०१८) घासमारी ४६८१४८) वरसाळी
१२८०९७) ऊनाळी २८५४६) मापौ मेळो
१८२९४) बाजे रकमां ३०६६५) सासण
२००००) मेहवौ

७१९७५८)

४६७७७२) संमत १७१९
२३६१५) घासमारी २७७९२०) बरसाळी साष
६८४८७) ऊनाळी ३३४२१) मापो मेलो
२१२७६) सांसण २०७१५) मापो
२५०५३) बाजे रकम १२७०६) मेळौ

३३४२१)
१८०००) महेवौ

४६७७७२)

१३१८२६) संमत १७२० रै बरस जोधपुर रै देस साल तमाम जमैं ।

६५८०६) षालसौ

४४२५४) हासल

२८६७) माल घासमारी

२६७३६) ऊनाळु साष

२६७५) सांवणुं

५५७१) तुलाबट

२१०५) धांन

———

४४२४५)

-२१५५३) बाजे रकम

———

६५८०७)

६६०२२) जागीरदारां सांसणां[1] रै गांवां री ।

———

१३१८२६)

परगनै जोधपुर री सालीनी नै तफा वरसाळी नै तक संमत १७११ पुरवा—

आसांमी	सं० १७११	१७१२	१७१३	१७१४	१७१५
हवेली	६८६६१)	५२११६)	६६२८१)	६५०००)	३३४२८)
पींपाड़	५६६९.४)	४६५६२)	५८५६०)	५४५४२)	४५७०१)
वीलाड़ो	२८२२५)	२१२०१)	२११६०)	२०३३०)	२६६१२)
बाहाळो	१०४०६)	८६२१)	६३७४)	१०००२)	७७१४)
रोहीठ	८८७६)	११६८६)	६६३०)	८८३६)	३६८६)
षेरवो	८५६१)	८३५०)	६२३७)	७५६)	४२६०)
पाली	१३६७८)	१३४४०)	१२३५५)	१२१४८)	४६६३)
गुदवच	६३८३)	५०६७)	५४१०)	५६२६)	१४५३)
भाद्राजूण	२४४८३)	२११५५)	१८८८३)	१८६१८)	७२८६)
दुनाड़ो	११७६०)	१६१३)	१२४६७)	१३२०२)	५७३८)

---

1. दान में दी हुई भूमि में आने वाले जागीरदार ।

कोढणो	५९६७)	६६१८)	५६८७)	७६९५)	१८०५)
बहेळवो	३४७०)	३५९४)	३३८०)	३४३८)	१३३६)
सेत्रावो	१५९०)	१४५०)	१८१६)	२०४०)	५९८)
देछु	९१५)	८७०)	६५०)	६६१)	२३८)
केतु	८६५)	९६६)	९२१)	७६९)	४०२)
आईसां	१३४५४)	१५६१२)	१८५०१)	१८९५८)	२७४८)
षींवसर	५८८३)	३१६७)	४६२९)	४८८८)	११०५)
लवेरो	१३०६०)	७५९२)	१८८३२)	१२९०९)	१२२२३)
आसोप	२१०२५)	१५५५८)	१९१८८)	२०१९१)	४३९१)
	३०४५८२)	२६३०५९)	२८९२२१)	२८७८७५)	१५५९६७)

आसांमी	संवत १७१६,	१७१७	१७१८,	१७१९
हवेली	१४६४५५)	८६८६०)	१५५३३४)	९७०३४)
पींपाड़	१६७०७५)	१२०१६४)	१४११४३)	९४३४१)
बीलाड़ो	२९५९७)	५६९६८)	२९१६०)	२४४०९)
बाहाळो	१८५२८)	१६२९८)	१७८६९)	११९७२)
रोहीठ	२१९९१)	१३८५७)	२२३३२)	१३३२७)
षेरवो	१३४१४)	१३४९५)	१४९८१)	१०३९५)
पाली	१८३६१)	९५३८)	२२९०२)	१६८२३)
गुदवच	६०५६)	६५६७)	८११७)	४६०७)
भाद्राजण	३५३४४)	१३२३४)	४९१०७)	२७२४८)
दुनाड़ो	२३६८६)	२२४१५)	३११८८)	१८१३२)
कोढणो	१६३८६)	६८८३)	१८००३)	१०२९५)
बेहळवो	७४२७)	४५२२)	११५०८)	७४०६)
सेत्रावो	३३७०)	२४८५)	२४४६)	२३७७७)
देछु	१३८५)	९७०)	९८९)	९५०)
केतु	१७६५)	१३५०)	१९६१)	१५७०)
आसोप	४२१९६)	१५९५९)	२६१८९)	१९८८४)
लवेरो	४३८१२)	७२३५)	४४७२७)	२२३४१)
षींवसर	११९५९)	४०५१)	१८७३६)	९५६६)
आईसा	४२७१२)	३११९९)	६३७७२)	३१९७२)
	६४८२०२)	४३२०५९)	६८०४६४)	४२४७१९)
महेवो ० ० ० ० ०	१५०००)	२५०००)	२०००)	१८०००)
बाजे रकमां ० ० ० ० ०	१८४४७)	२१६८५)	१९२९४)	२५०५३)

३७४६४) था तिण में
१२४११) जूना सुरखी रा बाद

६६१६४६) ४७८७४४) ७१६७५६) ६७७७२)

२४२. संमत १७१४ रै भादवा सुद ७ पातसाह साहजहां नुं जहमत[1] आई। पातसाही सारी री मदार साहजादे दारासकोह माथै छै। दारासाह हजूर छै। पछै पातसाह साहजहां नुं जहनावाद जहमती थका माहाराजा श्री जसवंतसिहजी राजा जैसिघ, गौड़ अनरूध, पठांण दलेलषांन राजा रूघनाथ और सारा हिंदु मुसलमान साथे हुय अभी जमना ले मथुरा आया। दीवाळी मथुरा की, काती सुद ५ तषत बैठ नै कोट माहे पातसाहजी पधारीया। उठै पधार नै पछै साहिजादा सलेमासको राजा जैसिघ नुं हजारी जात हजार असवार ईजाफो कर साथे घणा हिंदू मुसलमांन देनें पूरब साहजादा सुजा ऊपर विदा कीया। तठा पछै संमत १७१४ रा पोस बद ७ माहाराजा श्री जसवंतसिघजी नुं साहजादो औरंगजेब दिषण थी, साहेजादो मुरादबगस दीषण थौं सु इण सिर उठायौं तरै श्री माहाराजाजो नुं ऊजेण रै सूबां नुं विदा कीया। सिरपाव कांब १ तरवार १ हाथी १ हथणी १ दे विदा कीया। श्री महाराजाजी हीडवांण माहे हुय ऊदेही रै परगनै हुय कोट[1] माहे हुय माह सुद १३ उजीण पधारोया। होळी उजीण की। दिषण थी औरंगजेब असवार हुवौ। गुजरात थी मुरादबगस चढीयौ। अे दोनुं भेळा हुवा। अेक वार बैसाष बद २ श्रीजी षीचरोद[2] नुं असवार हुआ।

२४३. इण मुनसपदार श्री माहाराजाजी साथे विदा हाजर था सु कीया, दूजां नुं फरमान हुवा।

असवार २३२४७ मुनसबदार आसांमी २६६ बरंकदाज १००० पातसाही तिण री विगत—

१८५३५ जाबता चौथाई असवार
आसांमी ११२ त्यां में असवार १८५३५ कलमी।

---

१. कोटे। २. षाचरोद।

---

1. बीमारी, कष्ट।

२६१४ जाबतां पांचमे हेंसे[1] तिण रा कलमी १४५७ आसांमी
      १५२
८०२ आसांमी २ जाबता आधोआध कलमी १६००

२२२५१

बरकदांज १००० अलाहधा[2]।

१२६८३ रिकाब आसांमी १७६
  ६५६४ जागीरी सुधा आसांमी

२२२४७

तफसील[3]—

३००० तफसील ऊमदे राजा हाईलीतबार माहाराजा जसवंतसिंघ सात हजारी असवार तिण में पांच हजार दोसपा सेंसपा, दोय हजार वावरदी

२५८० आसांमी ५ कासमषांन बगेरै

२५०१ कासमषांन पंचहजारी पांचहजार असवार, दुसपा सेसपा।

२६ जानोबेग बाकी बेगरौ बेटौ कासमषांन रौ भतीजौ। सातसै तीस असवार।

५१ सैद अैहमद सैद मेहमद री बेटौ कासमषांन री जंवाई पांचसदी असवार दोयसौ।

१ फरीदहुसेन तरबीयतषांन री मां रै काका रौ बेटौ।

१ मुदफरहुसैन पौण सदी।

२५८०

१६५९ आसांमी महबतषांन वगेरै राजा रायसिंघ आयौ।

१५०० महबतषांन षां: लोहरासषांन महबतषांन रौ बेटौ, पंचहजारी पांच हजार असवार चार हजार वावरदी अेक हजार दुसपा सेसपा।

1. हिस्से के। 2. अलग से। 3. विवरण।

५१ तेह्‌मास महबतषांन रौ बेटौ सात सदी अढाई सौ असवार ।

१५ दलेल हीमत बडा महबतषांन रौ बेटौ ।

७ दिलदलेल अढाइ सदी, तीस असवार ।

३६ गौड़ उदैभांण चार सदी दोय सै असवार ।

२६ गौड़ हरीभाण तीन सदी सौ असवार ।

१५ मीर इसमाल तीन सदी आठ असवार ।

४ लाहोरीगर ससत रौ बेटौ दोय सदी बीस असवार ।

१ षोजौ ईलास षोजा षिदर रौ बेटौ, अेकसदी ।

१६५६ आसांमी ६

महबतषांन नुं काबल मेलीयो नै राजा रायसिंघ सीसोदीया नुं तावीन बीजा ही दीया ।

१२५१ मालुजी दिषणी पांचहजारी पांच हजार असवार ।

१२०८ इकतयारषां वगेरै आसांमी २

११५१ ईकतयारषांन अबदुला जषमी रौ भतीजौ । तीन हजारी तीन हजार असवार तिण में सोळैसै दुसपा सेंसपा चवदैसै वावरदी ।

५७ अवलमकारम ईफतयारषां रौ बेटौ तीन सदी दोय सै असवार पचास दुसपा सेसपा अेक सौ वावरदी ।

१२०८

६५२ नवसेरीषान वगेरै आसांमी २ ।

६२६ नवसेरीषान षांनदोरां रौ बेटौ तीन हजारी तीन हजार असवार ।

२६ षोजौ अइय बारासदी सौ असवार ।

६५२

५५२ आसांमी ४ हाडा मुकंदसिंघ वगेरै ।

५०१ हाडौ मुकंदसिंघ माधोसिंघोत तीन हजारी दोय हजार असवार ।
२६ हाडौ झुंजारसिंघ चार सदी सौ असवार ।
१६ हाडौ कानीरांम तीन सदी साठ असवार ।
६ हाडौ फतैसिंघ दोय सदी चाळीस असवार ।

५५२

२५१ परसोजी दिषणी तीन हजारी हजार असवार ।

१३१४ बुंदेला आसांमी ७ राजा सुजांणसिंघ वगेरै ।
११२६ राजा सुजांणसिंघ अढाई हजारी अढाई हजार असवार दुय हजार दोसपा सेसपा ।
१०१ ईंद्रमिण सुजांणसिंघ रौ भाई पांचसदी पांच सै असवार ।
२६ जगदेव नरहरदास रौ राजा वरसिंघ रौ पोतौ चार सदी रौ असवार ।
११ गौड़ हीरामणि किरपाराम गौड़ रै काका रौ बेटौ दोय सदी चाळीस असवार ।
१० गौड़ परसरांम अेक सदी पैंतीस असवार ।
२६ बुंदेलौ चुतरंग चंद्रमण रौ दोय सदी सौ असवार ।
१४ परबतसिंघ चंद्रमण रौ दोढ़ सदी पचास असवार ।

१३१४

६६१ राजा सिवरांम वगेरै आसांमी ३
६२६ राजा सिवरांम अढाई हजारी अढाई हजार असवार ।
३६ गौड़ सदारांम चार सदी दोढ सौ असवार ।
२६ गौड़ सुरजमल सिवरांम रौ बेटौ तीन सदी सौ असवार ।

६६१

३८७ कुतबषांन वगेरै आसांमी ४३ ।
२५३ सैद सेरषांन वगेरै आसांमी ५
२५१ सीसोदीयौ सबळसिंध बाघचंद दोढ हजारी ।

४२२ अबदुलाषांन ईदलषांन रौ बेटौ दोय हजारी ।
६३१ राजा देवसिंघ बुंदेलौ ।
६२६ राजा देवसिंघ भारथसाह रौ दोय हजारी दोय हजार असवार ।
५ गजसिंघ देवसिंघ रौ जंवाई ।

५१० राः रतन महेसदासोत आसांमी २
५०१ राः रतन दोय हजारी दोय हजार असवार ।
९ राः फतैसिंघ महेसदासोत अढाई सदी ।
५१०

३९२ अरजन गौड़ वगेरै आसांमी २
३७६ गौड़ अरजन वीठलदासोत । दोय हजारी दोढ हजार असवार ।
१६ गौड़ सूरसिंघ दोय सदी तीस असवार ।
३९२

२९० चंद्रावत अमरसिंघ वगेरै आसांमी ३
२५१ राव अमरसिंघ हरीसिंघोत । दोय हजारी हजार असवार
२६ चंद्रावत सुजाणसिंघ बीठळदासोत । तीन सदी सौ असवार ।
१३ किल्यांणसिंघ वीठळदासोत दोय सदी पैताळीस असवार
२९०

३३४ सीसोदीयौ सुजांणसिंघ वगेरै बेटां सुधौ ।
२५१ सुजांणसिंघ सुरजमलोत दोय हजारी हजार असवार ।
५१ फतैसिंघ सुजांणसिंघोत पंचसदी ।
२१ दौलतसिंघ सुजांणसिंघोत तीन सदी ।
११ रामचंद सुजांणसिंघोत ।
३३४

२२७ मुकलसषांन वगेरै आसांमी २, चकतौ ।
३१२ राजा अमरसिंघ कछवाहौ नरवर रौ धणी ।

२५१ राजा अमरसिंघ दोढ हजारी हजार असवार।
६१ जगतसिंघ अमरसिंघोत दोय सदी साठ असवार।

३१२

१५६ सैद मुदफरषांन सुजायतषांन री दोढ़ हजारी आठ सै असवार।
२२७ सैद महमद वेग चांदवेग तीन हजारी।
६०१ रावळ समरसी बास बाहळा री जमीदार। हजारी हजार असवार दुसपा सेसपा। आठसै वरावरदी, जमीदार आधा राषै।[1]
२५१ सैद सोलार हजारी असवार हजार।
१४१ षाजौ ईनाइतुला अबदुलाषांन री जंवाई हजारी जात सौ असवार।
१५३ दौलतषांन हजारी जात छसै असवार।
१५१ चौहाण चुतरभुज लषमणसेन री पोतौ। हजारी जात छ सै असवार।
१४० रा: महेसदास सुरजमलोत आसांमी २।
१९६ रा: महेसदास हजारी जात पांच सै असवार।
१४ रा: झुंझारसिंघ महेसदासोत। दोढ सदी पचीस असवार।

१४४. इतरो साथ ताबीन दे श्रीजी नुं विदा कीयौ हुतो। सु संमत १७१४ रै माह सुद १३ श्री माहाराजाजी उजीण पधार नै राजा वीकमादीत रा जठै मोहथल आगे था तठै डेरा कीया। होळी अठै की।

पातसाही उमराव इतराहक आय हाजर हुवा। हिंदू—
१ माहाराजाजी श्री जसवंतसिंघजी।
१ रा: रतन महेसदासोत।
१ गौड़ ऊरजन वीठळदासोत।
१ राव अमरसिंघ चंद्रावत।
१ सीसोदीयौ सुजांणसिंघ सुरजमलोत।

---

1. जमीदार आधी सेना रखते हैं।

१ षेलुमालु दीषणी ।

३ सीसोदीया सकता ऊतरावत नारणदास रा बेटा ।

१ राजा रायसिंघ भींवोत सीसोदीयौ ।

१ हाडौ मुकंदसिंघ ।

१ गड़ भींव वीठळदासोत ।

१ राः गोवरधन चांदावत ।

१ राः महेसदास सुरजमलोत ।

१ राजा सुरजांणसिंघ ।

१ झाला दयालदास राघोदासोत ।

मुसलमांन

। कासमषांन

॥ अकतयारषांन

उजीण री बेढ़—

२४५. अेक वार संमत १७१४ बैंसाष बद ७ षबर आई । उजेण जुझाव-आरी घाटी हुय मुरादबगस आवै । तरै श्री माहाराजाजी उजेण था बैसाष बद २ कूच कीयौ । सिपराजी रे पार डेरौ कीयौं ।[1] दिन ३ उठे रहा पछै षाचरोद उजेण था कोस १० ताऊ[2] पधारीया । उठे गौड़ सिवरांम माडव किलेदार थौ । तिण षबर मेली जु औरंगजेब नरबदा लोपी । तरै श्री माहाराजाजी षाचरोद था असवार हुवा । दिन २ बीच डेरा हुवा । बैसाष बद ८ चोर नराईण गांव गंभीर नदी ऊपर आंण डेरौ कियौ । उजीण था कोस धरमातपुरौ[3] उठे ठौड़ तिण दिन औरंगजेब पण कोस १॥ आयौ । डेरा बैसाष वदि ८ कीया । बैसाष बद ९ दिन पोहर १ चढा चढतां पोहर १॥ चढा । श्री माहाराजाजी लड़ाई कीवी । पातसाही फौंज हारी । तठै इतरौ साथ श्री माहाराजा जी रौ कांम आयौ, विगत—

९ चांपावत

१ राः वीठळदास गोपाळदासोत ।

---

१. क्षिप्रा नदी के दूसरी ओर डेरा किया । २. तक । ३. यह युद्ध इस स्थान के नाम पर ही धरमत का युद्ध कहलाता है ।

१ रा: षेतौ षानावत ।
१ भोजराज ।
१ रा: गिरधरदास मनोहरदासोत ।
१ रा: दयाळदास सुरजमलोत ।
१ रा: भींव वीठळदास गोपाळदासोत ।
१ रा: बोजैराम हरीदासोत गोपाळदासोत ।
१ रा: नरसिंघदास अमरौ सुरजनोत ।
१ रा: रांमचंद नरहरदासोत ।
१ रा: लिषमीदास जोगीदासोत ।
१ रा: कीरतसिंघ मांनसिंघोत ।

९

६ कूंपावत

१ रा: किलांणदास वैरीसालोत ।
१ रा: अमरौं हरीदासोत ।
१ रा: लाडषांन जैंसिंघोत ।
१ रा: षेतसी बलुवोत ।
१ रा: भार्वासिंघ किसोरदासोत[1]
१ रा: दुवारकादास लाडषांनोत[2]

६

६ ऊदावत जैतारणीया

१ रा: बलरांम दयाळदासोत ।
१ रा: कुंभकरण बलरांमोत ।
१ रा: वीरमदे मुकंददासोत ।
१ रा: सूरदास बैणीदासोत ।
१ रा: देवीदास सूरदासोत ।
१ रा: आसकरण बलरांमोत ।

६

---

१. केसोदासोत । २. बीकावत री ('ख' प्रति में अधिक) ।

४ जैतावत

१ राः करण सुजांणसिघोत ।

१ राः जोगराज[1] कुंभकरणोत ।

१ रा. ऊदैभांण भगवांनदासोत ।

१ राः कांनो[2] गोबंददासोत ।

४

५ करमसीयोत

१ राः पिरथीराज दलपतोत ।[3]

१ राः जैतसी मुकंददासोत ।

१ राः गोरधन माधोदासोत ।

१ राः इंद्रभांण सबळसींघोत ।

१ राः गिरधरदास माधोदासोत ।

५

६ मेड़तीया

१ राः सबळसिंघ उदैसिंघोत रोहणीयौ ।

१ राः गोपीनाथ गोकळदासोत ।

१ राः मुरारदास गोयंददासोत ।

१ राः गिरवदास सुजांणसींघोत ।

१ राः किलांणदास मोहणदासोत ।

१ राः हेमदास ऊगरौ[4] सुंदरदासोत ।

६

५ जोधा

१ राः परतापसिंध करमसींघोत[5]

१ राः जगतसिंघ देईदासोत[6]

१ राः रतन गोपाळदासोत ।

---

१. जुगराज । २. कान । ३. हरदासोत ('ख' प्रति में अधिक) । ४. महेसदास ऊगरा । ५. भोजराजोत ('ख' प्रति में अधिक) । ६. रायमल रो पोतरो ('ख' प्रति में अधिक)

१ रा: ईसरदास माहासींघोत ।
१ रा: वीरमदे मोहणदासोत ।

५

['४ भादावत

अषैराजोत रावळ अषैराजोत रा ।
१ रा: पुरणमल जसावत रावळोत ।
१ रा: गोयंददास मांनावत रावळोत ।
१ रा: गोत्रधन भगवांनदासोत ।
१ रा: बिहारीदास केसोदासोत

४

२ ऊहड़

१ ऊहड़ मेघराज उरजनोत ।
१ ऊहड़ नारायणदास गोयंददासोत ।

२

४ पातावत

१ रा: भगवांनदास मांडणोत राणावत ।
१ रा: भगवांनदास सकतावत ।
१ रा: तोगो रांमदासोत ।
१ रा: जगनाथ चांदावत ।

४

१ रूपावत

१ सबळसिंघ आसकरन पुरावत रौ ।

१

१ पुरबीया

१ रा: ऊदैसिंघ बाजषांनोत ।

१

---

१. 'ख' प्रति का अंश ।

१ महेचा

१ राः मनोहरदास केसोदासोत

१

१ झुंझांणीयो नाराण वाघावत गांव थापण पटै देवीदास रै बदळै था।

४ भींवोत

१ राः अमरौ सुजावत

१ राः रूपसौ सुजावत

१ राः सुरतांण

१ राः लधो लिषमीदासोत

४

१ बालावत

१ किसनदास बैंणीदासोत

१

२१ भाटी

१ भाः महेसदास अचळदासोत

१ भाः केसरीसिंघ अचळदासोत

१ भाः विसनसिंघ रांमचंदोत

१ भाः दुरगदास केसोदासोत

१ भाः माधोदास केसोदासोत

१ भाः नरसंघ भांणोत

१ धाः जतमाल जगनाथ भैंरूंदासोत

१ भाः दयाळदास लिषमीदास गोयंददासोत

१ भाः मांनसिंघ गोपाळदासोत

१ भाः भांण मनोहरदासोत

१ भाः ऊदैसिंघ माधोदासोत

१ भाः रतन भींव पिराघदासोत

१ भाः गोकळदास सांकरदासोत

१ भाः केसरीसिंह वीठळदासोत

१ भा: भगवांनदास रायमलोत
१ भा: कुंभो सुरताणो[1]
१ भा: सुजांणसिघ सुंदरदासोत
१ भा: लीषमीदास ईंदरदासोत
१ भा: रतनसी स्यामदासोत
१ भा: रामचंद सादुळोत
१ भा: गजसिंघ लषा भानीदासोत

२१

३. सोनगरा
१ सो: माधोदास केसोदासोत रजपूत ५ था
१ सो: गोकळदास भाषरसीयोत
१ सो: नाहरषां भाषरसीयोत

३

६. चौवांण
१ चौ: दयाळदास लिषमीदासोत
१ चौ: नरसिंघदास लिषमीदासोत
१ चौ: जैतसो सेहसमलोत
१ चौ: दुदो गोरधनदासोत
१ चौ: किसनदास दयाळदासोत
१ चौ: प्रिथीराज दयाळदासोत (षबर करणी)[1]

६

६. ईंदा
१ ईंदो दयाळदास जगनाथोत
१ ईंदो नाथो जैतावत

१. सुरतांणोत।

1. नांम के बारे में लेखक को संशय है।

१ ईंदो चांदो अचळावत
१ ईंदो सारंग नरहरदासोत
१ ईंदो मनोहर गुणेसोत
१ ईंदो रांम टीलावत

६

२. भायल

१ रामसिंघ कचरावत मुठल
१ देदो सांवळोत सांवल री बदलो मोवड़ी पटै

२

१. मुंहतो

१ मो० किसनदास सिंघोत

१० रा: सुजानसिंघ केसरीसिंघोत रा चाकर कांम आया—

१ रा: रांमचंद सेणावत वालावत
१ रा दुरजनसिंघ गोयंददासोत
१ सींघवी देदो गोपी रौ बेटौ
१ सुंडा रांमसिंघ सांवळोत
१ आसायच नाहरखांन ईसरोत
१ पंवार चुतरो साजनोत
१ मेहर सादूळ
१ वागड़ीयो हदो
१ भाटी मनोहर
१ गुडालो दुरजन

१०

१८ खवास पासवांन

३ धांधळ

१ धांधळ जसवंत ईसरदास रौ
१ धांधळ सारंग हींगोळावत कोठार
१ धांधळ सेहसो सांवळदास पंचाईणोत रौ

३

१ धायभाई पिरागदास चांपावत

३ सांहाणी पड़ीयार

१ सांहाणी कमौ अणैराजोत

१ सांहाणी राघौ केसोदासोत

१ सांहाणी सादौ भींवा नांदावत रौ

३

४ चौहांण अबदार

१ चो: राघोदास सादुळोत अबदार

१ चो: रांमदास पांचावत अबदार

१ चो: मानो सुजावत बरंकदाज

१ चो: भांनो सुजावत बरंकदाज

४

४ पंवार चीतीवांन

१ पंवार सुजो सांवळ रौ

१ पंवार भोजौ जसंवतोत

१ पंवार करन माधावत

१ वंवार धनौ रतनावत

४

१ वेसा जगमाल

२ सोलंकी हीड़ागर

१ सोळंकी सूरो रतनावत बरकंदाज

१ सोळंकी हदौ चरवादार

२

१८

४ दफतरी

३ पंचोळी

१ पा: कांन नरसिंघदासोत झाबरीयौ

१ पा: गोरधनसि चांदासोत भीवांणी

१ पा: केसोराय मलुकचंदोत

३

१ सगता ताराचंद सुरांणो

४

४ बांभण

१ प्रोहत दलपत मनोहरदासोत सिवड़

१ व्यास देईदांन सांवळोत पोकरणो

१ बीरांमण हरी पाठक रसोड़ा रौ चाकर

१ जोसी रिणछोड़ गिरधर रौ बीठावसणी रौ

४

१० बीजा हीड़ागर

१ पलाणीयो नरौ मालावत

१ पेस सेहसो रतनावत

१ चुतरौ आलेचो भाः ताराचंद रौ चाकर

१ बांणदार वीठळ

१ जळेबदार दोलतसा

१ षीची जोगीदास कलावत

१ ईंदो मनोहर रसोड़ा रौ चाकर

१ षिड़ियो जगमाल

१ आसायच जगौ पीरागोत फौजदार

१ वाघौ आघोळीयौ कानावत

१०

१ फौजदार जगौं पिरागोत

उमरावां रा चाकर कांम आया—

राः करन सुजाणसिंघोत रा रजपूत कांम आया

१ हूल वीठळदास भाषरसीवोत मांडा रौ पोतरौ

१ रा अणैराज आसकरनोत जैतमाल

१ चौहाण फरसो धनराजोत

१ सीसोदीयो षींवंराज सादुळोत

१ गुगो रांमदास

१ कोठारी नेतौ]

९ रा: उदैभांण भगवांनदासोत रा रजपूत

१ रा: करन गोयंददासोत[1]

१ भा: दलपत सुजावत

१ चौ: अचळौ लषसेण[2] रौ

१ चु: मेहौ सुरजनोत

१ धांधळ डूंगर वीणसौत[3]

१ सींधल बलु सहेलावत रौ

१ तुंवर सांवळ

१ मोहण नाई

१ सोहड़ सतौ भानावत

९

१ रा: जगराज कुंभकरनोत चाकर सोलंकी जैंसिंघ।

२ रा: बछराज दलपतोत रा चाकर

१ हुल लाडषांन मेघराजोत मंडरौ पोतो

१ दहीयौ ईसर

१ रा: राजसिंघ भगवानोत रौ चाकर

१ रा: मानसिंघ ठाकुरसोत भादावत

७ रा: प्रथीराज दलपतोत रा रजपूत

१ सांषलौ अचळौ हदावत

१ रांमसिंघ राठौड़[4]

१ सोळंकी सांईदास कांधलोत

१ रा: गोरधन माधावत

१ रा: किरतो षंघेरामोत रौ

१ सा: भगवान कमावत

१ धाईभाई षेतौ भगवानोत

७

---

१. उरजनोत (अधिक)। २. लखणोत। ३. रेणावत। ४. रांमोत (अधिक)।

जणा २६ चाकर १४० सिरदार १ जाः १६६ घड़ी।

जोधपुर सहर री विगत

१४६. संमत १७२१ रा पोस माहे कसबै जोधपुर हाट छै सु पाः हरकिसन नुं कह नै मंडाई।

२१ नागोरी दरवाजे हाटां छै

७ दरवाजे माहे पेली'कांनी सुं आवतां[1] जीवणे बाजु छै

१४ दरवाजे मैं पैसतां डावै बाजु छै[2]

११ माहाजनां री छै

३ बीजी हाटां छै

१ आसता[1] जोधा री

१ मुलाषांन री

१ सिलावटो गदाई

३

१४

२१

२६५ नागोरी दरवाजे माहे छै, आडा चोहटा सुधी तीं'री विगत—

१३६ दरवाजे माहे आवतां पोळां कांनी सुं जीवणै रसतै षवासषाना रै बाजु—

११० माहाजनां री

१९ सोदागरां री

२ गांछां री

५ वानावी सोनार तथा महाजनां री

१३६

---

१. ऊसता।

---

1. दरवाजे के परली तरफ से आते समय. 2. बांई तरफ है।

१२६ दरवाजे माहे ग्रावतां पोळ कनां सुं डावै रसतै षुवासषाना सामले रसतो—

१२१ माहाजनां री
३ सौदागीरां री
४ गांछां री

१२८

२६५

२३ जाळोरी दरवाजा बाहर हाटां छै।

५ जीवणै बाजु दरवाजे में पैसतां
१८ डावै बाजु दरवाजा मै पैसतां

२३

४०५ जाळोरी दरवाजा माहे पैसतां पदमसर सुधी[1]—

१९८ दरवाजै माहे पैसतां जीवणै बाजु
१७७ माहाजनां री
१८ तेरवां री
३ कसारां री

१९८

२०७ दरवाजा माहे पैसतां डावै बाजु—

१८९ माहाजनां री
१५ तेरवां री
३ मोचीयां री सु घाटी मै

२०७

४०५

१८ मढी माहे
३ ठाकुरदास सांमी

---

1. पदमसर तालाब तक।

५ चोतरा री बाजु
१० श्री ठाकुरदवारो
______
१८

४ रातानाडा रै दरवाजे बारै छै
३ जीवणी बाजु
१ डावी बाजु
______
४

३६ दरवाजा माह गंगदास री पोळ सुधी—
रातानाड़ा री दरवाजे सुधी
२० जीवणै रसतै
१६ डावै रसतै
______
३६

६ माहावीरजी रै देहरा पाछै माडण सुथार रै घर कनै ही
३ सिलावटां री गळी मैं रामचंद्र मुंधड़ा[1] कनै
४ मुलनायकजी रा देहरा नीचै
१५ गधयारी[2] गळी माहे दरवाजा सुधी
१५ दरजीयां री हाटड़ीयां छै
______
८१५

संमत १७२१ बैसाष वदि १ श्रीकंवरजी पा: हरकिसन नुं हुकम करनै धरती मापी।

डोरी	पांवडा	आसांमी
६५	१३००	बाग[3] कागो नागोरी दरवाजा सुं कुंज सुधो।
८५	१७००	बहूजी सरूपदे रो तळाव नागोरी दरवाजा सुं।

______

१. घर। २. गादहीया। ३. कागो।

१००	२०००	साहणीयां वाळी नाडी बहूजी सेषावत तळाव करायौ छै तठा तांई ।
५७	११४०	राईकौ हाडीजी रौ बाग नागोरी दरवाजा सुं ।
७४	१४८०	रातोनाडो सोझती दरवाजा रा फाळसा सुं ।
८०	१६००	मसूरीयौ जाळोरी दरवाजा सुं ।
४२	८४०	सुरसागर फुलेळाव दरवाजा सुं पाल सुधौ नै रांमपोळ सुं डोरी ३६ पांवडा ७२० ।
१००	२०००	बाळसमंद केवड़ा सुधौ फुलेळाव सुं नै रांमपोळ सुं डोरी ९४ पांवडा १८८०[1] ।

गांवां री विगत—

१४७. परगनैं जोधपुर संवत् १७२१ रा आसोज वदि १० गांव ११६७ ईगारै सौं सदसट रौ मेळ इण भांत छै ।[2]

आसांमी	गांव	तफा	बसता	बेरांन	सांसण
तफा १९	१०३९	१९	७३५।	१७७।।।	१२६
तफै महेवो	१२८	१	६७	४३	१९
	११६७	२०	८०२।	२२०।।।	१४४

तफा १९ रा गांव १०३९ छै तिण रौ मेळ छै

७३५ बसता गांव तिण रौ तफा वार मेळ छैं ।[3]

२०७	हवेली	९	बीलाड़ौ
१९	रोहीठ	२८	पाली
३५	बहेळवौ	५२	कोढणो
५१	लवेरौ	१९	षींवसर
६९	पींपाड़	७	षेरवौ

---

१. १९८० । २. तफा २० (अधिक) । ३. 'ख' प्रति में क्रम भिन्न है ।

५	गुदीच	३३	दुनाड़ौ
२१	सेत्रावो	१५	केतु
१६	आसोप	७	देछु
७	बाहाळो	७९	ओसीयां
५६	भाद्राजण		

७३५

१७८ गांव बेरांन

१२६ गांव सांसण छै

गांव १०३९ तफा १९

गांव १ १२८ तफै १ महेवो

११६७ गांव

विगत गांव तफा वार इण भांत बसै ३१४ जाटां रा गांव—

२१५ निषालस जाट गांव में बसै छै[1]—

७५	हवेली	४१	पींपाड़
३	पाली	५	दुनाड़ो
२२	ओसीयां	२९	लवेरौ
३	बीलाड़ा	३	वाहाळौ
७	कोढणौ	३	बहैळवा रा
१२	षींवसर	३	आसोप

२१५

९ जाट विसनोई भेळा वसै छै।

२ हवेली	१ षींवसर	४ ओसीयां
१ पींपाड़	१ लवेरो।	

९

७९ जाट रजपूत भेळा वसै छै—

३७ हवेली	६ पींपाड़
१ बीलाड़ो	१ षींवसर

1. केवल जाट गांव में बसते हैं.

१७ ओसीयां   १ वाहाळौ
११ लवेरी   १ पाली
१ दुनाड़ौ   ३ आसोप

७९

५ जाट रजपूत बौहोरा बांणीया भेळा बसै छै।
४ गांव पीपाड़ रा   १ बाहाळौ

५

२ जाट सीरवी बांणीया भेळा बसै।
१ हवेली   १ बीलाड़ौ
१ जाट वांणीया षारोळ भेळा वसै छै। तफै हवेली रौ गांव
१ जाट रैबारी भेळा बसै छै तफै पींपाड़ रौ गांव
१ जाट पलीवाळ बांमण वसै तफै ओसीयां रौ गांव
१ जाट नै पटैल भेळा बसै तफै हवेली रौ गांव

३१४

५ नंदवाण बोहौरा वगैरे रैत[1] बसै छै।
३ हवेली री   १ पींपाड़   १ लबेरौ
१२ माहाजन रैत रजपूत भेळा बसै छै।
३ हवेली   १ पाली   १ रोहठ   २ कोढणी   १ पींपाड
१ दुनाड़ो   १ गुदोच   १ रोहठ   १ षींवसर

१२

४२ बिसनौयां रा गांव बसै छै।
३० निषालस बिसनोई बसै
१० हवेली रा   २ कोढणी
१ लवेरी   ६ पींपाड़
१ आसोप   १० ओसीयां

३०

११ बिसनोई जाट भेळा बसै छै।

---

1. जनता।

५ हवेली ३ ओसीयां ३ पींपाड़ रा

११

१ बिसनोई रजपूत भेळा बसै छै

१ ओसीयां रौ गांव

४२

४५ पळीवाळां रा गांव

३७ निषालस पालीवाळ बसै ।

१० हवेली रा ५ पाली रा

६ रोहीठ १२ कोढणो १ ओसीयां

३७

४ पलीवाळ नै जाट भेळा बसै

१ हवेली १ रोहठ २ पाली

४

४ पलीवाळ जाट रजपूत पटेल भेळा बसै

१ पाली १ ओसींया १ भाद्राजण १ कोढणौ

४

४५

६ माळीयां रा गांव । तफै हवेली रा गांव ।

३ कुंभार रजपूत भेळा बसै

१ हवेली १ षेरवौ १ भाद्राजण

३

सीरवी जाट भेळा बसै

२ हवेळी २ बाडाळौ १ गुदोच

२ पींपाड़ १ पाली ४ षैरवौ

३ बीलाड़ौ १ भाद्राजण

१३६

८१ पटैलां रा गांव

४७ निषालस पटेल बसै छै ।

५ हवेली रा ४ पाली १६ दुनाड़ो
७ रोहठ १५ भाद्राजण

४७

४ पटेल नै जाट भेळा बसै
तफै हवेलो रा गांव

२३ पटैल रजपूत भेळा बसै छै
१ हवेली १६ भाद्राजण १ कोढणौ
१ रोहठ ४ दुनाड़ौ

२३

३ पटेल नै विसनोई भेळा बसै ।
तफै हवेली रा गांव ३

३ पटेल नै बांमण[1] भेळा बसै ।
१ हवेली २ रोहठ

१ पटेल नै कुंभार भेळा बसै ।
तफै हवेली रौ गांव

८१

१९६ रजपूतों रा गांव

१६७ निषालसै गांव रजपूत बसै छै ।

२७ हवेलो	१ रोहठ	९ पाली
५ देछु	२८ सेत्रावौ	४ षींवसर
१७ भाद्रजण	३ दुनाड़ौ	२३ बहेळवौ
२ गुडुबो	२६ कोढणो	१ बीलाड़ौ
१ षेरवौ	१३ केतु	१४ ओसीयां
३ लवेरौ ।		

१६७

1. ब्राह्मण ।

११ रजपूत जाट भेळा बसै ।

१ हवेली ३ लवेरौ ३ बहेळवौ

२ ओसीयां २ दुनाड़ौ ।

११

४ रजपूत मेणा बांणीयां रबारी भेळा बसै

३ भाद्राजण १ गुदवच

४

६ रजपूत मुसलमांन भेळा वसै छै।

१ कोढणौ २ केतु २ सेत्रावौ

१ देछु

६

४ रजपूत बांणीया बसै

२ बहेळवौ १ सेत्रावौ १ देछु

१ रजपूत जाट पलीवाळ भेळा बसै

१ बहेळवे रो गांव

२ रजपूत विसनोई भेळा वसै

१ ओसीयां रौ १ पींपाड़ रौ

१ रजपूत जाट सोरवो भेळा बसै

१ षैरवा रौ गांव

१६६

८ रबारीया रा गांव

४ हवेली १ लवेरौ

१ पींपाड़ २ ओसीयां

८

२ षारोळां रा गांव

१ हवेली १ पींपाड़

२

१ घांची रजपूत भेळा बसै
  १ पालो रौ गांव

१ सुताहरां रौ बास
  १ हवेलो रौ गांव

३ फुटकर
  २ भाद्राजण   १ लवेरौ

बांमण जाट सैणा चारण बसै छै।

तफै बीलाड़ौ १ हेसो षालसै ३ सांसण गांव १ माहे।

७३५। तफा १६ रौ मेळ छै

४३१।।। बीजा
  ३०३।।। तफा १६ माहे
    १७७।।। बेरांन   १२६ सांसण छै
  १२८ तफो १ महेवा रौ
    ६७ बसता   ४३ सूना   १८ सांसण छै।

४३१।।।

११६७

२४८. परगनै जोधपुर रा गांवां री बिगत

४२ बिसनोयां रा
  १५ हवेलो रा
    १० निषालसै बिसनोई बसै
      १ षारौ लुणावौ
      १ सालवड़ी   १ रिड़कली
      १ ढोलावासणी गुढा रौ वास
      १ फींच   १ फीटका वासणी
      १ दसोर   १ धनावासणी गुढा रो
      १ नादीवड़ो   १ षेजड़ली बडी

      १०

५ विसनोई भेळा बसै

१ पीथळवास १ ताबड़ीयौ बडौ

१ रामड़ावास षुरद

१ जुढ १ रसीदौ

५

१५

९ पींपाड़ रा—

६ निषालसै बिसनोई वसै

१ घौरू[1] १ अरटीयो षुरद १ कुहड़

१ रामड़ावस वडौ १ तिलवासणी

१ होगवाणीयो

६

३ बिसनोई जाट भेळा बसै

१ बुरछा १ बाघोरीयो १ लांबो

३

९

२ तफै कोढणा रा विसनोई निखालस बसै

१ डोहळी १ जोलीयाळी

२

१४ ओसीयां रा तफा रा—

१० निषालसै बिसनोई बसै छै।

१ काभड़ौ[2] १ माणवड़ौ

१ वेगड़ीयौ १ षीदाकोहर[3]

१ त्रापु २ षेतासर वास

३ वीकुकोहर रा बास

१ पुवांरां रौ

१. घोरू। २. कानड़ौ। ३. बीदा कोहर।

१ काभड़ौ षुरद
१ सरमटीयौ

१०

३ बिसनोई जाट बसै
१ मतोड़ो १ जाषण १ डांवरो
१ बिसनोई रजपूत भेळा बसै ।
१ मालांसरीयो

१४

१ तर्फ लवेरै रौ विसनोई निषालस बसै छै ।
१ गांव बीरणी
१ तर्फ आसोप-निषालस त्रिसनोई बसै छै ।
१ हीगोळी

४२

४५ पलीवाळां रा गांव—
११ तर्फ हवेली
१० निषालस पलीवाळ बसै छै ।
१ राजपुरौ गुढारौ १ वीराहमी[1]
१ षारौवेरौ भींवोता रौ
१ बीरड़ाबास १ जाजीवाळ नाथु री
१ काकेळाव १ षारौ बेरौ वडौ
१ बांणीयावास
१ नीबलौ कांकाणी रौ
१ गुजरावास वीराहमी रौ

१०

१ पलीवाळ नै जाट भेळा बसै छै ।
१ लुणवास बडौ

११

१. ब्राहमलो ।

७ रोहीठ तफै—

६ निषालस पलीवाळ बसै छै ।

१ मुगलो १ ढुढड़ी १ नींबली

१ भांडेवी १ हरावास १ षारला

६

१ पलीवाळ जाट भेळा बसै ।

१ लालकी

७

८ तफै पाली—

५ निषालस पलीवाळ बसै ।

१ नीबीयाहड़ो १ कानावास १ वागड़ीयौ

१ भायल लावी[1] १ भांभेळाई

२ पलीवाळ नै जाट भेळा बसै

१ मंढली वडी १ सांवलतो षुरद

२

१ पलीवाळ नै रजपूत भेळा बसै छै ।

१ आटरड़ो[2]

८

१३ तफै कोढणो

१२ निषालस पालीवाळ बसै छै ।

१ पतासर १ मेंढली १ नेवरी

१ तेहरीयो १ तोलीसर १ लोरडी वडी

२ रोढवा १ पालाड़ीयो १ बावळली

१ गीगाहो १ नेढली[3] मोहणपुरो

१२

१. भाइल लाव । २. आहरड़ । ३. नेढोलो ।

१ पालीवाळ रजपूत जाट भेळा बसै ।
१ छाछोळाई

१३

३ तफै बहळवौ निषालस पलीवाळ बसै ।
१ चोइथ रौ बास बणसीसर रौ
१ चिडवाइ षुडीयाळौ १ डुंगर

३

२ तफै ओसीयां
१ घाघावड़ी नीजाबद पलीवाळ
१ चेराई जाट रजपूत रबारी बांणीया भेळा बसै

२

१ तफै भादराजण । १ सिंणगारी - पलीवाळ पटेल बसै

४५

५ बोहोरा नंदवांणा वगेरै रैत[1] बसै छै ।
१ तफै बळुंदो १ तफै बहेळवौ
१ तफै पीपाड़ १ प्राः फळोधी १ ....
३ तफै हवेली
१ सूरपुरो १ बोहरा बांणीया
१ बालरवौ बांणीया कुंभार रहै ।
१ तफै पींपाड़ वड़लुरौ वास बोहोरा नंदवाणा रहै छै ।
१ तफै लवेरै - वावड़ी वडौवास वांणीया रजपूत कुंभार बसै छै ।

५

१६ सीरवीयां रा गांव जाटां रा भेळा छै ।
२ तफै हवेली - सीरवो जाट बांणीया भेळा
१ सथलांणो १ पालावासणी
२ तफै पींपाड़ १ भावी वास जाटां रौ

1. जनता ।

१ रांमपुरी रांमासड़ी री

३ तफै बीलाड़ौ

१ बीलाड़ौ माहाजन बसै

१ मुडोयारड़ी[1] १ पीचाक जाट हीज छै।

२ तफै बाहाळी – जाट बांणिया

१ बीलबी[2], जाट हीज छै

१ तफै पाली–

१ गांव केरलो नोजावद सीरवी बसै।

४ तफै षेरवी ने बुधावाड़ै रजपूतां माहे मंडी छै, ते म्हें सीखी छै।

१ षेरवी बांणोया रजपूत घांची

१ होगोलो वडौ बांमण छै

१ धामली १ लांबीयां

१ तफै गुदोच

१ अनहल

रजपूत वांणीया सीरवी बांमण भेळा बसै छै।

१ तफै भाद्राजण १ चांगल[3]

सीरवी रजपूत जाट बांणीया बसै छै।

१६

८१ पटेलां रा गांव

१५ तफै हवेली

५ नोजावद पटैल बसै

१ लोरड़ी १ सर[4] १ सरेचां

१ डोहळौ १ सिकारपुर

५

४ पटेल जाट भेळा बसै

---

१. मुरियारड़ी। २ ओलवी। ३. चांगला। ४. सोरा।

१ नारनडी १ कड़वड़
१ मौगड़ो १ झावरवास

४

१ दहीपुड़ौ पटेल रजपुत भेळा बसै ।
३ पटेल बिसनोई भेळा बसै ।
१ षीडालो १ सीणली
१ धावो, जाट बिसनोई बसै

३

१ पटेल पलीवाळ जाट भेळा
१ चंवाधा घीया
१ पटैल कुंभार भेळा बसै ।
१ चवावडो

१५

१० तर्फे रोहठ
७ निषालस पटैल बसै छै
१ तीघरी[1] १ अरटीयो
१ डूंगरपुर १ सांभी[2]
१ वीठु १ षाडी
१ नीबली रौ वास

७

१ पटेल रजपूत बांमण भेळा बसै ।
१ गांव दुधली
२ पटेल बांमण भेळा बसै ।
१ कलाळी १ चोटीलौ

३

१०

४ तर्फै पाली

---

१. तीघरो । २. साजी ।

निषालस पटेल बसै ।

१ हीमावास	१ दातौ
१ मंढली वीका	१ सांवळतौ वडौ

४

३१ तफै भाद्राजण

१५ निषालस पटेल बसै छै ।

१ गोयंदळाव	१ देवांणदी	१ वीजळी
१ घवलरोयो[1]बडो	१ षुटांणो[2]	१ नीलकंठ
१ मुडावाई[3]	१ बीभा	१ चेहड़ो
१ रहाणो	१ लांबड़ो	१ मुरड़ीयो
१ पगधारी	१ जैतपुर	१ भांडवळाव

१५

१६ पटेल रजपूत भेळा बसै ।

१ धीगांणो	१ सीहरांणो	१ पांचपदरो
१ वाणण[4]	१ धांणा	१ वरवा
१ सुगाळीयो	१ बुसीयाथळी	१ नवसरो, बांणिया छै
	१ वावड़ीबांमणछै	१ बाविद
१ भंवरी	१ वांकुली	१ रहांमो
१ सहैदरी[5]	१ गेलावास[6]	

१६

३१

२० तफै दुनाड़ौ

१६ निषालस पटेल वसै छै ।

१ टांटीया रौ वास	१ दुदां रौ वाड़ौ
१ करणीयाळी	१ करमां रौ वाड़ौ

---

१. घवलेहरीयो । २. पुहाणी । ३. मुडावाय । ४. वांणणी । ५. सेहृदरीयो ।
६. गोलावस ।

१ मजल	१ पीपळली	१ रोईचो	१ भाषरी
१ पातां रौ वाडो	१ समुजो	१ षीराटीयो[1]	
१ चारण रौ बाड़ौ		१ दुधीयो	१ रहैनड़ी
१ ढीढस		१ रातड़ी	

१६

४ पटेल रजपूत भेळा बसै ।

१ भाचराणो	१ षेजड़ीयाळो
१ भांना रौ वाडौ	१ डाभली

४

२०

१ तफै कोढ़णो – पटेल रजपूत भेळा वसै छै ।

१ जासती

८१

१८९ विगत ठीक

४२ विसनोई

४५ पलीवाळ

८१ पटेल

१६ सीरवी

५ बोहोरा

१८९

२४९. परगने जोधपुर रे गांमां रौ तफा वार मेळ कीयौ—

आसामी	जुमलै गांव	आवादांन बसता	वेरान[2]	सांसण
हवेली	२७७	२०७	३६।।।	३३।
पींपाडी	७९	६९	२	८
बीलाड़ो	१५	९।	२	३।।।

१. खीरांहटीयो। २. खेड़ा (अधिक)।

घेरवो	११	७	२	२
वाहळो	८	७	०	१
पाली	४४	२८	६	१०
गुदोच[1]	१०	५	५	०
रोहठ	२०	१९	०	१
भाद्राजरण	९५	५६	३०	९
दुनाड़ो	४४	३३	६	५
कोढणो	८४	५२	१४	१८
बहेळवो	६२	३५	१५	१२
सेत्रावो	२८	२१	७	०
देछु	१०	७	२	१
केतु	२३	१५	७	१
ओसीयां	११२	७९	२०	१३
षींवसर	३५	१९	१४	२
लवेरौ	६६	५१	९	६
आसोप	१६	१६	०	०
महेवो	१२८	६७	४३	१८
तफा २०	११६७	८०२।	२२०।।।	१४४

२५०. परगनै जोधपुर री फीरसत[1] दरबार सुं दांम
कुल तफा रा १५५२५०००)

तफै हवेली

१ कसबै जोधपुर

१ गांव पुंदलौ वास २ दुसपीयो[2] जाट रजपूत वसै छै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९	रेप
२०५)[2]	५६८)	१९६)	३९५)	३३४)	८००)

---

१. गुदवच । २. १०५) ।

---

1. फहरिस्त । 2. दो फसलो वाला ।

१ गांव भादावासीयो २००)

कोस १।, रजपूत बसै नै पांणी बहूजी रै तळाव पीवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९	२०
१०)	४२)	५८)	१२०)	१२६)	०

१ गांव देबीभर ५००)

कोस ६, जाट वांणीयां बसै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
७१)	८६)	१०३)	३२८)	२४७)

१ चहुवाणां री वासणी ४००) दुसाषीयौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
७२)	२३०)	१६५)	२८७)	१२४)

१ गांव बोहरावास १०००)

जाट बसै, कोसीटा[1] १०, चांच[2] १०

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०२)	१४४५)	४५६)	२०११)	४६२)

१ गांव भादावस षारलां रौ, षारवाळ बसै छै, २००) सेंवज हुवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	७०)	३०)	१००)	१००)

१ गांव गुजरावस १५००)

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६०)	८१४)	२३५)	७२५)	६९५)

१ गांव दसोर वडीवास ४००)

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२७)	१५८)	५५)	३१०)	२४१)

1. वह कुआ जिसका पानी ज्यादा गहरा न हो और हाथी की सूंड के आकार के चरस (सूंडियो) से पानी निकाला जाता हो । 2 साधारण छोटा व कच्चा कुआ जिसमें पानी बहुत ऊपर हो और एक लम्बे लट्ठे के पीछे पत्थर आदि बांध कर अगले हिस्से में पानी निकालने का बर्तन लटका कर, लकड़ी को हाथों से नीचे ऊपर करके पानी निकाला जाता है ।

१ गांव आंगणवौ बडौ ४००)

जाट रजपूत वसै छै कोहर[1] १ छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४६)	२००)	१२०)	२८५)	१६३)

१ गांव बेरी तीबड़कीया री २००)

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२७)	५१)	३६)	१५६)	१२६)

१ गांव सूरपुर रौ १६००)

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५७)	९५१)	२६१)	७११)	३६५)

१ डीघाड़ी षुरद २००)

रजपूत बसे छै पांणी बहूजी रै तळाव पीवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	१००)	९०)	११५)	१२२)

१ गांव जेसला वासणी[1] ३००)

जाट रजपूत बसै छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
७२)	१२०)	९५)	२४९)	९३)

१ ऊंचीया हेड़ो दुसाषीयौ ४००)

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६०)	२६०)	१८५)	३७९)[2]	२५२)

---

१ गांव डीघाड़ी बड़ी ४००)

जाट रजपूत बसै कोहर १ कोसीटो

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६०)	२६०)	१९०)	३६५)	२५८)

१. अेक साखियो (अधिक)। २. २७९)।

---

1. गहरा कुआ।

१ गांव डोघाड़ी तीजी ५०)

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	५०)	६६)	६९)	३९)

१ देवळीयो ४००)

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	१००)	८०)	११०)	१०९)

१ भीवरड़ी पहली वीरसल री वासणी[१] १००)

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५)	४५)	३०)	४८)	७६)

१ गांव लुगादेवत री वास, पांचा अबदार री वासणी ३००)

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३५)	१००)	८२)	१७३)	१२६)[२]

१ गांव करणां री वासणी, भाषरी वासणी कहीजे छै ५००)

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
७०)	३९६)	२५९)	३९०)	३२५)

[[३]१ बनाड़ वास ३ १५००)

कोसीटा १०, चांच २५, रेल सेंवज[1], जाट बांणीया बसै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१४१)	८२२)	१९६)	१३३०)	९३०)

१ सांगरीया २०००)

जाट बसै, अरट कोसीटा, दुसाषीयौ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३१०)	११०७)	३६७)	५३३)	६७८)

---

१. नांव को (अधिक)। २. ३७५)। ३. 'ख' प्रति का अंश।

---

1. वर्षा का पानी बह कर आता है उससे गेहूँ व चने होते हैं।

१ नाहनडो षुरद ७००)

जाट रजपूत बसै, कोसीटा चांच हुवै, दुसाषीयो।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

३०) ५९०) १५४) ६२८) ३२५)

१ थहीया वासणी, रजपूत बसै, षारड़ो पीवै २५०)

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२०) ५०) ३५) २००) १६७)

१ जाळली षुरद ४००)

जाट रजपूत बसै, कोहर १ षारो[1] काकाळाव पीवै[2], अेक साषीयौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

३१) ११७) १०९) ३६२) १०१)

१ वीनाइकीयो २००)

रजपूत बसै, कोहर १ षारो, बासणी पीवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१४) १२०) ५४) २०२) १५१)

१ तीणावड़ो षुरद ७००)

जाट बसै, अरट[3] २, कोसीटा २० हुवै, दुसाषीयो।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१९०) ५६०) ४३९) ६६१) २७५)

१ रसीद ४००)

रजपूत, षाती, विसनोई बसै, कोहर १ षारो सेवज हुवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

५०) १७२) १०६) ३०१) १३७)

१ पाल अेक साषीयो १६००)

वांणीया जाट रजपूत बसै, कोहर ३, ऊनाळी नहीं।

---

1. खारे पानी का कुआ। 2. काकाळाव से पीने का पानी लेते हैं। 3. रहट।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१७०) ११०१) १११४) १५३६) १२४६)

१ जालेली बड़ी ५००)
रजपूत बसै कोहर १ षारौ, अेक साषीयौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
४५) १८०) १३५) २५६) १७१)

१ षारड़ो रिणधीर रौ ४००)
जाट रजपूत बसै, कोसीटा ४ हुवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१४०) ३४५) २०१) ४६६) २४८)

१ तणावड़ो बड़ो १०००)
जाट बसै, अरट २, कोसीटा २० हुवै, दुसाषीयौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२२१) ५५५) २६४) ४८०) ४१७)

१ झालामल १२००)
जाट रजपूत बसै अरट कोसीटा हुवै, दुसाषीयौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२४६) १२७०) ७८५) ९२२) ८२३)

१ कुवड़ी ४००)
जाट बांणीया बसै, कोसीटा ४ हुवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
८५) ५६०) २००) २५८) २२६)

१ ब्रोमावासणी ४००)
जाट बांमण बसै, कोसीटा ४ हुवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२४) १५०) १५८) २८०) १४५)

१ भाटीयां री बासणी, चांपां वासणो।
जाट रजपूत बसै, अरट २ कोसीटा ४, चांच १० हुवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	३००)	२६०)	१८५)	१५१)

१ सुंतलो १५००)

जाट बसैं, कायंलणे री षावे रौ पीवैं।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५)	९०)	१३५)	११५)	१२१)

१ रोहलो बडौ ४००)

रजपूत बसै, कोहर १ पांणी षारौ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२७)	१९५)	७५)	२१४)	१५२)

१ मोकळावस ४००)

जाट रजपूत बसै, कोहर १ पांणी मीठौ अेक साषीयौ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	४३२)	५३२)	४३१)	४१६)

१ बेरूबास ५ १३००)

जाट बसै, कोसीटा ३० हुवै, सेंवज हुवै दुसाषी।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
११४)	९२०)	१२९०)	१७५२)	७१५)

१ पालड़ी बड़ी ५००)

रजपूत जाट बसैं, बावड़ी १ पांणी मीठौ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	७५)	१०१)	२००)	२५०)

१ पालड़ी तीजी २००)

जाट रजपूत बसै, कोहर १ मीठौ सोवड़ा चिणा हुवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	१४५)	१३८)	२८०)	१०८)

१ गंधाणो ४००)

जाट बसै, कोहर १ मीठो अेक साष।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
७७) २१५) ११०) १००) १५०)

१ रोहलो षुरद २००)
रजपूत बसै, कोहर १ मीठो, भले बरसे[1] सेंवज हुवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१४) १३०) १८३) १७०) १३२)

१ केरूवास ४ २५००)
जाट रजपूत बांणीया बसै, कोसीटा ४० अरट १ दुसाषो ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
७५०) १११५) १५८१) १२६२) ११६५)

१ गोहला वसणी १५०)
माळी रजपूत बसै, कोसीटा ४ अरट २ हुवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१०) ३४५) २७३) २१५) १५७)

१ पालड़ी षुड़द ३००)
जाट रजपूत बसै, कोहर १ ऊनाळी[2] नहीं ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१८) १२५) ११९) १५९) १२६)

१ पालड़ी वजी री वासणी २००)
जाट रजपूत बसै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१०) ६५) १४) ७३) ५१)

१ त्रीसगड़ी २००)
जाट रजपूत बसै बीजेळाव पीवै[3], अेक साषीयो ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१५) १३५) ३६) ९२) ९७)

---

1. अच्छी वर्षा होने पर। 2. गेहू चनों की फसल। 3. पीने का पानी बीजेलाव से लाते है।

१ मांणकळाव २०००)

रजपूत, बाणीया, जाट बसै, अरट ४ कोसीटो १ हुवै, दुसाषो।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१४०) ५५१) ५४०) ७२८) ५४९)

१ षोषरी १५०)

रजपूत वांणीया बसै, ढीमड़ा[1] ३ हुवै, दुसाषीयो।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

४०) २४) ८०) १५०) १०४)

१ मांडहाई ४००)

जाब रजपूत बसै, कोहर १ मीठौ, अेक साषीयो।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२४) २५०) ४४) ३३४) १४७)

१ सालबड़ी १२००)

बिसनोई, रजपूत बसै, कोसीटा १० तथा १२ हुवै, दुसाषो।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२४७) ८९५) ४१३) ७१५) ४०५)

१ नहरवो ४००)

रबारी, पलीवाळ बसै, कोहर १ मीठो, अेक साषीयो।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

४०५) ६८) ९५) २७९) १३५)

१ बुजावड़ ५००)

जाट, रजपूत बसै, कोहर १, अेक साषीयो।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२५) १८२) १३८) ३२२) २३६)

१ नाहरसो ७००)

रजपूत, जाट, षाती, कुंभार बसै।

---

1. छोटा कुआ जिस पर एक बैल से चलने वाला रहट लगा होता है, कभी-कभी आदमी उसे हाथो व पैरो से भी चला लेता है (पगवटियो)।

कोहर १ मीठौ, अेक साषीयौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
४०) १२५) १८१) ४११) २४०)

१ वीझवाड़ीयो १३००)

कुमार, रजपूत बसै, ऊतनी अरट १० हुवै दुस षीयो ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१२५) २६२) ४५६) ३७५) २३९)

१ सीरोड़ी ५००)

जाट बसै, कोहर १ मीठौ, अेक साषीयौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१४) १२५) ९०) १७५) १५७)

१ बालरवो १५००)

कुंभार, बोहरा, बांणीया रजपूत बसै, अरट ६ कोसीटा ६ चांच १० हुवै, दुसाषौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२६८) १३८६) १२७०) १२२२) १०२०)

१ कोटड़ो ४००)

रजपूत, जाट बसै, अरट ४ कोसीटा ६ चांच ६ हुवै, दुसाषौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२०) १९१) १७६) १४०) १०३)

१ इंद्रोषो ५००)

रजपूत, जाट, बांणीयां बसै, कोहर १ मीठो अेक साषो ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १३
३५) १७२) २१८) २५१) २२६)

१ जुढि १०००)

जाट रजपूत, बिसनोई बसै, ढीमड़ी ३ सेंवज हुवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
३०) ४१०) ४६१) ६१२) ४७२)

१ ढींकाई १०००)

रजपूत, जाट बसै, अरट १० हुवै, दुसाषी।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

८४) ४१०) ४६१) ६१२) ४०२)

१ सिंणली पंवारां री ७००)

पटेल, रजपूत, बिसनोई बसै, घवोरो कोहर पीवै, अेक साषीयौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

३०) ६३७) २९१) ५६४) ११५)

१ हीरादेसर १५००)

जाट, बांणीया, रजपूत बसै, कोसीटा २ हूवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

६०) ७८५) १६८) ८४४) ५०१)

१ बेराही २०००)

जाट, वांणीया रजपूत. रबारी बसै, कोसीटा ५०, चांच २०, दुसाष।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१०५८) ८५६) १३७०) १२८४) ६५४)

१ भिड़षाली २००)

जाट ६ बसै, माणकळाव पीवै, अेक साषीयौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१७) २४५) २२) १५०) ८३)

१ बाला कुवो ४००)

रजपूत, जाट बसै, कोसीटा १०, चांच सेंवज हुवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१५०) ३७५) १८७) २७०) १६१)

१ सोफड़ो ४००)

जाट, रजपूत बसै, कोहर १ मीठो, सेंवज सेर (१) बीघा २०० हुवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२२०)	३७५)	१३५)	४२१)	२८४)

१ तांबडियो बड़ौ ७००)

बिसनोई, जाट बसै, कोहर १ मीठो सेंवज़ हुवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१८०)	३१०)	२५०)	६५१)	३२९)

१ उछतरावास २ २०००)

जाट बांणीया बसै, अरट ५, कोसीटा ५ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२४७)	१४९०)	२४७५)	१५६०)	१२५०)

१ बांधड़ो ४००)

जाट बसै, कोहर १ पांणी थोड़ो ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१७)	१४०)	१०)	५००)	२०२)

१ तारावसणी २५०)

जाट, रजपूत बसै, कोहर नही जाय तरै पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	१५०)	७०)	२११)	२०२)

१ सेवकी बड़ी २२००)

जाट, बांणीया, रजपूत बसै, अरट १२, कोसीटो ५०, चांच ३०, दुसाषौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४४२)	२३६५)	८५४)	१४६२)	८५५)

१ चंगावड़ौ षुरद २००)

जाट रजपूत बसै, सेवकी री नदी पीवै, अेक साषीयौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१८)	११६)	३०)	२५१)	१२१)

१ बोड़वी षुरद ३००)

जाट बसै, कोसीटा ४ हुवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

४२) १५०) ३५) २२४) ११२)

१ नांदीयो बडौ १२००)

बिसनोई, रजपूत, तुरक बसै, अेक साषीयौ, सेंवज हुवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

९०) १०६५) १८०) ८६६) ६६६)

१ देवातड़ो

जाट बांणीयां, रबारी रजपूत बसै । कोसीटा ४ सेंवज हुवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

३५५) १०६५) २५७९) २२०६) १४९४)

१ लुणावस घांघाणी रौ ५००)

जाट बसै, कोसीटा १०, चांच सेंवज हुवै, दुसाषीयौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

३६) ३१८) २५१) ३९७) २८८)

१ भेलाबस ४००)

जाट, रजपूत बसै, तळाव री बेरीयां पीवै[1] अेक साषीयौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

३०) ३००) ४०) ३०५) २१५)

१ भोवादि १५००)

जाट, रजपूत, बिसनोई बसै, अरट २, कोसीटो १ हुवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१०१) ७००) ५५०) ७००) ५२४)

१ घड़ाय ४००)

जाट बसै, अेकसाषीयौ ।

---

1. तालाब सूखने पर तालाब में खुदी बेरियों से पीने का पानी लेते है ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
६०) २३७) १६३) २५१) ७८)

१ सुरज बासणी ६०९)
जाट बसै, कोहर १ षारौ, वीसलपुर पीवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
७०) ३७५) १२५) ३२६) २७७)

१ गाधांणी, बड़ौ गांव ४०००)
जाट, बांणीया, षारवाळ बांमण रजपूत बबसै, दुसाषी ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
६९२) ३६४२) २३७३) ४६६०) २३६६)

१ नवे नगरीयो २००)
जाट बसै, चांच १ कोसीटा १० हुवै, दुसाषीयौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
३६) २४५) १३२) २२२) १०९)

१ आसरानंडो ४००)
जाट रजपूत बसै, कोहर १ षारो, अेक साषीयौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१७) १६०) ५९) २८०) १५६)

१ कुकड़नड़ो ९००)
जाट, रजपूत बसै, दांतीवाड़े पीवै, एक साषीयौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
३५) २४१) ३४५) ५५७) २७०)

१ थबूकड़ो २५००)
जाट बांणीया बांभण बसै, कोसीटा १२, चांच ७०, सेंवज घणा, दुसाषीयौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१४७) २०१४) ३७८) १९६१) १२१८)

१ रामड़ावास ८००)

जाट रजपूत बिसनोई बसै, कोहर १ षारौ, बुचकले पीवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

४५) २४६) १३३०) ३५) ३२४)

१ बावळवो १०००)

जाट बिसनोई वाणीया रजपूत बसै, कोहर १ षारौ, अेक साषौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८

१८१) १०८५) ५७५) ९५२)

१ पालावासणी ४०००)

सीरवी जाट बांणीया कुंभार माळी बसै, ऊनाळी घणी, दुसाषीयौ बड़ौ गांव ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२२३७) २९१६) ३९४२) ३२९८) २४७८)

१ ढीहलीयो ४००)

जाट रजपूत बसै, जासेळाव पीवै, अेकसाषीयौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८

२०) ६१) ९२) २११)

१ दांतीवाड़ो २५००)

जाट रजपूत बांणीया बसै, ऊनाळी अरट २०, चांच कोसीटा घणा, सेवंज हुवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२५०) ९६०) ५६०) १०५२) ७५७)

१ षालावसणी १२००)

जाट रजपूत बसै, कोहर १ मीठौ, अेकसाषीयौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१०१) २४२) ४३६) ५५७) ४१५)

१ रड़कुळी ६००)

अेक साषीयौ, बिसनोई बसै, ऊपजता ५००)।

संवत १७१५ १६ १७ १८

२८०) ८१०) २०३) ६६२)

१ लोहरड़ी १००)

पटेल बिसनोई, पलीवाळ बसै, सेंवज हुवै छै।

संवत १७१५ १६ १७ १८

३४) १२६०) ६८३) १२१६)

१ वीसलपुर ४०००)

जाट बांणीया रजपूत सीरवी बसै, ऊनाळी घणी, दुसाषौ बडो गांव।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२७१०) २५१०) ३९३८) ४२६५) २६७२)

१ डांगीयाबस १०००)

जाट रजपूत बसै, कोहर १ मीठौ, अेकसाषीयौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१६२) ६२८) ९९) ७२५) ४७०)

१ गोवळीयो ५००)

जाट रजपूत बसै, कोसीटा ४, चांच ६ हुवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

८०) १५७) १०९) २२९) १८०)

१ बेधण ३०००)

जाट बांणीया बांभण बसै, अरट ३०, कोसीटा १५, चांच २०, ऊनाळी घणी, दुसाषो बड़ौ गांव।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१३१४) १५३३) २३८७) १२६१) ६२०)

१ चोढो १५००)

दुसाषौ, जाट बसै, भलो गांव रूपीया १५००) ऊपजतरौं

संवत १७१५ १६ १७ १८
१०६) ११९६) १९७९) ११५५)

१ ब्रंहमी २५००)
दुसाषीयौ, पलीवाळ बांणीया बसै, रूपीया १३००) ऊपजत रौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८
२७८) ९५१) ६७३) १६८४)

१ गुजरावस ५००)
दुसाषौ, कोसीटा २, बांभण पलीवाळ बसै, रूपीया ३००) ऊपजत रौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८
८१) १९५) ८७) ४५३)

१ मेहावसणी ६००)
दुसाषीयौ, जाट बसै, रूपीया २००) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८
१७०) ५०१) २६५) ५११)

१ बांणोयावस ५००)
अेक साषीयौ, सेंत्रज हुवै, पलीवाळ बसै, रूपीया २५०) ऊपजै, कोहर नहीं[1], षेजड़ली पीवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८
१०) १९३) २०) २३५)

१ बीरड़ावस ६००)
दुसाषौ, पलीवाल बांभण वसै, घर ४ जाट, रूपीया ४००) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८
३७०) ५००) ८२०) ५४०)

---

1. कोई कुआ नहीं है।

१ भगतां वासणी ४००)

अेक साषौ, जाट बसै, कोहर नहीं, रूपीया २००)।

संवत १७१५ १६ १७ १८
२०) १८५) १८०) ३२५)

पीथावस ५००)

अेक साषीयौ, बिसनोई बसै, रूपीया ४००) ऊपजै

संवत १७१५ १६ १७ १८
२४) ३१८) १५३) ५६५)

१ सांगाबसणी ५००)

दुसाषौ, सेंवज हुवै, जाट बसै, रूपीया २५०) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८
६०) ३४५) ६५) २४७)

१ काकाला १०००)

षारा ढीमड़ा ४, पलीवाळ बसै, रूपीया १०००) ऊपजै, भलौ गांव[1]।

संवत १७१५ १६ १७ १८
४०) १२५) १८१) ४११)

१ षेजड़ली बड़ी २०००)

दुसाषौ, सेंवज निपट घणौ[2] हुवै, बिसनोई बसै, रूपीया १०००) ऊपजै।

संवत १७१५ १३ १७ १८
१६६) १२२१) ११४) १०५८)

१ जाटीयाबास बड़ौ १५००)

दुसाषौ, जाट बसै, रूपीया ८००) ऊपजै।
३०) ३६२) ११०) ३२२)

---

1. अच्छा गांव है। 2. अत्यधिक सेवन से अनाज होता है।

१ नरावस ४००)

अेकसाषौ जाट वसै, रूपीया २००) ऊपजै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८
	२०)	१६५)	१०६)	३२५)

१ पेसावस ४००)

दुसाषौ, जाट बसै, धांधळ[1] सारा मांहे, रूपीया २००) ऊपजै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८
	२०)	४००)	३०)	३०२)

१ संभाड़ो १४००)

दुसाषौ, जाट बसै, रूपीया ४००) ऊपजै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८
	२०)	७३०)	११६)	६१२)

१ फीटका वासणी ३००)

अेकसाषौ, विसनोई बसै, रूपीया २००) ऊपजै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८
	१६)	२२५)	१३२)	२६१)

१ सथलाणो ५०००)

दुसाषौ, सेवज घणा, सीरवी बसै रूपीया २५००) ऊपजै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८
	१२३०)	३४३५)	३९८४)	३४६०)

१ चवाबड़ा ३०००)

दुसाषौ जाट बांणीया बसै, रूपीया १०००) ऊपजै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८
	४००)	१४२५)	१०४५)	१०६९)

१ धोंगाणी ५००)

दुसापौ, जाट बसै, रूपीया २००) सेंवज पण[2] हुवै ।

---

1. राजपूत जाति की एक शाखा । 2. भी ।

संवत १७१५ १६ १७ १८
८५) ६७८) ८४) ३६३)

१ मोगड़ो १००)

अेकसाषौ, पटेल जाट बसै, रूपीया ७००) ऊपजै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८
८१) ८५५) १४०) १४६७)

१ षेजड़ली षुरद १५००)

दुसाषौ, जाट बाणीया बसै, रूपीया ५००) ऊपजै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८
११०) ५१०) ३२२) ५८६)

१ चौंडी सिकारपुर २०००)

दुसाषौ, पटेल बसै, रूपीया ५००) ऊपजै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८
१४५) ८०१) ३७२) ९५६)

१ डोहळी ७००)

अेकसाषौ, पटेल बसै, रूपीया ७००) ऊपजै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८
११५) १२००) ३७०) ५५२)

१ चवा धांधीयां ३०००)

दुसाषौ, षाराढी बडाप नदी । ३६००) ऊपजै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८
३००) १२००) ४१३) १३६९)

१ सर २५००)

अेकसाषौ, पटेल रजपूत बसै, चिणा हुवै, रूपीया १०००) ऊपजै ।

१ फींच २५००)

अेकसाषौ, बिसनोई बसै, पांणो कुवै षारो । रूपीया ८००) ऊपजै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८
१६२) ११२५) ५११) १५६३)

१ सरेचां १६००)
अेकसाषी, पटेल बसै, रूपीया ७०० उपजै।

१ कांकाणी २५००)
दुसाषी, सेंवज जाट बसै, रूपीया १०००) ऊपजै।

सवत १७१५ १६ १७ १८
१८८) ११६५) १९९) १२९४)

१ नीबलो ७००)
अेकसाषी, पलीवाळ बसै, रूपीया २००) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८
३२) १२७) ६६) ३९६)

१ सालावस १५००)
दुसाषी, कोसीटा ५० अरट ५ जाट, बोहरा पटेल बसै।

संवत १७१५ १६ १७ १८
५४०) २४६५) २३९१) २५३६)

१ बीहड़नड़ौ बडौ ५००)
अेकसाषी, जाट बसै, रूपीया ४००) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८
६०) ११७५) ३४०) ११७५)

१ नंदवाण ३०००)
दुसाषी, कोसीटा जाट बसै, नदवांण वांभण।

संवत १७१५ १६ १७ १८
४३७) ८३१०) २४५०) २५३५)

१ नाहरनड़ी ८००)
अेकसाषी, पटेल बसै, रूपीया १०००) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८
६४) १८५०) २९७) १२१९)

१ लुणावस १०००)

अेकसाषीयौ, बांणीया, जाट बसै, रूपीया ४००) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८

६०) ३५५) ४६७) ६७५)

१ बोहड़ा नडौ तीजौ, जोलुवां री बासणी रूपीया १५०)

संवत १७१५ १६ १७ १८

१०) १४०) १३०) ११०)

१ षडाला बास ३ १७००)

अेकसाषीयौ, बिसनोई पटेल बसै, रूपीया ८००) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८

६०) १०३५) १८७) १२०२)

१ षारौ लुणाहो १०००)

अेकसाषीयौ, बिसनोई बसै, मांगळीयां री कदीम गांव[1] कुवौ १ मीठौ, रूपीया ५००) ऊपजत रौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

४०) ४१०) १५१) ५५१) ३६)

१ झंवर वास, ३ ४०००)

अेकसाषौ, सेंवज घणे मेह हुवै[2], पटेल जाट बसै, रूपीया २५०) तथा ३००) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२२५) ६०००) ११६८) ३२८३) १००४)

१ रांमपुरौ बिसाईण बास ६ १८००)

त्यां में बास ५ मांजरे दुसाषौ, पांणी घणौ, जाट बसै, ३८००) रूपीयां ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

७९१) ६६०) ५३०) ११४०) ६९५)

---

1. मागलिया शाखा के राजपूतों का पुराना मूल ग्राम।

2. अधिक वर्षा होने पर सेवज होती है।

१ भुंहरी ६००)

ग्रेकसाषी, रजपूत जाट घर १ बसै, रूपीया २००) ऊपजतां री।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२५) ११५) ३१०) १९२) १६०)

१ लुणावस करनोतां री १५००)

ग्रेकसाषीयी, कोसीटा ४ षारा कदेके हुवै[1], जाट बसै, रूपीया ७००) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८

१२०) १९३०) २१४२) १२६५)

१ दहीपड़ी चौहाणां री ५००)

ग्रेकसाषी, रजपूत जाट बसै, कुवो नहीं, रूपीया २५०) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८

३०) २३०) ११५) ३७१)

१ काळीजाळ ५००)

ग्रेकसाषी, जाट बसै, कोहर कदीम नहीं, रूपीया ४००) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२५) ५५२) २७०) ४९१) १५२)

१ चैनपुरी ५००)

दुसाषी, जाट माळी बसै, मीठौ पांणी, रूपीया २५१) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२५) ३७८) १९३) ३९७) २२६)

१ मांणेवां ४००)

दुसापी, ग्ररट २ जाट रजपूत बसै, रूपीया १५०) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१२) १८८) २४०) ३३०) ११२)

---

1. कभी कभी प्रयोग में आते हैं।

१ बड री बासणी ३००)

अेकसाषौ, रजपूत बसै, रूपीया १५०) ऊपजै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	१२२)	८५)	१२१)	१२०)

१ गोधावास ३००)

अेक साषीयौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	१०१)	५८)	५०)	९४)

४ चांषवास ४

१ बडोवास माळीयां रौ ४०)

दुसाषौ, माळी बसै, ढीबड़ी १५ मीठी, रूपीया ३००) ऊपजै ।

१ करमा गूजर रौ बास १००)

सि: भगवांन नुं, दुसाषौ, माळी गूजर बसै, रूपीया २५०) ऊपजै ।

१ गूजरां रौ बास २५०)

षवास गिरधर गुणराय रौ, दुसाषौ, माळी बसै, रूपीया १००)

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	७०)	१५०)	१८०)	७३)

१ रबारीयां रौ बास १५०)

दुसाषौ, माळी रबारी बसै ।

४

७ कड़वड़ रा बास ९ तामें ७ बसै[1] ।

१ वडो वास ५००)

सेंवज सरैं अेक पटैल जाट बसौ, रूपीया ५००) ऊपजै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
११५)	५९१)	१६१)	२२५)	१९५)

१ कुंडळीयौ १००)

अेकसाषौ, रजपूत बसै, रूपीया ५० ऊपजै ।

1. जिनमें से ७ गांव आबाद है ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१०) १५) १५) १११) ४०)

१ झींका बासणी ५००)
अेकसाषौ, जाट बसै, सेवज हुवै, रूपीया २५०) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१६) १५५) १२१) ४१५) २०५)

१ वीरम री बास ४००)
अबदार राधा री बासणी, दुसाषौ १ अरट १ चांच कोसीटा जाट रजपूत बसै, रूपीया २००) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१२०) २१०) २६३) २८७) १५०)

१ सुडां री बास ३००)
लाछां री वासणी, दुसाषौ, जाट बसै, १५०) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२०) १००) ७१) १३०) ६२)

१ भाटीबास १५०)
अेकसाषौ, रजपूत बसै, रूपीया ८०) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
३०) ६०) ४२) १५६) १००)

१ ऊजळीयो २००)
अेकसाषौ, रजपूत, मुसला बसै, सासण वाकुलीयो बांभण रौ हुतौ संवत १६४३ लोपाणौ[1]।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२०) १००) ७१) १३०) ६२)]

७

1. जब्त हुआ।

४ गांव गुढा रा वास ता माहे बास २ सूना मांजरे छै।

१ वडोवास ३०००)

वांणीया, रजपूत बसै, अरट १० षारौ सेंवज घणौ[1]।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

६४०) २०१५) ३३२०) २२३१) १९५०)

१ बिसनोयां री बास ३००)

घर[2] ५०, जाटां रा घर ६

१ ढोलावासणी २००)

अेकसाष, बिसनोई बसै, रूपीया १००) ऊपजै।

राजपुरौ ५००)

दुसाषो, बांभण[3] बसै, २००) ऊपजै।

४

५ गाँव धवा रा वास १० ता माहे वास ४ मांजरे वास १० सांसण।

१ बडौवास ३०००)

सेंवज पटेल, जाट, बांणीया, बिसनोई बसै छै, कुवा २ षारा।

१ दहीपड़ौ जोर री अेक साष ६००)

रजपूत बसै, कुवौ १ षारौ, रूपीया २००)

१ गुदी १००)

अेक साष, कोहर नहीं, धवे पीवै, जाट रजपूत बसै।

१ महैलवो[4] २००)

अेकसाषौ, जाट बसै, कोहर षारौ, ऊपज २००)

१. सालीनो सगळे भेळो (अधिक)। २. बिसनोई घर। ३. पालीवाळ। ४. मांहलवो।

१ सेवालो १००)

श्रेकसाषौ, रजपूत बसै, कुवो १ चोढ़ो मीठौ।

५[1]

४ गांव साळवो, बास ४ बसै छै ४०००)

१ साळवो

जाट बसै, कोहर ५ पांणी घणौ, श्रेकसाष।

१ सूरपुरौ

जाट बसै, श्रेकसाषौ, कोहर पांणी षारौ, सेंवज हुवै।

१ षेड़ी

जाट बसै, श्रेकसाषौ, कोहर १ षारौ।

१ ढांणी

जाट बसै, जाळेळो पांणी पीवै कोहर नहीं।

४

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५५०)	३५९१)	५५७८)	३४६९)	२१८७)

३ देवीषेड़ौ बास ५ ता में २ बास सूना ३०००)

१ देवीषेड़ौ

जाट बांणीया रजपूत बसै, कोहर २ सेंवज हुवै छै।

१ जाळेळी

जाट बसै, कोहर १ षारौ श्रेकसाष।

१ कसवारीयौ

कोहर १ षारौ, जाट बसै, सेंवज हुवै।

३

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५०)	१०६५)	२५७९)	२२०६)	७८२)

---

१. सालीलो भेळो – ६६०) २७३२) १०६२) १९९६) ९९७)

२ षारा बेरा षेड़ा ५ तौ मैं १ सूनो २, सांसण २०००)

१ बडोवास १०००)

पलीवाळ, रजपूत बसै, कोहर नहीं, सेवज, भींवोतां रै षारा बेरां पीवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३०)	११२०)	९१)	५९६)	२७८)

१ षुरदवास भींवोतांरै १०००)

बांभण[1] रजपूत बसै, चांच ३०[2] सेंवज हुवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२२)	३१०)	२२८)	८३२)	४५३)

२

१० जाजीवाळ १० ते मैं २ सूनी मांजरै छै ।

१ भांकर[3] री १३००)

जाट रजपूत बांणीया बसै, तळाव में बेरियां पीवै, सेंवज

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५०)	७४५)	६३७)	१३२४)	३९७)

१ बांणीया री ६००)

रजपूत जाट बसै, बावड़ी १ अरट ऊपर छै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२२)	४००)	६८)	३००)	१७१)

१ राठौड़ां री ८००)

जाट बसै[4], सेंवज हुवै ।

संवत १७१५	१३	१७	१८	१९
३०)	३९०)	४२)	६०६)	२३८)

१ सोळंकीयां री ५००)

जाट घर ४, रतनसी री जाजीवाळ पीवै, कोहर नहीं ।

१. पालीवाळ । २. २० । ३. सांकर । ४. सैभो नही (अधिक) ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२०) ३७२) ३३६) ४११) २०७)

१ कांटेचां री ४००)
जाट रजपूत बसै, कोहर षारौ, चांच ५, सेंवज बीघा
५० ।
संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
३०) २३९) १३१) ४५२) १५४)

१ ईंदां री १२००)
जाट रजपूत बसै, सेवज तळाव री बेरी पीवै, कोहर
नहीं ।
संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
६६) ५१०) २१३) ६६०) ३४७)

१ नाथु री ६००)
पलीवाळ बसै, सेंवज हुवै ।
संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२०) ४९२) ६७) ६७५) ३५५)

१ भींवा री नादा री ६००)
जाट रजपूत बसै, सेंवज हुवै ।
संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
४५) १००) १८०) ६६८) ६३)

१ जोलुवां री ५००)
रजपूत बांणीया, कोसीटा चांच छै, दुसाषी ।
संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
३०) ४००) ६८०) ३८०) ३३०)

१ नींवां री ४००)
जाट बसै, जोसीया नुं, चांच १० सेंवज बीघा
१५१ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३०)	२३९)	१३१)	४५१)	१५४)
	२५)	१९५)	२२०)	१६४)	१५८)

१०

५ भुंडुवास, ५ बस

१ बडोवास ७००)

जाट रजपूत बसै, कोहर १ षारौ, अेकसाषौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८
	४०)	८७५)	५०)	५८६)[1]

१ भुंडु षुरद १०००)

जाट रजपूत बसै, कोहर १ षारौ, कटारड़े पीवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८
	५०)	७००)	२३९)	११८५)

[[2]१ षारड़ो २००)

जाट रजपूत बसै, कुवो १ मीठौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८
	२०)	११०)	४५)	१३६)

१ जाटीया बसणी १५०)

रजपूत बसै, अेकसाषौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८
	२२४)	२३०)	३८)	२१५)

१ कटारड़ो २००)

जाट रजपूत पटेल बसै, कोहर १ भळभळौ[1]

---

१. ५८१। २. 'ख' प्रति का अंश।

---

1. कुछ खारे पानी वाला।

संवत १७१५ १६ १७ १८

२०) २४८) ६१) १५५)

५

२ वाजे

१ आसायचां री वासणी १००)

रजपूत बसै, माळीगो पीवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८

२०) २५) ०) २४३)

१ जौगीया वासणी २००)

रजपूत बसै, लुणावस पीवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१०) २०) ३०) ७०) ४४)

२

२५१. सूना षेड़ा मांजरा—

१ रांमावट ४००)

वालरवा रा लोग षड़ै।

१ कुंडा द्रहे ३००)

बोड़ानडा मैं षेत षड़ै।

१ गीगाथळे २००)

झालामळ मैं मांजरे।

१ चारण बसणी ६०)

सांगी कनै बसती, हिमें षबर नहीं[1]

१ देवड़ां री वास

कुड़ी मैं मांजरे।

१ दुदा ओळगण[2] री वासणी

अवदार बाघो नुं पाही षेत षड़ै, वावड़ी १ अरट हुवै, रूपीया १००) ऊपजतां री।

---

1. अब पता नहीं। 2. गायन का पेशा करने वाले।

१ रातानाडा षेत १००)
  कसबै दाषल ।
१ हरचंद री बासणी
बड़ला घेवड़ा बिचे षबर नहीं ।
१ सांवरा री बासणी ।
  आकथळे जाजीवाळ पीथा री भेळी रूपीया ५०)
१ पटेलां री बासणी ८०)
  माणकळाव में
१ जाजीवाळ षींवा री ४००)
  पाही षेत षड़े मुकातौ[1] आवै ।
१ कड़वड़ रौ वास १००)
  षेत पाही षड़े, रूपीया १०) मुकाते ।
२ देवीषेड़ा रा वास
  १ डंवचो १ भीडाय
  २
४ धवां रा बास
  १ राबड़ीयो १ अरणीयाळो
  १ देवड़ां रौ १ सिणली
  ४
१ जाजीवाळ ६०)
  राजघर री पीथा री जाजीवाळ भेळी[2] ।
१ सुजा रौ बास १००)
  कड़वड़ रा बडा बास भेळौ ।
५ बीसांण रा बास
  रांमपुरौ बसीयौ तरै मांजरे गया ।
  १ बुधा रौ बास १ लषा रौ बास

1. रुपयों में लगान । 2. शामिल ।

१ लुंभा रौ बास　　१ भाट रौ बास

१ भवरड़ा रौ बास

५

२ गुढ़ां रा बास

१ गुसांई रौ　　१ अरागीयाळौ।

२

०॥। ऊपादीयां री बासणी, हेसे[1] १ सांसण छै. हेसे ३ रा षेत, षालसै छै।　　१५००)

३३॥।

---

२५२. ३३। सांसण गांव तालक हवेली

१२। बाभणां नुं—

१ तिंवरी　　२०००)

राव जोधाजी रौ दत्त, प्रोहत दांमा हरपाळोत नुं, गयाजी में, हमें अषैराज दळपतोत।

बांणीया रजपूत कुंभार बसै, कोहर १ मीठो, ऊपर तरकारी[2] हुवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१००)	८००)	१३००)	९७५)	१३४२)

१ माडाहाई　　५००)

राव जोधाजी रौ दत्त, प्रोहत दामां हरपाळोत नुं, गयाजी में दीयौ तिंवरी भेळौ।

जाट बसै कोहर १ मीठौ तिंवरी में।

सालीनो　　५००)

१ बड़ली　　७००)

राव चूंडाजी रौ दत्त, प्रोहत पीजल बीबल रा नुं, हिमें भगवांनदास नै दयाळ मांनसिघोत छै, बांभण बांणीया रज-

---

1. हिस्सा, भाग। 2. सब्जी।

पूत बसै, अरट ६ कोसीटो १ दुसाषौ, भलौ गांव ।

सवत १७१५	१६	१७	१८	१९
८०)	२००)	३९७)	२९५)	४२०)

१ मोडी षुरद

राजा श्री उदैसिंघजी रौ दत्त, तास नाराईण तेजावत आचरज सोथड़ा नुं संमत १६४० दीयौ । हमें गोयंददास सांमदासोत छै । बांभण बसै, कोसीटा ३ चांच ४ हुवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६५)	१५०)	१८०)	१९५)	२००)

१ मोडी बड़ी ३००)

राजा श्री उदैसिंघजी रौ दत्त जोसी चंडीदास हिंमें भांनींदास चंडीदास रौ नेहररांम भगवांन सोरंग रा छै ।

जाट पलीवाळ बसै, ढीमडा ३, कोसीठा ६, चांच ६ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०)	१००)	३४५)	२८०)	१८२)

१ वीढा बसणी ३००)

राव श्री मालदेवजी रौ दत्त, जोसी नरपत सांकरोत श्रीमाळी नुं समत १५९५ दीयौ । हिमें नीलकंठ गिरधर रौ छै ।

जाट बांभण बसै । कोहर २, अेक मोठौ अेक षारौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	१००)	७०)	२५५)	१६०)

१ चवंडवा

राव श्री चूंडाजी रो दत्त व्रा० तेजा राढवत पांचलोडा अचारज नुं हिमें ऊरजो मानां रौ छै । बांभण बांणीया बसै, कोसीटा १६, दुसाषो ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०)	२१०)	१५०)	१९०)	११०)

१ षारा बेरा

दत्त राव श्री गांगाजी रौं, प्रोहत षेता षीढावत आचारज सीवड़ नुं दीयौ ।

१ बास चोथौ

वांणीया रजपूत बांमण वसै, ऊनाळी सेंवज छै, तळाव रै बेरां पीवै, प्रोहत भोपत गुणेस भारमलोत नुं ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३०)	२००)	४५६)	३७०)	१५९)

१ बास १ पांचमौ १००)

प्रोहत डूंगरसी जसावत छै । वांणीया रजपूत बांभण वसै, सेंवज हुवै, तळाव रै बेरां पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२५)	७०)	१२०)	१४०)	४४

२

१ सुरजमल री बास २५०)

राव श्री मालदेजी रौ दत्त बास पीतांबर बागदे रा श्रीमाळी नुं हिमैं सारंगधर दवारकेसर छै । जाट वसै कोहर १ छै तठै पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८
	४०)	५०)	७२)	९५)

१ राजावसणी २००)

राठौड़ भींव वाघाव सुजावत रा रौ दत्त । प्रो० राजा चेहरा सीवड़ नुं, हिमें कचरौं नेतसी रौ छै । रजपूत जाट वांणीया बांभण वसै । अरट ९ हुवै, दुसाषौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३०)	११०)	३१०)	२१५)	१५०)

१ कांनावस २००)

राव श्रीमालदेजी रौ दत्त, देरासरी काना रंगावत पोकरण नुं ।

हिमें जसवंत अषैराज नीलकंठ किसनदासोत छै। जाट बांभण बसै कोहर १ षारी, ऊनाळी नहीं।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
३०) १२०) २१५) १२५) ७४)

१ ऊपांधीया री बासणी हेसे[1]

दत राव श्री जोधाजी रौ ब्रा० पदमा पोकरणा नुं गांव री हेस ३ षालसै बेची, तिका हिमें हरजी कलावत छै, षेत ४ छै।

१२।

चारणां नुं—

१ मथांणीयौ १२००)

राव श्री जोधाजी रौ दत्त बाहरट अमर दुदावत रोहीड़ा[2] नुं दीयौ। हिमें चवंडदास मेहराजोत छै। जाट बांणीया रजपूत चारण बसै, ऊनाळो घणी, बडौ गांव।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
३००) ६७०) १२९०) ९७५) १२४०)

१ तांबड़ीयौ षुरद २००

राजा ऊदेसिंघजी रौ दत्त, मीसण मोटस सांरगोत नुं हिमें महेस मोटलोत छै। चारण बसै कोहर नहीं, बधड़े पीवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
४०) २१०) १९०) १२५) १५०)

२ षारी वास २ ५००)

वडोबास राव सते चूंडावत रौ दत्त बारहट महेस दुदावत रोहड़ीया नुं। हिमें नाथौ रतनसींघोत छै। अरट १ सेंवज हुवै, चारण जाट वांणीया बसै। २५०)

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
३५) १६०) १९०) १२०) ७५)

---

1. हिस्सा। 2. रोहड़िया चारण।

१ षारी थीरावस

दत्त राव श्री जोधाजी रौ बारहठ थीरा दुदावत रोहड़ीया नुं चारण जाट बांणीया रजपूत बसै। कोहर २। हिमें चवंडदास कलावत नै दईदास रांमदासोत छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३५)	१६०)	१९०)	१२०)	७५)

———
२

२ षाडाला रा बास २

षाढावस नेवेवठो

राव श्री जोधाजी रौ दत्त आसीया पुनराव नै। हींगोला बारू रा नुं दीयौ। पेहली राव रिणमल, आसीया षुढा मंडलक रा नुं थी।

१ षाढाबस, अचळौ चांदावत हिमें छै १५०) चारण रजपूत बसै, कोहर ३, पांणी मोटो[1]।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२५)	८०)	७०)	९०)	११५)

१ देवढो—हिमें केसो जजाण रौ छै २००)

कोहर १ मीठौ, चारण रजपूत बसै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	५०)	३५)	७०)	११०)

———
२

१ बरबड़ा री बासणी १५०)

राजा श्री उदैसिघजी रौ दत्त, बरसड़ा गोपाळ रांमदासोत नुं हिमें मनोहर पीथावत छै। चारण जाट बसै। ढीमड़ा २, सेंवज हुवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	५०)	७५)	८७)	१००)

1. हाजमे के लिए भारी।

१ चारणां री बासणी १५०)

राजा उदैसिंघजी रौ दत्त षीड़ीया भैरव हरषावत नुं, हिमैं चंदौ षंगारोत छै। चारण रजपूत बसै, कोसीटा ४ चांच २।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	६०)	१०५)	१२०)	१००)	१०२)

१ वीसीयावस १५०)

राव श्री रिणमलजी रौ दत थेहड वीसाँ मांडणोत नुं। हिमें दांनो ईसरोत छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	७०)	१२०)	१९०)	१८५)

१ मोगढो षुड़द (१११६ काती सुद १५)

आदु[1] नाहड़राव पड़ीहार रौ दत्त, संढाइच नरसिंघ नुं, हिमैं किसनदास देदावत छै। कोहर १ बडाबास रौं पांणी पीवै, जाट चारण बसै। १००)

१ तीघरीयौ १००)

राजा श्री सुरजसिंघजी रौ दत्त, मीसण जीवा नेतावत नुं, हिमें पूरण जीवावत छै। षेड़ौ सूनौ[2] साहलां री षेड़ी भेळी बसती, चारण बसै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५)	२५)	१५)	२०)	१५)

१ चंगावड़ो तीजौ १००)

राव श्री गांगाजी रौ दत्त, थेहड़ चकोर अमरावत नुं, हिमें नगराज षेतसी छै। चारण बसै, कोहर १ षारौ, सेवकी पीवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	६०)	२५)	५०)	७०)

---

1. आरम्भ में, प्राचीन समय में। 2. गांव सूना पड़ा है।

१ बणलीयौ १००)

राव श्री जोधाजी रौ दत्त, रतनुं करमा पुनावत रीछड़ा नै मुगल लषणीयां नुं। हिमें देवराज भारमलोत करमा रौ पोतरौ छै, नै षमीदास मेघराजोत मुगल रौ पोतरौ छै। चारण बसै, कोहर १ षारौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४०)	१००)	१०७)	१२०)	२७०)

१ चांपावसणी १००)

रा० भींव वाघावत सुजावत रा रौ दत्त, रतनुं मेघराज गेहावत नुं, हिमें करमसुन्दर रौ छै। चारण बांभण वसै। अरट १ ढीबड़ा ६ चांच ५।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	४०)	१२०)	१७५)	१२१)

१ षेड़ी

दत्त राव मालदेजी रौ बीठु मेहा दुसलोत नुं। हिमें मेघराज डुंगरसी रौ छै जाट बांणीया रजपूत चारण वसै। वुड़कोयै पीवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५)	६०)	७५)	८०)	१७१)

१ रलावसे १००)

राव श्री मालदेवजी रौ दत्त जगहटरला गोयंदोत नुं, हिमें नादे करनोत छै। जाट रजपूत बसै। कड़वड रै तळाव पीवै।

सवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५)	१५)	२०)	२५)	३०)

१ भुठा रो वासणी १००)

राव श्री मालदेजी रौ दत्त आसीया झुठा बीकावत नुं। हिमें नाथौ दासावत छै। चारण जाट वसै। कोहर षारौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३५)	३०)	६०)	७२)	५०)

१ लुणावस तीजौ १००)

राव सातल जोधावत रौ दत्त मोसण भोजा जेसावत नुं। हिमें साजण भींव रौ छै। चारण बांणीया रबारी जाट बसै। कोहर नहीं, बड़ौ लुणावस पीवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	७०)	१३५)	१७१)	५०)

१ छाहली ५०)

रा० जैतसी ऊदैसिंघोत रौ दत्त आसोया मांना रांमावत नुँ। हिमें जसौ मांनावत छै। पटेल रजपूत बसै, घवै पीवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	३५)	३०)	५०)	३५)

१ अषा री वास १५०)

कड़वड़ री रा० पंचाईण अषैराजोत री दत्त संढायच गोयंद नुं। हिमें सुंदर गुणेस री छै। षेत १ छै, बीजौ कुं नहीं[1]। लाछां री बासणी थकौ षेत षड़ै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	७०)	१२०)	९५)	२०)

१ मदा दवे री बासणी

राव श्री मालदेजी रौ दवे मदा श्रीमाळी नुँ छै। घणा बरस सूनी रही। बांभण कठी गया तरै झुठा री बासणी में मांजरे गळत गई[2]।

२९

१ हुनावस षुरद

जैतारण था कोस १ आथण था डावौ[3]। जाट बसै, धरती हळवा २५ षेत काठा कंवळा[4], ऊनाळी अरट ढीबड़ा ५ तथा ७ हुवै। तळाव जाषण नडी मास ४ पांणी। सेंवज घणा हुवै छै।

---

1. बाकी कुछ नही। 2. कोई वंशज न रहने से राज्य मे मिलाली गई। 3. पश्चिम में बाई ओर। 4. सख्त व पोली जमीन वाले।

२५३. तालको पींपाड़

१ पींपाड़ षास ५०००)

बडौ कसबौ, माहाजन जाट घणी बसती, दुसाषीया।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२११९) ३४३३) ६४८९) ३७०७) ३१६२)

१ सातसेण ५५००)

बडौ गांव जाट बसै, अरट १५ कोसीटा २० हुवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१३६१) ११३०४) ५११५) ७२५२) ४४९६)

१ रैयां ४०००)

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

११०७) २९१०) ४४३०) ४०५०) ३०२८)

१ रिणसीगांव ४०००)

जाट बांणीया रजपूत बसै, कोसीटा ३, षारचीया[1] गांव, अेक साषीयौ बसी रौ गांव।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१०४६) १७९१) १३७०) २६१० ११११)

१ रावासड़ी ४०००)

जाट बांणीया रजपूत बसै, अरट ९ कोसीटा १४, दुसाषौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

३८७) १६५६) १३४७) १९४८) ९९९)

१ भावी ८००)

बडौ गांव सीरवी जाट बांणीया बसै, ऊनाळी घणी।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

९२२६) १६१२१) १९५७१) १४४८३) ८४३६)

---

1. खारे पानी से पैदा होने वाले विशेष किस्म के गेहूँ।

१ लांबो ५०००)

बिसनोइ जाट बसै, नदी री साट[1] सुं ऊनाळी हुवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१७८७)	४१०५)	४९५८)	४०४९)	२३५३)

१ भाक ४०००)

जाट बांणीया रजपूत बसै, ऊनाळी घणी, दुसाषौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४९५)	९६०)	१३८७)	१५०५)	९९०)

१ बोल ४५००)

जाट बांणीया बसै, अरट १, चांच ४ हुवै । सेंवज गेहूं चिणा हुवै । बडो गांव ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३१६४)	५६५७)	३८२७)	४०००)	३५०६)

१ कुसांणो ३०००)

जाट बांणीया बिसनोई बसै, ऊनाळी घणी, दुसाषौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
८२४)	३२८०)	४१९८)	३९२७)	२९४७)

१ काळाऊना ३३००)

जाट बांणीया रजपूत बोहरा माळी बसै, ऊनाळी घणी, दुसाषीयौ बडौ गांव ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
७४३)	२३५३)	२१८३)	१९२१)	११८८)

५ हरीयाडांणौ ३०००)

जाट रजपूत बांणीया बसै, सेजो नहीं[2], सेंवज चिणा हुवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
७२३)	४५५४)	१३३०)	२८०८)	२३१४)

1. नदी के आस-पास की गीली जमीन । 2. कुओं के लिए पृथ्वी-तल में पानी नहीं ।

१ सिलारी ४०००)

जाट बसै, अरट १० हुवै। सेंवज हुवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

११७०) १६७०) १३४९) २८०८) २३१४)

१ बुचकलौ ३०००)

जाट बसै, ऊनाळी अरट २० घणा दुसाषौ, भलौ गांव।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

७००) २०००) ४०४१) १९३०) ११००)

१ रतकूड़ीयौ)

जाट बसै, सेजौ नही, थळी रौ गांव, अेकसाषौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१५४) १९९६) ३०४५) ३३४७) १३६४)

१ लोहारीं २५००)

जाट बसै, ऊनाळी अरट १० कोसीटा २५ हुवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

५००) १७१२) ३११८) १९२७) १४८६)

१ चिरड़ाणी ३४००)

जाट बांणीया बांभण बसै, कोसीटा ३, सेंवज हुवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१४८८) ४६९५) २०८५) ३१८५) १२३८)

१ कापरड़ो ३०००)

जाट बांणीया बसै, अरट १०, ढीबड़ा ४ हुवै। सेंवज हुवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

११६७) ३६६०) ३८८४) ३२५९) ५५३८)

१ षेजड़लौ ३०००)

जाट रजपूत बसै, कोसीटौ, अेकसाषीयौ, सेंवज हुवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

४४४) ३८०६) ३०८०) २१७८) २३७०)

१ षांषटो ४६००)

जाट रबारी बसै, कोहर १ ऊपर कोसीटो १, सेंवज हुवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१५२) ४४३३) १५७०) ३९४६) २१०१)

१ रांवणीयांणो ३०००)

जाट बसै, कोसीटा १०, सेंवज बडा घोरा-बंध षेत[1] ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१६६२) २१६८) १३२७) २५७१) १८०२)

१ बड़लु ३१००)

जाट बांणीया नंदवाणा बसै, कोसीटा ३० तथा ४० हुवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

७४१) ३१८५) १९८२) २७०१) २४१८)

१ तिणवासणी ३०००)

बिसनोई बांणीया बसै, सेजो नहीं, अेकसाषीयो ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

५८१) ५०५१) २९८५) ३२००) ११८५)

१ नांदण २५००)

जाट बांभण बसै, ऊनाळी अरट कोसीटा घणा ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१२२७) १८५०) ४४८८) १०२९) १०९८)

१ षेपाळी २५००)

जाट बसै, दुसाषौ ऊनाळी घणी ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१६०८) १४९२) २५८६) १०५४) १३८५)

१ चांदाळाव २५००)

---

1. मेड़बंदी किये हुए बड़े-बड़े खेत ।

जाट बांणीया रजपूत बसै। अरट ५, कोसीटा ७, चांच १० हुवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२११)	३७४)	४३२)	६९३)	३३०)

१ समुहाड़ीयौ २०००)

जाट बसै कोसीटा १४, सेंवज हुवै, दुसाषौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	८८४)	१४७९)	१३४८)	१४६४)	७५३)

१ बुरछा २०००)

बिसनोई जाट रजपूत बसै, कोहर १ षारौ, अेकसाषीयौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४०)	२१०)	२१५)	५२३)	४२५)

१ रामड़ावास बडौ ३०००)

बिसनोई बसै, ऊनाळी नहीं, थळ गांव[1], अेकसाषीयौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२५४)	१३१०)	४२०२)	१७७५)	१६५६)

१ मालावस २५००)

जाट बसै, ऊनाळी कोसीटा २०, अरट १२, दुसाषौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१००३)	१५६७)	२१३१)	१०५।)	२५७२)

१ मादसीयौ २५००)

जाट बांणीया रजपूत बसै, अरट १५, कोसीटा १२, दुसाषौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१००३)	१७८०)	७५०)	१०२३)	९१४)

---

1. मरुस्थल वाला गांव।

१ धोरूं २०००)

बिसनोई रबारी बसै। ऊनाळी नहीं, अेकसाषौ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
८०)	७७५)	२२९)	७६०)	४८५)

१ षारीयौ २०००)

जाट बसै, कोसीटा १० सेंवज चिणा हुवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
८८२)	८५०)	२५५)	१०५१)	६८२)

१ वीरावस २०००)

जाट बसै, सेझो नहीं, धोराबंध षेत, अेकसाषीयौ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३४५)	१२२१)	३६३)	१८८७)	३७६)

१ सिणलौ २०००)

जाट रजपूत बसै, कोहर १ षारो, अेकसाषीयो।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१६२)	८६८)	३५७)	१०७८)	४१५)

१ घाणा मगरौ २५००)

जाट बसै, सेझौ नहीं, अेकसाषीयौ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
९११)	२४६५)	४८५)	२२८८)	४७५)

१ वाडावास २ २०००)

जाट बसै, कोहर १ पांणी षारौ, अेकसाषीयौ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२२७)	८५५)	९७५)	२५६)	६८२)

१ भुडांणो १५००)

जाट रजपूत बसै, कोहर १ पांणी षारौ, अेकसाषौ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०)	८४५)	१०७०)	[illegible]	[illegible]

१ अनावास ९००)

जाट रजपूत बसै, कोसीटा १०, चांच ५, सेंवज हुवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

५६०) ८८६) ५८३) ४७८) ४२६)

१ जोयावस १०००)

जाट बसै, अरट ४ कोसीटा २, चांच दुसाषीयौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

३५) ३६६) ३५६) २८४) १८०)

१ अरटीयौ बडौ ३००)

जाट बसै, कोसीटा १३, चांच २० ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२४०) १८७०) ४३४) ९९४) ५७५)

१ मलार १५००)

जाट रजपूत बसै, ऊनाळी नहीं, अेकसाषीयौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२८०) १०१०) ६५९) ८९७) ५६०)

१ वीनावस बडौ १५००)

जाट बांणीयां बसै, अरट ५, कोसीटा १०, चांच ३० ।

संवत १७१५ १६ १७ १८

१७३) ३१५) ११५१) १२५०)

१ जालको १४००)

जाट बसै, अरट १ हुवै, सेंवज चिणा हुवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२७९) ७३०) १०९६) ९९९) ६९०)

१ कुवड़ी ८००)

जाट रजपूत बसै, कोसीटा १०, चांच २० हुवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

३०५) १२४०) २५१) १४८३) ६०४)

१ कोहड़ १३००)

बिसनोई बसै, अरट २ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
६३) ४२५) १८०) ६१०) ४४७)

१ वांकुली १०००)

जाट बसै, अरट १०, चांच २० हुवै, दुसाषीयौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
५९०) १६१०) १७५६) ४९०) ३९५)

१ रुणकीयौ १०००)

जाट बसै, सेजो नहीं, कोहर १, पांणो भळभळो, षेत सेंवज चिणा हुवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
६२४) ४८१) ३७२) ६८७) ५३४)

१ अरटीयो षुरद १०००)

विसनोइ बसै, कोह १ पांणी मीठो, सेवज नहीं, अेकसाषीयौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
६६) ८७०) १७३) ८८३) ४५६)

१ बगड़ी ७००)

जाट रजपूत बसै, कुवौ १ मीठो, ऊनाळी नहीं, अेकसाषीयौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१५) ५५५) २०२) ५४८) ३१८)

१ जालीवाड़ो वडौ ८००)

जाट बसै, अरट ८, कोसीटा १०, चांच ५ हुवै, दुसाषौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२८६) ७०३) ५७५) ६८३) ६८७)

१ हीगव्रणीयो ६००)

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१८०) ३१०) ९०४) ३१०) २५७)

१ वाघोरीयौ १०००)
नेनाहरपूरै बास २ बसै, जाट बिसनोई बसै, कोसीटा २०, दुसाषौ।
संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
३४८) १०००) ५७५) ७९३) ५४९)

१ वीनावस षुरद १०००)
जाट रजपूत बसै, अरट २ कोसीटा ८, चांच २०, दुसाषौ।
संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१६१) ४०६) १०५३) ६५६) ३२६)

१ झालामलीयौं १०००)
जाट विसनोई बांणीया रजपूत बसै।

१ झुड़ली ७००)
जाट बसै, अरट १०, कोसीटा १५ हुवै, दुसाषौ।
संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
४४२) ७३५) ७२८) ५३७) ५८७)

१ रांमपुरौ काळा ऊना रौ ७००)
जाट बसै, अरट ४, कोसीटा २ हुवै, सेंवज हुवै।
संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२७२) ४८०) ३७७) ४९३) ३३४

१ रांमपुरौ रावासड़ी रौ १०००)
सीरवी जाट बसै, अरट ९, कोसीटा ५, चांच १० हुवै। संवत १७१२ बसीयौ।
संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१७२) ५८८) ८४६) १०९९) ५३२)

१ सरगीयौ बडौ ६०००)
जाट बांणीया बसै, ऊनाळी नहीं, कुवौ १ अेकसाषौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
३०) ६५५) ११४४) २५१) ३९४)

१ षोषरीयौ ४००)
रबारी जाट बसै, कोहर १ षारौ, पछै दांतीवाड़ौ पीवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
४०) २५५) २२७) ३६६) १९५)

१ मुरकावसणी ३००)
जाट बसै, कोहर १ भळभळो, सेंवज चिणा हुवै ।

१ कापरड़ा री वासणी ५००)
षारवाळ बसै, कापरड़ा भेळी, षारवाळां रौ बास कहीजै।

१ भागावसणी ६००)
जाट बसै, कोसीटा ८, ढोबड़ा ४, दुसाषौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
४४२) ९५४) ४००) ७७६) २५०)

१ कागली ४००)
जाट बसै, ऊनाळी नहीं, गांव अेकसाषौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
७०) ६९०) ६७) ४९६) ३२०)

१ सोरगीयौ षुरद ३००)
जाट बसै, बड़े सीरगीये पीवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२५) ४००) ९५) ३४०) २६५)

१ सहलवौ षुरद १५००)
जाट बांणीया रजपूत रबारी बसै, कोहर १ षारौ, अेकसाषीयौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
७०) ११६५) ५२८) ८५०) ६५८)

२५४. २ सुना षेड़ा मांजरा

१ हरबाई री बासणी २००)

षेत पींपाड़ में षड़ीजै।

१ सारगीयो तीजौ १५०)

वडा सारगीया भेळा षेत षड़ै।

२

२५५. ८ सांसण रा गांव—

१ षेड़ेचौ

दत्त राव श्री गांगाजी रौ, ब्रीहामण रांमा मुरार रा श्रीमाळी नुं हिमें ब्री० कचरौ दामोदर रौ छै। जाट बांभण बसै, अरट ६, कोसीटा ५ दुसाषीयौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४०)	३८०)	१८०)	३७५)	४००)

१ वड़ां षुरद

दत्त राव श्री मालदेजी रौ प्रोहत षींवा देवाकर रा आचारज सीवड़ नुं। हिमें प्रौ० कचरौ देईदासोत छै। जाट बांभण बसै। कोहर १ पांणी षारौ। पाषती रा गांवां पीवै[1]।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	७०)	९०)	८५)	६५)

१ कानावस

रा० काना विजा सिवराजोत रौ दत्त, संढायच रतना चाचावत नुं। हिमें नाथौ रूपावत छै। जाट चारण बसै। अरट ६ कोसीटा २।

सवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४०)	१३०)	११०)	२७१)	२१२)

१ जालीवाड़ौ षुरद

राजा श्री गजसिंघजी रौ दत्त बारहठ राजसी परतापमलोत नुं,

---

१. आस-पास के गांवो से पानी पीते हैं।

हिमें किल्याणदास कांनु राजसींघोत छै । जाट बांणीया बांभण चारण बसै । अरट ६ कोसीटा २ चांच ४ हुवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५०)	३१०)	५१०)	३२०)	४०२)

३ बड़लू रा बास ३ सांसण

१ सांदुवां रौ बास ५००)

रा० वैरसल प्रीथीराज जैतावत रौ दत्त, सांदु गेहलांणंद देवावत नुं । हिमें बुढो दलौ सेहसा रा बेटा छै । चारण जाट बसै, कोहर १ मोठौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५)	१९०)	१४०)	१८०)	१८०)

१ डूंगरसी रौ वास ३००)

रा० महेस घड़सीयोत रौ दत्त, वीठु षीवांणंद देवाणंद नुं, हिमें नैतसी जसावत छै । कोहर १ ऊपर कोसीटो छै । चारण बसै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५)	८५)	१६०)	१००)	८०)

१ बींजा रौ बास १२०)

रा: महेस घड़सीयोत रौ दत्त, बीठु दुदा वीदावत नुं । हिमें गोयंद चोला रौ छै । चारण बसै कोसीटो १ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५)	११५)	१८०)	९०)	१००)]

३

१ गांव वुजड़ो

मोटा राजाजी रौ दत्त, भाट मनौ रूपसोत नुं । संवत १६५१ हुवौ । हिमें भाट रिणछोड़ विहारीदासोत नै छै । जाट नै भाट बसै । अरट ४ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३५)	११०)	७०)	२७५)	२२५)

८

७९

२५६. तफै बीलाड़ौ

१ बीलाड़ौ षास— २००००)

बडौ कसबौ, माहाजन सीरवी, घणी बसती छै[1]।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१६८१०)	१५१९०)	३६०६९)	१६०५६)	१५११८)

१ षारीयौ भांणा रौ ४०००)

जाट सीरवी बांणीया बसै[1]।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२३००)	३३८७)	५८०३)	२५२७)	२००७)

१ जैतीवस २०००)

जाट कुंभार बांभण रजपूत बसै। अरट २ चांच २०।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	९५६)	११४७)	९४६)	१०२३)	५२२)

१ हरस १०००)

जाट रजपूत बसै, अरट ४, कोसोटा ५, चांच ४, दुसाषौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३०९)	३५०)	२१५)	३९०)	३५५)

१ ऊंचीयाहेड़ौ ५००)

बीलाड़ै रा चोधरीयां दाषल भेळौ, सीरवी कुंभार बसै, अरट ढीबड़ा[2] सीरवी करै छै।

---

१. ऊनाळी घणी वडौ गाव (अधिक)। २. वलाड़ा रा।

---

1. वड़ी आबादी वाला है।

१ पचीयाक ४००)[1]

जाट सीरवी वांणीया बसै, सेंवज ऊनाळी घणी।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४१९७)	४९७८)	८६४५)	४८६०)	३४५२)

१ वींझवाड़ीयौ २५००)

जाट बसै, अरट १५ चांच १०, दुसाषौ[2]।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
११७०)	१८९१)	२१८७)	१३०१)	९२१)

१ वींझीया वसणी १५००)

रजपूत वांणीया कुंभार बसै। अरट २१ चांच २५ हुवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२३०)	१८३५)	१०५३)	७०२)	५५४)

१ कुंपड़ावस ७००)

पटेल बसै, अरट ४, चांच ५, दुसाषौ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३८०)	४९६)	३५५)	५९७)	२६५)

१ मुरीयारड़ौ[3]

सूनो षेडौ, बीलाड़ा में मांजेर, लूण रा आगर।

१ ऊदेपुरौ

सूनो षेड़ौ, बीलाड़ा रा जोड़ में मांजरै छै।

११

२५७. ४ सांसण

१ जेसलवस

राव श्री मालदेजी रौ दत्त, ब्यास अंबाल हुवा रा श्रीमाळी नुं दीयौ, संमत १५८० दीयौ। हमें हेंसा ३ सांसण छै। हेंसो १ षालसे चाकरी रौ छै। सीरवी जाट बसी छै, षारोळ बसी।

१. ४०००। २. भली गांव (अधिक)। ३. मुडियारड़ो।

३ सांसण
  १ श्रीदेव आचारज नुं[1]
  १ केलण नारणोत नुं नैतसी नुं ।
  १ लाधो किसनदासोत नुं ।

३

१ हैंसो १ वीदाधर किसनदासोत राः किसनसिंघजी साथे गयौ । तरै सतीदास नुं छै ।

४

गांव १ इण भांत छै । ४००)

सीरवी जाट बांणीया बसै, पारवाळ, ऊनाली अरट ३० ढीबड़ा, सेंवज ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३२०)	७२०)	६२०)	६२०)	२२६)

१ ऊदळीया वास २५०)

राजा उदैसिंघजी री दत्त बारैट केसा जीवाउत रोहड़ीयै नुं, हिमें किलांणदास रूपसोत छै । ऊनाळी रा अरट १२, जाट रजपूत सीरवी बसै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३२०)	७२०)	६२०)	६२०)	२२६)

२ वडी रा बास

राव श्री रिड़मलजी री दत्त बारैट अमरा दूदावत नुं । हिमें सारंग जैतमालोत रांमचंद गोपाळोत छै ।

१ बास १ सारंग रौ, जाट बांणीया चारण बसै, २००)

१ बास १ रांमचंद रौ, २०००)

जाट बांणीया चारण बसै ।

२

१. श्रीदत सीवरांम सांकरदास रा नुं ।

अरट १६ ढीबड़ा ४ चांच १० नकस ४००)

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१००) ६८०) २१०) १०२०) ६७४)

४

२५८: तफै बाहलो

१ बाहळो षास ४०००)

माहाजन जाट सीरवी रजपूत बसै, सेंवज बीघा १००१ माहे पीवै, चांच ४०, दुसाषों बडो गांव।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२१११) ६१४५) ३६४५) ४४८१) २९१०)

१ मालकोसणी ५५००)

जाट बसै, अरट १०, कोसेटा सेंवज बीघा १०० ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१७८६) ३९३५)[1] ३९००) ३७४७) १६७१)

[2][१ बळुंदो ४०००)

माहाजन रजपूत जाट बसै, बोहरा बांभण चारण सोह बसै[1], अरट १५ कोसीटा २० चांच हुवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१३७७) २४१०) २८४५) ३३४०) २६७१)

१ घोड़ारड़ी ३५००)

जाट रजपूत बसै, अरट १०, कोसीटा ४० दुसाषो, बडो गांव।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
६१५) १४००) ११५५) १०५६) १३३०)

१ रावीर ३०००)

जाट बसै, ढीमड़ा १० चांच १५ हुवै, सेंवज बीघा ५०० ।

---

१. ३९५३। २. 'ख' प्रति का अंश।

---

1. सभी जातियो के लोग बसते हैं।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१४७०) २०७०) २५२५) २२३३) १५२६)

१ ओलवी २०००)

सीरवी जाट वांणीया बसै, अरट १५, चांच २० हुवै। दुसाषी, भलौ गांव।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
३१६) २१६०) २११०) १६६०) १४०८)

१ वाघावस ५००)

जाट बसै, ढीमड़ा २ षारचीया सेंवज बाहे, वीघा १०० हुवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
७२) ३८६) ४०) ३४६) २६६)

७

१ सांसण गांव

१ कांनावस १५०)

श्री मोटा राजा जी री दत्त बांभण बछा गुगली द्वारकाजी रा सेवगां नुं, हिमें सांवळदास छै। जाट बसै अरट २, चांच ४ हुवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२५) १२०) १८०) २२५) १९०)

२५९. तालकै षैरवौ

१ षेरवो षास ६०००)

सीरवी घांची माहाजन वांभण सोह पवनजात बसै। वडौ कसवो, अरट १८, कोसीटा १०, चांच ४० हुवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२२७५) ७२२५) ६९१७) ६९३३) ४७९३)

१ लांवा २०००)

सीरवी रजपूत वांभण बसै, अरट ५, चांच ५ दुसाषीयौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२३१)	९१५)	३३६)	१०९३)	६३९)

१ सानेही १०००)

रजपूत बांभण बांणीया जाट रबारी बसै, अरट ८, कोसीटा १०।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१८०)	५३५)	२२०)	९९५)	५२०)

१ धांमळी ३५००)

सीरवी बांणीया बसै, अरट ६, बडौ गांव दुसाषीयौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	९३४)	१५९१)	३१९४)	३३५१)	२२१७)

१ हींगोलो बडो १०००)

बांभण रजपूत बसै, अरट ६ दुसाषीयौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	११४)	९४६)	७५४)	१२००)	३३६)

१ बुधवाड़ो ५००)

सीरवी जाट रजपूत बसै, अरट १०, कोसीटा ३०।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२००)	३८१)	४०७)	६५८)	५४६)

१ सुगाळीयौ २००)

७

२ सूनाषेड़ा

१ आयची सूना ३००)

बुधवाड़ा भेळी मांजरौ।

१ बापुनी २००)

षेड़ो सूनौ बीजा गांव रा लोग षड़ै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	०	०	५१)	६७)	७८)

२

२ सांसण ता० षेरवा रा—

१ हींगोलो षुरद ६००)

राजा श्री गजसिंघजी रौ दत्त आढ़ा किसना दुरसावत नुं। हिमें महेसदास छै। सीरवी बांभण बांणीया बसै, अरट २० हुवै, दुसाषौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२००) ४००) २१०) ७३०) ८१८)

१ सांषीड़ो २००)

दत्त राव श्री जोधाजी रौ षिड़ीया चांदण लुणावत नुं। हिमें भैरवदास जसौ जाडो छै। चारण बसै। अरट १, कोसीटा ४, चांच २ हुवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
३०) १००) १२०) १३५) १३०)

२

२६०. तालकै पाली

१ पाली-षास ४०००)

माहाजन घांची बांभण रजपूत सगळी जात पवन बसै। बडौ कसबौ, अरट ४०, कोसीटा २०।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१५३५) ३४३३) ३२२१) ४४९८) ३०७५)

१ देणो १५००)

पटेल रजपूत बांभण वसै, अरट २ कोसीटा २ चांच २०।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१२५) ७१०) ९५) ४०५) ३६०)]

१ हांमावास १३००)

पटेल रजपूत वांणीया। अरट ५ कोसीटो १, लूण रौ आगर।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१३०) ९१५) ५८१) ११८६) ६९३)

१ सांवळतो षुरद १०००)

जाट रजपूत बांभण बसै, कोसीटा २२, चांच १० दुसाषौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१५०) ४२०) ८०) ४८५) ४९०)[1]

१ ऊतवण १०००)

रजपूत जाट बांणीया । अरट ५ कोसीटा १० दुसाषौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१४०) ३८१) २८७) ३०१) ३१०)

१ गीड़ाघड़ो[2] १०००)

रा० अचळे वीकावत री बसी, ढीबड़ा १० कोसीटा १५ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२६३) ११४३) ४८७) ८९६) ७४०)

१ जवड़ी ६००)

रजपूत तेली[3] बसै, अरट १ कोसीटा १५ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२३३) ७९२) ५१२) ७४१) ५८०)

१ भाभेळाई ५००)

पलीवाळ बसै, सेंभो नहीं, भालेलव रै वेरै पीवै[4] ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
५३) २२५) ६३) ७१७) ३८०)

१ आटरड ५००)

बांभण[5] रजपूत बसै, कोसीटो १ चांच २ ।

---

१. ४२० । २. गीडाघरा । ३. घांची । ४. तळाव रै बैरै पीवै ।
५. पालीवाळ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
५६) ३२०) ३१) ४३५) १५८)

१ मढली वीकां री ४००)

बांभण जाट बसै सेंवज षेत १० धोरा भरीयां पीवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१३६) ५२५) ८५) ८२५) ४०५)

१ केरलो १०००)

सीरवी रजपूत बसै, अरट ५ कोसीटा १५ चांच ४।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१७३) ५७४) ६८९) ७९५) ७२०)[1]

१ गुरलाई[2] ७००)

रजपूत बांभण बसै, तळाव री बेरियां पीवै, ऊनाळी नहीं।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२००) २८२) ४०) ४००) ३१०)

१ वालेळाव ६००)

राजणदास[3] नाथावत री बसी। अरट १, कोसीटा १०, ढीमड़ा ४, चांच १०।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२२१) २४०) ४३५) ४३०) ३५५)

१ भालेळाव ६००)

बांभण बसै, अरट १।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२५) २२५) ११९) ७६१) ५५६)

१ नीबीयाहेड़ी ५००)

बांभण बसै, कोसीटा २।

---

१. १२०। २. गुडलाई। ३. जोगीदास।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२८)	३८१)	९६)	४१२)	३०४)

१ कांठद्रहो[1] ५००)

रजपूत जाट बसै, सेझो नहीं सेंवज छै। तळाव बेरै पीवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	३४५)[2]	१२५)	५२०)	३२५)

१ आकड़ावास ६००)

रजपूत जाट बसै, अरट ४, चांच ४ सेंवज।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६०)	२५०)	६०)	३२५)	२८३)

१ कानड़वास[3] ४००)

पलीवाळ रजपूत बसै, कोसीटा ७।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	४७०)	२१८)	४३५)	३४८)

मंढीयौ ३००)

जाट बांभण बसै, कोसीटा १७।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
८७)	५८२)	४०५)	६८२)	५९०)

१ भुरीयावासणी ४००)

रजपूत जाट बसै, कोसीटा १५[4] चांच १५[5]।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	१७२)	१५)	३५०)	२७०)

१ षेतावास ४००)

जाट रजपूत बसै, सेझो नहीं, सापै पीवै।

---

१. काठद्रो। २. ३४१। ३. कानावास। ४. ५। ५. १०।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	८१)	१५५)	१२०)	११५)	१८०)

१ रांमावास ३००)

रजपूत वसै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३०)	१६२)	४०)	१६५)	१५५)

१ भुंमादड़ी ३००)

रजपूत वसै, कोसीटा २, चांच २ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४०)	१३०)	१२५)	२२५)	२०७)

२८

२६१. ६ सूना पेड़ा मांजरे

१ मुलीयावास चांगल भेळो पेडो[1] ८००)

१ पटेलां री वासणी १००)

१ नीवलो १००)

१ सांडवास पाही वाहे १००)

१ सोमावस १५०)

१ दासावस १००)

६

२६२. १० गांव सांसण

१ मादड़ी २००)

आदु दत्त राव कानड़दे सोनगरा री, ब्रा० सांकर हरहरा नुं राय-गुर नुं । हिमैं जेतो जसावत[2] छै । राठौड़ दलपत भोजराजोत री वसी छै । चांच १० सेवज हुवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	८५)	७०)	२१५)	११५)

---

१. पड़ीजै । २. सजावण ।

२ गांव ढाबरवास २ ४००)

आदु दत्त राव कानड़दे सोनगरा रा श्रा० सीवदे सांकर राय रै नुं गुर आचारज नुं दीयौ।

१ भारमल रौ बास

वीरदास महेसोत नुं, बांभण रजपूत बसै, कौसींटा १०, चांच ८ हुवै।

१ सांईदास रौ बास

रूपसी गोपाळोत नुं, बांभण बसै छै। कोसीटा १, चांच ५ हुवै।

सालीणो रेष भेळी मंडी छै[1]।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	२१०)	७५)	५२५)	३१०)

२

१ आकेलड़ी १००)

सोनगरा अषैराज रिणधीरोत रौ दत्त, प्रा० षंगार चांपावत राय गुर नुं। हिमें महैराज टोकरी[2] छै। बांभण रजपूत बसै, अरट ४, कोसीटा ५, चांच १० छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२३)	७०)	२०)	१००)	१००)

१ पुनाईता ३००)

राव श्री रिड़मलजी रौ दत्त प्रा० पूना अषावत रायगुर नुं। आचारज हमें ठाकुरसी बीठल रौ छै। रजपूत बांभण बसै। अरट ६ कोसीटा ४, चांच १ हुवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६०)	६५)	३०)	२००)	३३५)

१ रावळवास १५०)

---

१. बंट जुदै (अधिक)। २. टकारो।

सोनगरा मांनसिंघ अपैराजोत री दत्त, प्रा० माहाव रायगुर नुं। हमें जीवो किसनावत छै। वांभण रजपूत वसै अरट १४ चांच हुवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५)	१३०)	१६०)	१०२)	१००)

१ धरमदवारी १५०)

राव श्री रिड़मलजी री दत्त प्रा० हरभा माला लषमणोत आचारज नुं पांचलड़ा नु हमें माली दिदावत छै, वांभण रजपूत वसै कोहर १ मीठो।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	६२)	२५)	२००)	२००)

१ दुपावास[1] ६००)

राजा गजसिंघजी री दत्त बारैट राजसी अपावत रोहड़ीयै नुं सं० १६८६ दीयो। हिमें भैरूं[2] भींवराज राजप्रोत छै। रजपूत चारण वांणीया वसै। अरट २ कोसीटा ५ चांच ४।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१८०)	३७५)	११०)	४२५)	४५०)

१ पुनलां री वासणी २००)

षेड़ा री षवर नहीं। देवी पुनली रा पुजारा नुं हुती। पुनाषर री पाषती ढुंढा छै[1]। सु वेह वांभण मर गया। हिमें सीनासी[2] सेवा करै छै। १००)

१ बालुवास री षबर नही। १००)

१०

४४

१. रूपावस। २. नंदु।

1. मकानों के खंडहर हैं। 2. संन्यासी।

२६३. तर्फे रोहठ

१ रोहीठ षास २५००)

बडौ कसबो, माहाजन जाट रजपूत बसै, अरट कोसीटा घणा, ऊनाळी दुसाषौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

६०३) ३२२)[1] ५१३५)[2] ३३१८)[3] १७७१)

१ मुंगलो ५००)

बांभण रजपूत बसै, कोसीटा २०।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१२०) ५०९) २३७) ३७६) २३३)

१ तीघरो ५००)

पटेल बांभण बसै। अरट कोसीटी २० चांच ४० हुवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

३५१) ४१०) ९२४) १६०६) १०२५)

१ चोटीलो २०००)

पटेल रजपूत बसै। कोसीटा १२ चांच १०[4] हुवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२५५) ८८२) ९१३) ११८१) ९१८)

१ वीठुल ४५००)

पटेल बांभण बांणीया बसै। कोसीटा १९ ढीबड़ा २।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२८९) २०७३) १०७०) ३१७२) १५८४)

१ षांडी ३०००)

पटेल रजपूत बसै। अरट ४ कोसीटा २० चांच ४।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१९०) १९४७) ७४०) ९५५) ६७०)

---

१. ३२२७)। २. ११३५। ३. ३३७८)। ४. २०।

१ अरटीयौ १५००)

पटेल बसै । कोसोटा २० ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
११४)	१४५५)	४१५)	१५०)[1]	५७७)

१ डूंगरपुर १०००)

पटेल रजपूत बसै । कोसीटा १५ सेंवज बीघा ४०० ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३६०)	१५१३)	९११)	१२७५)	३७१)

२ नींबली १०००)

पटेल बांभण बसै ।

१ पटैला री १ बांभणाई

सेंवज बीघा हुवै सीकारपुर पीवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५८०)	१४०८)	११५)	१४८९)	९७१)

१ दुघली ७००)

पटेल बांभण सीरवी बसै । कोसीटा १५, ढीबड़ा ३, चांच ३० ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१२०)	९९०)	५२९)	७६४)	५८२)

१ कालकी कलानी[2] १०००)

पटेल बसै । कोसीटा ३० ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२३६)	१०९६)	५४३)	१५२०)	८१७)

१ लालकी १०००)

जाट बांभण बसै सेझौ नहीं सेंवज हुवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१४८)	१०३१)	२०३)	१०३०)	४५८)

---

१. १५०६) । २. कालाली ।

१ सांभी १०००)

पटैल बसै, अरट २ कोसीटा २०, चांच २० हुवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
०	०	१०२६)	६९८)	७२८)

१ भांडवी ६००)

बांभण रजपूत बसै। कोसीटा १० चांच ५ सेंवज बीघा २०० ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२१०)	५७०)	१६५)	५९९)	४७५)

१ ढुंढड़ी ५००)

बांभण रजपूत बाणीयां बसै । सेंवज ब्रीघा २००) ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
११०)	४१७)	७५)	४३४)	२५०)

१ मोरढंढ

रजपूत बसै, अरट २ चांच ४ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	११९)	१३१)	२२८)	२३०)

१ षारलो २०००)

बांभण रजपूत बांणीया बसै । सेंवज बडी षेंती ऊनाळी[1] ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६८०)	१९८६)	१५०)	१६७१)	११७०)

१ हरावास ५००)

रजपूत बांभण बसै । कोसीटा ७ हुवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२३०)	३६४)	५७०)	४१२)	२३०)

१९

१. सेभो नही (अधिक) ।

१ गांव सांसण

पातावास दानावासणी

रा० पता घड़सीयोत री दत्त, रोहड़ीया दांमी हरषावत नुं। हिमें जसो रूपी छै। चारण पटेल बसै। कोसीटा ७, चांच ४।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	७०)	२५)	१२५)	१००)

२०

२६४. तर्फ गुदोच

१ गुदोच षास ६०००)

माहाजन सीरवी घांची सगळी जात छै। बडो कसबो छै। अरट ४, कोसीटा ढीबडा ३० चांच ४०।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
८२५)	३५३०)	४९६१)	४५८०)	३५५७)

१ अैदलां १५००)

सीरवी बांणीया[1] बसै। अरट १, चांच ५।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१७६)	९८९)	४९७)	१११८)	३३४)

१ कुंरणो[2] ३०००)

रजपूत बांणीयां बांभण माळी बसैं। कोसीटा २ चांच १०।

१ वाळौ १५००)

१ साहली ८००)

रजपूत मैणा बसै। राजसिंघ जसवंतोत री बसी।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१२०)	२०५)	१२०)	३००)	१००)

५

१. रजपूत (अधिक)। २. कुडणो।

५ सूना षेड़ा—

१ पादरलां —

१ पातावास १००)

१ तोगावास १५०)

१ देवळीयौ १००)

१ बेरी १००)

१०

तर्फ भाद्राजण

१ भाद्राजण २०००)

२६५. रजपूत मैणा बसै। ऊनाळू भरीजतौ[1], सेंवज हुवै। बीघा ५००।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२४०)	१०६०)	५०)	२००६)	१०८६)

१ मुंडावाय ३८००)

पटैल बसै। अरट कोसीटा १०, ऊनाळी बीघा ५००।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२७०)	१२४२)	३७०)	२७९९)	१३६२)

१ राहणो २०००)

पटैल बांणीया बांभण बसै। ऊनाळी बीघा २००० सेंवज।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२५५)	१७५५)	१७५)	३५५०)	९८२)

१ देवासणदी[1] २०००)

पटैल बांणीया रजपूत बसै। कोसीटा ७५ दुसाषौ। बडौ गांव छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५००)	२००१)	२१७०)	२१२०)	१२८५)

---

१. देवांणदी।

---

1. वर्षा का पानी एकत्रित होता है।

१ गेलावास २०००)

पटैल रजपूत बसै । कोसीटा १० सेंवज बीघा १० दुसाषी ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०५)	१०२५)	३७३)	७५४)	२८९)

१ भांडवली १५००)

पटैल रजपूत बांणीया बसै । सेंवज बीघा ५०० ऊनाळी ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२१०)	११४०)	२१८)	२३३६)	८४४)

१ वरवा १२००)

पटैल बांणीया रजपूत बसै । अरट ६ ढीबड़ा ४ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२२०)	१६४६)	९२४)	१४६७)	८५४)

१ सिरणगारी १०००)

पटैल बांभण रजपूत बसै । कोसीटा १५, चांच १० ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१३०)	१३३५)	४३६)	१५५४)	८३८)

१ नीलकंठ १०००)

पटैल रजपूत बांभण बसै । ऊनाळी बीघा ४००, सेझो नहीं ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	७०)	३३५)	८२)	६०७)	३८३)

१ मुरड़ीयो ७००)

पटैल रजपूत बसै । कोसीटा ४, चांच ५ सेंवज बीघा २०० ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२१०)	५२५)	१३२)	३९५)	२९०)

१ पुटांणी ३०००)

पटैल बांणीया । कोसीटा १५, ऊनाळी वीघा २०० ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२२८) १०२९) ३२५) २२८१) ६८७)

१ वींझा २०००)
पटैल बांभण बसै। अरट २, ऊनाळी बीघा ५०० ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१५०) ९९०) ७४) १०००) ५४०)

१ वाळो २५००)
रजपूत पटैल बांभण बसै। ऊनाळी बीघा १००० सेझो नहीं ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२१०) १६६०) १३०) १५४९) ९४२)

१ चांठला[1] १२००)
सीरवी बांणीया रजपूत बसै। अरट १० कोसीटा ७ चांच ५ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२२०) १२२६) १६९५) ८७१) ५५५)

१ पांचपदरो १०००)
पटैल बांभण रजपूत बसै कोसीटा १० हुवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
५०) ४००) १९२) ३३०) २८८)

१ रांहांमो १०००)
पटैल रजपूत बसै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१५०) १८०) ८९) १३५) ६१८)

१ वावद्रि १०००)
पटैल रजपूत बसै। अरट २ कोसीटा १५, ऊनाळी बीघा २०० ।

---

१. चांठाला ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
८२) ७८०) ४७४) ३९४) ३२६)

१ लांबड़ौ

पटैल रजपूत बसैं। ऊनाळी, सेभो नहीं। लाषण धुब[1] पीवै। सेंवज वीघा २००।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
३०) २८६) ५६) ५७७)[2] ३२७)

१ चेहडां ७००)

पटैल रजपूत बसै, सेभो नहीं मुडवाय पीवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२८) ३६७) ६५) ४६२) ४८४)

१ घवेलरीयौ ७००)

पटेल बांणीया रजपूत बसै। अरट ५, कोसीटा ८ सेंवज बीघा १००।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
३१) २६७) ७५८) ४६०) ३०१)

१ फैकारीयो[3] ४००)

रजपूत कुंभार षाती बांणीया बसै। अरट ४, कोसीटा १२ सेंवज।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
५०) ४१०) ४१०) ५८६) ३२६)

१ नवसरौ २५००)

पटेल बांणीया रजपूत[4] बसै। कोसीटा ५० तथा ६० फेर सु हुवै। ऊनाळी वीघा ३०००।

---

१. धुब। २. ५१७। ३. फेकारियो। ४. बडो गांव (अधिक)।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१७५)	२३८५)	६६०)	१५०)	९६६)

१ भंवरी १५००)

रजपूत पटैल बांणीया बसै। ऊनाळी बीघा ४००, सेझो नहीं। तळाव रै वेरै पीवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	११०)	११२२)	४७)	१३७७)	४३५)

१ कुलग्रांणो १०००)

रा० मुकदसी कीसनसींघोत री बसी रा घर ४०। कोसीटा १८ सेंवज हुवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	४१०)	२६२)	५७६)	४९५)

१ उदरा ७००)

रजपूत बसै। कोसीटा १५ सेंवज हुवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४५)	१७०)	२८३)	५७४)	४१०)

१ गोधावासण ५००)

मुकंददास री बसी[1] अरट १, कोसोटा ५, सेंवज हुवै। घर १५०।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४०)	१७०)	२१५)	४४२)	४१०)

१ सुंगाळियौ ५००)

रजपूत बांणीया पटैल रैबारी बसै। सेझौ नहीं। नवसर रै उना पीवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३०)	२००)	४०)	१७५)	२०४)

---

१. रा० मुकंददास सादुळोत री बसी।

१ सहैदरीयौ ५००)

पटैल रजपूत बसै। कोसीटा ४ सेंवज बीघा १०० ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

५०) २३६) ९७) ४३४) २६१)

१ पगथारी ५००)

पटैल रजपूत बसै। अरट ३, कोसीटा ४ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२५) १७२) ७०) २५४) १४३)

१ राषांणो ४००)

रा० राजसिंघ राघौदासोत री बसी। घर १०, कोसीटा ८ सेंवज बीघा १०० ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१०) २१०) १५६) ७) २१०)

१ नीबलौ ४००)

बांणीया बांभण मैणा बसै। रा० रामसिंघ दलपतोत री बसी। घर ४५, अरट १ मोतीसरां[1] मैं वंट बीघा १००० ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

४०) २२१) १००) ६२५) ३६०)

१ षांभी ४००)

रजपूत बसै। नवसरो पीवै। सेभी नहीं।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२०) १४६) ४०) १५१) १

१ वाघुंदो ४००)

रजपूत बांणीया बसै। कोहर १ षारो।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

० १४६) २५) १०५) ८१)

---

1. चारणों के याचक जो अच्छे कवि भी होते रहे हैं।

१ तोडवी २००)

रा० बिहारीदास कुसलसिंघोत री बसी। घर ३०, गिरवरीये बाहाळै पांणी पीवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२१)	३७)	५०)	१०५)	१००)

१ कुडली १५०)

चारण बांभण बसै। नदी री वेरीयां पांणी पीवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	५०)	२५)	२२५)	१५०)

१ कालां री पादर २००)

देवड़ौ नणराज नराईणदासोत री बसी, घर ४०। नवसरै पीवै

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३०)	३५)	२१)	१०५)	३५)

१ घांणा ७००)

पटैल रजपूत बांणीया बसै। अरट २ षारचीया नदी पीवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१४०)	८४२)[1]	१७०)	७४५)	३६१)

१ सीहराणो ६००)

पटैल रजपूत बसै। कोसीटा ८, चांच ४ ऊनाळी बीघा १५०

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	३१६)	२२४)	५५६)	३४०)

१ बीजलो ४००)

पटैल बसै, घांघा भरलै पीवै। सेझो नहीं।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६५)	६१२)	२४)	५८४)	३२४)

---

१. ४४२)।

१ गोयंदळाव १५००)

पटैल मैणा बांभण बसै। ऊनाळी मोतीपुरा में बीघा ८०० हुवै। कुवौ १ षारौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	७५)	५९५)	३८)	७०८)	२३५)

१ पातीवास २ १०००)

रजपूत बांभण बसै, कोसीटा ९, चांच ५। ऊनाळी बीघा २००।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२००)	४६०)	३१४)	५०१)	४२५)

१ जैतपुर[1] १२००)

अरट १, कोसीटा ३१, चांच १०। दुसाषौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३८०)	५३५)	८७५)	१४२३)	७८६)

१ घीगांणो ५००)

पटैल रजपूत बसै। कोसीटा १०, चांच ५।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२५)	२६२)	११६)	४७२)	४९५)

१ वीणंण ६००)

पटैल रजपूत बसै। तळाव रै बेरे पीवै। सेझौ नहीं। बीघा २००।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२७)	२१०)	८०)	६८०)	१५२)

१ बुढांवाई ६००)

रा० दयाळदास नराणदासोत री बसी। घर २५, कोसीटा ४, चांच ५।

---

१. पटैल रजपूत बांभण कुंभार बसै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
११०) १५५) २०) २२१) १४१)

१ बावड़ी ५००)

पटैल राजपूत बांभण बसै । नवसरीये पोवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
३५) १४२) ३०) १५५) ६२)

१ रेवड़ा ५००)

सीधला रांणा सुंदर पेमोतरी बसी । घर ३० कोसीटा २ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१०) १६१) १४६) १२५) १३३)

१ हाजावासणी ४००)

भगवान रांमोत री बसी । कोसीटा १० ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
५०) ६३५) ७०) ५८०) २७५)

१ वांकली ४०)

रा० गोपाळदास उदैसिंघोत री बसी घर ५० चांच ४ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
४०) ४०२) २५) १५६) १६०)

१ दुधीयौ ४००)

बांभण मेणा बसै । घर ५५ नवसरै पोवे ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
३८) १५५) १२०) २६०) ११०)

१ वुसीयाछलो[1] ३००)

रजपूत बांणीया पटैल बसै, देवड़ा वगैरै[2] री बसी ।

---

1. वुसियाथळी । 2. ऊभरा ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	०	४७)	०	१००)	११०)

१ रेवड़ा २००)

कुंपा रा रजपूत घर ५ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	०	४१)	२६)	४५)	४५)

१ गिरवरीयो २००)

रा० सुंदरदास प्रथीराजोत री बसी । घर २०, कोसीटा १२ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४०)	१७०)	३२२)	४३१)	१९९)

१ डुमरी २००)

रा० जगरूपराम सादुळोत री बसी । घर ३० नदी री बेरीयां पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४०)	११३)	२१५)	१३५)	११०)

१ भींडर १५०)

रा० लषमण सादुळोत री बसी रा घर ६० कोसीटा ८ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५०)	११६)	२९६)	१०३)	११०)

५४

२६६. ३० सूना षेड़ा माजरे—

१ कोरणो ५००)

षेड़ौ सूनौ बांभण रा लोग षड़ै ऊनाळी वीघा ५०० ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५०)	२७२)	३०)	२७१)	१८०)

१ माहल वावड़ी ५००)

उदरा रा लोक षड़ै, ऊनाळी बीघा ४०० ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	१७०)[1]	२०)[2]	१००)	११०)

१ मालगढ ५००)

भाषर माह वलतो हिमै सूना षेत पड़ीया छै।

१ मुलेव ४००

सीधलांह ठाई[3]

१ सोलां रो वाड़ो ३००)

घांणा मांहे

१ थांपण २००)

रहेपां[4] री जोड़ छै।

१ कुवरड़ो पुरद २००)

षवर नहीं, सांसण रै गांव भेळो वसै।

१ खेड़ा २००)

नरवद री वाघेलां रै रवड़ा माहै मांजरे।

१ सासर ढंढ १५०)

सरवड़ी नवसर वीच १ ढंढ छै।

१ पातुवास ५०)

षवर नहीं।

१ घोसारीयो २००)

षवर नहीं।

१ पासा कोलर १००)

षवर नहीं।

१ भाषरी ५०)

षवर नहीं।

१ दाती ५०)

षवर नहीं।

---

१. १७७)। २. २००)। ३. सीधलां हेठै गई। ४. राहमां।

१ उमकळी ५००)

भींडर फुरछांणै[1] रा लोक षेत षड़ै, ४ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२०) ३५) १२०) १००) १००)

१ झोटांणो ५००)

भीडोल री लोक बावै[1] ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२२) ५००) ३२०) १६२) १६०)

१ देवासण ४००)

षेत ४ छै गोधावास रा खेत बावै ।

१ गोठड़ो ४००)

भाद्रजण तळाव छै ।

१ ठाकुरवास ३००)

वरवा में ।

१ सहेलड़ी २००)

हाजावास में षड़ै छै ।

१ डीरी २००)

गोधावास रा रजपूत षड़ै छै । षबर नहीं ।

१ नहेरवो २००)

षबर नहीं ।

१ आकलड़ी १५०)

पगथरी में ।

१ छड़ी ५०)

भाद्राजण रै भाषर मांहे षेत पड़ीया छै । गोईंदळाव माहे ।

१ सीहै री पदर १००)

कंवलां रा लोग षेत षड़ै ।

---

१. कुलथांणा ।

---

1. खेत जोतते है ।

१ धणरी ५०)

षबर नहीं ।

१ वोलीया री भाषर १००)

१ चंडा १००)

षबर नहीं ।

१ भोजावास ५०)

षबर नहीं ।

१ ईटाले ५०)

षबर नहीं ।

३०

२६७. ६ सांसण

५ बांभणां नुं—

१ धुवलेरीयो[1] ४००)

राव मालदे री दत्त प्रा: राइमल षेतावत नुं पटैल रजपूत बसै । अरट ४ कोसीटा ५ हुवै । हिमैं भोपत गुणेस छै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
९०)	११०)	३९०)	६०५)	३०५)

१ नहेरवौ वडौ २००)

राव श्री मालदेजी री दत्त प्रा: थाढा गुदवच नुं । हिमैं जैतमाल[2] छै । बांभण पटेल बांणीया कुंभार बसै । ऊनाळी वीघा ३०० । सेझो नहीं, वेरां पीवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	६५)	३०)	२५०)	३००)

१ कंवारड़ो १००)

रा: पती गंगावत री दत्त । वा: सहेसा सीनल[3] कुतब नु[4] बांभण बांणीया कुंभार मैणा बसै । कोहर १ काबरड़ै पीवै ।

---

१. धवलोरीयो पुरद । २. तेजमाल । २. सातल । ४. कुरब, हिमैं साबोमान छै (अधिक) ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	४५)	११०)	१२५)	१००)

१ सुकरलाई १००)

सींधल वीर री दत। बाः षेतौ वोलावत उजागरवाळ बांभण राः मोहणदास भोजराजोत री बसी रा घर ९०, कोसेटा १० चांच ४ हीमें सुंदरा रा छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	५५)	२५)	११५)	१००)

१ महीलावाई षुरद १००)

राव श्री मालदेजी री दत्त बांभण आवौ षींवावत सोपाउ नुं। बांभण रजपूत बसै। चांच २ सेंवज चिणा हुवै। हिमें राईसिंघ छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५१)	८५)	५०)	७५)	२०१)

५

२६८. ५ चारणां नुं सांसण छै।

१ कुंवड़ो १५००)

सींधल चांपा मैणावत री दत्त काछेसा नाये सुर दुबड़ौं। कसबौं चारण, बांणीया सगळा पवन जात बसै कोसीटा २० हुवै हिमै भोजराज छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
११०)	७२०)	६१०)	८२५)	१०५०)

नेसड़ो ५००)

सींधल वीसळदे वीरावत री दत्त, आसीया मेलौ गोगरढराउ चारण बांणीया पटेल बसै। अरट २ कोसीटा १२ चांच ४ सेंवज हिमें जेसौ पीवौ मानावत छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
९०)	२१०)	७०)	१८०)	१५०)

१ वसी २००)

राज श्री सुरजसिंघजी रौ दत्त आसीया मांन रांमावत नुं. पटे बांभण रजपूत बसै। सेंवज वीघा १००। हिमें जसौ पीथौ आसीय छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३०)	७२)	२०)	११५)	२१२)

१ मोतीसरी २००)

राजा श्री उदैसिंघजी रौ दत्त, वणसूर सिवदास सोभावत नुं पटे चारण बसै। कोसीटा ४ सेंवज षेत ४। हिमैं कांन लिषमीदास छै।

संवत	१७१	१६	१७	१८	१९
	१०)	३५)	१०)	६७)	६१)

४

९

२६९. विगत

५६ आवादीन बसता, ३० सूना षेड़ा मांजरै, ९ सांसण।

९५

तफै दुनाड़ै

१ दुनाड़ो षास वास ३०००)

१ दुनाड़ो

१ षतेसर[1] वसै

१ जेसौ वसै

३

महाजन घांची रजपूत जाट वसै। कोसेटा ५० अरट १० चांच ४०, वडौ कसबौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१९९१)	९५८)	१९०४)	१९२१)	११७०)

१ मजल ४०००)

१. ब्तेसर।

पटेल बांणिया बसै । अरट २० कोसीटा ३० । बडौ गांव ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
८२०)	२७६५)	४२००)	३८७१)	०

१ पीराटीयो ४०००)

पटेल बांभण रैबारी बसै । कोसीटा १००[1] अरट ३ चांच ४० । दुसाषौ, सारी सींव सेझो ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५४०)	२५५५)	२५३६)	१४१२)	०

१ दुदां रौ वाड़ौ २०००)

पटेल रजपूत बसै । अरट ४ कोसीटा ३० चांच ६ दुसाषौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०)	४६५)	२८९)	२९६)	६२०)

१ ढीढस १४००)

पटेल रजपूत बांणिया बसै । अरट १ कोसीटा २६ चांच २, दुसाषौ । ऊनाळी वीघा १०० । भलौं गांव ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४५५)	१४६०)	२३७५)	२४२२)	०)

१ पींपळी १५००)

पटेल जाट रजपूत बसै । सेझो नहीं, कौहर १ मीठौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४७)	९५०)	१६२)	१२०९)	३५४)

१ रोहैचो पटेलां री १०००)

पटेल कुंभार रजपूत बसै । कोहर १ डुनाड़ो जैताकोहर पीवै, घणौ मीठौ ।

---

१. ११०।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
६२६)[1] १०६०) १४०) ६४९) ६६७)

१ दुधीयौ ६००)
पटेल बांणीया बसै । अरट ४ कोसेटा ४ हुवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२११) ४५०) ३४३) ४४०) ५३७)

१ रहैनड़ी ६००)
पटेल रजपूत बसै । कोसीटा ४ चांच १० हुवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१२५) ३७०) ११९) ३७६) ३६०)

१ गोयंद रौ वाड़ौ ५००)
पटैल बसै । अरट ४ कोसीटा ४ हुवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
४०) ३८५) १६०) २८८) १६२)

१ महेस रौ वाड़ौ ४००)
जाट बसै, कोसीटा १० ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२०) १४५) ५६) २९०) २४८)

१ ढाढीयां रौ वास ३००)
पटेल बसै । कोसीटा २०, चांच ४ छै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१२५) ३८०) ४३७) ४०६) ४०५)

१ गोधां रौ वाड़ौ ३००)
पटेल रजपूत बसै । कोसीटा ६, चांच हुवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
३५) १६३) १६४) २५३) १८३)

---

१. ६३६ ।

१ पातां रौ वाड़ौ १००)

पटेल रजपूत बसै । कोसीटा ९, चांच १० हुवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१६८)	४८७)	३९३)	६२८)	३९३)

१ भाचरणो १५००)

पटेल जाट रजपूत बसै । कोसीटा १४ चांच १० सेझो घणौ, दुसाषौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१००)	४३५)	५३६)	६३८)	५३९)

१ रोहीचो जाटां रौ १०००)

जाट रजपूत बसै । पीपळला रै तळाव पीवै, कोहर नहीं ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१३०)	७९०)	१६५)	८२०)	६६०

१ डाभली[1] ९००)

पटेल रजपूत बसै । तळाव रै वेरां पीवै । सेंवज षेत ८ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	१५१)	७०)	१२४)	११५)

१ कांमा रौ वाड़ौ ७००)

पटेल रजपूत बसै । कोहर १ मीठौ पांणी, सेझौ नहीं घोराबंध षेत छै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	९
१२५)	५९५)	५५)	५८५)	४४१)

१ भलड़ां रौ वाड़ौ ८००)

जाट बांभण वांणीया रजपूत बसै । अरट ४ कोसीटा १० ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
७४)	४०८)	२१२)	६५४)	३५९)

---

१. डाभड़ी ।

१ भांनारी वाड़ौ ४०)

पटेल कुंभार रजपूत बसै । कोसीटा ४ चांच १० ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१४)	१८१)	२३०)	३६८)	१२१)

१ षेजड़ीयाळी ५००)

पटेल कुंभार बसै । कोहर १, तळाव रै वेरै पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३०)	३६०)	५०)	५६१)	३७६)

१ सोमढंढ ५००)

जाट रजपूत बसै । कोहर १ षारौ, सेंवज षेत १० छै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१७)	१५१)	२६६)	४०९)	२८१)

१ चरडीयो ४००)

रजपूत बसै । कोहर नहीं, कोस १।। लूणी पीवैं ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४०)	१६०)	४०)	१५१)	२५७)

१ कागनडो ३००)

जाट बसै । कोहर नहीं, दुनाड़ै जैता कोहर पीवैं ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	१२४)	५२)	१६७)	११८)

१ समुजो ३०००)

पटैल रजपूत बसै । कोसीटा २० सेंवज बीघा ३०००[1] ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	७५)	१४६०)	२७४)	२१३६)	८११)

१. १०० ।

२७०. ६ सूना षेड़ा मांजरै

१ जगमाल रौ वाड़ौ ३००)

१ सनेही दुनाड़ै में २००)

१ दहीयां रौ वाड़ौ २००)

१ तीरजाली पींपळी में ३००)

२ षेजड़ीयाळी रा वास

६

२७१. ५ सांसण—

२ बांभणां नै

१ गैलावास षुरद १५०)

राजा सुरजसिंघजी रौ दत्त सिरीमाळी व्यास जागेसर किसनदासोत नुं। हिमें रिणछोड़ नीलकंठ रौ छै। जाट कुंभार बांभण बसै। कोहर १ षारौ, लुणावास पीवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	१२०)	३५)	१२५)	१०२)

१ अरट नडी २००)

राव चंद्रसेन रौ दत्त। बांभण गोपाळ वेळा रौ आचारज नुं[1]। कुंभार बांणीया बसै। कोहर नहीं षेड़ापे रै वेरां पीवै। हिमै उदो किसना रौ छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४५)	२०५)	७०)	१२५)	१८०)

२

२७२. ३ चारणां नुं छै

१ लाषण छुंभ[2] ३००)

रा० पता नगावत रौ दत्त, आसीया दला चोभावत नुं। हिमैं

---

१. फदर नुं। २. थुंभ।

जोगौ सेसमलोत छै। चारण बांभण बसै। अरट ४ कोसीटा १०० करै जितरा।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	२८०)	७५०)	४२५)	०·

१ सरबड़ी सींधलां री २००)

रणधीर कोभावत रौ दत्त। चारण बोकसी सांकर भैरावत नरबदोत नुं। हिमै कलौ रांमदासोत छै। चारण पटेल रबारी बसै। बास २, कोहर नहीं। पार री बेरीयां पीवैं।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५)	११०)	६०)	३००)	२००)

१ लेलावासणी २००)

राजा सुरजसींघ रौ दत्त चारण दांना मोकल रा रतनुं नुं नै हिमैं लिषमीदास मेघराजोत छै। पटेल पलीवाळ बांणीया जाट सीरवी चारण बसैं। कोहर १ षारौ, नदी पीवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५०)	२७२)	१७०)	२१५)	११०)

३

५

गांव ४४

२७३. तर्फ कोढणै रा गांव

१ कोढणो षास २०००)

बास ४ माहे ३ सूना। बांणीया बांभण कुंभार बसै। सेंवज चिणा गेहूं षेत २०, सेभो नहीं, तळाव रै वेरां पीवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	५८५)	८६०)	८५४)	६०२)

१ जवणादेसर १५००)

जाट बसै। कोहर १ षारौ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	१७०)	५३)	४३८)	१५२)

१ जोलीयाळी १०००)

बास २ बिसनोई बसै । कोहर १ षारौ । राजवै पीवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६०)	१७१)	२२१)	१२१५)	९५३)

२ वंभौर १०००)

बास २, जाट रजपूत बसै । १ पटेलां री । २ घांघल वास । सेंवज वीघा २००), कोहर नहीं । नदी रा बेरां पीवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१००)	८३८)	३००)	६५१)	५८१)

१ जासती ७००)

पटेल बांणीया रजपूत बसै । सेभो नहीं । सेंवज बीघा २०० । बैरी पीवै वेहले री ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
९०)	३६२)	१२२)	२६२)	२००)

१ डोहळी ६००)

रजपूत विसनोई बसै । कोहर नहीं ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५)	२७८)	६७)	७८)	१५०)

१ छाछेळाई ५००)

जाट बांभण रजपूत बसै । सखड़ी सींहछली पीवै, पांणी नहीं ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३०)	४७०)	८९)	३०३)	२०७)

१ वालाउ ५००)

रजपूत बसै । कोहर षारौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	११०)	७०)	११०)	५०)

१ जाषणसर वास २ ४५०)

१ बांणीया वास　　　१ देवणंद बुधरौ

२ रजपूत बसै । सेंवज षेत बहूले[1] ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	५८०)	११४)	०	०

१ चींचड़ली　　　४००)

जाट बसै, कोहर १ षारो ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१२)	९९२)	१६६)	३२९)	१२८)

१ मंढली　　　४००)

बांभण रजपूत बसै । कोहर नहीं, बाघावास पीवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	४९४)	१८९)	५९०)	३६६)

१ पालड़ीयां　　　४००)

बांभण रजपूत बसै । कोहर नहीं, षेत १० सेंवज, बडो बास पलीवाळ रो ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	१८४)	४९)	१५०)	१२५)

१ बडनावौ　　　५००)

मुसला बसै, कोहर षारो ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	४००)	११०)	५०)	११५)

४ बणली　　　३००)

बास ४ रजपूत बसै ।

१ बडोबास　　　१ देवड़ां रौ

१ चवाणां रौ　　　१ गहेलोतां रौ

४　　　कोहर नहीं, नाछणो कोस ५ पीवै ।

---

1. सेंवज खेत ६ हुवै वाहलां रा वेरां पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५०)	२६४)	१४६)	१३०)	२५०)

१ सींवरषीयो ३००)

बांभण मुसला बसै । कोहर नहीं । बाघावास पीवैं ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	६)	१००)	४०)	४०)	५१)

१ सोनगरी २००)

जाट बसै । कोहर नहीं ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	७)	३५१)	८६)	२००)	१००)

१ नेढलो २००)

बांभण बसै । बाघावास पीवैं ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५)	३२२)	५२)	२८१)	५१)

१ ढांढणीयौ बास २ २००)

रजपूत बसै । कोहर बुरीयौ छै[1] । राजवै पीवैं ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३६)	१०४)	१००)	२७५)	५०)

१ गोपावासणी २००)

रजपूत बसै । कोहर १ खारो, चंवडाय पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	८०)	२०)	३२२)	१४२)

१ रावड़ी[1] १५०)

जाट चारण बसै । तळाव रै वेरै पीवै ।

---

१. रावड़ियो ।

---

1. रेत से पट गया है ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१०) १५०) ४०) ५०) ५०)

१ मोडीथळी षुटीथळी[1] १००)

रजपूत बसै लुणावास पीवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
५) २०) ८०) ९१) १०)

१ बावळली १५००)

बांणीया रजपूत बांभण बसै । रैंज[2] रा षेत २० सेंवज, कोहर ८ मीठा ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२२७) १४४१) ३३१) १०४५) ८५८)

१ गीगाहौ १०००)

बास २ कहीजै । बांभण बसै । ऊना बीघा ७०० । कोहर १ षारौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२३) १७७८) १२१) १२१०) ७२६)

१ नेवरी १०००)

पलीवाळ बसै । कोहर नहीं, बाघावास पीवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
८०) ९५५) २५२) ७००) ३५०)

३ बाघावास, बास ३ १०००)

१ बाघावास

१ पतासर

१ हेमावास

———

३

---

१. बुढी कली । २. रेल ।

रजपूत बांणीया वसै । रेल बीघा १५०० सेंवज । बावड़ी[1] मीठी पीवै[2] ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१००) ७६०) ५१४) ६८७) ६८५)

१ आसरावौ ६००)

वास ४, रजपूत बांभण बसै । सेंवज षेत २, कोहर नहीं सीवांणा रै आसरावै पीवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१०) १००) १००) २६०) २००)

१ लोहरड़ी ६००)

बांभण बसै । कोहर नहीं, राजवै पीवै । एक साष छै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
६०) ३९४) ७२) ५१६) २००)

१ पोपावास ५००)

जाट बसै । कोसीटा १५, चांच २० छै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
५५) ६९०) ३६५) ३७०) २०२)

१ राजवो बास २ ५००)

रजपूत बसै ।

१ राजवो १ मकत री ढांणी । कोहर मीठौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
३०) ३२०) १७०) १०३) २००)

१ तोलीसर ५००)

बांभण बसै । षेत १ बीघा ५० सेजै बावळली पीवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२०) २००) ८६) १२२) १०१)

---

१. बावाड़ी । २. मीडे पीवै ।

१ हींगोलो ४००)

रजपूत बसै, कोहर नहीं, राजवै पीवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३०)	८०)	७०)	१०५)	१००)

१ नागाणौ ४००)

रजपूत बांभण बसै, कोहर १ मीठौ[1] ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५)	१४१)	१११)	१७३)	४१)

१ सोयंतरो ३००)

रजपूत बसै । कोहर मीठौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
७२)	५००)	११०)	५०)	१०५)

२ भांडु वास ४ छै ३००)

१ बडौ वास १ गोगादेवां रौ कोहर मीठौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३०)	२७५)	१४०)	३४६)	१००)

१ चांदा रौ वास ३००)

रजपूत बसै । कोहर नहीं । सखड़ी[2] पीवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
०	०	०	१९३)	११२)

१ दिहुरीयो २००)

बांभण बांणीया बसै । कोहर १ मीठौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६५)	२३७)	५३)	१७५)	७१)

१ मेघलावास

रजपूत बसै, कोहर १ राजवै पीवै ।

---

१. कोहर २ मीठा सखरा । २. बरवड़ी ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४१)	५६)	११०)	१००)	१७५)

१ चंदरोही २००)

रजपूत बसै । षेत २ सेंवज, कोहर १ छै, बुरीयो छै । देहुरीयै पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१२)[1]	१८१)	७५)	१६१)	१००)

१ वाकीबाहौ २००)

रजपूत बसै । कोहर षारौ, तळाव रै वेरे पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५०)	२३५)	१७५)	२१०)	५१)

१ दुदाविरौ १००)

रजपूत बसै । कोहर मीठौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३२)	५१)	७०)	७१)	५१)

१ रौढवौ ३००)

वास ४ कहीजै ।

१ बडौ वास १ भोजा रौ

बांभण बसै । बालाउ पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	५९७)	१०४)	३२)	३०१)

५३

२७४. १३ सूना षेड़ा मांजरै छै ।

१ आकेली २००)

वाघावास केलणकोट बीच[2] षेत पैड़ौ नहीं ।

१ षींपलो थळ छै । १००)

---
१. ८२ । २. पीवै ।

कोटणौं रा बाहै छै[1]।

२ रोढवा रा वास — १ जसां रौ। १ सुजा रौ।

१ गांगाह रौ वास – वाहाळी रौ।

१ ढांढणीया रौ वास–कुलरीया रौ।

१ कांना गोधा रौ वास, चींचड़ली रा लोग बावै। १००)

१ सेवली री भाषरी छै, कोढणां रा षड़ै छै। ६०)

३ कोढणा रा वास — १ चेलेळाई १ डाहा वासणी
१ ऊदा रौ वास

१ भीछालो। १००)

१ लोहरड़ी वास राजवा कनै।

१३

२७५. १६ सांसण गांव तर्फै कोढणा रा।

१० बांभणां नुं—

१ भाटेळाई षुरद १५०)

राव चूंडा रौ दत्त, बां० ताराईत नै मांडा सीहावत नुं। बांभण वसै। सेंवज षेत ३।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	७५)	३०)	२०५)	१२१)

१ डोहळी षुरद १५१)

रांणा देवीदास बीजावत रौ दत्त, बां० गोदा कोहावत नै वीस हेमावत नै। दूदा कांनावत नुं हेंसा ३। बांभण वसै। कोहर १ मीठौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	१९६)	१२१)	१००)	१५०)

१ हींगोलो षुरद १००)

राव चूंडा रौ दत्त बां० महेराज सीहावत नुं। हिमैं दमोदर छै।

---

१. कोठणै रा रजपूत खेत खड़ै।

कोहर १ षारौ। चारण घर १० छै।

संवत	१७१५	१६		१८	१९
	१५)	८०)	३५)	१५०)	६१)

१ सोढा बांभण रौ वास ८०)

रा० ईहड़[1] री दत्त प्रा० पीथड़[2] नुं पड़ीहारां री बाहर मैं दीयौ[1]। कलौ बाघौ नेतसोत बसै। कोहर १ छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	८०)	३५)	६०)	४०)

१ मेघावास १५०)

जाषणसर रौ वास। रा० हीषा जैतमलोत रौ दत्त, सोढा बांभण घीघा नुं। हमैं दुपौ[3] जीवावत बसै। नागाणै पीवै। बांभणां रा घर १५ छै।

१ नागाणौ री बास ५०)

रा० भारमल जोधावत रौ दत्त, प्रा. रणमल अणदोत पुरणायचा आचारज नुं। हिममैं प्रा० नाथौ टीकम रौ छै। घर ६।

१ तोलीसर षुरद १००)

राव जोधै रौ दत्त प्रा० पीथा देदावत केसरीया नुं। हिमैं हापौ किसनावत छै। घर १५ छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	१२०)	६५)	१५०)	६१)

१ आसरावौ १००)

रा० भारमल जोधावत रौ दत्त, प्रा० नाढा दामावत नुं, हिमैं मांडण हरदासोत बसै छै। घर ३०[4] छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१६)	७०)	३५)	२००)	१००)

१. घूहड। २. छोपड़। ३. रूपौ। ४. ३।

1. पड़िहारो के समय का दिया हुआ।

१ बाकीवाहो षुरद १००)

राणा देवीदास बिजैपाळोत रौ दत्त प्रा० देवा केलण राजगर वाळ[1] नुं, हिमैं तेजसी पोमा रौ बसैं । घर १६ छै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१२) ६०) ४०) १००) ५१)

१ लोरड़ी षुरद १५०)

राव मालदेजी रौ दत्त प्रा० टोहा षेतावत पालीवाळ नुं । हिमें दुपो[2] जसपाळ रौं छै। घर १६।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१५) ६०) ७०) ७०) १५०)

१०

२७६. ७ चारणां नुं छै—

१ करांणी १५०)

उहड़ मांडण गोपाळदासोत रौ दत्त, धीरण माला कचरावत नुं। कोहर १ पांणी भळभळो छै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१०) १५०) ३०) १५०) ८०)

१ ढांढणीयो षुरद १००)

राव चूडा रौ दत्त वसड़ो जीमौ हरावत लाधौ, हिमें घरमो लालारौ छै[3] । बडे ढांढणवे पीवैं ।

१ षोनावड़ो १००)

उहड़ जैमल नेतसोत रौं दत्त । आसीया दूदा अमरावत नुं । हिमें सादूळ रूपा रौ छै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२५) १४५)[4] ३४) ४०) २१)

१. जागरवाळ । २. रूपौ । ३. लघरमो लोला रौ छै । ४. ११५)

१ भुंडुरौ वास ५०)

राव चूंड़ा री दत्त, रोहड़ीया बाबट आलावत री लाधा नुं। हिमें दुदौ डुंगरोत छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	४०)	२०)	४०)	५०)

१ भाटेळाई बडी ५००)

राजा गजसिंघ री दत्त, लाल षेतसी परवत[1] नुं। बांभण रजपूत चारण बसै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१६५)	२१०)	१२०)	२२५)	१२५)

१ छुबली (थुबली) १००)

रा० जैतमाल षाषावत री दत्त, गाडण पीथा भांणावत नुं। हिमें वीरम कमौ[2] छै।

संवत	१७१	१६	१७	१८	१९
	१५)	११०)	७०)	९५)	५०)

१ बाळा १००)

उहड़ नैतसी काजावत री दत्त, आसीया हमीर पुनावत नुं। हिमैं राघौदास नें सूरौ छै।

७

२७७. २ भोपां नै—

१ आसरवा रौ वास १००)

रा० भारमल जोधावत री दत्त, भोपा[1] देवसी राठौड़ नागणेचा जी री भोपौ। चांपो गेला बसै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	१००)	१०)	१००)	१०१)

१. परबतोत। २. कमावत।

1. देवी का पुजारी, जो देवी की इच्छा के अनुसार पुजारी का कार्य स्वीकार करता है।

१ नागाणा रौ वास १५०)

रा० कीलांण[1]रायपालोत रौ, सोढा बांभण नुं दीयौ थौ। पछै आं भोपा पुजारी नुं दीयौ। देवसी भोपा रा पोता नुं षेत १ छै।

२

१६

८५

२७८. तर्फै बहेलवा रा गांव

४ बहेळवो वास ६

ता मैं वास १ वाघावतों रा वास। रजपूत बांणीया घर ६० तथा ७०, कोहर १। १५०)

१ देभावतां रौ, रजपूत बसै १००)

४ जां में वास ६ माहे

५ सूना षेड़ा मंडे छै।

३ बहेळवौ

नींबा रो वास ४ ता माहे बास १ ऊजड़ छै।

१ जैतावतां रौ वास १००)

रजपूत वसै, कोहर १ नींबा रो।

१ झींझणीयाळो १००)

रजपूत बसै।

५ रा षेड़ा सूना मांजर छै

१ जैतावता रौ बास। जाट रजपूत बसै। कोहरी छै बांणीयां।

१ भांडावै रौ जीवै रौ बास, रजपूत बसै

१ नरबदे रौ बास १००)

रजपूत वांणीया बसै।

३

५ वालसीसर वास ६ तां माहै वास १ सूनौ मांजरै छै।

१ गोगादेवांरौ वास १५०)

रजपूत कुंभार बसै। बावड़ी २ पांणी मीठौ, अरट २ छै।

---

1. केलण।

१ सतावतां री बास २५०)
रजपूत बांणीया बांभण बसै । बेरो ४ वाहाळा में ।
१ महेरावण री वास १५०)
कोहर १ महेस वेरै मीठो पांणी ।
१ कुई री वास २००)
रजपूत षाती कुंभार बसै । कोहर १ मीठो ।
१ चोहथ री वास २५०)
बाडी री पलीवाळ बांणीया मुसला[1] बसै । कूवो मीठो ।

५

३ गांव भाळु रा वास ४ तामें बास १ सूनो मांजरै छै ।
१ बडो वास ३००)
रजपूत बाणीयां षाती बसै । कोहर १ रात बुहो[2] ।
१ रतना री बास १५०)
जाट रजपूत बसै । रात बांधै पीवै ।
१ लोलां री बास १५०)
तालम री, रजपूत बांणीयां कुंभार बसै । कोहर रात बंध ।

३

४ गांव बसतवा रा वास ४
१ बसतवो बांणीया वास २००)
रजपूत बसै । कोहर बसतवो ।
१ सुंडा री वास १५०)
बांणीया रजपूत बसै ।
१ डेहरीयौ १००)
रजपूत बसै । कोहर १ मीठो पांणी । बसतवै पीवै ।
१ सांषलां री वास १००)
रजपूत बसै । डेहरीयै पीवै ।

४

1. मुसलमान । 2. रात को चलने वाला ।

३ षुडीयाला वास ४ ता माहे वास १ सूनौ मांजरै ।

1 वडो बास ४००)

ईंदारौ, रजपूत पलीवाळ बसै ।

१ चिड़वाई भेळी ५०)

पलीवाळ रजपूत बसै ।

१ बडौ वास माला रौ ३००)

बुधा रौ माहे भेळौ[1] रजपूत बांणीया बसै ।

३

२ गांब देवातु बास २ ५००)

कोसीटा २ पांणी मीठौ ।

१ बडो वास ३००)

रजपूत बसै ।

१ कुंभारां रौ वास २००)

रजपूत बसै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	१००)	१११)	३४०)	१००)

२ गांव गोपाळसर वास २ ५००)

कोहर १ मीठौ पांणी ।

१ वडौ बास ३००)

२ कालुवां रौ वास २००)

रजपूत बसै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
९०)	१२५)	१५४)	२००)	१५०)

२ गांव संथोड़ा २ जुदा षेड़ा

१ संथोड़ो वडो ४००)

रजपूत बसै कोहर १ बुही गांव पीवै ।

1. शामिल ।

१ संथोड़ो षुरद २००)

रजपूत बसै। कोहर १ दोनूं गांव पांणी पीवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	१००)	६५)	१२३)	१०७)

२

३ गांव आगोळाइ रा वास ४

१ आगोळाइ नै चित्राली ८००)

जाट बांणीया बसै। कोहर १ षारो, ऊनाळी बीघा ७००।

१ उदीवास ३००)

जाट बसै। कोहर नहीं, बावळी पीवै।

१ कोनरी ३००)

रजपूत बसै। कोहर नहीं, बावळली पीवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१२)	१२५)	३६)	२७५)	१००)

३

१ दुगरां वास ३, ता मांहे वास २ सूना मांजरै। २०००)

पलीवाळ बांणीया रजपूत बसै, ऊनाळी सेंवज बीघा १००० गेहुं हुवै। सेझो नहीं। बावळली पोपावास पीवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१४४)	१०००)	५४०)	१११५)	४०५)

१ सुरांणो बडी ४००)

रजपूत बसै। कोहर नहीं। जवणांदेसर भांडु पांणी पीवै। सेंवज बीघा २०० रा हुवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०)	४००)	१२५)	२१५)	२१०)

१ महैरीयौ २००)

जाट रजपूत बसै। कोहर १ मीठौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२३)	१००)	७०)	३८०)	१२५)

१ उटांबर ३००)

जाट बांणीयां रजपूत बसै। कोहर मीठौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५)	४००)	१५०)	३२६)	२१७)

३५

२७९. १५ सूना षेड़ा मांजरे

५ बेहेळवा रा वास ९, मैं वास ४ बसै बाकी ५

१ घड़सी रौ बास १००)
१ आसायचां रौ बास १००)
१ बोहौरां रौ बास १००)
१ षारड़ौ १००)
१ कुवलीयो १००)

५

३ झांझणीवाळौ वास ३ सूना गोपाळसर मैं १५०)

१ झांझणीयां वाळो[1]
१ नरा रौ वास
१ जांभा रौ वास

३

१ बहेळवै नींबां रौ वास माहलो वास, १ परबत रौ सूनौ मांजरैं। १००)

१ षुड़ीयाळौ बुधां रौ वास, मालां रै वास मैं १००)

२ दुगरावास सूना दुगरां मैं षड़ीजै।

१ छींकणवास
१ जेसावास

२

१. जीझणियाळो।

१ भाळु जैता री वास, भाळु में मांजरै। २००)

१ वालसीसर री वास गोगादेवां री। १००)

१ चीत्राळी आगोळाई भेळी बसै। २००)

१५

२८०. १२ सांसण रा गांव

४ बांभणा नुं—

१ सेपाउवां री वासणी २००)

राव जोधा री दत्त प्रा० भवणौ[1] रांमावत जेतसेपाउ आचारज, हिमैं कीसनौ बसै छै। बांभण बसै, कोहर नहीं।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१६
	२५)	५०)	२५)	५०)	६०)

१ केलरीयांरी बासणी १५०)

राव मालदेजी री दत्त, प्रा० राईसल राजावत नुं। हिमें कलौ जेसावत हरीदासोत छै। भाटी सुरतांण रहै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१६
	४)	२५)	१२)	२००)	१५०)

१ सुराणी षुरद[2] १००)

राव गांगाजी री दत्त। प्रो० सोमौ मदन जात सोथड़ै लाधो। हिमें कानौ अषौ तोगो छै। सेवज चीणा हळ ६।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१६
	२०)	५०)	३०)	५०)	४०)

१ घटीयाळो ४००)

राव गांगै री दत्त पिरोहित केसा कूंपावत नुं। हिमें जगनाथ ठाकुर गोपी छै। बांभण बसै। चांच ५ सेंवज षेत चिणा हुवै।

१. भवांणो। २. सुरतांणी।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	७०)	३०)	२००)	२५०)

४

२८१. ८ चारणां नुं—

२ चंचळाव[1] २००)

राव जोधाजी रौ दत्त, लाळस कान्हा उत्तमसीयोत नुं। हिमैं टीलौ सिवदास छै। वास २ छै, कोहर १ छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३०)	७२)	३५)	१००)	१००)

१ सुवेरी[2] १००)

राव जोधाजी रौ दत्त, लाळस कान्हा उतमसीयोत नुं चांचळवा साथे दीन्हो।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५)	६०)	२५)	१००)	७०)

१ चगांवड़ो आदु २००)

सांसण पड़ीहारां रो दत्त, पछै राव चूंड़ै कवीयै टीमके[3] गीथावत नुं दीयो। हिमें मेणराज चंड[4] बसै छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३५)	८०)	१३५)	२००)	५०)

१ जुढियो आदु ३००)

ईदा रांणा टोहु रो दत्त। पछै राव गांगेजी लालो सुरतांण सुजावत नुं दीयौ। वास ४ पटे, हिमें समुरसो राजो असर[5] छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४०)	१०५)	७५)	१००)	२५०)

३ वेराही वास ३ ४००)

---

१. चांचळवो। २. सुनेरी। ३. टीकम। ४. मेथारा चूंडो। ५. अमरो।

राव चूंडाजी री दत्ता कवीयै टीकम गीथावत नुं। हिमैं चावडै मेघराजोत मोटोला ईसरोत छै। तळाव री वेरीयां पीवै। चारण रजपूत बसै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३६)	९५)	१३०)	३००)	२५०)

८

१२

६२

२८२. तर्फ सेतरावौ

१ सेतरावौ षास २००)

बांणीया रजपूत सगळी पवन बसै। कोहर ३ मीठा।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१००)	६१०)	२७०)	६००)	४८०)

१ बुठीकीयो ४००)

रा० सुरतांण षेतसीयोत बसै। कोहर मीठा सागरी।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	७३)	११०)	५०)	१२०)	१५०)

१ नाथड़ाउ ६००)

रजपूत बांणीया बसै। कोहर २ सागरी।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	३१०)	२००)	१५०)	१२०)

१ गांव सेरड़ी २००)

रा० रासै कंवरावत री बसी। कोहर १ मीठौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	१२०)	६०)	७०)	५०)

१ दड़ौ[1] २००)

१. देड़ो।

रजपूत षाती बसै । कोहर १ मीठौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५)[1]	९०)	५५)	६०)	६०)

१ दुरजणसल री बास १००)

रजपूत बसै । कोहर २ मीठा ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०)	१००)	६०)	८०)	६०)

१ बाकरौ ४००)

बाणीया रजपूत बसै । कोहर १ मीठौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	१०५)	६०)	७१)	१००)

१ कलाउ रा बास १

संमत १७१६ री वसाही, रजपूत घर २० बसै छै ।

१ लोहरी धरती

उण ऊपर रजपूत वणीवीर देवराजोत रा पोतरा ठौड़ ३ बसै । देवातु पीवै, तळाव मास री पांणी[1] ।

२१

१ पुंगळीयो १००)

रजपूत बसै कोहर १ मीठौ ।

सवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३०)	०	०	३०)	५०)

४ लोंलटा रा वास ४

रजपूत बसै । कोहर १ मीठौ बेतीणो[2], सषरी वासद छै ।

१. २५) ।

1. तलाब में एक महीने के लिए पानी रहता है। 2 दो बार में जिससे पानी निकाला जा सके ।

४ असल रा १ पीथा रौ १ देवड़ा रौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०)	६९०)	२९५)	२००)	३८०)

१ पोलवौ ४००)

रजपूत बांणीया बसै । कोहर १ पांणी भळभळो ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३५)	१६०)	१६५)	१६०)	१२०)

१ लाषण कोहर २००)

रजपूत बसै । कोहर छै, पांणी नहीं, पीलवै पोवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	२१०)	१८०)	१५०)	८०)

१ भोजां कोहर २००)

रजपूत बसै । कोहर १ मीठौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३०)	१२०)	१४०)	१००)	५०)

१ अषीयां री बास

रजपूत तुरक बसै । सेत्रावा पाछौ कोस २॥ कोहर १ पुरस २० मीठौ । अषो वणवीर रौ वणवीर देवराज रौ ।

१ मंढीयो ८०)

रजपूत बसै । कोहर १ मीठौ चौढां ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५)	७५)	१३०)	५०)	६५)

१ जेठाणीयो ४००)

रजपूत बसै । कोहर मीठौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	८५)	६०)	६०)	५०)

२८३. ७ सूना षेड़ा

१ कलाउ वास २ ७००)

हिमैं रजपूता घर २०, संवत १७१६ वसायो। कोहर १२ छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	०	०	१००)	५०)	०

१ सोलंकीया रौ कोहर २००)

सोलंकी बसै। कोहर १ पांणी भळभळो।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३०)	१९०)	१२०)	२००)	१७१)

१ चाबौ १००)

कोहर षारौ, षेत पड़ीया रहै।

१ लूणी, षेत पड़ीया रहै। षेत षारौ।

१ देराणीयो ४००)

कोहर सागरी सेवाळीयो षेत पड़ीया रहै।

१ सेवाळीयौ १००)

षेत पड़ीया रहै। षेत[1] सागइ।

१ दासालीयो ८०)

कोहर षारो चाहड़दे री गांव।

१ लोलटा रौ बास ८०)

कोहर १ भळभळो, षेत पड़ीया रहै। चाहड़देवां रौ गांव।

८

२८

२८४. तफै केतु गोगादेवां रौ वास

३ केतु षास, वडो वास ५००)

१. कोहर।

मदा रौ, सातल रौ। रावत रासौ[1] रतावत रा घर ६०, बांणीया रा घर २०, कोहर १ मीठौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१००)	३९०)	३००)	५२५)	४८०)

३ षीरजां बास वडोबास ५००)

भोजा रौ, तेजां रौ। रजपूत बसै। कोहर ४ मीठा।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	८५)	१५०)	१००)	२१०)	२३०)

२ तेनावास ४००)

मेहर रौ, जेसल रौ। रजपूत बांणीया षाती कुंभार बसै। कोहर मीठौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३५)	२७०)	१३०)	१२५)	११०)

१ टीबड़ी १००)

रजपूत बांणीया बसै। कोहर मीठौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	१८०)	१२०)	१६०)	११०)

२ सेषाळो वडी वास ६००)

रजपूत बांणीया षाती बसै। कोहर मीठौ सागरी। १ सातल रौ १ राघवा रौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	६०)	२१०)	२००)	२५०)	१२०)

१ भुंगरौ बडौ वास २००)

रजपूत बसै। कोहर पांणी भळभळो।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२५)	१३५)	९०)	९०)	१६०)

---

१. ईसो।

१ सोई १५०)

रजपूत वसै । कोहर १ मीठौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	७०)	५०)	५०)	७०)

१ गड़ौ ३००)

रजपूत वांणीया षाती वसै । कोहर मीठौ । सरव वसै सेंवज हुवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	१४०)	१३०)	१००)	१५०)

१ रावसीसर, वास ३ तिण में वाम १ राजपुरी वसैं ।

---

२८५. ७ सुना षेड़ा मांजरै—

२ रामसीसर कोहर १ ३००)

नीलवा री वास १ रा० उरजन वीरावत समत १७१९ वसायो, कोहर १ मीठो ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	१२०)	७५)	९०)	५०)

१ सेपाळो वास देवड़ा घावड़ास १

१ रानीयो[1] १००)

कौहर नहीं । षेत पड़ीया छै ।

१ भुगड़ां रौ बास

सुवेऊ सूना ।

१ केतु री वास

नापे रो सुनो ।

१ षीरज री वास, बेढोया री ।

७

---

१. रनियो ।

२८६. १ सांसण

१ भांडु रौ बास

राव चौंडा री दत्त बारैठ आलु[1] बाबट रौहड़ीया नुं। हिमैं मानो राईमल छै। रजपूत चारण बसैं। षारच रा माताणी १ भांडु रा छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	२०)	१०)	२५)	४०)

२३

२८७. तफै देछु, चाहड़देवां रा गांव

१ देछु षास ८००)

रजपूत बांणीया बसैं। कोहर १० छै। पांच बहै[1]।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६०)	३१०)	२००)	२००)	२७०)

१ वौंठवालीयो[2] ४००)

रजपूत मुसला बांणीया बसै। कोहर १ मीठौ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३०)	१६५)	१००)	१०१)	६०)

१ छाढीयो[3] ३००)

रजपूत बसै। कोहर मीठो।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४१)	१६०)	१४०)	१३१)	१२०)

१ सुकमटीयो १००)

सूनो, थळ में कठै छै तिण री षबर नही।

१ कांनौटीयो[4]

सूनो, घण बरसों देवराजां रै दाषल छै[2]।

१. आला। २. ऊंठवाळियो। ३. थादीयो। ४. कानोढीयो।

1. पाच काम में लिये जाते हैं। 2. कई वर्षों से देवराजो के तालके किया हुआ है।

१ कोलु ६००)

नीबै री कोहर, रजपूत बसै । कोहर ३ मीठा ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	१७०)	१००)	१२५)	१२०)

१ कुसलावो ४००)

रजपूत बसै । कोहर १ मीठौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३१)	१८०)	१००)	१००)	१००)

१ गीलांकोहर १००)

रजपूत बसै । कोहर १ मीठौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५)	१२०)	१००)	१०१)	१२०)

१ सोमसीसर २००)

सूनो, कोहर मीठो, षेत पड़ा छै, गोवली बसै ।

९ गांव, ७ बसै २ सूना ।

२८८. १ सांसण

१ कांनुढीयो—

रा० बीरम कलावत[1] प्रा० वीजड़ वीमलां रा नुं दीयौ । हिमें माधौ रांमदासोत छै । प्रोहत बांणीया बसै । कोहर १ मीठो ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	७१)	८०)	७५)	५०)

१० गांव

२८९. तफै ओसियां

१ ओसीयां षास २०००)

बास ५ मै बास ३ बसता छै । नै २ सूना । कोहर ४ पांणी घणौ ।

१. लखावत ।

रजपूत जाट बांमण भोजग बसै ।

१ वडोबास　　१ षातीयां रौ वास　　१ भोजग रो
१ बांभण बास　　१ वानरी रौ बास ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३६)	६००)	५८०)	१६६४)	७०३)

५

१ चांमु वास ५　　　　२०००)

तिणां में ३ बसै । नै २ सूना, कोहर ४ मीठा भळभळा, जाट रजपूत बसै ।

१ वडो वास　　१ डुंगरसी रौ　　१ जाटां रौ
१ पंडतां रौ　　१ किसन रौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०)	३५०)	६४७)	१२५०)	८६७)

५

चेराई रा वास ९　　　　३०००)

तिणां मैं ६ बसै, नै ३ सूना, कोहर ७, पांणी मीठो ५ नै षारा २ । जाट रजपूत बांणीया बांभण बसै । सेंवज षेत ३७ तथा ४० ।

१ वडोवास　　१ विसनोई　　१ भोजा रौ
१ गेसीया रौ　　१ षालत रौ　　१ रजपूतां रौ
१ षींचीयां रौ　　१ नाहरवौ　　१ आसायचां रौ

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५५)	२७८०)	२५२१)	२२२७)	१२८८)

९　　रेष

१२ बीकुं कोहर रा बास १२　　२५००)

ता माहै ८ बसै, बास ४ सूना मांजरे। कोहर ३॥ मीठा । कोहर ३ आवगा[1] नै आधो काभडा रौ ।

---

1. पूरे ।

१	बडी बास, रजपूत बांणीया बसै	१२००)
१	सरमंढीयो, बिसनोई बसै	४००)
१	डाभड़ी, रजपूत छै	३००)
१	पंवारां रौ, बिसनोई बसै	२५०)
१	गोपावासणी, सूनी	२००)
१	काभड़ो रौ बास, जाट बिसनोई बसै	१५०)
१	वडलां रौ, सूनो	१५०)
१	मांछरा रौ बास, जाट बसै	४००)
१	देवराजां रौ, सूनो	२००)
१	भींवां भोजा रौ, सूनो	१५०)
१	बिसनोयां रौ, जाट बसै, लाला रो कहीजै छै	२००)
१	जैसिंघ रौ बास, जाट बसै, षीचड़ कहीजै	१५०)
१२	जमा रेष	

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५८)	२०००)	४२७२)	२७८३)	१६७८)

८ बेषुवास रा पांना ८, २१४०)

बास ३ बसतौ, पांना अढाई भेळा षेत पटै जुदा, कोहर १ मीठो सगळा पीवै ।

१ कूंपावास २५०)

संसारचंद रौ, जाट बिसनोई रजपूत बसै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१२)	३३८)	२६५)	१५४)	११०)

१ चाचा रौ पांनो २००)

रायमल रौ बास रा लोग षड़े ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	०	०	५०८)	२००)	१६०)

१ जैतसी रौ पांनो ४००)

कूंपावास रा लोग षड़ै, जुदौ बास, खेत भला ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६०)	११६)	२७६)	२४१)	१२०)

१ भांना री पांनौ १००)

रतना रा बास रा षड़ै जुदा ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४)	९१)	१४०)	२९०)	१७०)

१ रायमल री पांनौ ४००)

जाट रजपूत बिसनोई रजपूत बसै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१४)	४१९)	६०८)	४६८)	७०)

१ नाथु री पांनौ २००)

रायमल रा षड़ै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
०	०	०	२२४)	५०)

१ रीणधीर री पांनौ २००)

रतनरा पांना भेळौ, षेत जुदौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
८)	१२६)	९८)	१८९)	१२०)

१ रतनां री पांनौ २००)

जाट वसै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१२)	७१)	२९६)	६८०)	२१०)

८

२ पेतासर ८००)

१ पेतासर, बिसनोई जाट थांणीया वसै । कोहर १ मीठौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३०५)	३१९)	२७५)	११०६)	७७६)

१ वासणी षेतासर री ३००)

बिसनोई रजपूत बसै । षेतासर पीवै ।

२

३ इसदु[1] ६००)

१ षेता रौ बास, रजपूत बसै ४००)

१ मेरवा रौ बास, रजपूत बसै १००)

१ वरजांग रौ बास १००)

रजपूत बांणीया बसै[2] ।

३

७ वैंदु[3] वास सात छै । ९००)

१ वापोणी, रजपूत बसै　१ जोधा रौ　१ कलाबती रौ

१ सांवत रौ　१ राणा रौ बास　१ कड़वा रौ

१ सुरजन रौ बास　१ नीवा रौ तळाव

सिगळां बासां रजपूत बांणीया जाट बसै । कोहर १ मीठौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४०)	१२८०)	७००)	१२७०)	११५०)

७

५ जैलु बास ५ १२००)

तां मांहे २ बसै नै ३ सूना छै ।

१ जैलु बास ६००)

रजपूत बांणीया जाट बसै । कोहर १ ।

१ बींजासर मांजरै ५०)

१ बास तीजो मांजरै १५०)

---

१. ईसरू । २. कोहर १ मीठो पांणी घणी । ३. बेरू ।

१ लोरड़ो १००)

१ घाघावड़ी ३००)

पलीवाळ रजपूत बसै । कोहर, सुनौ मांजरै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४७)	३००)	१४०)	४७८)	४३७)

५ रेष

४ तापू बास १५००)

बडीबास पेड़ौ १ वसै, ३ षबर नहीं । कोहर १ भळभळो ।

१ बडीबास १ घड़सी री बास

१ भलड़ा री बास १ पैपाली

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	२२८६)	१५०५)	२२२७)	२५१०)

४ जमा भेळी रेष

१ जाषण बास—५ बास, १ बडौ बास नै बास, ४ मांजरै ।

बिसनोई जाट बसै ।

१ बडौ बास १ काना बास १ जाटां री बास

१ जैता तोगा री बास १ सांईदास री

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१००)	३८८०)	१५६८)	२०३५)	१४१९)

५ कोहर २ मीठा ।

१ करणु बास ४ ३०००)

वास २ बसै । जाट बांणीया, कोहर ३

१ बडौ बास नगावत रौ रा० गोरधन जगतौ[1] री बसी । कोहर २ मीठा ।

१ संकर बासणी, जेमलोत रौ बास, राणावतां बास मैं ।

१ लुंभासरीयौ, कलावतां रौ बास, बड़ावास मैं ।

१. जगनाथोत ।

१ राणा री बास, रा० हेमराज गोईददास री बसी। कोहर १ मीठौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
३८०) १३०१) २१५४) ३०१०) १२००)

४ रेष भेळी

१ पांचौड़ी बास ४
वास २ बसै। २ सूना षबर नहीं। जाट रजपूत नै बांणीया बसै।
१ बडौ बास १ रायसल रौ
१ सीवराज रौ १ वैरा री बास

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२०) ५५५) १७१२) १४६४) ९६६)

४ कोहर ३ पांणी।

२ विरलोषौ ३००)
१ विरलोषौ बडौ ३०००)
जाट बसै। कोहर १ सागरो पांणी मीठौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
५०) २२८४) १३९१) ३१२७) ०

१ भलगरां री बासणी—वीरलोषा मैं षेत षड़ीजै। ३००)

२

१ नवसर बास १२ २०००)
बास ४ बसै नै ८ सूना मांजरे छै। पहली कदेक बसता—

१ बडौबास	१ गोगाबास[1]	१ सुराबास
१ जाटोबास	१ जैमलबास	१ मालुणां[2]
१ सैसमल	१ तुवरबास	१ सोभारो
१ भींवाबास	१ वीसलबास	१ सारंगबास

कोहर १ पांणी मीठो। जाट बिसनोई बसै।

---

१. गांगावस। २. मालणवस।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४५)	१९६३)	११०७)	१४९६)	७९३)

१२

२ बड़लौ बास २

साद्‌ु[1] गेहलोतां नुं।

१ बड़लो बडो बास ४७००)

जाट राजपूत बसैं। कोहर १ कोसीटा[2]।

१ षाता वासणी २००)

रजपूत बसै कोहर ३।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५०)	३५०)	१५०)	३८०)	१६२)

२ करमसीसर

षेड़ा दोय रैबारियां रा। कोहर १ पांणी भळभळो, छबाही बास पीवै।

१ बडोबास ४००)

करमसी रैबारी बसै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	१९०)	८५)	३००)	१०५)

१ करमसीसर षुरद ३००)

रैंबारी जाट बसै। कोहर नहीं।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५)	१५०)	२८)	५०१)	१०१)

२ भाटां रा वास २ १४००)

कोहर १ भळभळो। बडौ वास पीवै।

१ भाट रौ वडौ ६००)

जाट रजपूत बसै। कोहर पांणी भळभळो।

---

१. हेसा ६ गेहलोतांनु। २. कोसीटा ४।

संवत १७१५   १६   १७   १८   १९
२०)   ५३०)   ३६१)   ६०७)   ४२१)

१ भाटां री षुरद   ८००)
रजपूत जाट बसै ।

संवत १७१५   १६   १७   १८   १९
६०)   ५९५)   १३७)   ५०५)   ४२३)

१ पुनासर बास ८   २०००)
आगे कदे बसता, हिमैं बसती सगळी भेळी । जाट बांणीया बसै ।

१ गोपाळ रौ   १ बड़ो वास   १ अरड़कमल रौ
२ भाटीयां रौ बुधा रौ   १ पाहुवां रौ
१ सांषलां रौ   १ गोपाळ रौ   १ – –

८

कोहर २, एक मीठौ नें १ भळभळौ ।

संवत १७१५   १६   १७   १८   १९
१००)   १६७७)   ८००)   १६२७)   ७१०)

१ दांतणीयौ बास २   ७००)
कोहर १ मीठौ, जाट रजपूत बसै[1] ।

१ वडीवास   १ लोधां रौ बास

संवत १७१५   १६   १७   १८   १९
१५)   २८३)   २५५)   ७८५)   ३४५)

१ भोजावास वास २   १०००)
जाट रजपूत बसै । कोहर नहीं । बीकानेर रा गांव सांदूड़ै में तीण[1] १ छै ।

---

१. बास एक ही बसै ।

---

1. कुए में से पानी निकालने का एक निश्चित समय ।

१ भोजावास १ षाबाणीयो सूनौ

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	७४५)	४४६)	७९६)	५५५)

२ चाडी, माणेवडौ २२००)

१ चाडी २०००)

जाट रजपूत बांणीया बसै। कोहर मीठौ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५१७)	१२००)	७४७)	२२९५)	१०८३)

१ माणेवड़ौ २००)

बिसनोई बसै। कोहर १ छै। चांपासर पीवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	२७०)	८१)	१५२)	६१)

१ दुनाड़ीयो ४००)

जाट रजपूत बसै। कोहर छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
८०)	१६०)	३०५)	३३३)	२१२)

१ चंडाळीयौ ५००)

जाट रजपूत बसै। कोहर २ मीठा।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	३२०)	१०७)	४००)	२२०)

१ बेगडीयो २००)

बिसनोई बसै। कोहर १ पांणी थोड़ौ, डांवरै पीवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३०)	२९२)	२१७)	२५१)	१०७)

१ भींवड़ीया ४००)

जाट बसै, बीकुकोहर पीवै सांवतसर।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५)	२००)	२१७)	३८०)	३६०)

१ चांमू री वासणी ३००)

सूनी, षेत चांमू रा जाट षड़ै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	१५०)	८५)	२५०)	१५१)

१ भालसरीयो ३००)

रजपूत बिसनोई बसै । कोहर नहीं, वड़लै षेतासरीये पीवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१६)	१४५)	१६७)	२९४)	७७)

१ डांवरो १५००)

विसनोई रजपूत बसै । कोहर ३ मोठा ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०)	५६५)	५७०)	९५०)	७३३)

१ षुडीयाळो ६००)

जाट बांभण बांणीया बसै । कोहर २ मीठा ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६०)	३२०)	१२०)	७२०)	१५७)

१ माळंगो १४००)

जाट रजपूत बसै । कोहर २ मीठा । ऊनाळी हुवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३०)	२८५)	७७)	४००)	१७५)

१ पांचलो षुरद

जाट रजपूत बसै । कोहर १ मीठो । बास जुदा-जुदा बसै । बास ३ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
८०)	४८९)	२८९)	६११)	४६८)

१ षारड़ो ६००)

जाट बांणीया रजपूत बसै । कोहर षारो ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४०)	२५०)	१२५)	८६०)	४०२)

१ काभड़ौ ४००)

बिसनोई बसै । कोहर सरवै पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१	१८	१९
	१८)	२००)	३००)	६०२)	२३५)

१ रायमल बाडौ[1] ६००)

रजपूत जाट बसै । तापू रै कोहर पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२८०)	६१७)	७८४)	३४३६)	०

१ कपूरियौ ७००)

जाट बसै, वीसालु पीवै, कोहर नहीं ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	७)	३१०)	९६)	२०२)	१४०)

१ षटोड़ौ ५००)

जाट रजपूत बसै । कोहर २ मीठा ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	८७२)	६७०)	८२०)	४८१)

१ भाभु वासणी ५००)

करणु रा लोग षड़ै । सूनो षेड़ौ ।

संवत	१	१६	१७	१८	१९
	४०)	१२०)	१४१)	३००)	४०२)

१ रनीयौ ४००)

जाट रजपूत बसै । कोहर पारौ भैंसेर पीवै ।

---

१. रायमल वाळो ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	६६०)	१६१)	६१६)	६३३)

१ रोहणयौ ७००)

जाट रजपूत बसै । कोहर १ छै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२८)	५००)	६१२)	८७८)	३७०)

१ रिड़मलसर १०००)

जाट रजपूत बसै । कोहर १ मीठौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	७०)	५४०)	१९०)	११९४)	५४०)

१ पंचायणसर २००)

जाट बसै । कोहर १ मोठौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५)	१००)	१५६)	२०५)	१००)

१ चांपासर १०००)

जाट बांणीया बसै । कोहर २ मीठा ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	११५)	७३५)	७३७)	२०६५)	६२०)

१ अजासर ६००)

जाट बसै । कोहर षारौ, चांपासर पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४०)	१४४)	६२६)	३८१)	३६०)

चंद्रासर १००)

चांपासर भेळो, सूनो ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	१२५)	७०)	१५०)	१२७)

१ बुगड़ी ६००)

जाट रजपूत बसै । कोहर ३ मीठा ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०)	११२०)[1]	२८४)[2]	१३४७)	४३२)

१ हरभुसर ३००)

बुगड़ी में मांजरै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)[3]	३८०)	२८०)	६८०)	१४५)

१ देपासर १००)

सूनौ षेड़ौ । रजपूत बसै । नागोर री देहु[4] पीवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५)	४२)	३२)	१)	५०)

१ बांभण वाळौ ५००)

पांचौड़ी षड़ै । जाट रजपूत बांणीया । कोहर १ मीठौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	१७२)	२२८)	३१८)	१३९)

१ लुंभासरीयो २००)

करणु में मांजरै भांभु वासणी रा षड़ै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३)	१९०)	१०१)	३००)	१४५)

१ तातुंवास २०००)

जाट बसै । कोहर २ मीठा ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२४)	५२६)	३४७)	१११२)	५९०)

१ मतोड़ौ १४००)

बिसनोई जाट बसै । कोहर मीठौ ।

---

१. ११२८) । २. ९२४) । ३. २००) । ४. देऊ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
६६) १२८०) ६७६) १७३१) ८३७)

१ रांवणसरी पळासलो ४००)
जाट बसै, वेठवास पीवै, कोहर नहीं ।
३०) ४१२) १९३) ४११) २२८)

१ कींझरी ४००)
जाट रजपूत बसै । कोहर मीठौ ।
संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
३०) ५१३) ५१७) ५१६) २०४)[1]

१ सीली ७००)
जाट रजपूत बसै । कोहर मीठौ ।
संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२०) ३०३) ४२६) ४८६) २४७)

१ गीघालो ७००)
जाट बसै । कोहर १ मीठौ ।
संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१०) २८०) ७९६) ४६८) ३३०)

गोपासरीयौ ३००)
जाट बसै । मंडायाही पीवै ।
संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
५) २४५) ५०) १४४) १०२)

१ पीदा कोहर ६००)
जाट बिसनोई बसै । कोहर छै ।
संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२०) ३००) ४४७) ६६७) ०

९९ तिण माहै गांव ७९ बसता छै । २० मांजरै छै ।

---

१. ३०४) ।

२६०. १३ सांसण

१ गांव छीभ १०००)

राव जोधाजी रौ दत्त प्रो० ऊदा दामावत नुं । हिमैं राजो उदावत छै । प्रोहत जाट बांणीया बसै । कोहर १ मीठौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१६
४०)	४८०)	१२७०)	१३६०)	७००)

१ देवावासणी १००)

राव जोधाजी रौ दत्त, प्रो० चांपा चुंडावत नै, गयाजी मैं ।

१ विघई कुवौ १००)

राव मालदेवजी रौ दत्त, प्रो० भारमल किसनावत नुं । हमें प्रो० दांनौ सादुळोत छै । गांव ओसीयां रो बावड़ी पीवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१६
१५)	७५)	१४०)	२१५)	१५०)

१ गांव घेवड़ौ बड़ौ २००)

राव गांगाजी रौ दत्त, प्रोहत दुरजनसाल बीजावत नुं । हिमें सातल रामदासौत छै । जाट बांणीया प्रोहत बसै । कोहर २ मीठा ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१६
१४)	१२०)	२७५)	३२५)	२५०)

३ भैंसेर रा बास २ ८००)

२ प्रोहतां रौ, प्रोहत अषैराज दलपतोत नुं राव मालदेजी रौ दत्त, प्रो० मूळै कूंपावत लाधां ।

१ बड़ौ बास ५००)

जाट बांभण बसै । कोहर मीठौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१६
५०)	३६०)	४२०)	६८०)	४१०)

भैंसेर षुरद ३००)

जाट रजपूत बसै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	१००)	१६०)[1]	३२०)	१२०)

१ भैसेर वास तीजो

राव चूंडा री दत्त, प्रोहत तेजा षींवा र[2] नुं। चंवडीया नेता मानावत छै। जाट बांभण बसै। कोहर मीठो।

१ बही काभड़ी री १००)

राजा सूरजसिंघजी री दत्त, सांढायची तीकम नुं। हिमैं षींवराज षंगार छै। जाट चारण बसै। कोहर काभड़े में तीण १ छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	७०)	१३०)	१४५)	८०)

१ हरळाई ३००)

राजा सुरजसिंघ री दत्त रतनु संकर भैरावत नुं। हमें महैसा नाथोत छै[3]। चारण बसै, काभड़े बसै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३५)	१२५)	१७५)	२२५)	८०)

२ साठीका बास २ ३००)

१ साठीको बडो

श्रीमाताजी रा पुजारा नुं, राव जोधाजी री दत्त भोपा आसायच नुं। पछै राजो जाट मारीयो[4] तरै गांव भोपा धांधल करमसी नुं दीयो। कोहर १ छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	७०)	१२०)	१६०)	८०)

१ साठी को षुरद

माहादेवजी श्री रामेश्वरजी नुं। माहाराजा श्री जसवंतसिंघजी

---

१. ५६०)। २. षीवसा रा नुं। ३. हमें महेस नाथु सांकर रा बेटा छै। ४. पछै आसायचे जाट रजपूत नुं मारीयो।

रौ चढीयौ । रजपूत बसै । बडाबास रै कोहर पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	१२०)	८०)	१५०)	१५०)

२

१ डांवरै री बासणी १००)

रा० महेस पंचायणोत रौ दत्त, गाडण देवा नुं ।

१ पींडतां रौ बास ।

१३

११२

२९१. तफै षींवसर रा गांव

४ षींवसर षास ४०००)

रजपूत बांणीया बसै । कोहर ४ मीठा । बास ३ बसै ।

१ षींवसर १ सेरड़ीयौ

१ लोळावास १ महेसपुरौ

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१६१)	२०००)	१२५७)	२३४४)	१५९२)

४

१ आचीणो १५००)

जाट रजपूत बसै । कोहर मीठौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	९२)	७००)	२७४)	१०८)	६५७)

१ नाल्हावास[1] १०००)

जाट बसै । पींवसर रै कोहर पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५०)	११००)	१७०)	११३४)	६२१)

१. नालावस ।

१ कांटीयो ८००)

जाट बसै कोहर मीठौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६०)	४२५)	११३)	१४४७)	१०७५)

१ नाहरसुवो बास ४ ७००)

जाट राठौड़ बसै । कोहर १ मीठौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५४)	७५०)	११२७)	११२२)	५७७)

१ आकलौ बडो

जाट बसै । षींवसर पीवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	२२५)	१४८)	४००)	२३०)

१ लुणावास ५००)

जाट बसै । षींवसर बरबटै पीवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	५०)	७०)	१०७)	८७)

१ अषावास ३००)

जाट रजपूत चारण बसै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५)	२५०)	३०)	१५८)	७५)

१ बैरावास बडौ ४००)

जाट रजपूत बसै । कोहर नहीं । षींवसर पीवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३८)	५२५)	१७७)	२७२)	१४०)

१ कीलाणपुर

रजपूत बसै । कोहर नहीं । षींवसर पीवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५)	१४०)	२४)	३६)	५०)

१ बीकडावास ३००)

सूनौ, ताड़ावास रा लोग षड़ै छै[1] ।

१ जैचंद रौ बास ३००)

षेड़ौ सूनौ नालावास रा लोग षड़ै । कोहर १ थौ सु बूरीयौ ।

१ आंबा बास २५०)

षेडौ सूनौ, षींवसर रा लोग षेत षड़ै ।

१ भीरडां रौ बास २००)

सूनौ, नाहरासुवा रा लोग षेत षड़ै छै ।

१ रतना वासणी १५०)

रतनकुड़ीयौ कहीजै । षींवसर रा षड़ै । कोहर छै ।

१ नरभुवास १००)

षेड़ा री षबर नहीं । षबर नहीं । षींवसर में मांजरै छै ।

२ नाहरसुवा रा बास २, ७००)

१ बडौबास १ रोहड़ीयांरौ

२

६ पांचलौ सीधा रौ ४०००)

१ पांचलौ १ कुभाबास

१ रणबास[2] १ बुधबास[3]

१ अणगरो १ माडपुरीयौ ।

६

जाट वांणीया रजपूत बसैं । कोहर २ मीठा[4] ।

१. कोहर छै सु बूरीयौ । २. राणा रौ वास । ३. बुधा चाचग रौ । ४. कोहर १ मीठो छै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६५)	१५००)	२५१९)	२४१५)	११३०)

१ नागड़ी १५००)

जाट रजपूत बसै। कोहर २ मीठा।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
८०)	१२००)	१२१९)	११७५)	८११)

१ हमीराणो १०००)

रजपूत बसै। षींवसर पीवै। सेंवज सरसुं होवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०)	५००)	७७९)	२५५)	३०५)

१ ताडावास ७००)

जाट बसै। षींवसर पांणी पीवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५४)	७००)	२७७)	१३५९)	७१२)

१ बैराथल षुरद

जाट बसै। षींवसर पीवै।

१ रूडाथल

रजपूत जाट बसै। कोहर मीठो, रा० हलसर पटै छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४१)	५२५)	२२०)	८६६)	४१५)

१ आकलो षुरद ६००)

जाट बसै। कोहर मीठो।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	१८०)	१६२)	२४०)	३०)

१ रांणावास ३००)

जाट बसै। कोहर नहीं। कांटीयो पीवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५)	१२५)	५०)	१००)	४५)

१ वेरावास षुरद　　२००)

रजपूत बसै। कोहर नहीं। षींवसर पीवै।

१ मेघलाबास षेड़ा　　३००)

षबर नहीं, षींवसर रा बावै[1]।

१ गोड़ां री वासणी

षेडां री षबर नहीं। नालावास रा बावै।

१ कीलांणपुरौ　　२००)

हमीरांणौ षुरद कहीजै। षेड़ा री षबर नहीं।

१ षींबावास सूनौ　　२००)

महेसपुरौ कहीजै। षींवसर रा षड़ै छै।

१ मोहलां री बासणी　　१५०)

मांनपुरौ कहीजै। षेड़ौ सूनौ।

१ बोड़ां री बासणी　　१००)

सूनी छै, बोडाणो थळ छै। षींवसर रा षड़ै छै।

१ दुरगो वासणी

३३

२९२.२ सांसण

१ नारसुवा[1] रौ बास　　२००)

राव जोधाजी रौ दत्त। प्रो० दामा हरपाळोत नै। हमें गोदो नेतलोत[2] छै। घर १०, बड़ेवास पीवै[3]।

---

१. नाहर सुवा। २. नेतसीयोत। ३. जाट बांभण बसै (अधिक)।

---

1. पीवसर के लोग षेत जोतते है।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	१२५)	६५)	१५०)	१२०)

१ डोडीयाळ २००)

माहाराज श्री जसवंतसिंघजी री दत्त, श्रीमाळी देव वीणो[1] नुं। जाट बसै। सोबले[2] रै कोहर पीवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५)	१००)	७०)	२२०)	१५०)

२

३५

तिण माहे १९ गांव बसै, नै १४ सूना गांव। २ सांसण छै।

२९३. तफै लवेरै रा गांव—

१ लवेरी षास बास ६ छै। तामि बास ३ बसै। कोहर २ मीठा नीवास १७००)।

१ बडौ बास जाटां री। रजपूत बांणीया बसै।

१ गांगा वासणी। जाट बसै।

१ षीचीयां रौ बास। सूनौ।

१ लहुवां रौ बास। जाट बसै।

१ धरमा वासणी। सूनौ।

१ धांधलां रौ। सूनौ।

६ रेष

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
९०)	१६७५)	१४३०)	१६७५)	१०८०)

८ बावड़ी रा बास ४४००)

बास ७ बसै। १ सूनौ। कोहर ३, बावड़ी[3] रै ऊपर ऊनाळी सेंवज बीघा १०००।

१. वेणु। २. सोहले। ३. बावड़ी २।

१ बडो बास । जाट बांणीया बसै ।

१ हेली । जाट बसै । १ गोयंदपुर ।

१ कछहावां री बासणी । जाट व राजपूत बसै ।

१ रैबारीयां री बास । १ जगनाथ री बासणो ।

१ कचरा री बासणी । सूनी । १ जेता री बासणी । नहीं छै ।

८

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०५)	२५००)	११५०)	२३५०)	१८३७)

१ कंजणाऊ बडी १८००)

जाट बसै । कोहर २ मीठा, षारो एक । सेंवज षेत २ छै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५६)	१७५०)	२५२०)	१२१६)	७५८)

१ सोयालो १५००)

जाट रजपूत चारण बसै । कोहर ३ बावड़ी १, मीठो पांणी ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४४)	६४५)	१२९०)	११५४)	३०३)

१ मोरना बडो ७००)

जाट बसै । कोहर मीठो ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५)	४१७)	२७८)	५४६)	३२९)

१ चंटासीयो[1] १०००)

जाट बसै । कोहर २ मीठा ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	१२००)	१३०८)	९१५)	५४९)

१ मंढली ४००)

---

१. चटालीया ।

जाट बसै। कोहर १ षारौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	४२६)	६४)	४१०)	१५६)

१ गादेहरी ६००)

रजपूत बांणीया जाट बसै। कोहर १ पांणी नहीं, ऊसतरां पीवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५)	५८६)	९७५)	१०७६)	४९०)

१ सांवत कुवौ बडौ

जाट रजपूत बसै। कोहर १ मीठौ बेऊगांव मील।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२५)	४६०)	६७१)	५२०)	४६४)

१ जावतरी ४००)

रजपूत बसै। कोहर मीठौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५)	२५०)	१०४)	१८५)	१४४)

१ अणवाणौ

जाट रजपूत बांभण बांणीया बसै। कोहर मीठौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५८)	१७८०)	२७३४)	३७०७)	०

१ केलावौ षुरद

जाट बसै। कोहर मीठौ। बावड़ी षारी।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४०)	६००)	४८०)	५१०)	२६०)

१ हरढाणी १५००)

जाट रजपूत बांणीया बसै। कोहर १ मीठौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	६०)	११५०)	६१३)	२६६१)	०

१ मेवरो १५००)

जाट रजपूत बसै। कोहर मीठौ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०)	८००)	९७०)	८३०)	५१६)

१ कुड़छी २५००)

जाट रजपूत बसै। कोहर मीठौ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४५)	२४०५)	१७८०)	५२४२)	०

१ कोहरड़ा री वासणी २००)

केलावै में मांजरै।

१ आसा री वासणी २००)

प्रोहत सुन्दरदास बसै। चीनड़ी पीवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५)	१६)	२१)	२५)	५५)

१ राय कोहररोयौ ३००)

जाट बस। कोहर मीठौ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	३८७)	५६९)	३७१)	०

१ ईसरनांवड़ौ ५००)

जाट बसै। कोहर पांणी थोड़ौ। पांचलै पीवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५)	५२७)	८३८)	४२५)	२८०)

१ घाणारी षुरद ५००)

जाट बसै। कोहर नहीं, वरवटे पीवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०)	७४०)	६५०)	५२५)	२३७)

१ मगेरीयो[1] १२००)

जाट बसै, कोहर मीठौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०)	७८०)	१३३२)	१२२८)	७३९)

१ चीनड़ो ४००)

जाट बसै, कोहर मीठौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
७१)	२२५)	१५१)	२५०)	१८५)

५ नादीया बडो २२०)

१ नादीयो बडो । रजपूत वसै ।

१ जैंतावास । जाट वसै ।

१ जाहड़वास । सूनौ ।

१ वीवौबंध[2] । सूनौ ।

१ उमांदेसरीयौ । जाट बसै ।

५ कोहर ३ मीठा । बास ३ सूनौ[3] ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२८)[4]	१९८५)	१२७०)	३३१९)	११९८)

१ कुजणाउ षुरद ६००)

जाट रजपूत बसै । वडै गांव पीवै । षेत ४ सेंवज ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२९)	११००)	२१४०)	५०१)	२०५)

१ आसरनडौ ५००)

जाट बसै । कोहर नहीं । सोयालै[5] रैं कोहर पीवै । बेत १० सेंवज गोहूं चिणा हुवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४४)	१११०)	१४८६)	५९०)	३६९

---

१. मांगेरीयौ । २. बीबीवाघ । ३. २ सूना । ४. ३८) । ७. सोहृवे ।

१ महेलाणे[1] ७००)

जाट बसै । कोहर षारौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	१३९५)	१२१५)	१३५५)	७२२)

१ नागलवाय ८००)

जाट रजपूत बसै । कोहर मीठौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३०)	५२५)	७७०)	६३)	४११)

१ कुवौ रूंदीयो १०००)

जाट रजपूत बसै । कोहर १ मीठौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	८२७)	२१०१)	१११९)[2]	४३३)

१ वीराणी २०००)

विसनोई रजपूत बसै । कोसीटा २०, दुसाषौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२१०)	११०५)	१३४४)	२१७०)	७८५)

१ सांवतकुवो षुरद ३००)

जाट बसै । बडैवास कोहर पीवै । भेळा बसै[1] ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	३९२)	६८०)	३९०)	२३४)

१ भटकोहरीयो १००)

रजपूत बसै । कोहर मीठौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	१२५)	२८०)	१०५)	८२)

---

१. महीलाणी । २. ११९) ।

---

1. शामिल रहते हैं ।

१ नेतड़ां बास ५

जाट रजपूत बांणीया बसै। बिसनोई षैड़ो १, कोहर ५। बावड़ी १ कोसेटा अरट छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	११००)	१८००)	३१२३)	०

१ चांदरष ७००)

जाट रजपूत बसै। कोहर १ षारौ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३०)	१३६५)	१०९९)	१८०९)	५५५)

१ षारी १०००)

जाट रजपूत बसै। कोहर २ षारा, भवाद पीवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	३३०)	४९८)	७३४)	१३८)

१ थांणारी[1] बडी ५०००)

जाट रजपूत बसै। कोहर १ मीठा[2]।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
८१)	२०९५)	२७५)[3]	४१०)[4]	७१५)

१ केलावौ बडौ २०००)

रजपूत जाट बांणीया बसै। कोहर षारा[5] मीठा कोसीटा २।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१००)	७८०)	१२६०)	८६१)	३७५)

१ षावाणीयो ४००)

जाट बसै। कोहर मीठौ।

---

१. धणारी। २. कोहर २ मीठा। ३. २७५७)। ४. ४१०७)। ५. कोहर २ खारा।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१२)	२००)	२५०)	२२७)	११७)

१ नांदीयौ भाहर रौ १०००)

जाट रजपूत बसै। कोहर बड नांदीये पीवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१८)	१७०६)	१४७९)	६६४)	५२२)

१ भीरड़ा री वास २००)

नादीया वाळां रा मांजरै सूनौ।

१ बरबटो २००)

मांगळीयां रौ, जाट बसै। कोहर मीठौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	३१६)	२७४)	४०१)	१७०)

१ नांदीयो २००)

नरसिंघ रौ, जाट बसै। कोहर नहीं। बडै नांदीये पीवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	९०)	१७००)	६२०)	११००)	५७१)

१ तोडीयांणौ १०००

जाट बसै। कोहर षारौ। षेड़ापै प्रोहतां रै पीवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४५)	८७०)	११३५)	९५१	७०३

१ हथुंडी ७००)

जाट रजपूत बसै। कोहर मीठौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	८९८)	१०३२)	५३६)	२७१)

१ बळदमारां री बासणी

सूनी मढली तोडीयाणै बीच, षेत सूना पड़ीया छै

६०

२६४. ६ सांतरा

१ गांव षेड़ापौ

राव मालदेजी रौ दत्त, प्रो० मूळा कूंपावत नूं। हमें माधोदास मोहणदासोत छै। जाट कूंभार बांणीया बसै (बांभण) छै। कोहर १ मीठौ। १ साषीयौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३०)	६९०)	१३८०)	६७५)	६२०)

१ ढंढोरीयौ

राव मालदेजीरौ दत्त प्रो० मूळा कूंपावत नुं। हमें दवारकादास गोयंददासोत नै माधौदास छै। जाट बसै कोहर मीठौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४०)	३२०)	५१०)	३५०)	३१८)

१ छीडीयो

राजा सुरजसिघजी रौ दत्त, गाडण सांदु दुदावत लाधौ। हिमें माधोदास छै। जाट बसै। कोहर १ मीठौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३५)	२८०)	१३०)	३७५)	१४५)

१ षुढालो[1]

राजा मोटा रौ दत्त, संमत १६४० सांदु माला ऊंदावत नुं। हिमें आसौ सांवतसी माला रा बेटा नै कूंभौ ईसरदासोत छै। जाट रजपूत चारण बसै। कोहर २।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४५)	२९०)	४६०)	२९०)	१००)

१ मीठोली

मोटा राजा रौ दत्त गाडण चोला मेहावत नुं। पहली राव सूजै

---

१. कुढाळो।

गाडण चांपा अणदोत नुं, जगहट अड़सी नरावत नुं दोयौ थौ। पछै मोटै राजा वळे दीयौ। हिमें गाडण जाभो सुजा रौ नै जगहट सोढौ दासावत छै। चारण बसै। कोहर नहीं, महेलाणै रै कोहर में तीण १ छै, तठै पांणी पीवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३०)	४२६)	१२०)	३२५)	१२५)

१ षारी षुरद २००)

राव सुजाजी रौ दत्त, चारण थीरा[1] बरसंघोत भादा नुं दीयौ। हिमें भादो कलौ लाषा रौ छै। चारण बसै। कोहर भळभळौ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५)	७०)	३०)	९२)	५०)

६
६६

२९५. तफै आसोप रा गांव—

१ आसोप षास १५०००)

बडौ कसबो, जाट रजपूत बांणीया सगळी पवन जात बसै। कोहर २ सेंवज चिणा गेहूं हुवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१८६०)	१३४७१)	५७११)	६६०९)	६५०८)

१ रजलांणी ३५०)

जाट कुंभार बसै। कोहर २ बावड़ी १, सेंवज घणौ हुवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२२९)	४३१०)	१८६१)	३२८०)	१९७५)

१ सूरपुरौ १५००)

जाट बांणीया बसै। कोहर नहीं, हींगोली रै कोहर पीवै।

१. घीरा।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
९५)	१४८५)	२८५)	१२४५)	१०८५)

१ बारणी बडी १३००)

जाट बसै । कोहर मीठौ । सेंवज गेहूं हुवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२३३)	१२१०)	२८०)	११९२)	२०६)

१ पालड़ी ११००)

जाट बांणीया रजपूत बसै । कोहर २, एक मीठौ, एक षारौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	१२२५)	५३०)	५५४)	६३९)

१ कुभांरौ १०००)

जाट बसै । कोहर १ मीठौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
७२)	१७००)	४२५)	८८८)	५९६)

१ छापलो ७००)

जाट बसै । कोहर भळभळौ । ऊनाळी बीघा २०० ।

संवत १५७१	१६	१७	१८	१९
३८)	११३८)	२८५)	५६५)	४१७)

१ बारणी षुरद ५००)

जाट बसै । बडी बारणी पीवै सेंवज छै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१४९)	६१२)	११२)	४४१)	८९८)

१ रड़ोद ३०००)

जाट बांणीया बांभण बसै । कोहर मीठौ । सेंवज घणौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२३७)	४४७५)	८०५)	२७१४)	१८५८)

१ नाहड़सर ३०००)

जाट बांणीया रजपूत बसै । कोहर ३ मीठा, सर बीघा ३०० ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

४६५) ४९४०) ३१७६)[1] २५७०) २३३२)

१ रामपुरौ १४००)

जाट बसै । कोहर मीठौ । सेंवज गोहूं चिणा सरसुं ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

३७५) १३७५) १२११) ८४१) ५८३)

१ कुकड़ढो १२००)

जाट बसै । कोहर नहीं, आसोप पीवै । सेंवज हुवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१९६) १७००) १३६२) ११८८) ७३०)

१ हीगोली ११००)

बिसनोई बसै । कोहर छै । सूरपुरौ पीवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

६७) २३६०) १९५०) १२५०) ७९८)

१ दाड़मी ७००)

जाट बसै । कोहर नहीं, बडी बारणी पीवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१६३) १२१०) २९१) ७५७) ६३०)

१ लुहारी ५००)

जाट रजपूत बसै । कोहर नहीं, रड़ौद पीवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

७९) ८०५) १९५) १०००) ४०२

१ गोयंदपुरौ ३००)

जाट बसै । रांमपुर पीवै । षेत २ सेंवज ।

---

१. ३७०६)।

संवत १७१५   १६   १७   १८   १९
६५)   ६८५)   ११०)   २९४)   २५५)

१६

२९६. तफै मेहवै रा गांव—

१ नगर वीरमपुर   १०००)

रावळ वीदे वासीयो भाषर सेहरवाद महाजन रजपूत बसै। रावळा रा घर बड़ी ठौड़। कोहर २ तळाव १ बरस दिन पांणी रहै। सेझो नहीं, भाषर रौ गांव।

रावळ भारमल जगमालोत
रावळ महेसदास पतावत

१ जोधपुर था कोस ३४ संमत १५११ आ ठौड़ बसी।

१ सिंणली   २०००)

बडौ गांव, नदी सुं रेलीजै[1] सारी सींव में गोहूं हुवै। पलीवाळ नै रजपूत बसै। सेझो थोड़ौ।

रावळ भारमल
रावळ महेसदास

नगर थी कोस ३ पिछम नुं।

१ बोहरावास   ५००)

कोस ५, बांभण बसै। नदी सुं सेंवज कोसीटा १० तलबौड़ कलै। भलौ गांव षेत भला।

जगमाल नुं भारमल नुं,
महेसदास नुं।

१ बावीसैण   २००)

ऊपजै उनाळी अरट ४, सेंवज हुवै। पलीवाळ रजपूत बसै। नगर

1. नदी के पानी से खेत भरते हैं।

था कोस ३ रावळ महेसदास रै बंट बावी सैणीयां केसौ[1] नुं पटै।

१ कलावास २००)

उपजै षेत रूड़ा[1]। ऊनाळी नहीं। घोड़ा सषरा[2] घोड़ीयां चरै। बीजा गांवां रा षड़ै। कोस ३ धु माहे[3] रावळ भारमल रै बंट।

१ जसौल ५००)

षेड़ा ७ में बडी गांव भाषर रैं षुढे बसै[4]। उपजै कोसोटा ५० तथा ६०। सेंवज बीधा ५००, रजपूत बांणीया बसै। कोस २ ऊगोण[5] नुं रावळ भारमल महेसदास दोनां नुं बंट भेळो हो।

१ जेरलाव १००)

जसौल रा बांभण बसै। थळ री गांव षेत कंवळा। नदी अळगी कोस ७। भारमल महेसदास नुं भेळी छै।

१ आसाढौ १०००)

भली गांव ऊपजै। बांणीया पटेल जाट रजपूत बसै। नदी नजीक अरट २०, कोसीटा ५० हुवै। बडा षेत छै। सहेरावाद था कोस ३ पूरब नुं रावळ भारमल नै पटै छै, बंट में।

१ टांपरा

रजपूत बसै षेत भला। धोराबंध, सेंवज हुवै। कोहर १ षारी छै। सेहरावाद था कोस ३ नीवास नुं। भारमल महेसदास नुं।

१ सीमालीयो २००)

रजपूत बसै। खेत भला, कोहर नहीं। सिणली पीवै सेहरावाद थी कोस ५, भारमल रे बंट पटै छै।

१ भुंकौ

---

१. केसावत।

---

1. खेत अच्छे हैं। 2. घोड़े अच्छे होते हैं। 3. उत्तर दिशा में। 4. पहाड़ की ढाल में बसा हुआ है। 5. पूर्व।

बडौ गांव, रजपूत बांणीयां रेबारी बसै । वरसाळी । बडा षेत, ऊनाळी नहीं । नदी नजीक सहैरावाद था कोस १० भारमल रै बंट, सोढो अमरौ भोजावत[1] बसै ।

१ मीठौ डाहीझर ८००)

रजपूत बसै, रबारी बसै । थळ रा बडा षेत । कोहर १ पांणी मीठो । रु० ४००) ऊपजै कोस १०, भारमल महेसदास नुं पटै । सेझौ सीर आधो-आध छै ।

१ धाषा १५००)

बडो गांव, रजपूत बसै । बडा षेत, कोहर १ षारौ । रु० ८००) ऊपजै । कोस ७ सहैरावाद सुं महेसदास रै पटै । बंट मांहे छै ।

१ भाटौ[2] १०००)

बडो गांव, रजपूत बसै । थळां रा बडा षेत । ऊनाळी नहीं, कोहर २, पांणी मीठौ । सींव घणी, रु० ५००) । सहेर था कोस १०, रावळ भारमल रै बंट ।

१ बेदरळाई २००)

छोटौ गांव, रजपूत बसै, षेत भला सेवज गोहूं रु० १५००) । सेहर था कोस ७, भारमल रे पटै ।

१ बीजावास ४००)

पलीवाळ बसै । सेंवज गोहूं रु० ३००), सहेर था कोस ७[3] । महेसदास रै बंट ।

१ गुलली ३००)

रजपूत बसै । षेत भला कांठा रौ गांव । ऊनाळी नहीं । ऊपजै रु० १५०) सहेरावाद था कोस ६, भारमल रै बंट में ।

१ भींवरलाई ६००)

---

१. भोजराजोत । २. भाडो । ३. सिणधरी कोस १० (अधिक) ।

बडौ गांव, रजपूत बसै। थळरा षेत ऊनाली नहीं। नदी पीवै। कोस ७ लूण री षांन घणी। रु० ५००) ऊपजै। रावळ महेसदास रै पटै, बंट मांहे।

१ बुरीवाड़ो २००)

रजपूत बसै। षेत भला, कोहर एक मीठौ। कोस ५ सहेरावाद थी भारमल रै पटै, बंट मांहे।

१ चांदसरौ २००)

रजपूत बसै। षेत भला थळरा। कोहर १ मीठौ। बाहड़मेर रै कांकड़[1] कोस १० रावळ महेसदास भारमल रै साझें[2]।

१ जाजवौ २००)

रजपूत बसै, षेत भला कोहर नहीं। बीजा गांवां रा षडै। सहर था कोस ११। भारमल महेसदास रै साझे।

१ झीलसीली[1] १००)

रजपूत बसै। बरसाळी भली, ऊनाळी नहीं। कोहर १ मोठौ। सहेर था कोस ८। रावळ भारमल रै पटै बंट मांहे।

१ सीणतरौ ६००)

बडौ गांव, सींव घणी। षेत भला। थळ रा पार मैं बेरा १०, पांणी हाथ ४ मीठौ। रजपूत बसै। सेहर था ११। रावळ भारमल रै बंट में।

१ चीड़ीयो १००)

रजपूत बसै। षेत भला कोहर १ मीठौ, कोस १४[2]। भारमल महेसदास रै साझे पटै।

२ जोरो कुवो २००)

बास २ भेळा। रजपूत बसै, थळ रा षेत भला। नदी पीवै, कोस

१. झालामली। २. ४।

1. सीमा। 2. साझे में।

१० भारमल रै पटै ।

१ महैकरनां २००)

रा० वीदा रा पोता बसै । नदी ऊपर गांव । षेत भला सेंवज हुवै । कोस ६ सेहरावाद था । महेसदास रै पटै ।

१ सिणधरो २०००)

महेवा था कोस १[1], नदो लूणी ऊपर अरट करै, जितरा हुवै । सांवणु वडा षेत । रजपूत बांणीया चारण बसै । कोस १५ सहेरा था । महेसदास रै पटै ।

१ टाकु ४००)

षेत भला, कोहर १ मीठो । रजपूत बसै । सहेरा था कोस ४ । रावळ महेसदास नुं पटै ।

१ अंबहाडी २००)

नदी लूणी ऊपर थळ रा षेत । सिणधरी था नजीक छै । कोस १३ सेहर था । महेसदास नुं पटै ।

२ डांगोयावस २००)

षेत भला, ऊनाळी कोसेटा चांच हुवै, नदी ऊपर । रजपूत बसै, बास २ भेळो । कोस २० सिणधरी कोस ३, महेसदास नुं छै ।

१ होडु षेड़ो १५०)

सूनो, बाहड़मेर रै कांकड़ कोहर । पांणी षारो, रावळ महेसदास नुं ।

१ षीराटीयो भाषर ८०)

वेरान, कुवो बध्रवा कोस २० । सिणधरी कोस ५ । महेसदास नुं ।

१ हाजीबास १००)

वेरान, महेसदास नुं ।

---

१. १२ ।

१ भांभी तळाई ५०)

वेरांन, राव महेसदास नुं पटै ।

१ षारडौ १००)

टांपरा मैं मांजरै । कोहर १ छै । सहेरा था कोस २० । रावळ भारमल महेसदास नुं ।

१ झुंड ६०)

जालेचा[1] राठौड़ बसै । कोहर भळभळौ । थळ रा षेत । सहेरा था कोस ८ । भारमल महेसदास नुं ।

१ कोलु २००)

वेरान, कोहर १ मीठौ । षेत षडीजै । सहेसवाद था कोस १८ । महेसदास भारमल नुं ।

१ कोणेड़ो १००)

वेरान, कोहर मीठौ, षेत षडीजै । सहेरा था कोस १५ रावळ भारमल महेसदास नुं ।

१ तरली १००)

वेरांन, पार रा बेरा पीवै । षेत वरसाळी, सेहरा था कोस १० । रावळ भारमल महेसदास नुं ।

१ कुसमलरो[2]. १००)

बाहडमेर रै कांकड़ चारण सुषवासी बसै । रावळ भारमल महेसदास नै पटै ।

१ लुणसड़ो ६०)

वेरांन, कोहर १ मीठौ । कोस सेहरा २५ था । भारमल महेसदास नुं ।

१ सोभा[3] री ५०)

---

१. जड़ेचा । २. कुसमत सरो । ३. गोभा ।

वेरांन, रावळ भारमल महेसदास नुं पटै ।

१ भीरड़ा कोट

वेरांन, षेड़ौ तलवाड़ा बीच सूनौ । भारमल महेसदास नुं ।

१ पैणाऊं १००)

वेरांन, कोहर मीठौ । कोस १५ सहेरा था । भारमल महेसदास नुं साझे ।

१ लेच

वेरांन, कोहर षारौ । लचषीणी था बूरी भेळी । कोस १६ सहेरा था । भारमल महेसदास नुं ।

१ गांव तलवाड़ो २०००)

महेवो कहीजे । लूणी नदी ऊपर बडौ गांव । सारी सींव सेझौ घणौ[1] । सेंवज हुवे । महाजन रजपूत बांभण बसे । नगर था कोस ३ ऊतर नुं—

रावळ भारमल

महेसदास

२ षेड़ २०००)

बडौ गांव, नदी लूणी ऊपर । सेझौं घणौ । बडा षेत बांभण बसै ।

१ षेड़ौ १ षेडुलीयो नगर था कोस ३ ऊपर नुं ।

भारमल महेसदास

१

१ सोभावास २००)

नदी लुणी ऊपर कोस ३०[1] सेंवज हुवै । पलीवाळ बसै ।

१. कोसेटा २० ।

1. गांव की पूरी सीमा में जमीन के नीचे खूब पानी है ।

कोस २ रावळ भारमल रै पटै, सोढा अमरा नुं पटै दीयौ छै।

१ मांडावास　　　　१५०)

नदी ऊपर अरट ४, कोसेटा १० सेंवज हुवै। षेत सषरा। पलीवाळ रजपूत बसै। लूंण री षांन १ छै[1]। सहेरा[1] था कोस ३, रावळ महेसदास रै पटै छै।

१ बरीयो　　　　१५०)

भाषर रै षेड़े षेत भला ऊनाळी नहीं, कोहर १ छै। रजपूत बसै सहेर था कोस २ पछिम नुं, रावळ भारमल रै पटै छै।

१ तेमावस　　　　१५०)

जसोल रौ बास ७। पलीवाळ बसै। लूणी नदी ऊपर कोसेटा २० सेंवज हुवै, राठोड़ दमा रौ उतन कोस २ ऊगोण नूं[2]। रावळ भारमल महेसदास रै भेळौ पटै छै।

४ पेउ　　　　५०)

जसोल रा षेड़ा सूना घास रा उपजै[2] षेत थळ रा। कुवौ १ कोस २०।

१ षंड　　१ ढुपली　　१ षोष्रसर　　१ सेवरषीयौ

४

रावळ भारमल महेसदास नुं।

१ जागसवास　　　　५००)

रजपूत बांणीया बसै। बडा षेत धोराबंध। सेंवज हुवै। कोहर १ तळाव छै। कोस ५ नीवास नै, रावळ भारमल महेसदास नुं।

१ कोलर

भापरी कन्है, रजपूत बसै। थळ रा षेत, पांणी षारी। छोटो गांव

१. सहेरावाद। २. घास रा रुपिया ५० ऊपजै।

1. नमक की एक खान है। 2. पूर्व में।

छै। रावाद[1] था कोस ३, रावळ भारमल रै बंट में पटै छै।

१ कीतपाल ३००)

सिणली कनै। रजपूत बसै। कोहर नहीं। सिणली पीवै, षेत भला। सेंवज कोस ५। भारमल रै पटै।

१ लोहारडी[2] २००)

रजपूत वसै। षेत रूड़ा, ऊनाळी नहीं। नदी पीवै। सहेरावाद था कोस १०। भारमल रै बंट में पटै।

१ षारी डाहीभर २००)

रजपूत वसै। षेत भला कोहर १ षारौ। रु० १००) ऊपजै। सहेर था कोस ६ पिछम नूं। भारमल रै बंट छै।

१ धनवो २००)

भलो गांव, रजपूत बसै। षेत सषरा, कोहर १ षारौ। सहेर था कोस ६। भारमल महेसदास रै सीर[1]।

१ सांभीयाळी ४००)

भलो गांव, षेत सषरा। कोहर १ पांणी मीठो। रजपूत बसै। कोस १० सहेर था। भारमल रै बंट में पटै छै।

१ चांपलां बेरो १००)

षेड़ो सूनो छै। षेत भला, सींव घणी। बीजा गांवां रा षड़ै छै। सहेर था कोस ७, रु० ५०) उपजै, भारमल रै बंट छै।

१ दुधवो २००)

षेत भला, पांणी पार वेरां हाथ ४ मीठो। ऊनाळी नहीं। सहेर था कोस १०। रावळ भारमल महेसदास नुं।

१ आंबभर ३००)

---

१. सेहरवाद। २. लोहरड़ी।

---

1. हिस्से में।

कोस ८, षेत भला, सेंवज हुवै । नदी नजीक कोसेटा १० । रज॰ पूत बसै । रावळ भारमल महेसदास साझै ।

१ समीसरी ५००)

रजपूत बसै । षेत भला ऊनाळी नहीं । नदी पीवै । सहेर था कोस ६ । रु० २५०) ऊपजै । भारमल महेसदास साझै ।

१ गोवलवास २ ६००)

गांव भलौ । नदी नजीक कोसेटा ४०, सेंवज हुवै । रजपूत नंद॰ वाणा बांभण बसै । कोस ७ सहेरावाद था छै । रावळ भारमल महेसदास नुं साझै पटै छै ।

१ नवसर ४००)

बडौ गांव । षेत भला, सेंवज हुवै । षेड़ौ सूनौ । बीजा गांवां रा षेत षड़ै । बाहड़मेर रै कांकड़ कोस १२ भारमल महेसदास रै पटै साझै ।

१ सीणपा बास २ २००)

रजपूत बसै । कोहर मीठौ । १ सीणपा १ हासड़ावस । कोस १२, भारमल रै पटै ।

१ गुगड़ी[1] १००)

रजपूत बसै । षेत भला, कोहर १ सहेर था कोस ८ । रावळ भारमल महेसदास रै साझै छै आधोआध ।

१ षटु ४००)

बडो गांव । रजपूत बसै । थळ रा षेत भला । कोहर १ मीठौ । बाहड़मेर रै कांकड़ कोस १०, भारमल महेसदास रै पटै ।

१ सोहाणीयां री वासणी ५०)

षेड़ौ सूनौ, तलवाड़े महेवा रै कनै षेत छै । घोड़ा मुकरे छुटै ।

---

१. गुठाड़ौ ।

कोस ४, भारमल रै पटै ।

१ गादसरो १०००)

बडौ गांव । नदी ऊपर अरट कोसेटा करै सु हुवै । सेंवज धोराबंध षेत । सीरवी कुंभार रजपूत बसै । सहेरावाद था कोस १६, महेसदास रै पटै ।

१ कमठाई २००)

षेत रूड़ा, ऊनाळी नहीं । नदी पीवै, कोस १५ सहेरा थी । महेसदास रै पटै ।

१ नाकोड़ो[1] ३००)

नदी ऊपर थळ रा षेत भला, ऊनाळी नहीं, सहेर था कोस १५, नदी पीवै । महेसदास नुं ।

१ दोतड़ीयो २००)

षेत रूड़ा, ऊनाळी नहीं, थळ रा गांव नदी पीवै । रजपूत बसै । पानळ था सींव[1] सिणधरी था कोस १ । महेसदास नुं पटै ।

१ डंडाली ८००)

ऊगां री, बडो गांव, नदी नजीक । अरट कोसेटा हुवै । सेंवज हुवै । रजपूत बांणीया बसै । सहेरा था कोस १० । महेसदास नुं ।

१ वायतम

वेरांन, बाहड़मेर रै कांकड़ कोहर षारो । सहेरा थी कोस १५ । रावळ महेसदास नुं साझे ।

१ भोजहरो[2] ६००)

वेरांन, रजपूत लहुवा बसै । कोहर १, कोस १५ सहेर था । रावळ भारमल महेसदास नुं पटै ।

---

१. कानोड़ो । २. भोजाहरो ।

---

1. सीमा पानळ गाव से मिलती है ।

१ गोडागड़ो १००)

वेरांन, बाहडमेर रे कांकड़ वेरां पांणी, चोखा षेत वरसळी। राव महेसदास भारमल नै।

१ मांडणो ५००)

वेरांन, कोहर १ पांणी षारौं। सहेरावाद था कोस १४। रावळ महेसदास भारमल रै पटै छै।

१ कानासर १००)

कोहर १, वेरांन षेत पड़ीया। कोस २२ सेहरा था। भारमल महेसदास नुं पटै।

१ वानरसर ६०)

वेरांन, कोहर १ छै। कोस १८। भारमल महेसदास नै।

१ हीरकीसंणी[1] १००)

नदी ऊपर, षेत षेड़ौ सूनौ कोस १८। रावळ भारमल महेसदास नै।

१ मीठड़ौ ६०)

बेरांन, कोहर १ मीठौ। कोस १८। भारमल महेसदास नुं पटै।

सेहड़ी ५०)

लूणसर कनै। वेरांन, कोहर नहीं। कोस ६ सहेरा था। भारमल महेसदास नुं पटै।

१ मौरड़वी[2] ५०)

षेड़ौ सूनौ, करनी सीणली वीच पाटी षेत षेड़ौ। सहेरावाद था कोस ५, भारमल महेसदास नै।

१ पथराणो ५०)

वेरांन, कोहर मीठौ। भारमल महेसदास नुं।

---

१. हीरकी री ढांणी। २. मोढ़ब।

१ पुनावडी ५०)

कोहर मीठौ। कोस १५। भारमल महेसदास नुं।

१ सेवाउ ५०)

वेरांन, कोहर मीठौ। भारमल महेसदास रे साझै।

११०

रेष तिण में गांव ४३ वैरांन सूना मांजरे छै, गांव ६७ आवादांन छै[1]।

२९७. १८ सांसण छै—

६ बीरांमणां नुं—

१ वीलासर १००)

रावळ मेघराज री दत्त प्रा० लीला मनांणी नुं। हिमें साजन छै। षेड़ौ बसै। थळ रौ, नदी पीवै। सेहरा था कोस १४।

[१' कवलली ५०)

रावळ पता री दत्त प्रो० किसनै नुं दीयौ। हिमें जगनाथ छै। षेड़ौ बसै, पाटोधी रा पार रा बेरीयां पीवै, सहेरावाद था कोस ९।

१ पलाळीयौं १००)

ब्रा० सीहा आचारज नुं। षेड़ौ सूनौ। बालोतरा थका षेत पड़ै। सेहरावाद था कोस ५।

१ काळु बडी

रावळ जगमाळ मालावत री दत्त, ब्रा० सोमाईत गोहला रा गुर। हमें करमांणद लीषमीदास छै। षेड़ौ बसै। गांव सषरौ, सोणलो था नजीक। सेहरावाद था कोस ६।

१ नगा रौ वास २५०)

१. 'ख' प्रति का अंश।

1. आबादी वाले हैं जिनकी आमदनी आती है।

रावळ पता री दत्त सोढा बांभण नुं। हिमें हमीर छै। षेड़ो बसै। नवसर री बेरीयां पीवै। सिणधरी कोस ५।

१ डाहां री वास ५०)

भुकां मांहे सोढा बांभण नुं।

६ रु० ६५०)

२९८. १२ चारणां नुं—

१ आकोधणी १००)

रावळ जगमाल मालावत री दत्त, बारट अचळा चंदरीयां नुं। हिमें लषो अदा रौ छै। षेड़ो बसै। कोस ६।

१ वाघोडी १००)

रावळ मलीनाथ रौ दत्त बारट मोकळ नुं। हिमैं जगो गोपाळ छै। षेड़ो बसै। कोस ५।

१ मालवी १००)

रावळ भारमल जगमालोत रौ दत्त, बारट वसता भाषरोत नुं। संमत १६९० रा दीयो। गंगादास ऊधरण छै। षेड़ो वसै, कोस १०।

१ सांबरो ५०)

रावळ मालाजी रौ दत्त, बारट मेहा रोहड़ीया नुं। हिमैं कोस ४ षेड़ो बसै।

१ लापुनड़ो

रावळ जगमाल रौ दत्त बारट भाषर नुं छै। षेड़ो बसै। कोस १० सेहरावाद।

१ रंतु १५०)

रावळ महेसदास भारमल रौ दत्त संमत १६९५ आसीया भींवा बरसलोत नुं। बाहड़मेर री गडा सघे कोहर २ छै। षेड़ो सूनो वरसाळी षेत षड़ीजै। हिमें षेतसी भीवावत छै। कोस २२ सेहरावाद।

१ गुड़ली १००)

रावळ हापा रौ दत्त मेहडु षंगार नुं। हिमें नेतौ छै। षेड़ी बसै। नदी पीवै। कोस ८।

१ सेबी ५०)

रावळ जगमाल मालावत री दत्त, बारट ठाकुरसी नुं। हिमें गंगादास छै। षेड़ो सूनौ। सेहरवाद था कोस १४।

१ कार ०)

रावळमेघराज रौ दत्त, चारण मुहड़ ठाकुर सोनावत। हिमें जगमाल अषावत छै।

१ चीषी ५०)

षेड़ी सूनी। बारट रुग रा बेटां नुं।

१२	रु० १०५०
१८	रु० १७००
१२८	

२९९. विगत—

कुमले गांव	आवादान	वेरांन	रेष रु०	आसांमी
५५	२५	३०	२०८६०)	रावळ महेसदास भारमल री साझी आधो २।
३२	२१	११	११३६०)	रावळ महेसदास नुं आवगा[1]।
२३	१९	४	९३५०)	रावळ भारमल नुं आवगा।
११०	६५	४५	४१५७०)	
१८	११	७	१७३०)	सांसण
१२८	७६	५२	४३३०००)	

1. पूरे, जिसमें किसी का हिस्सा शामिल नहीं।

३०२. ३२ रावळ महेसदास नुं आवगा गांव बांटे आया—

१	सिणधरी	२०००)
१	बावीसेण	४००)
१	वींजावस	४००)
१	भींवरळाई	६००)
१	टांकु	४००)
१	अवहाड़ी	१००)
१	डांगीयावास	२००)
१	लोहीड़	२००)
१	गोश्रांण	२००)
१	सलणु	३००)
१	रांणसर	)
१	गादसरो	१०००)
१	मांडावस	३००)
१	आंबझर	२००)
१	मेहकरना	२००)
१	कमठाई	२००)
१	नाकोड़ो	३००)
१	दोतड़ीयो	२००)
१	मांडाली	८००)
१	करजा	७००)
१	धाषा	७००)

२१　　रु० ६७००)　　बसता आवादांन

११ बेरांन—

१	कोजा तळाव	२००)
१	अरव	२००)
१	हाजीवस	१००)
१	जीवासो	१००)

१ डाबड़ी १००)
१ ऊगीवस १००)
१ होडु १००)
१ षीराटीयो
१ तांती तळाई ५०)
१ चेनईचो ५००)
१ धरमलणो ६०)

११ रु० १६६०)

३२

३०३. २३ भारमल नुं आवगा–

१	आसाढे	२०००)
२	सिणतरा	६००)
१	सिरमाळीयौ	३००)
१	वेदरळाई	१००)
१	कीतपाळ	५००)
१	सोनवस	४००)
१	कलावसीयो	२००)
१	सीहाणीयां री बासणी	५०)
१	भुकां	१००)
१	वरीयौ	३००)
१	लोहड़ी	२००)
१	बुड़ी वुड़ो	२००)
१	सीमाळीयौ	५००)
१	गुगली	३००)
१	चंपला वेरौ सूनौ	१००)
१	भाटो	१०००)
१	कोलर	५००)
१	सांझीयाळी	४००)

३००, महेवां रा गांवां री मेळ—

गांव		आसांमी
५५		रावळ महेसदास भारमल नुं गांव साझो आधो-आध छै। बुही री पटौ।
	१ नगर बीरमपुर	१०००)
	१ सिणली	४०००)
	१ बोहरावास	५००)
	१ जगसा	५००)
	१ टायरा	४००)
	१ धनवो	२००)
	१ दुधवो	२००)
	१ जाजवो	२००)
	१ गुगड़ी	१५०)
	१ सांमीसरे	५००)
	१ गोवल	६००)
	१ तलवाड़ो महेवौ	४०००)
	१ षेड़	२०००)
	३ जसवल	१५००)
	विगत— १ जसोल १ जेरला १ तेमावास	
	१ सोभावस	२००)
	१ मीठौ डाहीझर	८००)
	१ षंडु	४००)
	१ चीड़ीयौ	२५०)
	२ सीपावास २	२००)
	२ गोरड़ीयौ	४००)
	१ नवसरो	
२५	रु० १८५००)	गांव वसता आवादांन।

३०१. ३० सूना षेड़ा मांजरै—

१ षारडो टांपर में मांजरै	२१००)
१ कुसंमलो	२००)
१ माऊड़े	५०)
१ भोजहरे	६०)
१ वांणाड़ो	१००)
१ कांनासर	२००)
१ तरली	१००)
१ कुसमसरो	१००)
१ गोझारी	५०)
१ सेहड़ी	५०)
१ भीरड़ाकोट	१००)
१ पांणाऊ	६०)
१ लेच	१००)
१ झुढि	६०)
१ बाटारू	५०)
१ गोड़ागड़े	१००)
१ वाम्रेतम	१००)
१ कांनासर	१००)
१ वानरसर	६०)
१ हीरकी री ढांणी	६०)
१ लूणसड़ी	१००)
१ मीठड़ी	६०)
१ मोडरड़ी	५०)
१ पथरांणी	६०)
१ पुनड़ाऊ	१००)
१ सेवाऊ	१००)
४ पोऊ जसोल रा	१००)

३० रु० २३६०)

५५ रु० २०८६०)

१ चंदलरो २००)
१ जोरा कुवो २००)
१ झोलमल
१ षारो डाहीझर

२३ रु० ६३५०)

३०४. परगने जोधपुर री सींव[1] इण परगनां सुं इणे भांत लागै—

परगने मेड़तो ऊगवण[2] नुं, तिण सुं जोधपुर रा गांवां री सींव लागै—

१ रजलांणी १ गोठण
१ कुसलांणो १ सीहारो
१ हरीयाडांणा सुं
 १ वोरूंदो १ सोवणीयो
 १ कुरलाई १ डीगराणो
१ लोहारी सुं चौंकड़ी सीहारो
 १ रिणसीगांव १ सोवणीयो
 १ रतकूड़ीयो १ षारीयो षंगार
 १ घोड़ारड़ १ अणंदपुर
 १ बळूंदो
 १ अणांदपुर १ फालको
 १ कांणेचो १ षड़हाड़ी
१ सिणलो १ षड़हाड़ी १ डीगरांणो।
१ षांषटो
 १ मोरीयावस १ पालड़ी
 १ षारीयो षंगार।

1. सीमा, हद। 2. पूर्व की ओर।

१ मादळीयौ । १ गीडसुंरोयौ
१ सीवणीयौ ।

३०५. परगनै जैतारण नै जोधपुर सींव—

१ कालाऊना । बहेड़
१ ऊदळीयावस । बहेड़
१ कूंपड़ावस । बहेड़

१ षारीयौ भांण री
१ बहेड़ १ प्रिथीपुरो

१ मुरका बासणी १ बहगुणां री बासणी
१ जाक
१ बहेड़ १ नींबोल
१ लोटोधरी
१ बहगुणां री बासणी ।

१ मुरड़ाहो नै घोड़ारड़
१ गेहावस नै घोड़ारड़
१ कानावस १ बीकरलाई १ मालपुरीयौ
१ सीणला
१ नीबोल १ बहगुण वासणी

१ घोड़ारड़
१ पीपळीयो काडीया १ बलाहड़ो ।

१ वीझावडीयौ
१ झंझणवस १ पाटवौ
१ गळणीयौ १ प्रिथीपुरौ ।

१ बळूंदो बांभाकुड़ी नै मालपुरीयौ घोड़ारड़
१ देऊरीयौ प्रोहतां रौ नै घोड़ारड़ ।

३०६. परगने सोभत नै जोधपुर—

१ बीलाड़ो
१ अटबड़ो १ बरणौ
१ जैतोवस
१ महेवे १ थाहर वासणी
१ अटबड़ो १ बरणो
१ बाहळो
१ गुजरबास १ पलासळो रांमा रौ
१ हसलपुर
१ बाघबसीयो
१ पळासलो बांभणां रौ
१ पळासलो रांमा रौ
१ हासलपुर षुरद
१ ब्रह्मी सींघा बासणी
१ षारो चारणां री
१ राजळवो १ मोरटऊको
१ भणीयो
१ मोड़ी भेटनड़ो
१ अरटोयौ मोरड़ी
१ मढली वीकार
१ मोरड़ी १ भीथड़ो
१ षेतावस सापौ
१ वागड़ीयौ नोबली ऊहड़ां री
१ आकड़ावस
२ राजगीयवस १ गोधावस

१ ढाबर

१ दूदीयौ
१ भोरड़ी

१ सुगाळीयौ

१ काराडो
१ वाहड़ो सो
१ गोधावस

१ हींगोलौ
१ भींवाळीयौ
१ हरसवरणो
१ बीजायावसणी
१ थाहरवसणी
१ जेसलबस
१ थाहरवसणी
१ मालकोसणी
१ थाहरवसणी
१ ओलवी

१ हसलपुर
१ ऊणागांव ।

१ रावर हासलबड़ो
१ रावांसड़ी

१ भांणीयौ
१ ऊणांगांव ।
१ संभाड़ो
१ सीधावासणी
१ गोवळीयौ
१ मोरटऊको
१ कलाळी
१ भोरडी
१ ऊंतवण
१ सापो
१ भुरीयावसणी
१ भोरड़ी
१ भुभादड़ो
१ पाळासलो बडो
१ भाभेळांई

१ सोवणीयो
१ भागेसर
१ सांवळतो बडौ
१ दुहड़ीया वासणी
१ भोरड़ी
१ भेटनडो
१ झीथड़ो

१ लांबी १ पळासलो षुरद

१ धांमल

१ बतो १ काराडी

१ भींबाळीयो ।

---

१ षेरवौ

१ गोधावस

१ हींगोलौ

१ गोधावस ।

३०७. परगनै गोढवाड़ जोधपुर सींव—

१ काठधरो १ डीहड़ो

१ मादड़ी १ डीहड़ो

१ षेरवो

१ षुसी १ बापुनी १ गोधावस

१ गुदवच

१ डीघड़ी १ सोढाबस १ डीहड़ो

१ ठाकुरला

१ जुढ ।

---

१ कुडणो

१ चांणोद १ डेहड़ो १ वीगड़ी

---

१ भाद्राजण १ मुलेव

१ सीहा रो पाद्र

१ साकदड़ो १ कवला १ मुळेव

---

१ मुळेंव १ कवळा

१ मीणीयारी

१ चरचड़ो　　　१ सुलीयो ।

---

१ सानेंही　　　१ सोढावस

१ हींगोलो षुरद　　　१ बापुनी

१ अहीनला

१ सोढावस　　　१ डीहड़ो ।

---

१ ____________

१ कोड़वो　१ तपा　१ अहनला चारणां री

१ साहली

१ चांणोद　　　१ आकदड़ो

१ मालगढ

१ साकदड़ो　१ सुलीयो　१ चरचड़ो

१ मुळेव माथा री

१ मेरी

१ साकदड़ो　　　१ चरचड़ो ।

---

३०८. परगने जाळोर नै जोधपुर सींव—

१ नीबलो　　संषवाळी

१ सांसर　　ढंढकाव　　भंवरणी

१ नवसरा　　जोगण

१ षांभी

भंवरणी　　देभावस　　बेड़ीयौ

१ षांडप

१ भंवरांणी

१ दुधीयो　संषवाळी　कबा　जोगण

१ मुळेव संषवाळी
१ बुसीयाथळ
१ संषवाळी १ जोगण
१ बावड़ी
१ देभावस बेड़ीयो
१ बालौ
१ भंवराणी
१ मोतीसरी चारणां री
१ भंवरांणी

---

३०९. परगनै सीवाणा रा गांवां जोधपुर सुं सींव–
१ षांडप
१ वीहाळी १ सेवाळी
१ कंमा रौ वाड़ौ
१ अंबा रौ बाड़ौ १ सेवाळी
१ षीरहाटीयौ
१ जगीसा कोटडी
१ भलाड़ा रौ बाड़ौ
१ सूरपुरौ
१ आसराबो
१ आसराबो बांभण रौ १ कालांणी
१ डोहळी
१ नेढ़ली
१ तिसींगड़ी
१ चांदा रौ वास । तीतरगड़ी । कालाड़ौ
१ आकेली
१ केलण कोट १ सतोसण

१ फळसूंड १ डाभली
१ पाटोधी १ मोतीसरो १ रादुसी

१ मजल १ वीहाली
१ लालीया १ छाछेळाई

१ भाना री बाड़ो १ कावाणा १ तीसींगड़ा
१ दहीपुड़ो १ सूरपुरो १ सोवरषीयो

१ दहीपुड़ो वाधा रो वास १ सतेसीण १ षरड़ी

१ सूरपुरो
१ घड़ोई धरमदास रा बास

१ बाघावस
थोब

१ बड़नावो
१ पाटोधी १ सतोसण

१ बाकीबाहो
१ कालांणो

---

३१०. पोकरण नै जोधपुर सींव—

१ गांव देछु
१ मढलो १ चंदसमो

१ काळाऊ
१ चंदसमो १ झालरीयो १ रातड़ीयो
१ पद्रोड़ो १ सांकड़ीयो

१ फळसूंड
१ गीडागड़ो १ भीषोला १ झाबरो
१ दत्ताल १ रातड़ीयो

१ बुढकीयौ
 १ चंदसरौ
१ आठेवाली
 १ चंदसमो १ झाबरौ १ मढली
१ पुंगळीयौ
 १ झाबरो १ रातड़ीयौ
१ फासाणीयो
 १ झाबरो १ रातड़ीयौ

---

३११. परगने फळोधी नै जोधपुर सींव—
१ नवसर
 १ राढीयौ १ पळी
१ मुडेलाई मांगळीयां री
 १ देहणोक १ भोजासर
१ रोहणवो
 १ केलणसर १ देछु
१ ईसरू कोळु
 १ आऊ १ बेरू
१ बेराई देहणोक
 सांवड़ाऊ १ थाढीयो
१ नाथड़ाऊ भेड़
 सांवड़ाऊ वरणाऊ
१- चाडी
 आऊ
१ रता रो तळाव मांगळीयां रो
 १ नीबां रो तळाव
१ बुगडी
 १ केलणसर

१ बीकुंकोहर

१ सांवड़ाऊ　　१ माळी

१ पीलवो

१ दहीयाकोहर

१ भोजाकोहर

१ दहीयाकोहर

१ लाषणकोहर

१ लोहीयावट

१ कुसलावो

१ जालीवाड़ो　१ कोळू　१ सावराज

१ देरांणीयो

१ वारणाऊ

१ चौमुं

१ वारणाऊ।

---

३१२. बीकानेर नै जोधपुर रै गांव सींव—

१ रोहीणवो　　१ बुगडी

भेलु　　१ भेलु　नाथुसर

१ करणुं　　१ चंपासर

१ सोंभाणो　　१ सोभांणो

१ भोजावस　　१ तातुवास

१ सांरूंडो　१ भादल　१ भादलो।

---

३१३. परगने नागोर था जोधपुर था सींव—

१ देपासर　　१ पांचोड़ी

१ देऊ　　देऊ

१ दांतणीयौ   १ आचीणौ—मांडपुरीयौ
   १ भुंडेल   १ माडपुरीयौ

१ वाराथळ   १ सुंडाथळ
   १ भेड़   १ मांड़पुरौ

१ हमीरांणौ
   १ टुकलो   १ गीरावड़ी

१ आकीलौ
   भेड़

१ बेराव षुरद
   गीरावड़ी

१ दाड़मी
   १ हरसाळ   १ गीराबसणी

१ कुकड़दो
   १ मांणकपुर
   १ भदोरौं   १ वासणी

१ बेरावस   भोऊडा
   भेड़

१ ताडाबस
   भोऊडा

१ आसोप
   दहावडी   डुबरषीयौ

१ रड़ोद
   गजसिघपुरौ

१ रजलांणी
   हरसाला

१ आसरनडो
   गजसिघपुरौ

१ मंगेरीयौ
   गजसिघपुरौ]

मारवाड़ रा परगनां री विगत

(२) वात परगनै सोभ्हत री

१. सासत्र नांव सुधदंती छै। लोंका थी जोतग मांहे ग्रह साभ्है छै। तठै मारवाड़ मांहे दूजा सहेर किण ही नांव मंडै न छै तठै सोभ्हत रौ नांव मांडै छै। आगै केहीक दिनां त्रंबावती नगरी। त्रंबसैन राजा हुतौ। तिण राजा री सोभ्हत कहाणी छै। तिण दिनां सोभ्हत त्रंबसेन राजा हुतौं, तिण री तौ जात कांई सुणी नहीं छै। पिण उनमांन[1] कर जांणीजै छै–आबू नै अजमेर बीच कीराडु लुईवा[१] पुंगळ सारी धरती पंवार हुता। ते जांणीजै छै[2] सोभ्हत ही पंवार हीज हुसी। तिण त्रंबसेन राजा रै सोभ्हत नांवै एक बेटी हुई। सु देव-कळा सकत रौ औतार हुऔ[3]। तिका डावड़ी[4] बरस ८ तथा १० री हुई तरै रात आधी जाय तरै सूता मांणसां प्रौळ जड़ीया[5] देवी री भाषरीयां उठे चौसठ जोगणीयां रमण आवै[6], सु उठै आ जाय। सूतै मांणसां जड़ीया प्रौळे पाछी आय सूवै। आ बात हुती-हुती कन-कन[7] राजा त्रंबलसैन सांभळी[8]। तिण राजा रै बांधरौ हुल प्रधान छै। राजा बांधरा हुल नुं कह्यौ–आज तुं मोहल[9] री ढोढी[10] रहै। आ डावड़ी जाय तठै वांसै हुयौ[11] जाय नै जिका षबर होय, सु मांहां नै देई[12]।

२. बांधरौ उठै ऊभौ छांनौ रह्यौ छै। रात आधी गयां सोभ्हत

---

१. लुद्रवो।

---

1. अनुमान। 2. इससे माना जाता है। 3. देवताओं की कला को प्राप्त कर शक्ति का अवतार हुई। 4. लड़की। 5. मुख्य द्वार बन्द रहते हुए। 6. चौसठ योगिनियों के साथ खेलने आती है। 7. कानोकान। 8. सुनी। 9. महल। 10. डयोढो। 11. पीछे लगा। 12. मुझे देना।

रमण नुं नीसरी, सु देवीजी री भाषरी गई। बांधरौ हुल वांसै हुवौ गयौ। सोभल नुं जोगणीए कह्यौ–आज तौ तूं एकली नहीं। तरै सोभल कह्यौ–मांहारै साथै तौ म्हांरै जांणीयौ[1] कोई नहीं छै। तरै सकत कह्यौ—एक बार पाछी जाय देष आव। तरै सोभल पाछी आय भाषरी हेठै ऊभी रही। आगे देषै तौ मांटी[2] १ ऊभौ छै। तरै इण बुलायौ, कह्यौ–तूं कुण छै? तरै इण कह्यौ–हूं बांधरौ हुल छूं। तरै सोभल दौड़ दंड दबायौ, कह्यौ–थारी आ कुण जायगा आवण री[3]। हूं सराप दोउं, तोनुं बाळ दैईस। तरै इण कह्यौ—माताजी, मांहारौ दोस कोई नहीं छै। हूं पार रौ[4] चाकर छूं। थांहारै बाप मोनुं घणौ गाढ कर नै मेलीयौ छै तरै हूं आयौ छूं। म्हें तौ ऊजर कीयौ[5]। पिण राजा बरजीयौ[6] रहै नहीं। तरै सोभल कह्यौ–राजा रौ राज तो नुं दीयौ[१]। मांहारै नांवै सहर रौ नांव सोभत देई। नै म्हारौ थापना फलांणी ठौड़ मांडजो। बांधरा रै माथै हाथ देनै सीष दीवी। आप जोगणीयां भेळै उड गई। सवार हुवौ। बांधरौ राजा रै हजूर आयौ। राजा वात पूछी। इणै कह्यौ–वात पूछण वाळी[7] नहीं। राजा हठ कर वात पूछी। इण कही। राजा मुवौ। इण ठौड़ राज बांधरै पायौ। तरै सेहर रौ नांव सोभत दीयौ। तिण बांधरा रौ करायौ पावटा रा जाव वांसै[8] बाघेळाव तळाव छै। ऊतर नुं सेहर अड़तौ[9]।

३. पछै केईक पीढीयां सोभत हुलां रौ राज रह्यौ। तठा पछै केईक दिनां रांणा री दीवी कहै छै, सोभत सोनगरां रै हुई छै। तठा पछै सोभत केईक दिनां सींधलां रै कहै छै हुई नै चाकरी रांणा री करता। तिण समै राव चूंडौ नागोर कांम आयौ। तरै आप मरतै

---

१. राजा रौ राज जासी, सवारै राजा मरसी।

---

1. मेरी जानकारी में। 2. मनुष्य। 3. तेरे आने की यह कौनसी जगह। 4. पराया, दूसरे का। 5. कहा-सुनी की, आपत्ति की। 6. मना किया हुआ। 7. पूछने योग्य। 8. पावटा के खेत के पीछे। 9. सटा हुआ।

कंवरां नुं काढीया सु लायक बेटौ तौ रिड़मल हुतौ। पिण राव चूंडौ बूढो हुवौ मोहोल उडोट वाळां रै परणीयौ हुतौ। तिण मोहीलांणी रै पेट बेटौ १ कान्हौ चूंडावत राव रै हुवौ थौ। सु कान्है सुं राव रौ हेत घणौ हुतौ। सु कंवर काढीया तरै राव चूंडौ रिड़मल नुं कहैण लागौ—एक बात रैं वासतै मांहांरौ जीव दोहरौ[1] छै, सु तूं बोल बचन मांहांनै देवै नै कहै—म्हे थांहरौ कह्यो करसां, तौ म्हे तोनुं कहां। तरै राव रिड़मल कह्यौ—थे कांय[2] जीव दोहरौ राषौ, राज फुरमावसौ सु म्हे राज रै पेट रा छां तौ करसां[3]। तरै राव चूंडै कह्यौ—मंडोवर री रावाई कान्हा नुं देजौ। नै थे कान्हा सुं ग्रासी वेध[4] मत करौ। रिड़मल बात कबूल कीवी। कह्यौ—राज जीव सोरौ करौ[5], म्हे कान्हा री धरती मैं पांणी ही नहीं पीवां। राव कुवरां नुं सीष दीवी।

४. वांसै राव कांम आयौ। राव रिड़मल मंडोवर आय कान्हा नुं पाट बैसांणीयौ। टीकौ काढ नै[6] आप मेवाड़ रांणा मोकल भांणेज थौ उठै गयौ। रांणै मोकल राव रिड़मल री बसी नुं[7] मारवाड़ नजीक धणलौ सोझत रौ कितराहेक गांवां सुं दीयौ। राव रिड़मल री थोड़ा विभा ऊपर[8] धणलै बडी ठकुराई हुई छै। वडा-वडा प्रवाड़ा[9] धणलै थकां कीया छै। तठा पछै कितराहेक दिन तांऊ राव कान्है मंडोवर राज कीयौ। पछै राव कान्हौ जांगळु सांषलां ऊपर गयौ छै। तिण समै चारणी करणी कान्हा नुं आषा आंण[10] बदावण लागी[11]। तरै कान्हौ कह्यौ—इणां आषा लीयां कासुं हुवै ? तरै चारणी कह्यौ—इणां आषा लीयां राज कमायौ होय।

५. तरै राव कान्हौ कह्यौ—राज मांहांरौ कोई आषां सारै छै

---

1. दुखित, अनमना। 2. क्यो। 3. हम आपकी औलाद हैं तो करेंगे। 4. झगड़ा वैर भाव आदि। 5. मन में संतोष लाओ, आश्वस्त हो। 6. राज्यारोहण का दस्तूर करके। 7. रहने के लिए। 8. कम आदमियो के सहारे भी। 9. प्रसिद्धि के वीरतापूर्ण कार्य। 10. अक्षत लेकर। 11. शुभ शकुन की रस्म पूरी करने लगी।

नहीं[1] राज मांहांरी तपसीया रौ छै। तरै चारणी कोप कीयौ। कह्यौ–जो इतरा दिन मैं राज जाय तौ आषा जांणजौ, राज गमायौ। तठा पछै कितराहेक दिन मांहे राव सतै चूंडावत रावत रिणधीर चूंडावत भेळौ हुवो[2] नै कान्हा कनै मंडोवर लीयौ। पछै कितराहेक दिन राव सतै चूंडावत भोगवीयौ। सु राव सतौ छै, नै धरती सारी री मदार कांम-काज रिणधीर चूंडावत ऊपर छै। रिणधीर भली भांत साहबी चलावै छै।

६. श्रौ करतां सता रै बेटौ नरबद मोटौ हुवौ छै। सु नरबद काळ पूंछीयौ[3], उपाधौ[4]। सु नरबद दिन-दिन जोर चढतो गयौ[5]। नरबद नै रिणधर अदावत दिन-दिन वधती गई। सतौ सु ठाकुर हुतौ, सु नरबद नुं घणौ ही वरजीयौ[6]। रिणधीर नुं दलगीर[7] मत कर। पिण नरबद जोर चढीयौ सु मांनै नहीं। चूक[8] २ तथा ४ रिणधीर मारण रा नरबद कीया। पिण रिणधीर जांणीया[9]। पछै रिणधीर रीसाय नै[10] राव रिड़मल कनै धणलै गयौ। रिड़मल घणौ आदर कीयौ, राषीयौ। पछै रिणधीर रिड़मल नुं कह्यौ, समझायौ–थे विषाइत हुवा[11] काय फिरौ, नै बाप की धरती री चींत करौ नहीं[12], सु कुण वासतै? तरै रिड़मल कह्यौ–मोनुं राव चूंडै सुंस लीरायौ थौ[13]। तरै रिणधीर कह्यौ–कान्है कनै राज लेण रौ सुंस करायौ थौ, कान्हा या कह्यौ[14] थौ–कदेई मंडोवर रै राज री हर मत[15] करौ। तरै राव रिड़मल कह्यौ–राव चूंडै मोनुं कान्है दिसा कह्यौ थौ। राव रिड़मल रै वात दाय आई।

७. पछै राव रिड़मल रिणधीर दिन १० नुं सुल सामौ कर[16]

---

1. इन ग्रक्षतों के भरोसे नहीं हैं। 2. एक हुए। 3. बुरे लक्षणो वाला। 4. विग्रह पैदा करने वाला। 5. ताकत पकड़ गया। 6. मना किया। 7. दुखित। 8. धोखे से प्रयत्न। 9. मालूम हो गये। 10. नाराज होकर। 11. दुख के दिनों को काटते हुए। 12. चिंता करते नहीं। 13. सौगंध दिलवाई थी। 14. अथवा यह कहा था। 15. आशा मत करो। 16. सब व्यवस्था करके।

चीतोड़ रांणा मोकल कन्है आया । रांणाजी सुं आपरी हकीकत कही । दीवांण अरज मांन मदत साथ दीवी । राव रिड़मल रिणधीर नुं विदा किया । तद मारवाड़ तौ बापी कीमत कर दिराड़ी । प्रा० सोभ्फत रौ रांणै आपरी तरफ रौ दीयौ । मंडोवर नजीक आया । सतौ तौ विण विढीयौ[1] नीसर गयौ नै नरबद वेढ एक सांम्है आंय कीवो । नरबद घावां पड़ीयौ । वेढ राव रिड़मल जीतो । रांणा रा साथ नुं सीष दीवी । राव आय मंडोवर बैठा । वडी ठकुराई बणाई । राव रिड़मल धणलै छै । तिण दिन राव रौ बेटौ १ सायर तळाव मांहे बूड मुवौ छै[2] । तिको पितर[3] हुओ, तिण रौ उठै थड़ौ छै[4] । तिण दिन सोनगरा पिण राव रिड़मल घणा मारीया छै, धणलै बसतां थकां । तठा पछै मंडोवर पायौ । सोभ्फत रांणै आपरी तरफ सुं दीवी छै । तठा पछै कितराहीक दिनां रांणै मोकल नै सीसोदीया चाचै-मेरा वेध बांधीयौ । राव रिड़मल घणौ मेवाड़ हीज रहै । पछै षीचो अचळदास नुं रांणै मोकल बेटी परणाई हुती सु अचळदास ऊपर मांडवा रो पातसाह आयौ सु रांणौ मदत नुं चढै छै । राव रिड़मल नुं रांणौ मोकल कहै छै–थे मारवाड़ जाय नै घणौ साथ ले आवौ । तरै राव नुं अठी नुं विदा कीयौ । वांसै दिन १५ तथा २० रांणै वागोर डेरौ कियौ । उठै चाचो-मेरौ रांणा मोकल नुं मारीयौ नै कुंभौ नीसरीयौ, चीतोड़ पैठौ[5] । वांसै इण घेरौ कीयौ । राव रिड़मल नागौर रौ चढीयौ मदत आयौ । चाचो-मेरौ पई रै भाषर पैठा । तठै घेरौ कर नै राव चाचै-मेरै नुं मारीयौ । पछै बरछीयां री चंवरी कर नै परणीया । रांणा कुंभा नुं आण चीतोड़ बैसांणीयौ । सारी मदार राव रिड़मल माथै छै । पछै सीसोदियां चूंडै लषावत, पंवार मोहैप रांणा कुंभा नुं भषायौ[6] नै राव बीच दुभांत[7] घाती ।

८. राव रिड़मल चीतोड़ रै गढ़ ऊपर सुवै छै । कंवर जोधौ असवार ४०० सुं तळेहटी डेरौ रहै छै । पछै सीसोदियां भषाय नै राव

1. बिना लड़े ही । 2. डूब कर मर गया । 3. पितृ योनि । 4. स्मारक । 5. घुस गया । 6. सिखाया । 7. मन-मुटाव ।

रिड़मल सूता नुं चूक कर मारीयौ[1]। नै कंवर जोधा ऊपर साथ विदा कीयौ। कुंवर जोधौ नीसरीयौ। रांणै री फौज वांसै लागी। पग-पग वेढ हुई। राठौड़ां रौ साथ घाटै सुधौ घणौ कांम आयौ। जोधौ कुसळे घाटै पार हुवौ। रांणा री फौज फिर पाछी आई। पछै जोधौ तौ काहूनो गयौ, नै रांणै मंडोवर लेण नुं फौज विदा कीनी। तिण में इतरा सिरदार छै, तिण री विगत—

१ आहाड़ौ हींगोलो
१ सींधल हरभामो[1]
१ पीरोजषांन पातला रौ बेटौ
१ हाजो घौराणीयो
१ आकौ सीसोदीयौ
१ झालो विकमादीत
१ मु० रेणयर
१ चहुवांण जेसौ, सांचोर
१ रावत रा० राघौदास सहेसमलोत।

९

९. तिण दिन रा० राघवदास सहेसमलोत नुं रावताई[2] दे नै, सोझत पटै दे नै, आपरौ चाकर कर नै, जोधा रौ ग्रासीयौ कर मेलीयौ छै। सोझत लषमीनारायण रौ ठाकुरदवारौ जोधपुर रै फळसै छै। सोझत इतरी ठौड़ हुई छै—

१ आद[3]तौ पंवारा रै
१ पछै हुलै[2]
१ सोनगरां रै, रावळ कानड़दे रै[3]
१ राव रिड़मल नुं रांणै दीवी थी मंडोवर भेळी
१ रांणै कुंभे हुई, रा० राघोदास नुं पटै, राव रिड़मल नुं मार मंडोवर लीवी तद।

१. हरभम। २. हुलां रै। ३. इसके पहले—को दिन सोलंखी राजा भींमदेव रै।

1. धोखे से मरवाया। 2. राव का खिताब, शासन-अधिकार। 3. प्रारम्भ में।

१ राजा प्रथीराज चहुवांण नाहड़राव पंवार मधो लहर री वेढ।

१ केईक दिनां सोलंकी राजा भींवदे रै।

१ तठा पछै सींधलां रै हुती, रांणा रा चाकर।

१ राव जोधै मंडोवर रांणा रौ थांणौ मार नै धरती वाळी[1] तद सोझत लीवी, दबाई बैर में, नै जोधौ सोझत वसीयौ[1]।

१ राव सूजो......[2] सैदां नुं पातसाह री दीवी हुई[3]।

१ राव वीरमदे वाघावत नुं भाई बंटे।

१ राव गांगौ वीरमदे कन्हा संमत १५८८ मैं रायमल षेतावत मार लीवी[2]।

१ राव मालदे सोझत हुवौ, राव चंद्रसेन टीकै बैसतां सोझत थी।

१ राव रांम मालदेवोत नुं संमत १६२१ पातसाह अकबर चंद्रसेन कना ले दीवी।

१ राव कला रांमोत नुं एक बार हुई[4]।

१ रा० सुरतांण जैमलोत मैंड़तीया नुं अकबर पातसाह एक वार दीवी। संमत १६३४ मेड़तीयां री बसी सारे गांव आया था[5]।

१ राजा सुरजसिंघ नुं संमत १६६५ वळे फेर दीवी।

१ राजा गजसिंघ नुं टीकै सुं संमत १६७६ दीवी सु कदे ऊतरी नहीं।

१ राजा जसवंतसिंघ नुं वरकरा रही सदा, संमत १६९४ थी।

१ राव चंद्रसेन डूंगरपुर थी पाछौ आयौ। वळे सोझत लीवी, संमत १६३७ काळ कीयौ।

१ राव रायसिंघ चंद्रसेनोत नुं अकबर पातसाह दीवी[6] संमत

---

१. तिण री साख गुण जोधायण मांहे वसै छै। २. रा० वीरमदे वाघावत नुं भाई-बांटे। ३. 'ख' प्रति में अलग से थोड़ा आगे यह वृत्तांत है—सैदां नुं पातसाह री दी हुई जिण वेढ़ ऊहड़ सवराड़ संमत १६३५ कांम आयौ। ४. अकबर दी रांम रै मरण। ५. बारहठ महेसदास चुतरावत बात कही (अधिक)। ६. पछै सीरोही रायसिंघ (अधिक)।

---

1. वापिस ली। 2. छीन ली।

१६४० रा काती वदि ११ कांम आयौ।

१ मोटा राजा नुं संमत १६४१ नवाब षांनषांना दीवी।

१ राजा सुरजसिघ नुं संमत १६५१।

१ रा० सकतसिंघ उदैसिंघोत नुं पातसाह अकबर दीवी, संमत १६५६, बरस १ रही।

१ राजा सुरजसिंघ नुं फेर रांणे मालपुरौ मार नै सोझत रा परगना में नीसरीयौ तरै वळे पाछी दीवी।

१ राव करमसेन उगरसेनोत नुं संमत १६६४ वैसाष में जांहांगीर दीवी, पार[१] रही।

सोझत सहर री बात

१०. छोटी-सी भाषरी ऊपर छोटौ-सो कोट छै। मांहे सादा-सा घर मुळगा[1] हुता। तिके तौ सारा पड़ गया छै। घर १ राजा श्री गजसिंघजी री वाहार मांहे[2] नवौ हुवौ छै, दुड़ौ छै। घरां मांहे वीरमदे वाघावत देवरूप हुऔ छै, तिण रौ थांन छै। पूजा हुवै छै। घोड़ा १० बांधै तिसड़ी पायगा री ठोड़ हुती। घर बारै दरबार बैसण री चौतरी छै। गढ री प्रौळ १ छै। इतरी तौ रा० नीबा जोधावत री कराई छै। तिण गढ हेठै परकोटौ छै। सु तौ तुरकां करायौ छै। तिण में रावळा घोड़ा-घोड़ी बांधण री पायगा छै। बागर घास री छै[3]। परगनै मांहै हाकम सिरदार रहै तिका डेरा २ तथा ४ छै। घर ५० तथा ६० के हुजदारां पंचोळीयां बांणीयां पंडव[4] नट-पुट कोट मांहे बसै छै। परकोटा री प्रौळ छै। तिण ऊपर दीवांणषांनौ छे। हेठै कोठार छै। तठै हाकम परगना री दीवांण करै छै। परकोटा मांहे देहरौ १ प्रौळ नजीक श्रीचत्रभुजजी रौ छे। तकीयौ[5] १ सित्यासी

१. मास।

1. केवल। 2. समय में। 3. घास का ढेर। 4. घोड़ों की देखभाल करने वाले। 5. समाधि।

गीतसगिर रौ देहरा नजीक छै। सेहर पाधर में[1] बसै छै। घर २२०० माहाजन बांभण कायथ सीरवी घांची माळी छत्री सौ[1] [2] पवन जात बसै छै। कोट मांहे बावड़ी १ सी० हरचंद रै घर वांसै[3] हुती सु बूरी पड़ी छै।

कसबै सोझत री बसती

११. घरां री उनमांन संमत १७१६ रा फागुण रा मास मांहे मांडीयौ, मंगायौ पा० वांमदास[2] लिष मेलीयौ।

विगत—

७३८ माहाजन	८ पंचोळी	३०५ करसा
१४२ रजपूत	७२ मुसलमांन	३६४ बांभण

१६१९

६२५ पवन जात—

२१ सुनार	२२ कुंभार	२६ जुलाहा
४ साटीया	६ न्यारीया	११ धोबी
५४ सिलावटा	४ भरावारा	५ सरगरा
४७ कलाळ	११ भाट वासती	१२ लुहार
३३ दरजी	६ नाचण	२० सूतधार
३५ छींपा	३ वणकर	१४ कसारा
२० वैद	१२ पींजारा	४ कारटीया
१० डूम भाट[3]	२ भड़भुंजीया	५ हलालषोर
८९ मोची	८६ ढेढ	१२ नाई
८ नायता	४३ षटीक।	

६२५

२२५४

---

१. छतीस। २. रांमदास। ३. भांड।

---

1. समतल मैदान में। 2. सभी। 3. पीछे।

सोझत सहर री हकीकत

१२. देहरा[1] इतरा गांव मांहे छै—

८ जैंन रा देहरा छै।

८ सिव रा देहरा छै।

३ ठाकुर दवारका—

१ श्रीचत्रभुजजी १ लिषमीनारायणजी

१ मुलनायकजी रौ।

५ श्री माहादेवजी रा—

१ पाताळेसुरजी रौ १ जोगेसुर १ नीलकंठ

१ सुरेस्वुर, वाघेळाव १ कपाळेसुरजी।

८

१६

१३. सोझत में इतरा तळाव छै—

१ बघेवाळ[1]—सहर सुं दिषण था जीमणै-री पांवडा २०० । सहर था धुव-ली वाड़ी कन्है, कुंवर वाघा सुजावत रौ करायौ छै। सु पांणी घणौ को दन रहै नही[2]। मांहे रेत घणी। बावड़ी २ मांहे छै तिण रौ पांणी मीठौ छै।

१ रिड़मेळाव—ईसांन कूंण मांहे गढ रै पाठा हेठै[3] राव रिड़मल रौ करायौ छै। सहर सुं लगतौ। मास ६ तथा ८ पांणी रहै, तळाव मांहै।

१ बाघेळाव—सहर सुं उतर सुं डावौ। पाटवा बांसै आगै सघरौ तळाव हुतौ। पिण हमें बूरांणौ। मास ४ रौ पांणी रहै। पाळ ऊपर

१. वाघेळाव।

1. देवालय। 2. अधिक दिनों तक पानी नही रहता। 2. गढ़ की दीवार के नीचे।

छतरी घणी छै। बावड़ी १ सी० हरचंद री कराई छै। पाळ बांसै पांवडा २० नदो बहै छै।

१ हणवंत नडी–सहर था पांवडा २० दिषण दिसी, ऊपर हणवंत रौ थांन छै। देवी सोझालो री थापना, श्रीमाळी गाधा री षुणाई[1]।

१ पंचोळ नडो–सहर था आथवण[2] नुं।

१ पाबू नडी–सहर था पांवडा ४०० वायव कूण में। नदी रै अरहट रै पैलै कांनी, जोधपुर रै मारग ऊपर पाबू रौ थांन छै। मांहे बेरी मीठी।

१ सीवांणौ–मु० सांवत रौ करायौ। देवीजी री भाषरी[3] नजीक। मास ४ रौ पांणी हुवै।

१ परमेळाव–षोषरा रै मारग, सहर था कोस ०॥, गुवार रौ[1] षुणायौ।

१ नाडी नीबली–रा० नीबा राघावत री षुणाई। सहर सुं कोस ०। छै। दिषण दिसी षेतां रै गरभ बावड़ी १ पाषती बंधावी।

१ कापड़ीयौ—धेनावास रै मारग। मास ४ पांणी रहै छै।

१४. इतरा गांव सोझत री सींव में बसीया नवा—

१ वीलावास
१ रांमावासणी
१ बासणी मुता रूपसी री
१ धेनावास
१ बासणी ग्रा० काना री।

—
५

१५. सहर मांहे अरहट २, एक तौ पावटो अतुट पांणी[4]। सारा सहर री मांड पावटा ऊपर। तिण ऊपर रावळा बाग छै। ओरी २,

---

१. ग्वारां री।

---

1. गाधा द्वारा खुदवाई गई। 2. पश्चिम। 3. पहाड़ी। 4. पानी कभी समाप्त नही होता।

१ पछम नुं नदी रै उवार-पार[1] अरट छै। इण तरफ घणी कोई न छै। अरट री पैली कांनी जोड़[2] छै।

१ दिषण नुं नै पछम बीच सोझत री षेतो री मदार छै। इण तरफ रा षेत ऊपर छै। कोस २ अठी सींव छै।

चिणा सेंवज घणा महे षेत दीठ[3], वीसे चाळीसा हुवै।

बाजरी जुवार मूंग मोठ तिल सारी सींव षेत छै। हळवा ४०० धरती कसबा बांसै छै। हळ १ वांसै धरती वीघा ५०।

१८. इतरा गांवां सुं सोझत री सींव लागै छै—

१ उगवण - पचनडो १ लुढावास । पालणपुर राध सीहाट परबांण वासणी त्रवाड़ी कांन्हा री पांवडा ४०, १ रांमा वासणी।

१ दीषण - मोतां री वासणी पांवडा ४००।

१ दीषण - रहैनडी | मढलै नदी आडो | लूणकरण री
वड री बासणी | षोषरी नदी आडो | वासणी
वाघावास नजीक भाट रा षेत | | धेनावास
घनहड़ी | नीलावास[1] | चाबड़ीयाक

१६. कसबे सोझत हासल री ठौड़

सांवणु साष—

२००) माल

७० महाजनां रा नै पवन जात रा—

७८। महाजनां रा नांवां . ३। कवारा

२३। सुनार ११२ भड़ीयांरा

---

१. वीलावास।

---

1. दूसरी ओर। 2. जमीन का वह रक्षित भाग जो घोड़ों और गायों के चरने के काम आता है। 3. प्रत्येक खेत के अनुसार।

५।१६ जाटीया ढेढ ५।१६ कलाळ

१४।१२॥ मोचीं ३।२९ कलाळ

१३३।४

१०८) करसा तेली सोंनार कंलाळ माळी सींरवी ।

७॥) पंचोळीयां री सरहे री आधी माल । सं० १७१९ था

१४।) वीजा ७॥)

२००।)

१८००) वरसाळी

५००) वण वीघे १ मीठी वणीया रु० १॥) षारचीया वीघे १ रु० १।) वीघा ५०० तथा ४०० तथा ३०० वांसे लागै १०४) ।

संमत १७१८ संमत १७१९ लाटी

३२१।) ६९९) १२४७) ऽ।८

५८२) ऽ।९

७५०) लाटी धांन म० १५००) प्र० रु० १) म० २) ।

४००) षारचां म० ३॥ रु० १) ।

८५) मुकातीयां रा ।

६५) असल षरड़े लांगत भोग ।

।) भोग म० १ रु० ।) ।

४) चीड़ोतरी सुं षेड़ ।

१२) बाजे ।

२) भरोती ।

२) षीड़ोतरी धांन म० १०० ।

१) वणोया नुं म० ६ रु० १) ।

५) पाठा रा ।

५) जीमण रा ।

३११)

१८००)

१३७०) ऊनाळी रौ षरड़ो—

१५०) बीघा १००, छै तेरा प्रत बीघे १ रु० १॥) लागत रा

१५६) ऽ१८ १५३) ऽ१६

८५०) गेहूं भोग म० १६५० असल भोग रा लागत रा—

१२५०	१०००	२५०	करसां ।
२००	१७५	२५	पाही ।
२००	२००	०	नटषुट ।
१६५०	१३७५	२७५	

३५०) षरड़े म० ३॥ रु० १) रौ भोग बांसे ।

।) असल ।) चीड़ोत री १३) बाजे ।

३०) चांच ४ प्र० १॥) ६

नीलो कुवैं चिणो २०)

१३७०)

१३७०)

२०. सोझत रा हासल रौ उनमांन—

३३७०) माल वरसाळी ऊनाळी ।

५२१) बाजे

१०) देड़मै[1] आंवली रा ।

---

१. दाड़म ।

१५०) मेंहंदी माळीयां रै सदा री छै, रु० ५) सिकदार रै सुषड़ रा दै ।

संमत १७१८ संमत १७१९
१७६) १३८)

४८) नींबुआं री माळीयां रै ५४) ।

४८) संमत १७१८

४८) संमत १७१९

२१) तरकारी पहैली टका ८ ऊधड़ा था । पछै मीयांजी बीघे १ रौ रु० ॥) ।

१८) गुळी रा षेत कदेक हुवा था[1], तिण री जमा चली जाय थी, छींपा, पींजारा ।

५०) ताबा सं० १७१८ १७१९
५२) ५५)

३६) आघोड़ी रंगै सु भांभी देवै ।

८०) साबणगर पाटा रा देवै मास १२

संमत १७१८ १७१९
४८) ८०)

१५) छींपा माल गुळी रा दै ।

३०) कलाळ दारू री भठी रा दै । संमत १७१८ १७१९
३०) ३४)

१०) षटीकां रा कसायां रा ३) १०)

३०) षटीकां षाल रंगै छै तिकां रा २१) ४६)

२३) घांणी तेलीयां री १९) २५।)

५२१) ।

1. कमी हुए थे ।

५५) फुटकर रकमां रा

		संमत १७१८	१७१९
१०)	तेरीया री साल	८)	१२)
१५)	गेहर तेहवारी ३	१४)	१६॥)
३०)	एवड़ां री चराई चरषी १ दा० रु[1]	२८॥)	३७)

५५)

५००) कसबे रु० ५०० तथा ६००) तुलावट ।

४४४६)

देसाई वाव	असल जमा	सं० १७१५	१६	१७	१८	१९	२०
सेरीणो	२३९१)	२१०२)	३२४१)	२०६८)	२१९५)	२१६१)	१९००)
गुघरी	६९३)	५४१)	६००)	५३०)	५९३)	५७३)	०
डुमालो	१४४)	१२२)	१३३)	१३४)	१३४)	१३३)	०
वळ	३९३)	२४७)	२८४)	२२६)	२७३)	२४९)	०
रसत	१३३३)	८७३)	०	८७२)	०	८८८)	०
बांणीया री अरट मढली	१६४)	७८)	११५)	९२)	९३)	९४)	०
पांनचराई	२४५)	२४५)	५०।)	९१)	९९)	१५४)	०
फरोही	५००)						
सारण री वरस फर	४१७)						
मीलणो	५०)						

१. रु० १६) ।

लिषावणी १२०)

तलबानो २०)

बटाव

बाहारली दांण	०	०	०	०	२५३८)	३९५३)
कणवार					५०)	३५०)
तगीरात बळ					२६)	२६७)

२१. सोझत पातसाही तरफ था पाई जागीर में, तनषाह दांम मांहे—

दांम लाष	रुपीया	आसांमी
५000000	१२५०००)	मोटा राजा नुं।
५000000	१२५०००)	राजा सूरजसिंघजी नुं।
६000000	१५००००)	राजा गजसिंघ नै इजाफै कीया संमत १६७६ १000000 " १६८९ ५000000
८000000	२०००००)	माहाराजा जसवंतसिंघ नै। आगे संमत १६९५ ६000000 इजाफे " १७११ २000000
२४000000	६000000)	

२२. परगने सोझत रौ षालसै हासल ऊपनौ, तिण री जमाबंधी सालीण[1] री—

६०४८५) संमत १६९२

४९९८७) " १६९३

1. प्रत्येक साल की।

२२९६४)	संमत	१६९४[1]
४५१६३)	„	१६९६
३६६४५)	„	१६९७
३२४७४)	„	१६९८
३५९९४)	„	१६९९
४९२३५)	„	१७००
३५६६१)	„	१७०१
५७५२६)	„	१७०२
४१७२२)	„	१७०३
३०३९९)	„	१७०४
१७४५५)	„	१७०५
३३७७४)	„	१७०६
२४५७२)	„	१७०७
३२६१६)	„	१७०८
३६८५४)	„	१७०९
२६९०८)	„	१७१०
४७९०१)	„	१७११
५१५९०)	„	१७१२
४३१०९)	„	१७१३
४१८५८)	„	१७१४
३००	„	१७१५
४५५२७)	„	१७१६
५०८६८)	„	१७१७

१. ४७१८६) समत १६९५ ।

कुल सालीणो सोझत परगने रो जागीरदार सांसण सुधो ठीक छै—

१३८६००)	संमत	१७११
१६८४०२)	,,	१७१२
१२४५७३)	,,	१७१३
१२०१११)	,,	१७१४
६४१६८)	,,	१७१५
१४६४१०)	,,	१७१६
१६६४२४)	,,	१७१७
१८५५५०)	,,	१७१८
१५७८१०)	,,	१७१६
७२१८७)	,,	१७२०
११७००६)	,,	१७२१

१०६५५) षालसो

संमत १७२० ६१२३२) जागीरदार सांसण।

७२१८७)

संमत १७२१ २८८१६) हासल

७६०६) बाजे

७२२५७) जागीरदार

७६२७) सांसण

११७००६)

परगने सोझत रा गांवां रा हासल री विगत

२३. ४६ अतरा गांव आवादांन अवल ऊनाळी हुवै—

गांव आसांमी—

१ सोझत कसबौ १ रामावासणी
१ मुहाळीयौ १ सीहाटी १ सीवराड़
१ वगड़ी १ दुघवर १ वीठौरौ बडौ १ वासणौ
१ वीलावास १ घेनावास १ धाकळो[3]
१ सुरायतौ १ सहैबाज १ नींबली मंढा री
१ दुणलौ १ सांडीयौ १ षोषरौ
१ ईसाली १ वापारी १ घणलौ
१ देवळी अषा री १ कीराड़ी १ सेषावास
१ बातौ वाडीयौ[1] १ बाहड़सा १ मेलावास
१ झाड़ढंढ १ मढलौ बडौ १ धनेहड़
१ षारड़[2] १ बौर नडी १ राजलवो तेजा
१ फारोलीयौ १ गादाहलौ १ रोसांणीयौ
१ चांबडीयाक १ सिराणलौ १ सिरीयारी
१ जांनोदौ १ वडी १ करमावास
१ मलसा बावड़ी १ राणावास १ हरठावास
१ चेलावास १ चिरपटीयौ १ गौंडगड़ी[4]

४६

२४. ४५ इतरा गांवां दौम ऊनाळी हुवै—

१ मोढौ १ षारीयौ नीवरौ १ कंटाळीयौ
१ गागुरड़ौ १ चंडावस १ बरणो
१ भेवली १ आंबो १ साडारड़ो
१ दाघीयौ १ बोलमाला १ सांउपुरौ[5]
१ पीपळाज १ हरीयामाळी १ ढुंढो

१. बतौ बाड़ीयौ। २. षारड़ी। ३. धाकड़ो। ४. गोडा गड़ी। ५. सभपुरौ।

१ केलवाळ	१ षांभळ	१ मढलो षुरद
१ भैंसणौ	१ डौयनडी	१ षारीयो फदा रौ
१ पांचनाडौ हुलां	१ सीधा बासणी	१ रायमल री बासणी
१ मांनसिंघरी वासणी	१ हींगावास	१ पंचनडो टाक
१ हमीरवास	१ हूण गांव बडौ	१ सोवणीयौ
१ भांणीयौ	१ पचनडौ लाला[2]	१ सींचणौ
१ सारंगवास	१ भोजावास	१ वीठोरौ षुरद
१ साढरौ[1] षारीयौ	१ ठाकुरवास	१ भरहावास
१ गोपावास	१ रेवड़ी	१ राजगीयावास षुरद
१ चवावडी	१ छीतरीयौ	१ अषवास ।

४५

२५. ३४ अतरा गांवां सहेल ऊनाळी हुवै समै—

१ आल्हावास	१ वाघावास	१ वीरावास
१ सीसरवादौ	१ नीबलो ऊहड़ा	१ भोरड़ो
१ झीथड़ौ	१ देवळी हुलां	१ महड़ासौ
१ महेलाप	१ दांमा धांधल री वासणी	१ पळासलो बडौ
१ पाटेलीयौ[3]	१ धवळहरौ	१ थारावासणी
१ हूणगांव षुरद	१ महेव	१ माडपुरीयौ
१ मामावास	१ गुजरावास	१ हासलपुर बडौ
१ लोळावास षुरद	१ षारची	१ कादु
१ षारीयौ वडौ	१ हेमलीयावास बडौ	१ लालपुरौ
पळासलो षुरद	१ जोगरावास	१ हेमलीयावास षुरद
१ बड़ रो वासणी	१ हासलपुर षुरद	१ रांकणो
१ वोलीयावास[4] ।		

३४

१. सोढां रौ। २. लाली। ३. पोटलीयौ। ४. वांणीयावास।

२६. इतरा गांवां सेंवज हुवै तथा षारचीया ऊनाळी ढीबड़ा के थोड़ा बोहोत हुवै–

1 धागड़वास | 1 अटबड़ौ | 1 झुंपेळाव
1 चोपड़ौ | 1 हरसीयाहेड़ौ | 1 पांचवौ
1 षुटलो | 1 हायत | 1 लीलावास बडौ
1 गोघेळाव | 1 दुदीयौ | 1 बाहली
1 भींवाळीयौ | ३ भेटनडौ | 1 भागेसर
1 चांदांवासणी | 1 राजलवौ बडौ | 1 चुल्हैळाई
1 दूधीयौ | 1 बीचपुडी | 1 सांपो
1 मुरड़ाहो।

२४

१५२

२७. ३२ अतरा गांव सूना था मांजरै मंडै छै। दाषली करी—

1 रेबारियां री बासणी | 1 सूरीया बासणी
1 झुलीयौ[1] मांढा रौ | 1 दुधव रा वास
1 गोइंदपुरौ | 1 जोधड़ावास
1 घंटीयाळी | 1 पातुवास | 1 रांमपुरौ
1 हरसोयाहेड़ौ षुरद | ३
३ षोषरा मांहे | 1 नोबाहेड़ौ
1 वांणावास[2] | 1 मांडलावास | 1 हीगोला री वासणी
1 देवळोयावास | 1 गोपावास सांडीयां रौ
३ | 1 माल्हेको

1. रुलियो। 2. बाणियावास

१ जेसावस

२ बुटेळाव–

१ षुरद वास जोड़ में   १ तीजो वास भाटी गोपाळदास री।

२

३ कंटाळीया रा वास   ४ बगड़ी मांहे

१ महेवड़ो १ कोटड़ी   १ धनाज १ पीपळपुरो

१ त्रीपमारीयो[1]   १ हसावस १ दुरगावस

३   ४

२ भेटनडो

१ जैतसी री वासणी

१ रा० जसा रो[2] वास

१ कासवो

१ रायमल री वासणी

१ षारची प्रोहतां री

१ पाटमो गढ

३२

२८. २७ अतरा गांव मेरां रै दाषल–

१६ वसता

१२ ऊनाळी पीवल हुवै–

१ सारण	१ नीबड़ी	१ थट
१ बोडीया	१ वणीयामाळी सोहल	१ नाषरो
१ सीचीयाई	१ लाषोड़ो[3] सेहल	१ गजणाई

१. त्रीसमारीयो। २. राजसा री। ३. लांबोड़ी सहल।

१ सिरीयारी १ केरां रौ वडौ[1] १ गजणाई दाघी[2] माहेली

१२

२९. ७ ऊनाळी सेंवज हुवै, एक साषीयौ–

१ वोरीमादो १ डीघोड़ १ लालव[4]
१ त्रीझारड़ी[3] १ फुलाद १ रसाड
१ रायरौ षुरद

७

१८

३०. ८ मेरां रा गांव सूना षेड़ा—

१ वीलणवास १ नाहाड़ो १ मराजर
राणावास १ पाडली[5] १ कालोकोट
१ षीरणी षेड़ी १ गजणाई रा०[1] कनीया री

२७

३१. ३३ सांसण रा गांव—

२३ दुसाषीया पीयल ऊनाळी हुवै–

१२ बांभणां रा—

१ रूपावास १ लुढावास
१ राधा री वासणी १ पांचवो बड़ो षारोटण[7]
१ अनत री वासणी १ पळासलो चासरे
१ नरसिंघ री वासणी १ कांना रा[8] वास
१ मालपुरियौ १ वासटकीये[9]
१ नाथलकुड़ी १ मालपुरीयौ ।

१. षेड़ो। २. दामा। ३. झोझरड़ी ४. कालव। ५. पालड़ी। ६. सारंग।
७. षारो पांणी। ८. काना। ९. तालकीयो।

१० चारणां रा—

१ पांचेटियौ　　१ मोरटहुकौ　　१ गोधावस

१ रयेड़ा री बास[1]　　१ राजगीया बास　　१ अंगद बास

१ लाटण[2] हैडो　　१ रैहनड़ी　　१ पळासलो रांमा री

१ बीजळीयावस सहे[3] ।

१०

१ जोगीयां नुं – हीरावस

२३

६ एक साषीया सेंवज हुवै—

३ बांभणां रा—१ वडीयाळौ　　१ धुहड़ाया[4] वासणी

१ चाहड़वास ।

३

३ चारणां रै—१ सोमड़ावस　　१ नापावस

१ रांमा री वासणी

३

६

४ सूना गांव चारणां रा—

२ रयड़ां रौ वास[5]—१ मुळीयावास　　१ बूटेळाव

३३

४४

परगनै सोभत

३२. १५२ गांव हासलीक—

११ नंदवांणां बोहरा बसै मांहे बीजो रत बसै घणी ।

---

१. रेपड़ावस वडो । २. लाहिया । ३. हसल । ४. धूहड़ीया । ५. रेपड़ावस ।

१ सीववाड़	१ मांढौ	१ बाघावस
१ चंडावड़[1]	१ षारड़ा	१ महेव
१ दुधवड़ी	१ वगड़ी	१ सुरायतो
१ वरणो	१ थारावासणी ।	

११

१८ पलीवाळ बांभण बसै–

१ झुंपेळाव	१ भागेसर	१ भटनडै रा बास
१ पाटलीयो[2]	१ चांदा वासणी	१ मालाबस
१ चुलेटळाई[3]	१ षाभेल	१ डूंगरसी री वासणी
१ कारोलोयौ	१ सहुपुरौ	१ झीथड़ो
१ माडपुरीयौ	१ बीचपुड़ो[4]	१ ल ळावास बडौ
१ दुधीयौ	१ षुटल	१ सोवाणीयौ
१ भांणीयौ ।		

१८

१ विसनोई बसैं - हूण गांव बडो।

३०

३३. परगने सौभ्रत रै गांवां रौ मेळ इण भांत कीयौ, गांव २४४ ।

रुपिया रेष	गांव	आसामी
१००२००)	३८	इतरा तौ बडा गांव छै ।
	२८	इतरा निषालस ।

१ सीहाट	४०००)	१ कसबो सोजत	८०००)
१ अटबड़ो	५०००)	१ सीवराड़	५०००)

१. चंडावल । २. पीटलीयौ । ३. चुलेलाई । ४. बीजपुड़

१ रांमावासणी	३५००)	१ मुटाळीयो[1]	४०००)
१ षारीयो नीबा री	३०००)	१ दुधबड़	४०००)
१ धाकड़ो	३०००)	१ वीठोरी बडी	३२००)
१ गागुरड़ो	३०००)	१ सुरायतो	४५००)
१ सटवाज	३०००)	१ अलहवास[2]	३०००)
१ वापारी	३०००)	१ दुणलो	३०००)
१ देवळी आंबा री	३०००)	१ नीबली माढा	३०००)
१ सेषावास	३०००)	१ भेवली	२०००)
१ काराड़ी	३०००)	१ वाहड़सो	३०००)
१ भेटनडा	३०००)	१ ईसाली	३०००)
१ वासणो	३०००)	१ बरणो	३०००)
१ वीलावास	५०००)	१ षेनावास[3]	

१० बडा पिण रईयत ईंयां गांवां घटै, सदा बडा ठाकुरां री बसी लायक गांव छै—

१ मांढो	६०००)	१ बगड़ी	१००००)
१ षोषरो	४०००)	१ चंडावळ	५०००)
१ कंटाळीयो	४०००)	१ सांडीयो	४०००)
१ आवो	—	१ धणलो	४०००)
२ वातो	३२००)		
१ वडो वास			
१ वरायो			

१० रु० ४०२००)

३८ रु० १४०४००)

---

१. मुहाळीयो। २. आलावास। ३. घेनावास ४०००)।

६३०००) ५२ दोम गांव

३४. २८ निषालस रैती गांव

१ मेळावास	२०००)		१ बाघावस	२०००)
१ सीसरवादौ	१५००)		१ भागेसर	२०००)
१ झाड़ढंढ	२३००)		१ बीरावास	१५००)
१ दाधीयौ	९००)		१ चोलमाळी	१५००)
१ धनेड़ी[1]	—		१ छतरीयो	२०००)
१ बौरनड़ी	१०००)		१ रावळवो[2] जैतरो[3]	२०००)
१ रोसांणीयौ	२५००)		१ चोपड़ी	२०००)
१ हूणगांव	८००)		१ षारड़ी	२०००)
१ करोळीयौ	१५००)		१ हरसीया हेड़ा	१५००)
१ सीराड़रो[4]	२०००)		१ सोउपुरौ	
१ नीबली उहड़ांरी	१५००)		१ गांधाणो	२०००)
१ झुंपेळाव	१५००)		१ राजलवो बडौ चोपड़ो[5] (नीलकंठ)	२०००)
१ मंढलो वडौ	२०००)		१ झीथड़ौ	२०००)
१ भोरड़ी	२०००)			
१ चंबड़ीयाक	१५००)			
२८ रु०	४८२००)			

२५ बसीयां लाइक रयत घणी-सी कांई नहीं।

१ पीपळाउ[6]	१५००)		१ हरीयामाळी	३०००)
१ देवली हुलां री	१२००)		१ केलवाळ	१०००)
१ सिणलो	२५००)		१ सिरीयारी	२२००)

१. १२००)। २. राजलवो। ३. तेजारो। ४. सडारड़ो। ५. नजीक
६. पीपळाज।

१ वडी	१५००)	१ जांणौदो	१५००)
१ करमावस	१५००)	१ मलसा बावड़ी	१५००)
१ षोहड़ासौ	१५००)	१ हरढावस	२२००)
१ मुरड़ाहो	२०००)	१ भैंसेणौ	३०००)
१ डोईनडी[1]	१५००)	१ षारीयो फदरा रौ	१०००)
१ महेव	—	१ ढुंढौ	११००)
१ षीभल[2]	१५००)	१ चेलावास	२७००)
१ भींवाळीयौ	१५००)	१ चिरपटीयौ	३२००)
१ मंढलौ	१२००)	१ धवळहरौ	२०००)
१ रांणवास	३०००)		

२५ रुपिया ४४८००)

५३ रुपिया ८३०००)

४०२००) ६१ छोटा इतरा गांव समै पारला छै।

३५. ३३ निषालस, इतरा—

१ पंचनडी दुनारौ[3]	७००)	१ चवांनडी[4]	१०००)
१ मोकला वासणो	६००)	१ मोहालीयौ	१०००)
१ सोधा वासणी	१०००)	१ रायसल[5]री वासणी	८००)
१ गोधेळाव	७००)	१ गोडागड़ी	१०००)
१ पोटलीयौ	५००)	१ हींगावास	७००)
१ हासलपुर बडौ	९००)	१ हूणगांव षुरद	६००)
१ चांदा वासणी	४००)	१ थारा बासणी	८००)
१ चुल्हळाई	६००)	१ रुदीयौ	७००)
१ पांचवो	४००)	१ गुजरावास	५००)

१. डोयनडी। २. पंभल। ३. हुलां रो। ४. चवाबड़ी। ५. रायमल।

१ बुटेळाव बडौ वास—
कान्हीया वालो ४००
१ हांसल षुरद ७००)
१ दांमा धांधल री ५००)
वासणी
१ मांनसिंघरो वासणी ८००)
१ पांचनडौ टांक रौ १०००)
१ लोळावास सलैदी रौ ७००)
१ सीवाणीयौ[1] ७००)

१ मांडपुरीया ५००)
१ हमीरवास ६००)
१ षुटली ५००)
१ भांणीयौ ५००)
१ मांमावास ५००)
१ पळासळी बडौ ८००)
१ बड़ री बासणी २००)
१ दूधीयौ ५००)

३३

३६. २८ इतरा गांवां में रैत नहीं, वसी लायक छै[1]—

१ लोळावास षुरद ४००)
१ बीचपड़ी[2] ६००)
१ सांपो ८००)
१ पळासलो षुरद ७००)
१ पानड़ो लाला रौ ६००)
१ बीठौरौ षुरद
१ हेमलावास बडौ ८००)
१ गोपाबास १०००)
१ बाहळी ६००)
१ रांकाणो आयां नजीक रैत कदै नहीं। सदा सींवज रहा[3]।

---

१. सोवणीयो। २. बीजपुड। ३. वसीया रहा।

---

1. वसने योग्य है।

१	षारची	६००)
१	भोजावास	५००)
१	ठाकुरवास	१०००)
१	लाडपुर	२००)
१	सींचणौ	६००)
१	षारीयौं सीढां रौ	१०००)
१	भरहावास	५००)
१	रीधड़ी	६००)
१	राजगीयावास	६००)
१	धंगड़वास	८००)
१	हायत	१०००)
१	रायरौ बडौ	१०००)[1]
१	बणीयांवास	५००)
१	सारंगवास	६००)
१	कारू[2]	१०००)
१	जेठा रौ वास	१०००)
१	हेमलीयावास षुरद	५००)
१	अषावास रूधौर रौ	२००)
१	— —	—
२८	रुपिया	१८४००)
६१	रुपिया	४०२००)

१५२

६२००) २७ इतरा गांव मेरां रा—

१. ८००)। २. कादु।

१६ वसता—

1	सारण	२०००)
1	थळ	२००)
1	सिरीयारी महीली	२००)
1	झींझारड़ो[1]	१००)
1	राघोड़ो	२००)
1	नींबड़ी	२००)
1	कुलाज	२००)
1	नांबरौ	१००)
1	गजणाई वडी	३००)
1	रायरौ	१००)
1	रसाड़	१००)
1	षोड़ीयौ	१००)
1	सचीयाय	५००)
1	गजणाई दाधी	१००)
1	केरौ री षेड़ी[2]	२००)
1	लाबड़ो[3]	१००)
1	वणीयामाळ	१००)
1	बोरीमादौ[4]	२००)
1	कालब	१००)
1	—	—
१६		५४००)

२७. ८ सूना—

१: झीझरड़ी । २. केरां रो षेड़ो । ३. लबोड़ो । ४: बोरीडादो ।

१ बीलणवास—सारण था उगोण नुं[1], तठै कुवौ १, तळाई २ छै।

१ मसजरौ[1] भाषर रौ, नवौ षेड़ौ को नहीं।

१ पालड़ी रौ षेड़ौ—देवो रामणरा वसै। बावड़ी १ तठै छै।

१ कालोकोट—बावड़ीयां रा वीच री चीता मेर वसाई, मेवड़ीया म्हां।

१ षीरणी पेड़ी[2]—नवौ वसीयौ थौ।

१ नाहटौ

१ राणावास रौ षेड़ौ—बोरीमादा था कोस ॥ छै। ढूंढा छै।

१ गजणांई सारंग षाती वाळो दाधी भेळी, षेड़ौ बड़ी गजणाई परै कोस ॥।

८	६२००)

२७

१७९

२२३००) ३३ सांसण रा गांव—

३८. १५ बांभणां नुं—

१ तालकीयौ	५००)
१ लुढावास	८००)
१ अनतवासणी	५००)
१ चाहड़वास	८००)
१ पळासलो बासा री	५००)
१ पांचवौ वडौ	५००)
१ धुहड़ीया वासणी	५००)

१. मसजर। २. षीरणा पेड़ा।

1. पूर्व दिशा में।

१	मालपुरौ प्रोहता रौ	४००)
१	कानावास	५००)
१	नाथलकुड़ी	७००)
१	मांणपुरौ देरासरीयां रौ	४००)
१	बडीयाली[1]	४००)
१	नरसंघ बासणी	७००)
१	रूपावास	१५००)
१	राघा री बासणी	७००)

१५ रु० ६५००) मांजरे, रेष आगे नहीं लिषी थी। पछै पत्र देष लीषी छै।

३६. १७ चारणां रा–

१३ गांव बसता,

१	पंचेटीयौ	२५००)
१	रांमा बासणी	५००)
१	नापावास	३००)
१	लहरीहणहेड़ी[2]	५००)
१	गोधावास	५००)
१	रहैनडी	१५००)
१	राजगीयावास	७०)
१	वीजळीयावास	७००)
१	रेपड़ावास बडै राव[3] जोधा री दत्त बारेट पांचाहेड़ोत नुं –	
१	मोरटहूको[4]	६००)

१. वडियालो। २. लीहणड़ो। ३. बड़ोवास। ४. नवो दियौ (अधिक)।

१ सोभड़ावास ५००)

१ पळासलो, रांमा री, नवौ दीयौ १०००)

१ अंगदवास ४००)

¹[४ सूना सांसण मांहे—

२ रेपड़ावास

अै षेड़ा २ रा षेत पीजै छै।

१ गांव—

राव गांगा रौ दत्त ब्रा० भैरव नींबावत, बड़ावास थी कोस ०। ऊगवण में षेड़ौ। ऊंचा दड़ा[1] माथै बसतौ, ढूंढा[2] केर १ मोटौ छै। भैरवनडी तळाई।

१ रा० प्रीथीराज कूंपावत बा० देवीदास भैरवोत नुं, हळवा १० थाहरवासणी रै १ धरती।

१ मुळीयावास सूनौ

लाहीणहेड़ा था कोस ०।। ऊगवण मांहे। षेड़ा री ठौड़ नींब ३ छै। तद राव गांगा रौ बारट तेजसी वीरसलोत नुं। पछै संमत १६६४ रा करमसेन नुं सोभत हुई तद रा० राजसी अषावत नुं दीयौ। पछै तुरत सोभत राजा सुरजसिंघ नुं हुई तरै पाछौ बारठ सांकर नुं दीयौ। लाहीणहेड़ा री सींव नै इण री भेळी हीज छै[3] सु हिमैं लाहीणहेड़ा मांहे षेत हळवा २० छै सु षड़ीजै छै। अरट २ षारचीया छै। संमत १६८४ सूनौ हुवौ।

१ बूटेळाव

. १. 'ख' प्रति का अंश।

1. बालू का टीला। 2. खंडहर। 3. शामिल ही है।

बडा बूटेळाव मांहे षेड़ो मांडै छै सु तो कचोळीया नाडा कनै छै। सांसण थो, सु मोटै राजा लोपीयो[1] ने धरती हळबा ३ रूपावस दीयो छै। तिण वासतै षेड़ो मांडीयो छै, चारण कनीया नुं।

४

१ जोगीयां नुं हीरावस

४०. मोजरा इतरा गांव मांहे छै—

१ रैबारीयां री बासणी

कसबै मांहे रनीयाकुवा तीरे सोभत था कोस २ कोहर सागर छै। माळी कलाळ षेत षड़ै।

१ रुलीयो

मांढा मांहे वास १ मंडै छै, मांढा था कोस ०।। आथूण सूं जीमणे, तठै बावड़ी १ छै। पींपळ १ छै।

१ गोयंदपुरो

बडेरा मांहे रा० गोयंद ऊदैसिंघोत उठै वसीया था। षेड़ा री ठोड़ सीवा २ भाटा रा, सीवा नदी नजीक।

१ घटीयाळी सुरांइता मांहे

सुराईतां था कड़ी बीच षेड़ो, तठै कोहर १ छै। नदी सोभत वाळी षेड़ा नजीक।

१ नीबीयाहेड़ो

पळासला मांहे षेड़ो लांबीयां रावळबस बिचै, तठै तळाई २ छै।

१ सूरीया बासणी

अटबड़ा मांहे, गांव था कोस १ कुंभाळाव तळाव कनै षेड़ो छै। नाडी केरली ऊपर पींपळ ४ छै।

---

1. जब्त कर लिया।

३ दूधवड़ मांहे मांडै छै सु दुधवड़ मांहे षड़ीजै छै ।

१ जोधड़ावास

दुध्रवड़ था दिषण नुं षोडीयाळी रै थान परै षेड़ा री ठौड़ नींब २ अर बड़ १ छै । तळाई जोधस ।

१ पातुवस जौड मैं

पिछम नुं दुधवड़ अषावास बीच, षेड़ा री ठौड़ पींपळ २ ऊकरड़ौ[1] छै । अरट १ पताळीयौ नाडी ऊपर ।

१ रांमपुरौ

दुधवड़ थी तीरवा २, वीठारा रै मारग षेड़ौ छै । दिषण नुं नाडौ षेजड़नडी, षेत पातळा[2] ।

१ हरसीहायड़ो षुरद

चोपड़ा मांहे आगे ढंढणीयौ कहीजतौ । षैड़ौ चोपड़ा रा जोड मांहे छै । संमत १६६७ भा० वेणीदास चोपड़ा भेळौ कीयौ ।

१ देवलीयावस

षबर नहीं, देवलो अरट छै ।

१ षोषरौ

मांहे मांजरा बाणीया वसै । षोरल रौ मोड री नाडी था तीरवा २ नाथलकुड़ो । षोषरा बिचै आगर ५ लूंण रा हुवै छै । अरट हळे १२ षोषर मठला रा करै ।

१ मांडलावस

षबर नहीं । मोडे री नाडो मांजरा रौ अहजन ।

१ हींगोला री वासणी

षोषरा मैं षड़ीजै । षोषरा था कोस ०॥, षोषरा पंचनडा वीच

---

1. मलवे का ढेर । 2. कम उपजाऊ ।

नदी षेड़ा तीरे वगड़ी वाळी । अरट १ षेड़ा तीरे छै । रा० जगनाथ वाघोत अठै बसीयौ ।]

१ मालको

चिरपटीया मैं रांणावास बीच षेड़ौ छै। तठै पींपळ २ छै, नै तळाव १ छै।

१ जेसाबास

भागेसर मैं षेड़ौ । गांव था पांवडा २०० तळाव गोपेळाव नजीक पाधर में छै।

२ बूटेळाव

नै चोषाबास मोटै राजा उरो लीयौ, हळवा ३ धरती दीवो कांना पाहाघो[1] नुं।

१ षुरद बूटेळाव

षेड़ौ कचोळीया नडी नजीक।

१ तीजौ बास

भा० गोपाळदास नुं थो, सु संमत १६६९ नुं दो पटै हुवो बरसता जी नै ।

२

४१. ३ कंटाळीया रा मांजरा—

१ महैबड़ी

मगरा री जड़ विणजारी घाटी तळै ढूंढा छै । बावड़ी एक छै, मनु' तळाव छै, पड़ीहार वाळौ ।

---

१. पिछम ।

---

1. खोज पहिचानने वाला ।

१ कोटड़ी षेड़ी

भाषर में मात्रदेवी कनै बावड़ी १ कंटाळीया वघवी था कोस १ ऊगण नुं। आषळी बडो षेड़ा री ठौड़ छै। सुरावास ग्रौहीज।

१ त्रीसमारीयौ

षेड़ी ऊंचौ थळ माथैं। तठै बड़ छै, पांणी नहीं, थळ पीवता।

३

१ कसबौ जेठ

उगरै सांवळदासोत गुढौ बसायौ थौ। हमें सूनौ छै। तळाव १, कुवौ बुराणीयौ[1]।

१ रायमल रो बासणो

केईक सहैबाज पिण कहै छै। बात में मांजरौ कोस ०॥ पछम नुं, भाषर री षंभ तळाव १ सहेजळाव उगण नुं[2]। भाषरो ऊपर माता रौ थांन।

१ — —

---

१ गोपावासणी[3]

सांडीया मांहे षेड़ा री ठौड़ बसीया। चिड़ीयावास छांड नै वसीया। तळाव १ छै। पांणी मास १० हुवैं।

४२. ४ वगड़ी मैं मांजरै छै—

१ धनाज

वगड़ी में नाडी ग्रपरणी तीरे पेड़ौ, पींपळ मोटा छै। गडी री सींव रौ मुदो धनाज ऊपर छै।

---

१. गोढ़वाड़ मो छेड़ो कांकड़। २. पांणी मास ८ रहे, अरट १ वूरीयो पड़ियो।
३. गोपावास।

१ पीथलपुरी

कोस ११, रा० प्रथीराज देवलोया था आयौ तद अठै गाडा छोडीया। पछै हींगोला पींपाड़ा नुं पटै हुवौ। पींपळ देवली मुहरड़ा बीच छै षरड़ री।

१ हासावस

देवलो री सींव में षेड़ौ नदी कनै पोवडा १०० देवीजी था। सींधल हासौ अठै बसतौ। चौतरो छै हासै री।

१ दुरगाबास

देवली रा[1] तळाव सीबाटलो १ छै। तीं पर षेड़ौ छै कोस ०।.

४

२ भेटनडौ

१ जैतसी री बासणी

भेटनडा था कोस १ पछम नुं पाधर में। पांणी थोड़ौ मांडा री नाडी पीवै। संमत १७०५ सूनौ हुवौ। रा० कांनौ सादुळ इण षेड़ै वसीयौ।

१ रा० जसौ कलावत

रा० जैतसिंघ री चाकर, भाटनडा थी कोस १ षेड़ौ पाधर छै। — — — ।

२

१ पाटमोगढ

सोझत था कोस ८ मगरै लगतै भाषरा था कोस ५ आगी हुलीजण

---

१. देवली हुलांरी रा।

री वडी ठुकराई हुई, वडी ठौड, सेहर सूनो दुकानां छै। गोरी पातसा रा कराया महोल छै[1]।

१ पारेची

प्रो० नु सासण थो। सु सोझत कोस ७ षरक बास, तोरवा १ घेड़ो पारची था ऊगण तणा नु[2] संमत १६४३ प्रोहत लोपीयो। हमें वडा पारची में षड़ीजै छै।

४३. ३०२५००) रेष री ठीक मांजरै षेड़ा तिण री रेष विना ठीक गांव २४४, विगत हासलीक गांव १५२.

१५२ हासलीक गांव
　　३८ बडा गांव
　　२९ निषालस, वसी ९

२७ मेरां रा गांव
　　१९ सांसण
　　८ मांजरै
　　———
　　२७

५३	दोय	२८	२५
६१	दोय	३२	१९
१५२			

३२ मांजरै सूना
———
२४४

३३ सांसण
　　१५ चारणां नै
　　१० जोगियां नै
　　———
　　३३ सु तामें ४

———
२४४

---

१. पाटमोगड—सोझत सूं कोस ८ नगरै लागतो, नाबदा रा कोस १ आगै हुवा तिण री वडी ठुकराई हुई। आगै वडो सेहर वसतो, सहर सूना। दासा रा आरम छता छै। मांहे बावड़ो कुण्ड ग्रह पाणी रा छै। गोरी पातसाह रा कराया के महल पिण छ। पेत तो हाल ठौड़ बांसै को नहीं। २. प्रो० पेताबत नुं सासण में थो।

४४. परगने सोभत री हकीकत गांवां रौ मेल

१ कसबौ सोभत

जोधपुर था कोस २२ रूपारास सुं कहण मांहे वसती घर २२५०। बरसाळी धरती हळवा करै तितरा नै ४०० ऊनाळी। अरट हुवै गांव आगे पछम रै फळसै नदी। महाजन सीरवी घांची माळी छत्तीस पवन बसै छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२६१३)	५००३)	५९२७)	४६६२)	४२८०)

१ सीहाट

सोभत था कोस ४ ऊगवण नुं जीवणी। सीरवी जाट बांणीया बसै। बरसाळी षेत कंवळा, ऊनाळी अरट ५० तथा ६० मीठा वण छोतरा आलौ-नीलौ घणा तळावे हुवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०३१)	३९३६)	३०४५)	३५११)	३०४२)

१ सीवराड़[1]

सोभत था कोस ४ दिषण दीसी वास २ एक जाट सीरवी बांणीयां दूजै बास बोहरा नंदवाणा। बरसाळी बडा षेत जुवार बाजरी चिणा गेहूं घणा हुवै। अरट ३० तथा ४० मीठा षारा। गांव आगे नदी दोनां बासां बीच बहै छै। तळाव दो घड़ो मोडरी। बीघा १०० जोड़।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१३९९)[2]	३९५०)	२२९५)	२२०१)	२०४८)

१ मुहाळीयौ

सोभत था कोस ४ रूपारास मांहे। सीरवी जाट बांणीया बसै।

---

१. सवराड़। २. ३३८९)।

वरसाळी कंवला षेत, बाजरी बण हुवै। ऊनाळी पीवल सेंवज घणी, गांव री फळसौ[1]। दिषण नुं बडौ तळाव पांणी बरसोदीयो हुवै, सीवराड़ कनै।

संवत	१५७१	१६	१७	१८	१९
	१३४८)	१५०५)	२६६८)[1]	१७७६)	१३६४)

१ अटंबड़ौ

सोभत था कोस ५ ऊतर नुं। सीरवी बांणीया बसै। बरसाळी बडा षेत ऊनाळी रेल मगरा री पांणी आवै। बीघा २००० रेलीजै, काठा गेहूं हुवै। पील घणौ कोन्ही। बीलाड़ था कोस २ तळाव १ कुवौ भेळाव[2] नाडी १, मास ४ पांणी हुवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२५२८)	६१७१)	५११)	६१६८)	२०३१)

१ रांमावासणी

सोभत था कोस १ ऊतर नुं नदी रै पैले कांनी। सीरवी जाट बांणीया बसै। बरसाळी षेत कंवळा ऊनाळी अरट १५ तथा २०, पांणी भळभळौ, वण नहीं। तळाव १ गांव आगै। पांणी मास १० रहै। सोभत री सींव में गांव बसयौ। संमत १६४४ रै टांणै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५२१)	९११)	१६९६)	५५७)	७२३)

१ दुधवड़

सोभत था कोस ४ दिषण नुं जीमणै। जाट सीरवी बांणीया[3] बसै। रांमदास वैरावत बडौ दातार अठै हुवै। बरसाळी काठा षेत

---

१. २५६८)। २. कुभेळाव। ३. नंदवांण (अधिक)।

---

1. अनेक गांवो का निकास उस ओर से है।

हळवा ५०० ऊनाळी। षारा-सा बड़ा अरट ३० हुवै। सेंवज हुवै षेड़ा ३ गांव मैं मांजरै गांव आगे। तळाव रामेळाव मास १० पांणी रहै। बड़ी जोड़ छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०५३)	२३६९)[1]	२९५०)	२५५३)	१६९९)

१ षारीयो नीबा री

सोभत था कोस ३ रीतहड़ में। जाट सीरवी बांणीया रजपूत बसै। षेत कंवळा, बाजरी मौठ मूंग बण हुवै। ऊनाळी ढीबड़ा १० तथा १२ हुवै, मीठा। सींव घणी हळवा २००, नीब रा भाषर रा बाहळा घणा सींव मैं आवै। रा० सांगा सूजावत री उतन छै। डोहळी गांव में घणी छै। जोड़ बीघा २००।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	७०१)	१३३६)	१६४७)	१४२३)	१०४५)

१ वीठौरौ बडौ

सोभत था कोस ८ दिषण नुं आऊवा था नजीक। जाट सीरवी बांणीया बसै। बरसाळी बडा षेत काठा कंवळा, ऊनाळी अरट ढीबड़ा ३० तथा ४०। पांणी भळभळौ। तोड़ १ चेलावास दीसी नै, तळाव १ काळौ ढंढ। मास ६ पांणी घड़ोइ मास ८, हळवा २०० घरती मांजरौ १ गोईंदपुरौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५८४)	१२३६)	१६८३)	२०१२)	१३४७)

१ वासणो

सोभत था कोस ३ भेरहर में, जाट सीरवी बांणीया बसै। पहली नंदवाण बसै। संमत १६७५ छांड नै देवळी बसीया। षेत बरसाळी नै

---

१. २३६९)।

ऊनाळी अरट मीठा-षारा २० तथा २५ सींव में नदी षोषरी दिसी। तळाव १ राघेळाव १ गांव रै फळसै आथूंण नुं, बरसोंदीयौ पांणी रहै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
८९६) १०६६) २४५०) १४९२) १५०४)

१ धेनावास

कोस २ षरक कूंण मांहे। सीरवी बांणीया जाट बसै। नदी सेतरी बरसाळी, बडा षेत ऊनाळी अरट ४०। गेहूं चिणा छोतरा हुवै। मीठा षारचीया छै। तळाव १ बाघेळाव सुडा[1] बाघा री करायौ हळवा १४०।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१२६५) २७९४)[2] २५८४) ३६९४) २३०५)

१ सुरायतो

सोभत था कोस ४ मुळ षरक मांहे। बास २, वास १ लोक बसै। बास १ बोहौरा बसै। सींव घणी, नदी मांहे बड़ा द्रह। अरट २५ तथा ३० गेहूं चिणा अरट पीपळीयो पांणी हट छै। तळाव १ चौहणणी छै। तिण ऊपरा रा० करण री छतरी छै। नाडो १ कचोलड़ी पांणी मास ४ रहै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
९४१) १७३२) ३१०९) २६१५) १७३३)

१ आलाहवस

कोस २ रुपरास, बास २ सीधे जाट बांणीया बसै। बरणाळो हळ ७० बाजरी मोठ मूंग ऊनाली अरट ८ तथा १०। ऊंडो पांणी भळभळौ, तळाव १। पछै पांणी अरट पीवै[1]।

---

१. रूडा। २. २७६५)।

---

1. तालाब का पानी समाप्त होने पर अरट से पीते हैं।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१६
	६५१)	१८३६)	११२६)	१४३६)	६७३)

१ नीबलो मंढां री

कोस ७ दिषण नुं, सीरवी जाट बांणीया रजपूत बसै। बरसाळी षेत सषरा, ऊनाळी फेर सु हुवै[1]। अरट षारचीया मीठा। नदी षेत रेलै छै। आधा एक चणा सेंवज हुवै। नाडी[2] १ मास ८ पांणी दिषण री सींव गांव लायक छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१६
	१५६३)	१६८५)	२७८०)	२१६४)	१७०२)

१ सांडीयौ

सोझत था कोस ४ ईसांन कूण मांहे। सीरवी जाट रजपूत बांभण बसै। बरसाळी षेत भला। जुवार मूंग चिणा हुवै। ऊनाळी अरट ४० चांच ५० सेंवज चिणा बीधा ४००, तळाव १ वरसोंदीयौ पांणी। गोपावास रौ षेड़ौ मांजरै छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१६
	७५७)	११६७)	१७३४)	१८०७)	१३५२)

१ ईसाळी

सोझत था कोस ११ रूपारास नीवास रै सांधै। सीरवी बांणीया कुंभार बसै। बसी रौ गांव, कांठा रौ गांव गोढवाड़ रै कांकड़[1]। ऊनाळी अरट १५ चांच हुवै। चिणा हळवा १००, भाषरी लगते गांव तळाव १ पांणी मास ६।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१६
	६४०)	१७६०)	२६०५)	१४२७)	११३४)

---

१. करो तितरी सीव हुवै। २. घड़ोई नाडी।

---

1. सीमा।

१ माढो

सोभत था कोस ५ दिषण नुं । बांभण लुहार फुटकर कूंपावतां री उतन । षेत कंवळा । बाजरी मोठ मूंय वण घणी । ऊनाळी अरट ५ तथा ७ षारा । मुदै सेंवज चिा घणा । तळाव २ पांणी बरसौदीयौ[1], जोड़ बीघा २०० ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५६६)	२३४८)	१०५४)	३७११)	२२८०)

१ बगड़ी

सोभत था — ऊगवण नुं जाट बाणीयां सीरवी छत्तीस पवन बसै । सोभत सरीषौ कसबौ रा० जैतावता रौ उतन । बरसाळी बडा षेत । ऊनाळी अरठ ३०० हुवै वास १ नंदवाण । गांव आगै नदी बहै । रु० १०००) तळाव बंट रा ऊपजै, तळाव ४ छै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
७३११)	६३२८)	१२३१४)	६८३५)	६५१३)

१ काढळीयौ

कोस ५ परवाण मांहे, घणी रैत को नहीं । कदीम मेरां रौ गांव । हमें बांणीया जाट बसै । कूंपावतां री गांव । षेत कंवळा बाजरी मोठ मूंग वण हुवै । ऊनाळी पील हुवै, ढीबड़ा १० तथा २० पगै काचा । सेंवज चिणा घणा हळवा २००, गांव आगै तळाव बडौ' । मांजरा ३ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०९१)	१६३८)	२३४४)	१८७०)	२१७४)

१ वील्हावास

कोस २ षरक में सोभत था । वांणीयां जाट वसै । सोभत री सींव

---

१. दिषण दिश नु हल फरमा रौ करायौ ।

---

1. वर्ष भर चलने लायक ।

में बसै। संमत १६०० सोरवी नवा बसीया। बरसाळी वडा षेत, ऊनाळी अरट ४० तथा ५० मोठा-षारा, तळाव १ लालौळाई पांणो मास ८, जोड़ सुं अड़ती सोझत था।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२९८२) १६०८) ४११०) २४६८) ३३२९)

१ धाकड़ी

सोझत या कोस ३ षरक कूण मांहे। सीरवी बांभण बांणीया रजपूत बसै। बावड़ी १ बी० वोदा री कराई छै। ऊनाळी अरट ४५ तथा ५० गेहूं बण केढोतरा हुवै, बरसाळी षेत सषरा षेत ५ तथा १० चिणां रा। तळाव १ चेहनडी गांव नजीक छै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
६३९) २०२१) २२९२) १८७२) १३९८)

१ गागुरड़ो

कोस ४ मूळ मांहे। सीरवो बांणीया बसै। नदी तीरवा २। रेल संवज गेहूं चिणा हुवै। अरट २२ नवां हुवा छै। कोहर १ गांव आगै ती० ४ पणइट छै। षेत आधा एक ढीबड़ौ आधा रेलै। जुवार कपास सषरा हळवा १५, तळाई २ छै।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
१३६४) २१४६) १६७६) ९३५) ८९४)

१ सेहवाज

कोस ३ पूरब मांहे। बगड़ी था कोस ०॥, सदा बगड़ी रौ पटा रौ गांव छै। बगड़ी री सींव मे माळी जाट बांणीया बसै। षेड़ौ तुरक सहैवाजषांन रौ बसायौ। बरसाळी षेत सषरा। अरट २ ढीमड़ा २१ कोसेटा १० छोतरा मोठ बण तरकारी घणा। वाग १ कोस १ छै। मांह आंब नै बीजा झाड़ छै हळाव १००। तळाव १ में महीना ६ रौ पांणो रहै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१३९२) १७५९) ३१५२) २५५) २३०६)

१ दुणलो

कोस ३ परवाण कूंण मैं। जाट सीरवी बांणीया बसै। ६० जुपैं, ऊनाळी अरट १५ तथा २० मीठा। बणीयावण छोतरा चिणा गेहूं हुवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६६८)	१४७५)	१२२४)	१६४२)	७५९)

१ षोषरो

कोस २॥ ईसांन कूण मांहे। कदीम सीधलां री गांव। सीरवी बांणीया रजपूत षारोल बसै। सींव घणी। जवार मूंग रा षेत हुवै। अरट ढोबड़ा ४०, चांच २०, तळाव १ बरसोंदोयौ पांणी। जोड सषरौ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५११)	१२०७)	२९८२)	२११३)	१४१३)

१ वापरी

कोस ६[1] परवाण कूंण मांहे। मगरा वाळा था कोस ०॥ छै। माळीगर बांणीया बसै। सीरवी मेर बसै छै। घणी अरट २२ मीठो बणीयां। मगरा रै पांणी घणी सींव रेलीजै, बणवाडी[2] छै। तळाव १, मास ८ पांणी।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१४९६)	१५३०)	२२१५)	१४८९)	१२०५)

१ देवली आंबा री

कोस १२ दिषण मांहे। सीरवी जाट बांणीया बांभण रजपूत बसै। हळ १०० ऊनाळी, अरट २५ तथा ३० गेहूं छोतरा कपास घणी। मेवाड़ रै कांकड़ छै। तळाव १ आवादेसी पांणी मास ९ हुवै छै। वडौ गांव।

---

१. ८। २. वागवाड़ी।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१३५३)	१६८०)	१८१०)	१९५२)	१५५४)

१ धणली

कोस १२, नीवास कूण मांहे। बांणीया बांभण बसै। बसी री गांव राव रिड़मल नै दीवांण[1] बसी नुं दीयौ थौ। सींव हळवा ५०१, धांन सोह हुवै। षेत सषरा, ऊनाळो अरट ढोबड़ा ६० तथा ८०, पांणी मीठौ। तळाव मैं बरसोंदीयौ पांणी।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१६०१)	३०२३)	५८८८)	२९८८)	३८८५)

१ कीराड़ी[1]

सोझत था कोस ११ दिषण दिसी। आंबां[2] था कोस १। सीरवी रजपूत बांणीया बांभण बसै। बसी रौ गांव हळवा १५०। कपास निपट सषरौ, ऊनाळी अरट १५ तथा २० करै तितरा हुवै। डोहळी[2] घणी छै। तळाव १ चूंडासर चरडावतां[3] रौ, मास ७ पांणी हुवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६३७)	१०५०)	११४६)	७४५)	८९७)

१ वरणौ वास २

सोझत था कोस ६ उतारध नुं, जाट बांणीया बांभण बसै। हळवा १५० षेत सषरा, जुवार बाजरी कपास हुवै। ऊनाळी अरट १५ तथा २० छै। निपट काचा छै। अरट ३ छै। रेल अठवड़ा री आवै तरै गेहूं चिणा सेंवज हुवै। तळाव १ तोबरकया राठौड़ां रौ, पांणी मास १० हुवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
९२२)	१४४४)	९३०)	२०२२)	०)

१. क्राड़ी। २. आबा। ३. चूडावतां।

1. उदयपुर के महाराणा। 2. दान में दी हुई भूमि।

१ भेवली

कोस ५ परवाण कूण मांहे। सीरवी बांणीया जाट बसै। पहली प्रोहतां नुं सांसण थौ सु मोटै राजा उरो लीयौ। गांव निषालस, ६० षेत सषरा, कपास घणौ, चिणा हुवै। अरट ५ तथा ७ हुवै। कुवौ १ तळाव १।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
९३५)	१०३८)	१२९४)	७५८)	७३९)

१ सेषाबास

सोभत था कोस ७ परवांण। रूपारास रै सीधे सारण नजीक। सीरवी बांणीया बसै। सींव थोड़ी, षेत निपट अवल[1]। बाजरी मूंग कपास घणी, अरट १२ तथा १५ मीठवाणीया, रेल आवै। सेंवज चिणा घणा हुवै। बाग १ गांव रै फळसै, आंबा गुलाब हुवै। निषालस गांव छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
८०१)	९६८)	१७६२)	१२५८)	११६७)

१ आंबो

सोभत था कोस १० नेवास कूण में। चांपावतां रो बैसणौ छै। बांणीया बांभण रजपूत सीरवी, बसी रा सीरवी बांणीया जाट रजपूत बसै। हळ २०० तथा २५० षेत सषरा। जवार बाजरी कपास नीपजै। अरट ३० चांच ५० पांणी षारो भळभळौ छै। बीठोरा दिसी चिणा हुवै। रा० महेसदास सुरजमलोत कोट करायौ छै। तळाव १ वरसोंदो कुंडळ कहीजै छै। जोड बीघा ४०० छै। कदीम सींधलां रो बास छै[2]। मेरां रो कांठौ छै। बड़ी वसीयां लायक, रिणमल रा गुढा रा चोर घणा लागै छै।

---

1. बहुत अच्छे। 2. प्रारम्भ में यह सींधलों का निवास स्थान था।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६४३)	२२१०)	१४७१)	५७०२)[1]	१३९१)

१ साडारड़ो

सोझत था कोस ३॥ षरक मूल कूण में। सीरवी जाट बसै। गांगा साझा[2] री बसायौ। सोझत री नदी रेलीजै। वण चिणा गाडा गेहूं सेंवज हुवै। अरट ४ चांच ८ मीठवाणीया छै। तळाई १ साडेळाई मास ६ रौ पांणी।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२१६)	६३२)	६७२)	७१९)	४२०)

१ झाड़ढंढ

सोझत था कोस ५ षरक कूण में। जाट बांणीया बसै। रजपूत गूजर बसी रा छै। तुरक घणा रहै छै। षेत मगरा रा, जुवार हुवै, चिणा हुवै। अरट ४ हळ ९० री धरती छै। बाहाळौ १ बहै। पांणी षारौ। तळाव १ बाघेळाव मास ८, जोड़ बीघा २०१।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३३१)	८१३)	७९७)	१३६०)	११९६)

१ वीरावास

सोझत था कोस ३ मूल कूण मांहे। कुंभार बांभण बसै। पहली बांभणां नुं सांसण थौ, सु मोटै राजा लोपीयौ। सोझत री नजीक नदी गांव सु रेलै। गेहूं चिणा हुवै। षेत सषरा, अंरट ७ षारचीया। गागुरडा दिसे तळाव १ घड़ोई, मास १० पांणी हुवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
८२)	४४४)	३३०)	५१८)	३३८)

१ भूपेळाव

---

१. १७०२)। २. सडा।

सोभत था कोस ५ मूल कूण मांहे। जाट बांणीया पलीवाळ बसै। हळवा ६० सोभत री नदी रेलै। जवार गेहूं चिणा सेंवज हुवै। भलौ गांव। ऊनाळी नहीं, केरीयौ गांव तळाव १ गांव री नजीक, मास ८ पछै बेरीयां पीवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
७२०) ८५४) १०९) १४०३) ५२३)

१ सोसरवादो

सोभत था कोस ३ नैवास कूण मांहे। सीरवी जाट बांणीया कुंभार रजपूत बसै। षेत सषरा, ज्वार बाजरी कपास हुवै। अरट ३० तथा ४० षारचीया कै मोठा। वण चिणा पिण हुवै। तळाव पांणी मास ८। नानौ-सो जोड, ऊनाळो पाही करै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
४५१) ९२७) ३६७) १०१५) ३१२)

१ भागेसर

सोभत था कोस ६ षरक पंचाध रै सांधे। पलीवाळ बांभण जाट रजपूत बसै। सींव घणी। जवार हुवै। त सषरा, उनाळी चांच १० तथा १५ हुवै छै। तळाव सषरौ छै। एक साषीयौ षेत, बडौ गांव जेसावस रौ षेड़ौ भागेसर मांहे षड़ीजै छै। निषालस गांव छै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
९३) १०५२) ७३) ९४४) ११०१)

१ चंडावळ

सोभत था कोस ४ भरहर कूण मैं। बास २ जाट वोहरा रजपूत बांणीया वसै। हळवा ४०० षेत भला जवार बाजरी कपास हुवै। अरट ३० तथा ४० करै सु हुवै। रेल सारी सींव करै जव, गांव वसी लायक। तळाव १ मास १० पांणी हुवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१६६५) २२२९) २७४४) ३२९३) ३५५९)

३ भेटनडो

सोझत था कोस ११ षरक कूण मांहे । हळवा १०० षेत सषरा, जवार बाजरी कपास हुवै । ढीबड़ो १ छै, सेंवज चिणा हुवै । तळाव मास ८ पांणी ।

१ वडौवास वसीयांवाळो

राजपूत बांणोया बसै ।

१ मलावस

पलीवाळ बांभण बसै । षेत भेळा ।

१ डूंगरसी री बासणी

सीसोदीया वाघा री बसी छै । पलीवाळ बसै ।

३

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६६०)	१३१३)	४२५)	१६७७)	१२७२)

२ वातौ नैवाडीयो

सोझत था कोस ११ नेवास षरक रै सांधै । मेवाड़ गोढ़वाड़ रै कांठै[1] । सदा वडा ठाकुरां री बसो रही ।

१ बडौवास नै सेहवाज भेळी

सीरवी बांणीया घांची जाट बांभण बसै । रजपूत बसी रा लोक बसै । हळ ४०० जुपै । षेत सषरा जवार मूंग हुवै । अरट २५ तथा ३० चांच ४० हुवै । मीठवणीया बेसास पटो चिणा हुवै । तळाव पांणो मास ९ ।

१ वाड़ीयो

वाता था कोस ०।।। ऊगवण नै । सदा बसीयां रहै । हळ ४० तथा

---

2. सीमा पर ।

५०, षेत सषरा, चिणा हुवै । अरट ५ मीठा छै । तळाव मास ८ रौ पांणी ।

२

विगत

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६८०)	११०९)	२१६६)	२२२०)	२००४)

१ बाहडसो

सोझत था कोस ९, दिषण षरक रै सांधे । सीरवी जाट बांणीया बसै । षेत काठा कंवळा ऊनाळी अरट १५ तथा १६, पांणी भळभळो । बण गेहूं हुवै । गेहूं निपट सषरा हुवै । तळाव पांणी मास ८ तथा १० रौ, गांव रै फळसै छै[1] । पहली सांसण पिरोहतां नै, मोटै राजा लीयौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
८९५)	१४५४)	२९८२)	१७५४)	१४७८)

१ मेळावास

सोझत था कोस ४।। परवांण अगन कूण मैं । जाट बसै । षेत पातळा । बाजरी मोठ ऊनाळी अरट १० हुवै । वण छोतराणो चिणा बारुसां नदी में हुवै छै । तळाव १ नानीसी[2] छै । षुलासा गांव छै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५८२)	८९२)	८२८)	७५२)	४००)

१ बाघावस

सोझत था कोस २, षरक कूण मांहे । रा० वाघा रौ बसायौ षेड़ो छै । बोहरा बांणीया जाट बांभण बसै । बडा षेत जवार, ऊनाळी अरट ११ चांच ३० हुवै । चिणा सेंवज हुवै । तळाव १ चोहथेळाव बरसों-दीयौ । जोड १ गाडा १०० घास ।

---

1. गांव के आगे ही । 2. छोटी-सी ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२६०)	१०७०)	८७६)	१८७२)	१३९८)

१ नीबली-ऊहड़ां री

सोभत था कोस ९, षरक कूण में। जाट बांणीया बसै। ऊहड़ मांहे रहै। सूनो षेड़ो बसायो नहीं, सोभत वाळी दिषण दिसी नुं। अरट ५ तथा ६ चांच हुवै। तळाव मास १० पांणो रहै। जोडीयौ छै। तळाव ऊहड़ मेहा री व्रणायौ छै। नीषालस गांव छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
९१)	१०५१)	३१८)	१०८७)	७९७)

१ दाघीयो

सोभत था कोस ४ ऊगण मैं। सीरवी कुंभार बांणीया बसै। नदी मेळावस दाघी बीचै अरट ६ हुवै। तळाव मास ४ पांणी, पहैली नांव दुधीयो थौ, पछै अलीतो घणौ हुवौ तरै दाघीयो कहाणौ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३४९)	५३१)	७४२)	५६४)	४३२)

१ बोलमारीयौ[1]

सोभत था कोस ४ भरहर मांहे, जाट बांणीया बसै। पहैली चारण माला नुं सांसण थौ सु राजा सुरजसिंघजी उरौ लीयौ। सींव थोड़ी हळवा ४०। रेल बीघा ४०० अटबड़ा दिसो चिणा हुवै। ढीबड़ा ८ चांच ४ मीठवांणीया, बण छोतरा हुवै। तळाव पांणी मास ४ हुवै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१६८)	६९५)	४७२)	९७३)	११६५)

१ भारेडी

---

१. बोलमालारो।

सोझत था कोस १२ मूळ कूण मांहे। जाट बांणीया बसै। हू २०० तथा २५ री सींव में छै। अरट २५ तथा ३० रा तेड़ छै। षारचीया गेहूं हुवै। सदा वसीयां लायक गांव छै। तळाव १ मास ६ पांणी छै। निषालस गांव छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
७६)	८९८)	८७७)	७८२)	८३७)

१ मंढलो वडो

सोझत था कोस ३, भरहर में। जाट कुंभार बांभण रजपूत बसै। षेत बारूसा उन्हाळी, बडो गांव। अरट १० निपट सषरा छोतरा वण हुवै। नाडी कुं० जोधा री कराई,। गांव रै फळसै, पांणी मास ६ रो हुवै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४९०)	८११)	११४७)	१२७९)	७३६)

१ दाघीयो धनेहड़ी[1]

सोझत था कोस १ नीवास कूण मांहे। जाट सीरवी कुंभार बसै। हळवा ४० जवार बाजरी हुवै। अरट १५ मीठवणीया, वण घणी हुवै। नदी महादेवजी रा देहरा कनै नीसरी छै, सदा बहै। पांणी षारो। नाडी मास ४ पांणो। जोड कांस रो छै। निषालस गांव छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
६५४)	६६३)	१५९३)	९४५)	८९८)

१ छीतरीया

कोस ५ उतराध भरहेर रै सांधै। जाट बसै, निषालस सारी सींव हुवै। अरट ५ षारड़ी षारचीयो छै। गांव अटवड़ा री सींव में सी० ड़ुंगरसी रै पटै थकां बसीयो। तळाव १ मास १० पांणी, सा० छीतर री कराई नाडी, मास ४ पांणी।

---

१. धनेड़ी (दाघीयो नहीं)।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१२८)	१०००)	३९६)	८९१)	७९०)[1]

१ बोरनडी

सोझत था कोस ५ षरक कूण मांहे। जाट बांभण बसै। सींव थोड़ी हळवा ३० षेत सषरा, वाजरी तिल मूंग बण हुवै। उन्हाळी ढीवड़ा १५ चांच २० षारचीया मीठवणीया, तळाव १ मास ७ पांणी। निषालस गांव सषरी छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३७७)	७९०)	१५८७)	७३३)	५८६)

१ राजलवो तेजां

सोझत था कोस ६ परवांण रूपारास रै सांधै। जाट बांणीया बसै। हळवा ५० तथा ६० छै। बाजरी तिल वण, सषरी सेंवज चिणा हुवै। ढीवड़ा ६ तथा ७ मीठा छै, तळाव मास ८ पांणी। निषालस गांव छै। मेरां रा मढ मारग था कोस ३ छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२३३)	३२२)	५८७)	५००)	४३२)

१ भींवाळीयौ

सोझत था कोस १२ नोवास कूण षरक रै सांधै। बांणीया बांभण बसै। बड़ी २ बसीयां रहै। हळवा ४० धरती, जवार रा षेत घणा मेह बण हुवै। अरट १ ढीवड़ा ४ हुवै। पिड़ीहार भींव री बसायी छै। तळाव १ भींवनडो[2] छै। भींव लात मारी थी, पांणी नीसरै छै। हासल घणो कोनी।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२७२)	७९२)	५२०)	६३६)	७५५)

१ बडी

१. ७२०)। २. भीवतोड़।

कोस ७ नवास कूण मांहे। बांणीया बांभण बसै। सदा वसी रहै छै। षेत रुड़ा ऊनाळी अरट १० ढीबड़ा छै। निपट बडौ गांव। पांणी गेहूं हुवै। पाही षड़े। जोड़ बीघा २०० छै। पांणी फळसा आगै छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४२७)	५८३)	८७५)	४९४)	११४९)

१ करमावस

सोभ्रत था कोस ७ ईसांन कूण मांहे रहै। सींव बीघा हीज छै। जुवार मूंग हुवै। ऊनाळी अजाईब[1], अरट ५ ढीबड़ी हुवै। छोतरा वण गेहूं सेंवज चिणा हुवै, हळवा ६०। तळाव मास ९ तथा १० पांणी, नदी नजीक डोइनडा[2] दिसी।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३३९)[3]	५३५)	५६५)	१०७३)	१००९)

१ रांणावस

कोस ९ नीवास कूण मांहे। बसी रौ गांव। सीरवी रांणा रौ बसायौ गांव। सींव घणी, जुवार मूंग तिल वण हुवै। अरट ढीबड़ा २० वाग १ मेर सु कांठा, तळाव मास ४ पांणी, नाडी कुलाज[4] रा भाषरी हरढावास दिसी।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
८३५)	१२८०)	७५५)	८३०)	१११५)

[[5]१ हरढावस

सोभ्रत था कोस ९ नेवास कूण मांहे। लोक कोई नहीं। सदा वसीयां मांहे रहै। कदीम सींधलां रौ गांव। हळवा ८० षेत निपट सषरा। वण चिणा हुवै। अरट ४ ढीबड़ा १० मीठवणीया निपट सषरा हुवै। तळाव मास ३ पांणी, नदी सूकड़ी फुलाज री वाड़ अड़ती[1] वहै।

१. अजायव। २. डोयनडी। ३. ३४९)। ४. फुलाज। ५. 'ख प्रति का अंश।

1. फुलाज को छूती हुई।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६५१)	८२५)	१८१९)	११११९)	११४८)

१ राजलवो बडो

सोझत था कोस १० मूल कूण मांहे। जाट बसै, निषालस छै। षेत पातळा, सींव घणी। ऊनाळी मामुर नहीं। तळाव मास ८ पांणी। कोहर १ बाडसु अड़तो। पांणी भळभळो डूंगरोतां रो गांव छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३१)	४३७)	३०६)	११८२)	४५८)

१ षारड़ी[1]

सोझत था कोस ५ षरक पंचाध रै सांधै। सीरवी बांणीया नंदवांण बसै। सींव घणी, जवार मूंग वण रा सषरा षेत छै। रेल सेंवज चिणा हुवै छै। अरट १२ तथा १५ हुवै। लूण रा आगर छै। तळाव १ बरसोंदोयो पांणी। निषालस गांव छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५११)	१३३७)	८२७)	१४७६)	१२७५)

१ झीथड़ी

सोझत था कोस १० षरक मूल रै सांधै। पलीवाळ जाट बांणीया कुंभार बसै। षेत सषरा ऊनाळी ढीबड़ा ७ तथा ८ षारचीया। तळाव बरसोंदीयो पांणो। चौहान रांणे तगो मारीयो, जाळोर जातो घोड़ो झीफो मुवो, तिण रै नांव करायो। निषालस छै। माहे देवरो जानरायजी रो छै नै कुबैजी रो असतल छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१६५)	७०५)	४२९)	१४७६)	८४८)

१ कारोळीयो

सोझत था कोस ७ नवास षरक रै सांधै। पलीवाळ बांभण बसै।

---

1. षारडीयो।

सींव हळवा ५० तथा ६०, षेत जवार रा। अरट ४ ढीबड़ा ८ सेंवज चिणा हुवै। तळाव १ सी० उदा रौ करायौ। वरसोंदीयौ पांणी। निषालस गांव छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	६५१)	७९०)	५२५)	९४८)	६९८)

१ हरसीयाहेड़ो

सोझत था कोस ७ रीतहर कूण मांहे। जाट बांणीया षारोल बसै। सींव घणी, हळबा २०० षेत जवार बाजरी रा उन्हाळी न हुवै[1]। पांणी षारौ। सेंवज गेहूं काठा चिणा हुवै। जोड १ निपट बडौ छै। कोस २ मांहे लूण रा आगर २० हुवै। तळाव १, मास ८ पांणी। निषालस गांव छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५०)	९८६)	२२४)	९०६)	३६१)

१ जीनौदौ[1]

कोस १२ दिषण मांहे। बांणीया बांभण बसै। बसी रा गांव षींवड़ा नजीक मेरां रौ जोर थको, पहलो गुदवच रा बांभण नुं सांसण थौ। मोटै राजा लीयौ। सींव घणी, बडौ गांव, उनाळी चिणा सेंवज हुवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	८०७)	९२५)	७९५)	१०३७)	७९०)

१ मढलो षुरद

कोस २ ईसांन कूण मांहे। जाट सीरवी बसै। हळवा ४० षेत सषरा। अरट १० पारचीया। तळाव मास ८ पांणी। सदा मांहे वसी रहै आई छै। गांव निषालस। जोड छोटोसो।

---

१. जानादो।

---

1. गेहूं आदि नहीं होते।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३००)[1]	६१२)	९३६)	५२५)	३१३)

१ मलसोया बावड़ी

कोस ९ रूपारास में। सदा वसी रहै। सींव घणी, षेत सेंवज भला चिणा हुवै। अरट ४ ढीबड़ा १० षारचीया मीठा, नदी नजीक छै। द्रह छै। कांठा रौ गांव मेरां रै मुहडै। तळाव मास ८ पांणी। जोड छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४४०)	५७०)	७५८)	५२५)	६६१)

१ मेहड़ासौ

सोझत था कोस ६ षरक मूल रै साधै। वसी रौ गांव। सींव घणी हळबा ७० जवार रा षेत। चिणा सेंवज रूपेळाव दिसी अरट ५ तथा ६, मीठीवणीया हुवै। तळाव हाडा चाचा रौ करायौ छै। जोड छोटौसो छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
९७)	५७६)	६२३)	१४४१)	९८०)

१ मुरढावो

सोझत था कोस ५ भरेहर कूंण मांहे। लोक कोई नहीं। सदा बसीयां मांहे रहै हमार जैतावतां री वडी बसी। माहाजन रजपूत बांभण बसै। हळवा ठरड़ा रा षेत। सेंवज चिणा हुवै। ढीबड़ा ४ चांच १० हुवै। वसी देषतां सींव थोड़ी[1]। तळाव मास १० पांणी, नदी नजीक छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६३०)	५७६)	२३३)	११९६)	१०२७)

---

[1] २००)।

---

1. आबादी को देखते हुए जमीन कम है।

१ भैंसाणो

सोझत था कोस ३ नेवास कूंण मांहे। सीरवी बांभण बाणीया बसै। बसी रहै छै। सींव घणी हळबा १५० षेत सषरा, जवार मूंग तिल वरण हुवै। चिणा गेहूं सेंवज हुवै। अरट ४ ढीबड़ा १० चांच २० हुवै।

१ चरपटीयौ

सोझत था कोस ७ नेवास षरक मांहे। लोक कोई नहीं। बडी बसी लायक। सींधलां री गांव। जोगी चिरपट रै नांव बसीयौ। सींव घणी हळवा ३०० षेत सेंवज हुवै। निपट सषरा षेत छै। अरट १० ढीबड़ा १२ चांच २० हुवै। तळाब मास ८ पांणी। मालको चिरपटीयौ मैं मांजरे षड़ै छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	७२२)	१२१३)	९८७)	१३९०)	१४५०)

१ डोयनडी

सोझत था कोस ८ भरेहर कूंण मांहे। लोक कोई नहीं, बसीयां रहै। षेत सषरा ऊनाळो ढीबड़ा १० हुवै, षारचीया मीठवाणीया। जोड सषरी छै। वाहळी करमावस दिसी छै। तळाव मास ५ पांणी। वसी लायक गांव कदीम षेड़ी छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४८१)	७५८)	५०७)	१०३८)	६५७)

१ षारीयौ फदरां रौ

सोझत था कोस ४ नेवास षरक रै सांधे। लोक कोई नहीं, बसीयां रहै। सींव थोड़ी हळवा ६० तथा ७० षेत सषरा। जवार तिल कपास हुवै। अरट ४ ढीबड़ा ५ चांच १० सेंवज चिणा हुवै। पेहली ब्रा० राजा फदर नुं सांसण थौ। मोटा राजा लोपीयौ। तळाब मास ७ पांणी। जोडीयौ छै। बसी लायक।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४११)	५९०)	६९७)	८९५)	४६४)

१ हापत

सोझत था कोस ६ रीतहड़ मांहे। बांणीया जाट बसै। वसी घणी रहै छै। गांव निषालस छै। धरती हळवा ५० तथा ६० षेत रूड़ा। षारच घणौं छै। ऊनाळी वाहळा ऊपर चांच हुवै। तळाब मास ४ पांणी। पेहलो चारण दांना नुं सांसण थौ। मोटै राजा लोपीयौं। बसी लायक गांव छै।]

१ पांचनडो हुलां री

कोस ३ सोझत था पूरब दिसा। जाट बसै, षेत रूड़ा सीव थोड़ी। ऊनाळी अरट ४ चिणा गेहूं सषरा हुवै। नदी कोस ०॥ सोझत री, तळाव मास ४ पांणी, बास २ भेळा छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३९७)[1]	२८०)	२०९)	१७३)	१३५)

हासलपुर षुरद

सोझत था कोस ९ रीतहड़ कूण मांहे। जाट षारोळ बसै। हळवा २० जवार काठा गेहूं सेंवज हुवै। लूण रा आगर। ऊनाळी पीयल नहीं। तळाई मास ४ पांणी। वाहळौ १ षारौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१४०)	४६५)	८७)	५८५)	३१२)

१ दामा धांधल री वासणी

कोस ५ षरक कूण मांहे। जाट कुंभार रजपूत बसै। हळबा २०, अरट २ चांच[2] षेत सषरा। धांधल दामौ राव सूजा री बार में बसोयौ। तळाव पांणी मास ६ रहै छै[3]। सुरातो नजीक छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१२५)	१२५)	१६०)	१००)	१००)

---

१. २९७)। २. आडावणिया (अधिक)। ३. बडा द्रह सदा भरीया रहै (अधिक)।

१ रायमल री वासणी

सोभत था कोस २॥० दिषण षरक दिसी । जाट बसै, गांव मैं बसी था मुदौ छै । हळबा ८० षेत सषरा चिणा हुवै । अरट १० तथा १५, रायमल भींवराजोत रौ बासायौ । तळाव मास ४ पांणो । श्रीमाळीयां नै सांसण थौ सु छूटौ[1] सांगरीया रै बदळै हुवौ थौं ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१८०)	२९६)	३०१)	३९७)	३८७)

१ गोधेळाव

कोस ४ रीतहरी कूंण मांहै । जाट बसै । घरती हळवा ३५ । षेत पातळा, बाजरी मोठ हुवै । नै ऊनाळी नहीं, सेंवज तळाव मांहे गेहूं चिणा हुवै । तळाव १ गोधेळाव मास ४ पांणी । लूण रौ आगर १ छै । पहली राव जोधै रौ दीयौ षड़ीया[2] नुं सांसण थौ, सु मोटै राजा लोयौ । निषालस छै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५४)	४६५)	८७)	५८५)	३१२)

१ पळासलो बडौ

कोस ७ षरक कूंण मांहे । जाट माळी बसै । हळवा ४०, षेत काठा जवार बाजरी हुवै । ऊनाळी ढीबड़ा ४ पांणी भळभळो । तळाव मास १० पांणी हुवै । पुनाषर नजीक निषालस गांव छै । छोटो-सो जोड छै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१८०)	५१८)	३३५)	४९५)	८०५)

१ हींगावास

सोभत था कोस ३ षरक कूण मांहे । सीरवी बांणीया बसै ।

---

१. छोटा । २. पीया ।

भण ही छै। धाइभाई सूरा रा जाट रजपूत बसै। हळबा ५० तथा ६० छै[1]। सेंवज गेहूं चिणा। अरट ६ षारा, तळाव मास ६ पांणी हुवै, कुवौ १[2]।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१६
	१२०)	२६८)	२८०)	३१४)	३२१)

१ हासलपुर बडौ

कोस ८ पंचाध मांहे बाटाब रै सांधै। जाट कुंभार बसै। सींव घणी। हळबा ८० जुवार मूंग कपास हुवै। षारी नदी लूणी कोस ०।[3], ऊनाळी ढीबड़ा ४ चांच १० पांणी तळाव झलरावौ मास ६, हाडा हांसा रौ बसायौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१६
	१४०)	३४०)	५७८)	२२८)	३२३)

१ हूणगांव षुरद

कोस ६ वायब कूण मांहे। बेऊ बास भेळा बसै। जाट कुंभार बसै। हळवा ३० तथा ४० षरा। अरट ४ ढोबड़ा ४ चांच १०, नदी लूणी नजीक। तळाव मास ५ पांणी रहै। निषालस लाहणहेड़ौ नजीक छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१६
	५८)	३८७)	४२०)	२४६)	३६३)

१ घवलेहरो[4]

सोभत था कोस ८ पचांध कूण मांहे। सीरवी कुंभार बसै छै। धरती हळवा २५०, बरसाळी षेत सषरा। नै ऊनाळी अरट ४ ढीबड़ा १० षेड़ौ भाषरी षांभ। सदा जैतावतां रै पटै रौ। देहरौ १ सिषर बंध[1] छै। तळाव धवलेळाव पांणी मास १०। बावड़ी १ बेरा ४

१. षेत सखरा। २. पाछी पण खढे छै (अधिक)। ३. ०॥। ४. घवलहरो।

१. शिखर वाला मन्दिर।

तळाव में नदो सोभ्रत वाळी उत्तर मांहे बावड़ी कनै छै। वसी मांहे रहै छै।

१ पुटली[1]

कोस ६ रीतहर कूण मांहे। जाट पलीवाळ बसै। वसी रा रजपूत था मुदौ। धरती हळवा ४० तथा ५०। षेत सषरा मगरै छै। ऊनाळी जेसलवास री भाषरी रौ बाहळौ कोस ०। छै। तठै चांच २०, पांणी षारौ। तळाव १ दुधेळाव मास ७ पांणी। मांहे बेरो २। राव सकतसिंघ रो बारा मांहे चवांणां वसायौ छै।

१ थाहर वासणी

कोस ५ रीतहर कूण में उतर रै सांधै। जाट रजपूत बांणीया बसै। सींव घणी। हळवा ७० तथा ८० जुवार मूंग तिल हुवै। अरट ३ तथा ४। चांच षारचीया सेंवज चिणा। आगर ४ लूण रा छै। गूजर थाहारु रौ वसायौ। बीलाड़ौ नजीक छै। तळाव मास ४ पांणी। जोड सषरौ। निषालस गांव १ छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२३५)	५७८)	७५)	४६०)	८४३)

१ चुलेळाई

कोस १० पंचाध कूण में। बांभण[2] कुंभार रैबारी बांणीया बसै। सींव हळवा ४० षेत भला। उनाळी नहीं। तळाव बरसोंदोयौ पांणी। सुतरार चुहलै रौ बसायौ। नदी मालपुरीयो दिसी वहै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	९५)	६१८)	७९)	४२५)	४७३)

१ पांचवो षुरद

कोस ७ मूल कुण मांहे। जाट रजपूत वसै। हळवा ४० तथा ५० छै। जुवार मूंग हुवै। ऊनाळी कुआ १५ तथा २०, सेंवज चिणा[3]।

---

१. पुटलीयो। २. पालीवाळ। ३. जव चिणा हुवै।

लूण रा आगर ४। चारणा नुं सांसण थौ। पछै संमत १६ आधौ गांव षालसै कीयौ नै आधौ चारणां रतनुवां नुं राषौ थौ। हमें चारणां नुं बीघा १०० । बीजी धरती धायभाई गिरधर दीवी छै[1]।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४५)	१७०)	१३०)	६२)	९६)

१ मामावास

सोझत था कोस २॥ दिषण दिसी। गूजर रजपूत बसै छै। सीव थोड़ी हळबा ३५ षेत रूड़ा। सेंवज चिणा। ढीबड़ा १४ चांच ५ (नाना मोटा) हुवै। तळाब १ फळसा आगै, मास ८ पांणी रहै। पहला बांभणां नुं सांसण थौ। पछै बांभण छांड गया तरै जागीरदारां दाबीयौ थौ। पछै बांमण आया तरै डोहळी सोंपी, धरती दी छै सु हमें छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४६)	१४९)	३५५)	२३८)	२०४)

१ बुटेळाव

सोझत था कोस २॥ रीतहर कूण मांहे। जाट कुंभार रजपूत बसै, धरती हळबा ६०, षेत भला, ऊनाळी घणी को नहीं, चांच छै। जोड १ निपट सषरो छै। तळाव १ मास ८ पांणी रहै। पहली बास ३ सांसण था हमें डोहळी चारणां नुं छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१४३)	३०५)	१९२)	३४६)	३७०)

१ मांडपुरीयौ

कोस ६, मूल पंचाध मांहे। बांभण जाट बसै। सींव रूड़ी। हलबा ६० जुवार मूग वण हुवै। ढीबड़ा ७ तथा ८ नदी सोझत री नजीक। कुवौ १ षारौ बंधायो। निषालस छै।

---

1. दबाई छै।

संवत	१५७१	१६	१७	१८	१९
	१३)	३७१)	१७९)	५२३)	४३४)

१ लोळावास षुरद

कोस ५ षरक कूण मांहे[1] । बसी रौ गाव । डोहळीयां छै हळवा ३० । जुवार मूंग तिल वण अरट ४ चांच १०, षारचीया सेंवज चिणा हुवै । छोटो-सो जोड तळाव लोलोळाव[2] मास ८ पांणी बा० लेला[3] रौ बसायौ । पहली सांसण थौ । मोटै राजा लीयौ । वसी रौ गांव दूधौर[4] कनै छै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२२५)	२५१)	२९०)	२९०)	२००)

१ षारचीयौ[5]

कोस ७ षरक नीवास रै सांधे । बांणीया बांभण बसै । वसी था मुदौ । पहली वास २ था, १ सांसण प्रोहतां नुं १ रावळो थौ । हमें षेड़ौ भेळौ छै । हळबा ७० जुवार मूंग । ढीबड़ा ४, चांच ५ चिणा सेंवज । तळाव मास १० पांणी रहै[6] ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०५)	२०५)	९२)	२०१)	२०१)

१ धागड़वास

कोस ५ मूल कूण मांहे । जाट कुंभार रजपूत बसै । हळबा १०० षेत काठा जुवार बाजरो । ऊनाळी थोड़ी, केईक चांच छै । सेंवज चिणा हुवै । तळाव मास ८ । जोड रूड़ो वसीयां लायक । परावै छै[7] ।

संवत	१७२५	१६	१७	१८	१९
	१३४)	३४१)	१३२)	४३५)	४६१)

---

१. लोक कोई नहीं (अधिक) । २. लोलासर । ३. लोला । ४. धूधोड़ । ५. पारची । ६. जोड छै वसी रौ गांव (अधिक) । ७. पराव गांव ।

१ बीचपुड़ी

सोभत था कोस ६ पंचाध मांहे। बांभण बसै। हळवा ५० धरती जुवार मूंग। बड़ा षेत, ऊनाळी नहीं। तळाव मास ५ पांणी। पछै पाषती रा गांव पीवै। बसी रौ गांव। बेरा तळाव में छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४९)	२०७)	१००)	२०१)	२२६)

१ भोजावास

कोस ६ परवांण कूण मांहे। बसी रौ गांव। हळवा ३० षेत रूड़ा। ऊनाळी ढीबड़ा ६ मीठा सेंवज चिणा। तळाव मास पांणी रहै। बसी रौ गांव।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३०१)	३५०)	३५१)	३५०)	३०१)

१ षारीयौ सोढां रौ

कोस ३ षरक कूण मांहे। जाट बांणीया रजपूत बसै। बसी मांहे छै। हळवा ६० धरती जुवार मूंग[1]। ढीबड़ा ७ चांच हुवै। पांणी षारौ तळाव में पांणी मास ६। पहली सांसण थौ बांभणा नुं, मोटै राजा लीयौ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३११)	६१८)	४८७)	६६४)	४६०)

१ कांढु

सोभत था कोस १० निवास कूण मांहे। जिण रै पटै हुवै तिणरी बसी रहै हळवा ६० तथा ७० जुंवार मूंग वण। अरट २ ढीबड़ा ८ तथा १० षरचा रो गांव। जोड आंबा दिसी। तळाव मास ६ पांणी। पहला गुदवच रा बांभण नुं सांसण थौ हिमें डोहळीयां थका छै।

---

१. कपास (अधिक)।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१६६)	२५५)	३०७)	२५०)	३७३)

१ हेमलीया वास[1]

सीभत था कोस ६ परक कूण मांहे। कुंभार बांणीया जाट बसै। बसी रौ गांव। हळबा ६० जवार तिल कपास हुवैं। अरट १ ढीबड़ा ९[2] चाच ३० तथा ४०, सेंवज चिणा रेल मांहे घणा हुवै। तळाव मास ८, सीरवो हेमा रौ करायो कांठा रौ[3]।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१४७)	४१५)	३०३)	३५०)	२५१)

१ महूरावास

कोस ११ रूपारास कूण मांहे। लोक कोई नहीं, सदा वसी रौ गांव। हळबा ३० षेत सषरा। ढीबड़ा ५ कांठौ निपट घणौ वाहूडौतां रौ गांव। नीचै सिरीयारी नजीक बसी रौ गांव।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५१)	१५१)	१५१)	१५१)	२०)

१ महेलाप

कोस ७ परवांण कूण मांहे। सुराते रा जाट बसै। हळषा ४० षेत सषरा सेंवज चिणा गेहूं। अरट ७ तथा ८ मीठा छै। चिणा हुवैं[4]। तळाव मास ८ पांणी रहै छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२४७)	३७१)	६१०)	५४७)	३४५)

१ मोकल वासणी

कोस १० पचांध कूण में। जाट बसै। हळवा ४० जुवार वाजरी

---

१. वडो (अधिक)। २. २। ३. दुधवड़ नजीक (अधिक)। ४. सारण नजीक छै (अधिक)।

चिणा हुवै । ऊनाळी नहीं । छोटो-सो जोड छै । तळाव मास ७ पांणी, पछै वेरे पीवै । बाहळौ १ षारौ पळासला सुं आवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३५)	३७५)	४८)	२४७)	४६)

१ सोधा बासणी

सोझत था कोस १३ पंचाध कूण मांहे । जाट बसै, बसी पण छै । हळवा ७० तथा ८० षेत रूड़ा । जुवार बाजरी तिल हुवै । ऊनाळी करै सु हुवै छै । रा० जैतसी वाघावत री बार में[1] बसीयौ । सोंधल हुलां रै नांवै' । अरट ८ चांच १०० तळाव मास ७ पांणी षारी लूणी नजीक छे नदी छै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६२)	१५४)	३१८)	३४६)	२८०)

१ मु० मानसिंघ री बासणी

कोस ०। सीवराड़ दिसी । जाट बसै हळबा ४० धरती षेत सषरा ऊनाळी अरट सषरा । उनाळी अरट सषरा २ तथा ४ । तळाव मास ७ पांणी हुवै । मोटा राजा री वार में बसायौ[2] ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२३०)	३६०)	३०३)	५७०)	३६९)

१ गोडांगड़ी

सोझत था कोस ५ परवांण पूरब बीच । जाट रजपूत बसै । हळवा २५ अरट ३ ढीबड़ा ६ मीठौ पांणी अरट छै, पाही षड़ै षेत । बाजरी मोठ हुवै । नदी गांव नजीक रेल चिणा सेंवज । मगरो नजीक

१. सीधा हुल रो बसायो ; २. मु० मानसिंघ (अधिक) ।

1. समय में ।

गांव। पहली देरासरी कान्हा नुं सांसण थी। मोटै राजा लोपीयौ तळाव मास ८ पांणी।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३२९)	५२३)	१५०५)[1]	६५०)	५९७)

१ पोटलीयौ

कोस ८ मूल कूण मांहे। जाट पालीवाळ बसै। सींव थोड़ी, हळवा ४० षेत सषरा, पातळा पिण छै। ढीवड़ा ६ चांच छै। जोड थौ सुं भांजीयौ। जाट पटैल बसै[2]। तळाव आपानडी, मास ९ पांणी।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१००)[3]	१४७)	१०७)	१७२)	१७०)

१ पांचनडो टाकां रौ

कोस ९॥ सोझत था पूरब मांहे। बडौ बास भेळौ बसै छै। हळबा ३० षेत भला। अरट ९ तथा १०, चिणा हुवै। तळाव मास १० पांणी रहै। सीहाट नजीक छै। सोझत री नदी तांई सींव। टाक रजपूत बसै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३००)	२६८)	४५३)	७०६)	४००)

१ हूणगांव बडौ

कोस ९ वायब कूण मांहे। बडौवास भेळौ छै। जाट विसनोई बांणीया बसै। हळवा ४० सेंवज चिणा। अरट ७, चांच लूण री आगर २ लूणी नजीक छै। तळाव मास ४ पांणी रहै छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१३६)	७६६)	९७३)	७३६)	५९१)

१ लोळावास बडौ

कोस १० मूल कूण मांहे। पलीवाळ बांणीया जाट बसै। धरती

---

१. १५०१)। २. जाट पोटला री बसायौ। ३. १०७)।

हळवा ६० जुवार, मूंग तिल कपास हुवै । ऊनाळी पीवल नहीं । सेंवज चिणा काठा गेहूं हुवै । भायल लोला रौ बसायौ । बसी गांव मांहै छै । निषालस गांव छै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
७५)	५२१)	८९)	३८०)	६६६)

१ महेव

कोस ४ रीतहर कूण उत्तर रै सांधै । जाट बांणीया मुलतानी बसै । बसी गांव में छै । धरती हळबा २५० जवार बाजरी हुवै । नंद वांणा बोहरा रहै छै । अरट २ चांच ५ मोटा । ढीबड़ो १, लूण रा आगर ५, जोड सषरौ । गाडा २०० री ठौड़[1] । तळाव ३, मास ८ तथा १० पांणी रहै । बेरा तळाव में छै । बाहळा २ हायतां नै चावड़ीयाक दिसी छै । नीब था नजीक छै ।

१ चांदा वासणी

कोस ७ पचांध था जीवणौ । आगे षेड़ौ चांपड़ा मै सूनौ थौ । संमत १७११ भाः ताराछंद नाराणोत भुंपेळाव रा बांभण आण गांव बसीया । धरती हळवा ३० जुवार मूंग हुवै । षेत काठा, ऊनाळी नहीं । सेंवज रेल सुं गेहूं चिणा बीघा २००, तळाव मास १[1] पांणी रहै । बेरीयां छै, भळभळौ पांणी । निषालस गांव छै ।

१ सोवणीयौ

सोभत था कोस ७ पंचाधे मांहे । जाट पलीवाळ रजपूत बसै । सींव रूड़ो[2], हळवा ४० जुवार, मूंग, तिल हुवै । ढीबड़ा ४, चांच ८, तळाव मास ८ पांणो । भाट सिवा रौ बसायौ । तळाव भाटेळाव छै । सांपा नजोक छै । बाहळो सुरायत रौ को० ॥ छै ।

---

१. मास ५ ।

---

1. २०० गाड़ी घास पैदा हो जितनी जगह । 2. अच्छो ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३५)[1]	२३५)	१७३)	३९७)	३१७)

१ दूदीयो[2]

कोस ३ उतर दिसी। जाट राजपूत वसै। सींव हळवा ४० पेत अवल बाजरी मोठ। ऊनाळी नही। तळाव मास ४। कोहर १ मोठौ वोहोरा वीणा[3] री करायो छै। जोड १।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
९०)	२०९)	१११)	४१४)	३८१)

१ भाणीयो

कोस १० वायव कूण मांहे। वांमण[4] जाट वसै छै। धरती हळवा ४०, षेत सषरा। जुवार बाजरी हुवै। ऊनाळी ढीवड़ा ८ नदी नजीक तळाव १ झालरो, पांणी मास ६ निपालस छै। लाहणहेड़ा था नजीक बसी घणी को नहीं।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१००)	१८८)	१६६)	२४१)	१७१)

१ गुजारावास

कोस ७ परक मूळ रै सांधै। जाट वसै। धरती हळवा ४० तथा ४५। जवार, मूंग, तिल, कपास हुवै। षेत भला छै। अरट २ ढीवड़ा २, चांच ७ छै। पांणी षारो। तळाव १ अबदेळाव तळाव मांहे साल हुवै छै। सिव राव जोधावत री बहू री करायो, मास ७ पांणी रहै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५०)	२३०)	१८४)	५८०)	४१५)

१ हमीरवास

कोस ६ दिषण नुं डावो। जाट बसे। धरती हळवा। षेत पातळा

1. ३०)। 2. सुदीयो। 3. वेणा। 4. पालीवाळ।

ऊनाळी अरट ५ ढीबड़ा मीठवाणीया। तळाव पांणी मास ४, निषालस गांव, नै रजपूत ही बसै छै[1]। रूपारास कूण मांहे।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०३)	२०६)	२०४)	११९)	१३६)

१ दूधीयौ

कोस ११ षरक कूण के बीच मैं। बांभण बांणीया बसै। हळवा ४० षेत। जुवार मूंग कपास हुवै। सुरायतां रै बाहळा ऊपर चांच १५[2]। पांणी ढाबार री नाडी गांव रै फळसै तिके पांणी पीवै छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१४०)	३१३)	३१२)	३६८)	३१२)

१ पांचनडो लाला[3] री

कोस २ पुरब में सदा वसी रौ गांव। पहली बसी रा सीरवी जाट नै भाट बसता। हळवा ३०० बाजरी मोठ। षेत कंवळा, ढीबड़ा १५, बण गेहूं, नाडो १, मास ४ पांणी, सीहाट नजीक वसी रौ गांव।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१६०)	४९२)	११०)	२०९)	१५०)

१ सीचांणो

कोस ८ रूपारास कूण मांहे। बसी रौ गांव। सीरवी कुंभार गूजर बसै। हळवा ३५ षेत भला, सेंवज चिणा ढीबड़ा ८, चांच १० तथा १५। तळाव मास ४ पांणी। बेड़ौ कदीम न राईत[4] नीसरै। मगरै था कोस १।। सिरहारी नजीक।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२२४)	३४५)	५६७)	४९४)	५३०)

१ सारंगवास

कोस ५ पुरब मांहे। बसी रौ गांव। बगड़ी रै पटै रै भेळौ।

---

१. सरवाड़ नजीक (अधिक)। २. खारचीया (अधिक)। ३. लोला। ४. इंटां।

धरती हळवा ६०, षेत पातळा। ऊनाळी ढोबड़ा १२ मीठा घणा। सीगजो नहीं। सेंवज चिणा। तळाव मास ४ पांणी। पहली मेर महेव वाळो गांव थो।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०५)	४३८)[1]	३९०)	३२८)	५००)

१ वीठोरी षुरद

कोस ८ नीवास कूण मांहे। बांणीया बांभण बसै। मुदै वसी था छै। धरती हळवा ६०, षेत सषरा। अरट ३, ढीवड़ा ३, चांच १९, चिणा सेंवज हुवै। तळाव पांणी मास ६ रहै। वसी री गांव।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२९१)	४३०)	६५०)	२९४)	४००)

१ सांपो

कोस ७ षरक कूण मांहे। जाट बांणीया कुंभार बसै। बसी रै गांव, सींव घणी। हळवा १५० जुवार मूंग रा षेत छै। ऊनाळी नहीं। जोड १ सषरौ छै। तळाव १ सापेळाव मास ६ पांणी। कुंड १ सहेस लींग[1] री पुनाकर नजीक छै। अणतूट पांणी[2], सांपां री वांई छै[3]।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४१)	२३१)	२८)	५९९)	३७४)

१ ठाकुरवास

कोस ७ रूपारास कूण मांहे। लोक कोई नहीं। जिण नुं पटो हुवै तिण री बसी आय रहै। धरती हळबा ५०, बाजरी मोठ कपास। अरट ३ ढीबड़ा ५ मीठा। सेंवज चिणा हुवै। तळाब मास ६ पांणी, मेरां रै गुढै नीबली माढां री नजीक छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२२७)	४४०)	३७०)	३९५)	३४६)

---

१. २३९)।

---

1. सहस्रलिंग। 2. कभी समाप्त नही होने वाला पानी। 3. सर्पों की बाम्बी है।

१ रायरो बडो

सोझत था कोस ६ भरहर कूण मांहे। लोक कोई नहीं। बसी रहै। बला था कोस १। हळबा ६० । बाजरी मूंग तिल हुवै। तळाव मास ८ पांणी। ढीबड़ा ५ तथा ६, मीठो पांणी चिणा हुवै। मेर चीलीयात महेस रौ गांव थौ। रा० देवीदास लीयौ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१२५)	१२५)	१२५)	१२५)	६३)

१ पळासलो षुरद

सोझत था कोस ७ षरक कूण मांहे। लोक नहीं। बसीयां रहै। हलवा ५०। जवार मूंग हुवै। अरट २, ढीबड़ा ५ तथा ७ षारचीया छै। जोड १ छै नदी फुलाज वाळी नजीक सेंवज, तळाब मास १० पांणी। पहली सांसण चारणा नुं थौ। मोटै राजा लीयौ। पुनाषर नजीक बसी लायक गांव।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६५)	५०९)	३४०)	५२२)	४४६)

१ लाडपुरौ

सोझत था कोस ७ पूरब मांहे। मगरा सुं कोस १। वाहारै मूढै रा० लाडषांन सुरतांणोत देवीदासोत रौ बसायौ। बसेवांन लोक कोई नहीं। रा० दयाळदास लाडषांनोत री बसी रा सीरवी रजपूत बसै। धरती हळवा ४० षेत सषरा। ढीबड़ा ४ तथा ५ हुवै। तळाब मास ४ पांणी। दुरगावास री ठौड़ बसीयौ। बगड़ी रा पटा री। वाहळौ १ छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६०)	६०)	६०)	६०)	६०)

१ गोपाळवस[1] [मांढा रो बास]

---

१. गोपावस।

कोस ६ दिषण मांहै माढो कोस १, लोक कोई नहीं, बसी रहै। त्यांरा रजपूत छै। धरती हळवा ३० तथा ४० बाजरी मूंग हुवै। षेत बारू छै। अरट ५ तथा ६ सषरा सेंवज चिणा हुवै। तळाव मास ८ पांणी। मेर गोपै रौ बसायौ। रा० कूंपाजी री वार मैं।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२६०)	३००)	६२५)	६००)	३०२)

१ रेवड़ी

सौभत था कोस ६ नीवास षरक रै सांधै। लोक कोई नहीं छै। सदा बसीयां मांहै रहै। सु बसती सींव हळबा ४० जवार मूंग तिल हुवै, ढीबड़ा ५ तथा ६, चांच ५ तथा १० षारचीया छै। तळाब मास पांणी, दुधवड़ नजीक बसीयां री गांव छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१३१)	२०१)	२७४)	३००)	३०१)

१ वड़ री बासणी

कोस २॥ षरक कूण मांहे। लोक कोई नहीं। बसी रौ गांव, जिण नुं पटै हुवै तिण री बसी बसै। सींव थोड़ी हळवा २० तथा २५ जवार, षेत रूड़ा[1]। अरट २, ढीबड़ौ हुवै। चिणा हुवै। तळाव मास ४ पांणी, निषालस री ठौड़ छै। बसी रौ गांव। बाघावास नजीक छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१३६)	२००)	१४०)	१३३)	१६४)

१ चौचावड़ी

सोभत था कोस ७ षरक कूण मांहे। लोक कोई नहीं। सदा वसी री गांव। सींव घणी हळवा ७० तथा ८०, जवार, मूंग, तिल, कपास हुवै। अरट २ ढीबड़ा ८ चांच २० तथा ३० षारा छै। सेंवज

1. अच्छे।

रेल मै चिणा हुवै । जोड १ छै । तळाव मास ८ पांणी । बिणजारै रौ बसायौ, गांव बसो लायक छै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२४५)	२८९)	६९१)	५५३)	८१३)

१ रांकणो

सोभत था कोस ११ दिषण दिसी । लोक कोई नहीं, सदा बसी लायक पेहली सूनौ थौ । हमें बसीयौ छै । आवा था कोस ०॥। छै । धरती हळवा २० षेत रूड़ा । ऊनाळी ढोबड़ा ४ हुवै । तळाब मास १ रौ पांणो । कांठा रौ गाव छै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१४०)	२१०)	१३५)	१३५)	१७५)

१ जोगराबास

कोस ७ षरक कूण मांहे । लोक कोई नहीं । बसी रा सीरवी बांणोया रजपूत कुंभार बसै छै । सींव हळबा १५०, जवार, मूंग, तिल कपास हुवै । अरट २ चांच १० षारा छै[1] । चिणा हुवै । जोड १ छै । तळाव मास ६ पांणी रहै छै । पहला सांसण चारणां नुं थौ । मोटै राजा लोपोयौ । सिणला नजोक बसी रौ छै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५३१)[2]	४२४)	२९६)[3]	६२२)	३५४)

१ मालपुरीयो

प्रोहतां रौ, सोभत था कोस ५ मूल कूण माहे । सीरवी बसै । बांणीया कुंभार छै । हाल बसी रौ लोग रहै । धरती हळबा ८० जवार रा खेत । सेंवज चणा हुवै । गेहूं अरट ४ सषरा छै । कापड़ीया रहै छै । तळाव पांणी मास ८ । प्रोहतां नै सांसण हुतौ, संवत १७१९ डाली चोरी, तरै गांव षालसै कीयौ ।

---

१. षारचीया हुवै छै । २. ३३१) । ३. २८६) ।

१ जसवंतपुरा

बाहली[1] री ठौड बसीयौ। सोझत था कोस ४ निवास षरक रै सांधै। लोक कोई नहीं वसीया। राज जांनुं पटै हुवौ सु बसै। धरती हळवा ६१, जवार, मूंग, तिल, कपास हुवै। षेत सषरा, ऊनाळी ढीबड़ा छै। तळाव मास पांणी। मांढा दुधवर नजीक, बसी री छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
८०)	६९)[2]	१०७)	५४१)	१५८)

१ राजकीयाबास षुरद[3]

कोस ७ षरक कूण मांहे। लोक कोई नहीं। सदा बसीयां री बसती हुवै। सींव थोड़ी। हळवा ४० बाजरी, मूंग, तिल हुवै। अरट २ ढीबड़ा ४ चांच हुवै। पांणी षारौ, जोड़ीयौ छै। तळाब मास ८ पांणी। काछेला राजा रौ बसायौ। राव जोधा री वार[1] में बसी रौ गांव, बाहड़सा नजीक छे।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
९०)	३१०)	२८०)	...[4]	१०१)

१ हेमलीयावास षुरद

सोझत था कोस ६ नीवास षरक रै सांधै। लोक कोई नहीं। बसी रौ लोक मांहे बसै छै। हळवा ५० तथा ६० जवार, मूंग, तिल, कपास हुवै। ढीबड़ा १० चांच ४० पांणी मोटौ। चिणा हुवै। तळाव मास ७ पांणी। जोडीयौ १ छै। बसी लायक गांव, करोलियो नजीक छे।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०१)	२९६)	३५०)	१५०)	३७१)

१ अषावस दुधवर[5] री

---

१. वाहरी। २. ६९०)। ३. राजगीयावस। ४. १७९)। ५. दुधवड़।

---

1. राव जोधा के समय में।

देवीदासोत आण[1] बसायौ।

१ कांलब

सोझत था कोस १० उगोण ईसांन रै सांधै। मेर बसै। धरती हळवा २५ तथा ३० छै। बाजरी, मोठ, तिल ऊनाळी घणी का नहीं। बाहळा ऊपर चांच ४ तथा ५ हुवै। बावड़ी १ मीठौ पांणी। बगड़ी रै पटा रौ गांव। मेर चीताषांन पहली बसतौ। पछै सूनौ हुवौ तरै मेर दोवो करमावत गोड़ात नुं रा० देवीदास जैतावत कालझर था राव रांमा री बार मैं आंण बसायौ।

१ डीघोड़[1]

कोस १० रूपारास मांहे। मेर बसै। हळवा ४० तथा ५० बाजरी, मोठ, तिल, बण हुवै। ऊनाळी नहीं। तळाब १, मास ६ पांणी। आदू षेड़ौ सिरीयारी था छै। तठै राव रांम विषै मांहै[2] जाय रहौ छै। तठै कोट छै, पोळ छै। मांहे घर छै, ठौड़ भली छै। बावड़ी ३ बाहाळो १ छै[2]। पछै मेर तेजौ अमरौ आसकरनोत सिरीयारी था कोस १ नवौ षेड़ौ कर बसीयौ। बेरी पीवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६०)	६०)	८०)	६०)	६०)

१ रायरौ षुरद

कोस १० भरहर कूण मांहै। मेर बसै छै। धरती हळबा २० तथा २५ बाजरी, मोठ, तिल, बण हुवै। ऊनाळी घणी नहीं। कुवा ४ बाडाळो १ उत्तर में छै, तिणां री बेरी पांणी पीवै छै। मेर डीघाड़[3] नें राजोरीया चोता बसै। रायरौ लीहोड़ौ[3] झुंबरको[3] कहीजै।

१ केरां री षेडौ

१. डीघोडसो। २. गोरंजी रै कोट री पोळ माहे हुय निकळे। ३. डीघात।

1. ला कर। 2. कष्ट के समय मे। 3. छोटे वाला।

सोभत था कोस ७॥ अगन कूण मांहे । मेर बसै । धरती हळवा २० बाजरी, मोठ, तिल बरा हुवै । षेत पातळा । ढीबड़ा ७ तथा ८ तळाब १ तीखा १ मास ६ पांणी हुवै छै । नदी धाराजी री तीरवा २ छै । रा० जैसल षेमणोत मेर चांदो तेजौ रतनुं बार था आंण[1] बसायौ छै । हरीया माळी नजीक छै ।

१ वाल्हणवास

सोभत था कोस ८ परवांण कूण मांहे । सारण परै[2] छै । कोस १ षेड़ौ छै । गोरंभजी था जीमणी कांनी तळाई २, कुवो १, नींब १ मगरा री जड़ ।

१ नाहटो

षबर कांई नहीं[3] ।

१ पालड़ी

सोभत था कोस ६ परवांण कूण मांहे । षेड़ा री जायगा मात्र-देवीराम गीरा बांसै सीचीयाई गीगारड़ी बीच, मगरा मांहे छै । तठै बाहळौ १ बावड़ी १ छै । फरसतां मांहे गांव पाडली मांडै छै, सु छै[4]।

१ गजणाय[1]

कोस ६ परवांण कूण मांहे । सारंग षांनीयो रौ षेड़ौ परै । कोस ०॥ छै । भाषर मांहे हमैं सूनौ छै । दाधी गजणाई भेळी हुई ।

१ षीरण[2] षेड़ो

सोभत था कोस — रा० सुजांणसिंघ भगवांनदासोत मेर अमरा हीरावत चीता नुं नवौ षेड़ौ कर वसीयौ थौ । धरती हळवा १०० ढीबड़ा २ छै । षेड़ौ मगरा ऊपर बसायौ थौ, सु सूनौ छै ।

---

१. गंजणाई । २. षीरणो ।

---

1. बाहर से आकर । 2. आगे । 3. कोई जानकारी नहीं । 4. 'फहरिश्तों' में जो पाडली गाँव लिखा मिलता है वह है ।

कोस ५ नीवास पचांध रै सांधै। लोक कोई नहीं। बसी रहै। दुधबड़ था कोस १ पिछम नुं जोड नजीक नाडी १ पोलावास दिसी, मास ४ पांणी। धरती हळवा ३० षेत सषरा। अरट ४ तथा ५ हुवै। वाहळो १ गांव आगै छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	९९)	३२०)	३२०)	२१७)	१०५)

१ सारण

कोस ७ परवांण कूण मांहै। वांणीया मेर मैणा ढेढ वसै। धरती हळवा...चांच हुवै। सेंवज चावळ गेहूं चिणा हुवै। तळाव १ आसण कन्है छै। पांणी री मुदौ झरणा माथै छै। कुल झरणा भाषर रा वाहळा रा घणा छै, गोरीभरा' भाषर हेठै। पहली मोटा राजा मेरां री गांव थौ। मेरै वुरड़ मार नै सारण ली। कदीम हुल रजपूतां री गांव। कवाड़ो[1] भाषर री घणौ आवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	७००)	१४९०)	९४७)	९८८)	७८२)

१ नीवड़ी

सोझत था कोस ८।। परवाण कूण मांहे। मेर हीज वसै छै। धरती हळवा ५० वाजरी, मोठ, तिल, कपास हुवै। ढीवड़ा ३० पांणी मीठौ। सेंवज चिणा। तळाव पांणी मास ८। वाहाळो गांव नजीक। तोडा रा भाषर आगै बसीयौ छै। पहली मेर पातली वसतो। पछै मेर सूजौ रतना मेरउत री सारण था बसीयौ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१००)	१००)	१०१)	१०१)	१००)

१- गोराभरां।

1. लकड़ी।

१ रसाड़

कोस १० परवांण कूण मांहे छै। मेर कांनो जसो बसै। धरती हळवा २० तथा २५। बाजरो, मोठ, मूंग हुवै। चांच ५ तथा ७ पांणी मीठो। वाहळो १ थळ रो, नोचै सीण री बेरो पीवै। मेर तेजो किसने उदावत री नीबड़ी था आया। मोटा राजा री बार मांहे बसीयो थो। बीच षेड़ो सूनो हुवो। हमें फेर बसीयो छै। भाषर लोहड़ा में साजर री जड़ां नींबड़ी चीयाई बोरीमादा था सोस २॥।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०)	४०)	४०)	४०)	४०)

१ लांबोड़ी

कोस ६ पूरब दिसी। मेर नै कलाळ बसै। धरती हळवा २१, षेत भला। अरट १ बेल दो छै। सेंवज चिणा हुवै छै। तळाब १ राबड़ीयो मास···पांणी। नदी गांव हेठै बहै छै। मेर डूंगो पातळोत बसै। ढुंढा सारंग बसै। नजीक बगड़ी रै पटै रो गांव छै।

१ गजणाई बड़ी

कोस ८ परवांण कूण मांहे। मेर बसै छै। धरती हळवा ४०। बाजरी, मोठ, तिल, कपास हुवै। ऊनाळी अरट १० चांच ५ तता ७। पांणी मोठो, सेंवज। बाहळो १ गांव नजीक छै, तिणां रै बेरीयां पीवै। हेंसो ४ मेरां रो छै। कदीम हुलां रो गांव छै। सु हुल मुवा तरै तेजो नरसावत नुं रा० देवीदास जैतावत अठै बसायो।

१ षोड़ीयो

सोभत था कोस ११ परवांण कूण मांहे। मेर हीज रहै छै। धरती हलवा ३० तथा ३५, बाजरो, मोठ, तिल हुवै। ढोबड़ा ४ मीठा गेहूं हुवै। बाहळो १ उगोण नुं छै। तिण री बेरीयां पीवै। बगड़ी रा पटा रो गांव। पहळो मेर चीताषांन बसतो। पछै सूनो हुवो थो। पछै मेर देवा करमावत नुं कालभर[1] था रा० प्रथीराज

---

१ कालभल।

१ सिरीयारी महेली

कोस १० रूपारास कूण मांहे। मेर बसै छै। हळवां ३० तथा ४० बाजरी मोठ तिल हुवै। ऊनाळी ढीबड़ा २ चांच ६ पांणी मीठौ। तळाव १, सहसमेळाव मास ६ पाणो रहै। सोधलां रौ करायौ छै। द्रह १ बरसोंदीयो पांणी छै। मेर लालौ पातलोत बसै। जसवंत रै सरीयात रै बसीयौ आदू षेड़ौ तीरवा १ छै। रावत चाचा रौ थापीयौ। बावड़ो १ छै, पिछम नुं छै। बाहळौ १ बीजमारीयौ, उत्तर दिसो मांहे बेरा[1] छै, तठै पीवै छै। बरसोंदीया[1] पांणी मीठौ।

१ नांबरो

सोझत था कोस ६ छै। पूरब दिसी। मेर बसै। धरती हळवा ४०। पाली रौ गांव छै। ढीबड़ा १० तथा १२ भाषर धीरसं री[2] नदो कोस ०॥ महादेव रौ थांन[2] छै। झरणा कुंड छै, पहलां हुलां रौ गांव। पछै सबरात मेर बसता पछै बेगौ कूंपावत बसतौ, पछै बेरौ सांईदासोत बसीयौ थौ। पछै हमें मेर माला चांदावत रौ बेटौ बसै छै। गांव घणी वार सूनौ रह्यौ छै। नै फैर बसीयौ छै।

१ राणावास

सोझत था कोस ६। बोरीमादा था कोस ०॥, मगरा री षंभ ढूंढा छै। बाहळो नजीक छै। कदीम मेर पातलोत रौ षेड़ौ छै।

१ मंसाजी रौ भाषर

सोझत था कोस १० परवांण कूण मांहे छै। बीजु षेड़ा री जायगा कोई नहीं।

१ कालोकोट

सोझत था कोस १० ईसांन कूण मांहे। षेड़ौ मगरा री षंभ

१. बेरियां। २. धारेसरी।

1. वर्ष भर तक चलने वाला। 2. स्थान, देवालिया आदि।

चांवंडीया रायरा नीचै । पहसी चीता मेर बसता । रा० दयाळदास रा गांव चांवंडीया भेंट कीयौ । षेत रूड़ा, चणा हुता । नाडी कुबोई छे । बाहळी १ छै । गांव चांवंडीयौ जैतारण रौ छै ।

४५. परगने रा गांव सूना मांजरै मंड छै तिणरी विगत गोसवारा मांहे लिषी छै[1] ।

१ रैंबारीयां री बासणी

सोभत था कोस २ दिषण मांहे, रनीया कुवा कनै । कसवा मांहे षड़ीजै । कोहर सागरी छै । माळी कलाळ षेत षड़ै ।

१ डुलीयो[2]

सोभत था कोस ५ दिषण मांहे । माढा था कोस ५[3] पंचाध षरक रै सांधै । तठै १ बावड़ी छै । तळाव १ मांणको षेड़ा री ठौड़ नींब ५ पीपळ १ छै । माढा री तीजौ बास मांडे छै ।

१ गोयंदपुरौ

सोभत था कोस ६ नीवास दिषण में, बड़ा बींठोरा था छै । रा० गोयंद उदैसिंघोत बसायौ थौ । नाडी १ षेड़ा नजीक छै । षेड़ा सींव १ छै । बडा बीठोरा री मांजरौ ।

१ घटीयाळी

सोभत था कोस ४ मूल षरक रै मांहे । सुरायत धाकड़ी बीच षेड़ौ १, तठै कोहर १ छै । नदी सोभत वाळी षेड़ा नजीक सुरायतां री मांजरौ । सीरवी धनौ आय वसीयौ थौ ।

१ सीरियारी बासणी

सोभत था कोस ५ उत्तर मांहे । अटबड़ा षड़ीजै छै । कुंभेळाव तळाव कनै केरली नाडी ऊपर पींपळ ४ छै । संमत १६५३ भेळी

---

१. 'ख' प्रति में यह शीर्षक नही दिया गया है । २. फुलीयो । ३. ०॥ । ४. सुरीया ।

१ सींचीयाई

घोस ८ परवांण कूण मांहे । मेर वांणीया कलाळ जाट कुंभार बसै । हळवा ५० धरती । बाजरी, मोठ, तिल हुवै । ढीबड़ा २१ ढांकुवां ११ मीठा । सेंवज चिणा हुवै । बावड़ी १ उगवण नुं द्रग बावै छै । नदी १ फळसा आगै छै । पहली मेर षांषर द्रग बसता । पछै मेर मेरौ आपा द्रग पात्त[1] रौ आय बसीयौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१६
३००)	३०१)	२१०)	३६०)	२२५)

१ बोरीमादो

कोस ६ परवाण कूण मांहे । मेर हीज बसै । धरती हळवा ५० तथा ६०, बाजरी, मोठ, तिल, कपास हुवै । षेत पातळा[1], ऊनाळी नहीं । सारण परै कोस १ छै । मेर बोरोयौ मगरा रै बसीयौ । तिंण बोरीमादो कहीजे । मेर बोरीयौ मुवौ तरै मेर गोमो धरीया था छांड नै आय बसीयौ । तळाव मास ४, बावड़ी १ बाहळौ १ नजीक छै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१६
१०१)	१०१)	१०१)	१०१)	१०१)

१ गीगावड़ी[2]

कोस ७ परवांण कूण मांहे । मेर नै बांणिया बसै छै । हळवा ५० तथा ६० । जुवार, बाजरी, तिल, चिणा हुवै । चांच २० तथा २५ सेंवज गेहू चिणा हुवै । हेंसै ६[3] मेरां नुं गांव छै । कटाळीया रै पटै रौ कोस १ छै । परै भाषर छै तै ऊपर गाड[4] घणा छै । तिण वांसै[2] गीगारड़ी कहीजै छै । बाहळौ १ पछम दिसी छै ।

१ थळ

सोझत था कोस ७ परवांण कूण मैं । मेर हीज बसै । धरती

---

१. डुगावता । २. झीझारड़ी । ३. हेंसा ५ । ४. झाड़ ।

---

1. हल्की जमीन वाले । 2. जिसके पीछे, कारण ।

हळवा ४० बाजरी, मोठ, तिल, बण[1] हुवै। ऊनाळी ढीबड़ा ८ चांच ४० तथा ५०, पांणी मीठौ। करै तितरौ[2] सेंवज चिणा। तळाव पांणी मास ६ रहै। सींघोड़ा मांहै हुवै। बाहळो १ गांव नजीक छै। कंटाळीया रा पटा, कंटाळीया था कोस ०॥। छै। थळ १ मोटौ थौ तिण वासतै थळ हीज कहीजै छै। मेर हेंसै २, हुल कहीजै छै।

१ फुलाज

सोझत था कोस १० रूपारास मांहे मेर हीज बसै। धरती हळवा ४० तथा ५०, बाजरी, मोठ, तिल, कपास हुवै छै। ऊनाळी नहीं, सेंवज गेहूं चिणा हुवै। तळाव २ पांणी मास ८। नदी गांव रै नजीक छै। गांव रौ षेड़ौ विणजारे[3] फूल रौ बसायौ छै। देहरी १ कुवौ १ फूल रौ करायौ छै। सु फुलाज कहीजै। सु मेर सुबरत[1] बसै बुरड़[2] बसै, हेंसा दो छै।

१ गजणांई दाधी

सोझत था कोस ६ परवांण कूण मांहे। मेर बसै छै। धरती हळवा २० बाजरी मोठ तिल कपास पिण हुवै। अरट ३ चांच २ नदी नजीक। सेंवज नही। मेर वीकौ, चीतौ बसै छै।

१ बांणीयामालो[3]

कोस ६ रूपारास कूण मांहे। मेर बसै। धरती हळवा २५ बाजरी मोठ हुवै। ऊनाळी चांच ५ छै। सेंवज चिणा, पांणी मीठौ। तळाव १ सिरीयारी दिसी छै। पांणी बेरी १ तिण पीवै। बाहाळो १ सिरो- यारी दिसी छै। पहली मेर बांणीया अठै कदेक बसता। सु बांणीया- माळी कहीजै। मेर सींवरा ··· बुरड़ बसै। रावत डूगो सारा[4] बसीयौ तद षेड़ौ बसीयौ।

---

१. सबरात। २. करड़। ३. वणीयामाली। ४. सारण।

---

1. कपास। 2. जितना करे उतना ही। 3. बनजारे।

कीयौ[1]।

३ दुधवड़ मांहे मंडीजै छै।

दुधवड़ मांहे षड़ीजै छै।

१ जोधड़ावास

दुधवड़ था दिषण नुं षोडीयाळै रै वानरै उपरलै कनै षेड़ा री ठौड़। नींब २, बड़ १, नाडी १ छै।

१ पातुवास

जोड मांहे पछम नुं। दुधवड़ अषावसी बिचै छै। पीपळ २ उकरड़ो १ अरट १ पताळीयौ[2]। नाडी बापरी[1]।

१ रायपुरी[2]

दुधवड़ थी तीरवा २ वींठोरा रै मारग। दिषण नुं नाडी १, षेजड़ी नहीं।

३

१ नीबीया षेड़ो[3]

कोस ७ षरक कूण मांहे। पळासला मांहे षेड़ौ लांबीया रावळ वास बिच। षेड़ा री ठौड़ नाडी २ छै।

[4][१ हरसीयाहेड़ो

सोझत था कोस ८ पंचाध मांहै। चौदड़ा - था छै। पहली ढंढणीयौ। कहीजतौ। चोपड़ा रा जोड मांहे षेड़ौ छै। संमत १६६७ भा० बेणीदास चोपड़ा भेळौ कीयौ।

१ हींगोलां री बासणी

सोझत था कोस २॥, षोषरा कोस ०॥, षोषरा पंचनडा बीच

---

१. छापरी। २. रामपुरी। ३. हेड़ौ। ४. 'ख' प्रति का अंश।

---

1. शामिल किया। 2. पाताल तोड़ कुआ।

तळाई १, नदी वगड़ी वाळी षेड़ा नजीक छै। अरट १, षेड़ा तीरे। रा० जगनाथ बाघोत अठै बसीयौ। षोषरा मांहे षड़ीजै।

३ षोषरा मांहे बसता मांजरा—

१ बांणीयावस षारोळां री

सोभत था कोस २॥ ईसांन कूण मांहे। मोडरी नाडी था तीरवा २। षारोळ वसता। नाथलकुड़ी षोषरा बिचै आगर[1] ५ लूण रा हुवै। अरट १ हुवै छै। षोषरा में षड़ीछै[2]।

१ मंडलावस

षबर नहीं।

१ देवलीयाळी

षबर नहीं।

३

१ गोपावसणी

सोभत था कोस ४ ईसांन कूण में। सांडीया री बसी औ षेड़ौ छोड नै इण षेडै आय बसीया छै। सांडीयां रै षेड़ै तळाव १ मास १० पांणी सांडीया मांहे।

१ जेसावस

सोभत था कोस ६ षरक पचांध रै सांधै[3]। भागेसर था। सादवा १ नींबली रै मारग, तळाव गोपेळाव नजीक। पाधर में षेड़ौ[4]।

१ मालको

सोभत था कोस ७ नेवास मांहे। चिरपटीया मैं मांजरे। रांणावस चिरपटोये बिचै षेड़ा री ठौड़ पींपळ २ छै। तळाव १ छै।

---

1. खानें। 2. षोषर की धरती बोते हैं। 3. संधि-स्थल पर। 4. मैदान में बसा हुआ गांव।

४ बगड़ी मांहे मांजरा—

१ धनाज री षेड़ी

ऊगणवण नुं बगड़ी था । अषरणी नाडी तीरे षेड़ै । पींपळ मोटा छै । बरसाळी षेतां री बगड़ी मदार धनाज ऊपर छै ।

१ पीथलपुरी

बगड़ी था कोस १। छै । रा० प्रिथीराजजी देवळीया था आया तद अठै गाडा छोडीया था पछै हींगोला पींपाड़ नुं पटै दीयौ थौ । षेड़ा री ठौड़ पींपळ छै, देवळी मुरडाहा बीच ।

१ हंसावस

बगड़ी था कोस ··· देवळी री सींव[1] में षेड़ौ छै । रड़ी[2] माथै, दारीयाट नदी कनै देवळी था पांवडा १०० । अठै सींधल हासो बसतौ सु हासा नुं मरै[3] मारीयौ सु चोबो छै ।

१ दुरगावस

बगड़ी था देवळी हुलां रो था कोस ०।।, देवळी रा तळाव वांसे बाहळौ छै । तिण परै षेड़ौ छै । सीं० दुरगा रौ बसायौ । षेत देवळीयां से षड़ीजै छै, नै लाडपुरा हेठै[4] षेत आया छै ।

४

२ बूटेळाव रा बास २

१ षुड़द बूटेळाव रौ षेड़ौ ।

जोड कने रूपारास दिसी, आसीया वाळो, कचोळीया[5] नाडी तीरे ।

१ तीजो वास

रा० गोपाळदास वैरसलोत नुं संमत १६६९ पटै थौ । महैव

1. सीमा । 2. पठार, कम ऊंची पहाड़ी । 3. मेर जाति के लोगों ने । 4. लाडपुरा गांव की सीमा में । 5. तलैया ।

रूपावास गोधेळाव षारीया लुढावस चावड़ीयाक सुं सींव्र ।

२

३ कंटाळीया रा बास मांजरे

१ सहेबड़ौ

सोभ्कत था कोस ६ परवांण में । मगरा री जड़ां बिणजारा री घाटी रै मुंहडै[1] । बावड़ी १, ढूंढा छै । तळाव १ पड़ीहारां वाळौ । नाबरो हरीयामाळी सुं सींव ।

१ कोटड़ौ सुरावसती

कोस १ हीज कंटाळीया था, कोस १। पुरब में षेड़ौ । भाषर में मावादेवी कनै बावडी १, षेड़ा री ठौड आबली वड़ छै। बाहळो झरणा छै ।

१ तोसमारीयौ

कंटाळीया था कोस... षेडौ ऊंचौ थळ माथै । तठै वड़ १ छै । पांणी षेड़ै नहीं[2] । थळ पोवता । रा० किसनसिंघ उदैसिंघोत बसायौ थौ ।

३

१ पाटमोगढ

सोभ्कत था कोस ८ मगरे लगतौ, नाबरा था कोस १ आगे । हुल जिणुं री वडी ठकुराई हुई[3] । आगै बडौ सहर वसतौ । सहर सूना रा सारा अरष छै[4] । मांहे बावड़ी के कुवा द्रह पांणी रा छै । गोरी पातसाह रा कराया को महल पिण छै। षेत तो इण षेड़ा वांसे कोई नहीं । धारेश्वर महादेव था नजीक ।

---

1. सामने । 2. गांव पानी में नही है । 3. वड़ा राज्याधिकार हुआ । 4. चिन्ह मौजूद हैं ।

१ षारचीया प्रोहतां री

सोभ्रत था कोस ७ षरक नेवास रै सांधै। बडी षारची था कोस १ तीरवा १ ऊगवण मांहे। षेड़ा री ठौड़ बाड़ी छै। प्रोहत षेतावती नुं राव गांगा री दीयौ सांसण थौ। पछै संमत १६४३ मोटै राजा प्रोहत मांडण करन कना लीयौ, नै गांव बाहड़सो गोधावस था सुं लीया। कंवरां सिकार षेलतां षांनाजंगो[1] हुई, तरै गांव लोपीयौ। हमें बडी षारची मांहे षड़ीजै छै।

२ भेटनडा रा मांजरा

१ जैतसी री वासणी

भेटनडा था कोस १ आथवण[2] मांहे। षेड़ौ पाधरौ, पांणी इण षेड़ै न थौ। मोडी री नाडी पीता। रा० तेजसी ईसरोत अठै ढांणी कर रह्यौ थौ सु संमत १७०५ सूनौ हुवौ। रा० काना रा० सादूळ इण षेड़ा बसता। रा० जैतसी उदैसिंघोत रा० जैतसी ईसरोत रूपावत नुं अठै बसाया था।

१ रा० जसा कलावत

रा० जैतसिंघ रौ चाकर भेटनडा था कोस १। षेड़ौ पाधर मैं, नींब ४ उठै आगे बाहळो १ चौपड़ वाळो बहै। तठै बेरीयां पीता। नाडी थोड़की मास ४ पांणी। बिसनोयां री वास कहीजतौ।

२
___
३२

४१. सोभ्रत रा गांव सांसण चारणां नुं बांभणां नूं—

गांव, आसांमी गांव ३३ तांमें १५ बांभणा रा, १७ चारणां रा, १ जोगीयां रौ।

---

1. झगड़ा। 2. पश्चिम।

१४ बांभणां नुं सांसण तिणरी विगत—

१ रूपावस

सोभत था कोस ३ ऊतर मांहे। दत्त राव श्री मालदेजी री, प्रोहत राजा चोहथोत जात सीवड़ नुं संमत १५८८ जेठ सुद ७। पछै राव रांम मालदेप्रोत संमत १६६१ काती सुद ६ प्रो० रायमल राजावत नुं फेर दियौ। हिमें प्रो० चांदावत नै थळी ऊदावत नै मोणदास जैतसीयोत वगेरै छै बांणीयां बांभण कुंभार रजपूत जाट षाती बसै। धरती हळवा २५० बडा षेत धोराबंध। अरट ५ चांच ४ सेंवज चिणा। लूण रा आगर ४ हुवै। तळाव बरसोंदियौ, पांणी बाहळा १ छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४५१)	६५२)	३९२)	६५६)	४६८)

१ वडीयाळौ

सोभत था कोस ४, ऊतरा था डावौ। रूपावस थी कोस १ छै। दत्त राव श्री मालदेवजी रौ प्रोहत राजौ चोथौ सीवड़ नुं। रूपावस पछै दीयौ थौ। पछै विषै गांव लोपांणौ[1]। पछे प्रो० रायसल राजावत राजा जगनाथ कछवाहा। ऊपर धरणै बेठौं थौ, तरै राव रायसिंघ चन्द्रसेनोत गांव धरणौ ऊठायौ। हिमें प्रो० लधै ऊदावत नै मोवणदास जैतसीयोत नुं छै। षारोळ बसै। धरती हळवा २० बाजरी मोठ हुवै। ऊनाळी नहीं, सेंवज चिणा हुवै। लूण रा आगर करै तितरा हुव। तळाव बरसोंदीयौ, पांणी बाहळा २ आगरां में रेलै छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५१)	२४७)	२६६)	३७९)	११६)

१ लुढावस

सोभत था कोस २ ऊतर दिसी। दत्त राव श्री जोधाजी री। श्रीमाळी आसलो हटदेधरोत नुं श्री गयाजी मांहे दीयौ। तिंवरी दी

1. प्रतिकूल समय में गाँव जब्त हुआ।

तदे । पछै मोटै राजा बरकरार राषीयौ[1] । हिमें बास गोपीनाथ रांम चंदोत नै मनोहर अणंदोत रांमजी हरनाथोत हरजी किसनोत रौ छै। बाभण नै कुंभार बसै । धरती हळवा ३०, षेत काठा[2] जवार रा, अरट ढीबड़ा १० तथा १२ हुवै । सेंवज चिणा हुवै । तळाव १ मास ७ पांणी । बावड़ी १ नवी हुई छै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३१५)	४१५)	३४७)	३९७)	४३७)

१ राधा री वासणी

सोझत था कोस ०।। ऊगवण था जोमणी १ । दत्त माहाराजा श्री जसवंतसिंघजी रौ, श्रीमाळी त्रिवाड़ी कांना जगावत नुं । संमत १७०९ दीयौ । श्री कंवरजी हुवांरी[3] बधाई आई तरै । हिमें त्रिवाड़ी कांना जगा रौ छै । जाट बांणीया कुंभार बसै । षेत सषरा । धरती हळवा ४० अरट ४ ढीबडा २, बावड़ी १ छै । तळाव १ सोवांणौ, बरसोंदीयौ पांणी ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५५)	३८५)	४२०)	६४२)	४३१)

१ धुहड़ीया वासणी

सोझत था कोस ६ आथण मांहे । दत्त राव श्री गांगाजी कुं० श्री मालदेजी रौ । प्रोहत मूळा कूंपावत सींवड़ नुं । धूहड़ीया वासणी चाहड़वास भेळा दिया । हिमें प्रोहत गोरधन जगनाथ सादूळ रा बेटा छे । प्रोहत जाट रजपूत बसै । धरती हळवा ४० षेत सषरा जवार बाजरी रा छै । ऊनाळी नहीं । सेंवज चिणा के हुवै । लूण रा आगर ६ हुवै । तळाव मास १० पांणी । गांव पोटलीयै पीवै । बाहळौ १ मोकल नडी रै कांकड़[4] छै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१३१)	२८१)	८२)	२१८)	२५६)

1. कायम रखा । 2. बालू रहित । 3. राजकुमार के जन्म की । 4. सीमा में ।

१ पांचवौ

सोझत था कोस ७ आथवण मांहे । दत्त रा० वीरमदे वाघावत रौ, प्रोहत नरसिंघ चोथोत सीवड़ नुं । पछै मोटै राजा चोलण की तरै प्रोहत सीहे पीथावत प्रो० रायसल राजावत नुं आधौ गांव कबूल करणौ करायौ[1] । तरै गांव पाछौ दीयौ । हिमें प्रो० लाधौ ऊदावत मोणदास जैतसीयोत धनराज तिलोकसी रौ छै । रजपूत बांणीया बांभण बसै । धरती हळवा ४०, षेत कंवळा[2] । अरट २ कोसीटा २ चांच १५ । षारचीया हुवै, तिण सेंवज हुवै । तळाव मास ७ पांणी । बाहळो कोस ०। ऊपर छै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५१)	१५६)	२१०)	१७५)	१५५)

१ चाहड़वस

सोझत था कोस ६ आथण था जीमणो[3] । दत्त राव श्रीमालदे जी रौ प्रोहत मूळो कूंपावत सीवड़ नुं, धुहड़ीया वासणी साथै दीयौ । हिमें प्रो० राघोदास धनौ किसनावत नै रूपा सांवळदासोत नुं छै । जाट रजपूत बांणीया बसै । धरती हळवा ८० षेत कण नै कंवळाठी बड़ा २ कोसीटा २ चांच ६ । सेंवज चिणा हुवै । तळाब मास ४ पांणी । पछै बेरीयां पीवै । बाहळा २ कोस ०।। छै । कोहर नहीं ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२६४)	२८४)	५४७)	३७८)	३६६)

१ धरमावसणी – अनंत री बासणी

सोझत था कोस ५ आथवण मांहे । दत्त राव श्री गांगाजी री । श्रीमाळी बास अनंत रीषावत नुं गांव बोहड़ानडो नै धरमावसणी दीया था सु बोहड़ानडी मोटै राजा उरो लीयौ[4] । अै गांव छै, हिमें बास

1. स्वीकार करना, मंजूर कराया । 2. कोमल मिट्टी वाले । 3. दांई ओर । 4. जब्त कर लिया ।

१ बोराडो १००)

---

८ २३००)[1]

---

२० ६४००)

६. ४०००) २६ सूना षेड़ा मांजरै—

१ षीरणेहटी रास मैं।
१ लाणुबास रास रौ छै।
१ बाघीयाहेड़ौ षुरद कसबा मैं मांजरै।
१ बीसीयाबास बडा नींबला में।
१ वीरम बासणी।
१ सारंगवास रायपुर में।
१ करमावास असला मैं[2]।
१ ढसु रौ भाषर रै नांव अब दाषल[3]।
१ भीचरड़ी बीचपुड़ी महे।
१ बलड़ो षुरद बरि महे छै।
१ नीबहटी रास रै पटै।
१ जगहथीयां रास रै।
१ वलीबड़ी नीबले मैं मांजरे।
१ टांकड़ी[4] गिररी में।
१ वीसीयावास षुरद नींबाज में।
१ धौलपुरीयौ रायपुर बोरडी चांग महे पटा महे।
१ हाई हाराबास[5] कहीजै, बाबरा रै पटै।
१ षेताबास गलणी महे।
१ हींगाणीयौ बलाहड़ा महे।

---

१. 'ख' प्रति में रेख अङ्कित नहीं। २. आसरलाई में मांजरे। ३. बाबरा दाखल। ४. टीकड़ो। ५. हाप हीरावस।

१ रबारी बासणी रास रै पटे ।
१ झुंझणदो षुरद कसबै मै मांजरै ।
१ रांमावासणी गिररी महे मांजरै ।
१ चीडीयोहेड़ो गिररी में ।
१ देवाय रायपुर महै छै ।
१ देवली काणूजे गुदरड़े बीच ।
१ सुरीयाबाल ग्रासरलाई में ।
१ षीवळ बीचपुड़ी रा रजपूत षेत षड़ै ।
१ जैतपुर षारटीया महै ।
१ बालुवास सोभाबस वरल महैं[1] ।

२९	४०००)

१०. १०२००) १८ सांसण ।

८॥ बांभणां नुं–

१	मोरवी बडी	१५००)
१	कारोलीयौ	७००)
१	धामपुरी[2]	३००)
॥	वीकरळाई	१०००)
१	भाषरवासणी	३००)
१	ताल्हकीयो	१२००)
१	देहुरीयो	६००)
१	जानावासणी	...
१	मोरवी षुरद	...
८॥		६१००)

८॥ चारणां नुं[3]–

१. वीरोल माहे मांजरै । २. ध्रमपुरी । ३. 'ख' प्रति में अंकित 'लषावासणी' सहित पूरे ८। गांव होते हैं ।

१ बोराडो १००)

८ २३००)[1]

२० ६४००)

६. ४०००) २६ सूना षेड़ा मांजरै—

१ षीरणेहटी रास में।
१ लाणुबास रास री छै।
१ बाघीयाहेड़ौ षुरद कसबा में मांजरे।
१ बीसीयाबास बडा नींबला में।
१ वीरम बासणी।
१ सारंगवास रायपुर में।
१ करमावास असला में[2]।
१ ढसु री भाषर रै नांव अब दाषल[3]।
१ भीचरड़ी बीचपुड़ी महे।
१ बलड़ो षुरद बरि महे छै।
१ नीबहटी रास रै पटै।
१ जगहथीयां रास रै।
१ वलीबड़ी नीबले मैं मांजरे।
१ टांकड़ी[4] गिररी में।
१ वीसीयावास षुरद नींबाज में।
१ धौलपुरीयौ रायपुर बोरडी चांग महे पटा महे।
१ हाई हाराबास[5] कहीजै, बाबरा रै पटै।
१ षेताबास गलणी महे।
१ हींगाणीयौ बलाहड़ा महे।

---

१. 'ख' प्रति में रेख अङ्कित नहीं। २. आसरलाई में मांजरे। ३. बाबरा दाखल। ४. टीकड़ो। ५. हाप हीरावस।

२८ मेरां रा गांव ।

१२ बसता आवादान छै

८ गैर अमल

८ सूना छै[1]

२९ सूना षेड़ा मांजरा छै सु[2]

१८ सांसण छै।

८॥ बांभणां नुं

८॥ चारणां नुं

१ जोगी नुं

१४९

३ अजमेर वांसै गया छै।

१५२ गांव

परगने जैतारण री फिरसत

१२. बडा गांव निषालस—

१ कसबौ जैतारण ७०००)

जोधपुर था कोस २७, उगवण था जीवणी । भलौ कसबो माहाजन सीरवी घांची माळी छत्तीस पवन बसै। धरती हळवा' • 'बरसाळी रूड़ा षेत । ऊनाळी सारी सींव में। सेझो, अरट १०० तथा १५० चांच कोसीटा करै तिररा हुवै। संमत १७११ साल तं।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
८८३४)[3]	१०९६३)	११२२८)	८०८४)	७७९३)

१ नीबाज ७०००)

जैतारण था कोस ३, बडो गांव। माहाजन जाट कुंभार बसै।

१. केवल 'ख' प्रति में इन गांवों के नाम इस प्रकार हैं—भैंसाणो, पीपलरोदो, नाई सुजारी, गुदरड़ो, डावटो, पुनेसर, नाई ऊदा री, कोटड़ो। २. गांवा में षड़ीजै। ३. ८८४०)

१ सींधलां नाडो	६००)
१ दागुंलो	५००)
१ जोधावास	६००)
॥ षोनावड़ी	—
१ बोहोगुण री वासणी	४००)
१ तेजावासणी	३००)
१ गेहा वास	५००)
१ गेहा वासणी	२००)
८॥	

१ जोगीया नुं–

१ जालेळाव[1]	२००)
१८	१०२००)

२०७२००)	१४६ गांव
	३ अजमेर रै वांसै गया।
२०७२००)	१५२ गांव[2]

११, गांवां री कुल ठीक– प्रा० जैतारण रा गांव ४७ षुलासा, रईत बसै आवादांन छै।

बडा गांव २४ छोटा गांव २३

२७ बसीयां लायक गांव, रईत नहीं, सदा वसीयां रहै छैं।

८ बडा गांव
११ दोम गांव
८ छोटां कांठा रा गांव

२७

१. झीलेलाव। २. 'ख' प्रति में इन गांवो की रेख अंकित नही है।

२८ मेरां रा गांव ।

१२ बसता आबादोन छै

८ गैर अमल

८ सूना छै[1]

२६ सूना षेड़ा मांजरा छै सु[2]

१८ सांसण छै।

८॥ बांभणां नुं

८॥ चारणां नुं

१ जोगी नुं

१४६

३ अजमेर वांसै गया छै ।

१५२ गांव

परगने जैतारण री फिरसत

१२. बडा गांव निषालस—

१ कसबो जैतारण ७०००)

जोधपुर था कोस २७, उगवण था जीवणी । भलौ कसबो माहाजन सीरवी घांची माळी छत्तीस पवन बसै। धरती हळवा' ' 'बरसाळी रूड़ा षेत । ऊनाळी सारी सींव में। सेभो, अरट १०० तथा १५० चांच कोसीटा करै तिररा हुवै । संमत १७११ साल तं ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
८८३४)[3]	१०९६३)	११२२८)	८०८४)	७७९३)

१ नीबाज ७०००)

जैतारण था कोस ३, बडो गांव । माहाजन जाट कुंभार बसै ।

---

१. केवल 'ख' प्रति में इन गांवों के नाम इस प्रकार हैं—भेंसाणो, पीपलरोदो, नाई सुजारी, गुदरड़ो, डावटो, पुनेसर, नाई ऊदा री, कोटड़ो । २. गांवा में षड़ीजै। ३. ८८४०)

धरती हळवा ५०० सांवणु षेत सषरा ऊनाळी सारी सींव मैं सेझो। अरट ६० ढीबड़ा १०० तथा १०५। चांच करै तितरा हुवै। सदा षालसै रह्यौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
७८६८) ८२९१) १२९४४) ७६९४) ९०९२)

१ छींपीयो षुस्यालपुर ६०००)

जैतारण था कोस ४, बडौ गांव। सीरवी बांणीया बांभण चारण बसै। धरती हळवा २५० बरसाळी षेत सषरा। रैल[1] बीघा २०००, ऊनाळी अरट ८० तथा ९० बडा अरट। चांच कोसीटा करै तितरा हुवै। सारी सींव में सेझौ घणौ[2]।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
५९६९) ५८५३) ८५१४)[1] ९२५७) ६७९४)

१ आगेवो ६५००)

जैतारण था कोस २, वडौ गांव। सीरवी जाट माहाजन सगळी जात पवन बसै। सांवणू बडा रेल रा षेत। सेवज चिणा हुवै। ऊनाळी सिगळी सींव में सेझौ। पांणी हाते ७ तथा ८ घणौ मीठौ। अरट ५५ तथा ६० चांच करै तितरा हुवै। सदा षालसै रह्यौ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
४२८५) ५८७०) ६०२९) ८९७३) ६२१८)

१ राबड़ीयाक

जैतारण था कोस ७ उगोण था डावौ। जाट बांणीया रजपूत बांभण बसै। धरती हळवा २००। बाजरी मोठ हुवै। षेत कंवळा। ऊनाळी कोसीटा ६० हुवै। के सैंवज चिणा हुवै। बाळौ धुळेट रौ कोस

---

१. ९५१४)।

---

1. वर्षा का पानी भरता है। 2. पृथ्वी तल मे पानी खूब।

१ छै। कांठा रौ गांव। सदा बसीयां मांहे रहै छै। तळाब मास ६ ७ पांणी। बाळौ भाषरां रौ आवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१४१७)	३८३०)	६१६८)	४६६४)	३१०७)

१ नींबलौ

जैतारण था कोस ४ आथूण था जीवणौ। जाट बांणीया कुंभार नै नंदवाणा बोहरा बसै। धरती हळवा १२० षेत सषरा, ऊनाळो। बाहळा ऊपर अरट २ ढीबड़ा २५ कोसीटा २० चांच २। तळाव मास ७ पांणी। बावड़ी १ दषण मांहे नदी लूणी छै। नदी लूणी सादवा १ मांहे बहै। नै सरसती रै नाळे ऊनाळी हुवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१२०७)	१६१४)	३२६४)	२०३३)	१८०२)

१ बांझाकुड़ी

जैतारण था कोस २ ऊतर मांहे। जाट बांणीया रजपूत बांभण बसै। धरती हळवा १२० षेत काठा मटीयाळ। ऊनाळी अरट १२ ढोबड़ा १५ हुवै, सेंवज हुवै। सदा षालसै रौ गांव। नदी कोस ०। दषण मांहे बहै। तठै ढीवड़ा आड़वाणोया नै षरबूजा तरकारी हुवै। तळाव मास १० पांणी। कोहर १ तळाव मांहे, पुरसे १४ मीठौं छै। जोड १ बीघा ४०० छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१९२९)	२०५१)	४०२९)	२९९८)	१८७८)

१ गळणीयौ

जैतारण था कोस २ आथण मांहे। जाट सीरवी नंदवाण बोहरा बांणीया बांभण बसै। धरती हळवा ६०, षेत काठा मटीयाळा। अरट २० ढीबड़ा २, सेंवज चिणा गोड[1] हुवै। तळाव मास ७ पांणी। अरट

1. मूली।

२ बंधवा छै। पेहली कुंपाषेड़ौ कहीजतौ। सु रेल था गांव गळतौ[1] सु गळणीयौ कहीजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२२२४) २७७४) ३९३५) २७५५) १७९६)

१ सांगावस

जैतारण था कोस २ दषण मांहे। जाट बांणीया सीरवी बांभण बसे। धरती हळवा १२० षेत सषरा कंवळा। अरट ढीबड़ा २०। षेत रेलीजै तरै सेंवज चिणा हुवै। नदी बधनोर रा मगरा रा गांव नजीक दषण मांहे बहै। तळाव मास १ पांणी। सदा षालसा रौ गांव छै। ऊंचौ कोई नहीं।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१८८५) ११७२) २३४८) ३२९३) ४१४६)

१ झांझणवस

जैतारण था कोस ४ आथण मांहे। सीरवी जाट बांणीया बांभण बसैं। धरती हळवा ८० षेत कांठा मटीयाळा। अरट ढीबड़ा २२ हुवै। तळाब मास ८ पांणी। बावड़ी १ छै। षीची झांझण री बसायौ गांव तळाई १ झांझण नडी छै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१११२) १९७६) ४२९३)[1] २६९२) ०)

१ झुंझणदो

जैतारण था कोस ०।। दषण मांहे। जाट बांणीया सीरवी बसै। धरती हळवा ८० षेत कंवळा, बाजरी मूंग रा। अरट ३ ढीबड़ा ३० सेंवज गोहू चिणा हुवै। नदी बधनोर रा मगरा री दिषण मांह बहै

१. २९९३)।

१. वर्षा का पानी भरने से फसल आदि गलने लग जाती।

छै । तळाब को नहीं । बावड़ी १ पुरस ७ पांणी[1] सु पीवै ।

१ देवळी पिराग रो

जैतारण था कोस ५ दिषण था जीवणी । जाट बांणीया कुंभार नै नंदवाणा बोहोरा रजपूत बांभण बसै । धरती हळवा ४०० षेत काठा[1] के कंवळा । अरट ढीबड़ा ६० चांच ६० तथा ८०, सेंवज रेल मैं चिणा बीघा १००० हुवै । बडौ गांव छै । तळाव मास ८ पांणी । बावड़ी २ छै नवी, एक पुरांणी । रेल १ जुठारायपुर रा भाषरां री आवै । तिण था चोथै हेंसा री धरती रेलीजै छै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३००८)	७४८४)	७६८७)	६६४४)	४३०८)

१ लौटोधरी

जैतारण था कोस ४ आथवण था जीवणी । जाट बांणीया नंदवाणा बोहरा बसै । धरती हळवा १५०, षेत सषरा कपास हुवै । ऊनाळी अरट १५ ढीबड़ा ३० । सेंवज गेंहूं चिणा सारी मैं हुवै[2] । तळाव १ सूजासर राव सूजा रौ करायौ, बरस १।। रौ पांणी हुवै । नदी रासगीर वाळी कोस ०। दिषण में । नदी लूणी कोस ०। उत्तर मैं बहे ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२७९०)	४२७०)	७०५२)	५९८७)	४३९८)

१ देहूरीयौ

जैतारण था कोस २ पिछम नुं था डावौ । सीरवी बांणीया सुतार कुंभार बसै । बास १ चारणां रो जुदौ छै । धरती हळवा १५० षेत काठा कंवळा । अरटी ३५ हुवै । चिणा रेल मांहे बीघा १००० हुवै ।

---

१. पांणी मीठौ ।

---

1. कठोर मिट्टी वाले । 2. पूरी सीमा में होते हैं ।

तळाव मास ५ पांणी । बावड़ी १ पांणी भळभळो[1] ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२४४७)	३७८७)	८३०१)	५५३८)	४५५२)

१ बांसीयौ

जैतारण था कोस ६ दषण मांहे । जाट बसै । धरती हळवा १५०, षेत सषरा । अरट ११ ढीबड़ा ४२ हुवै । गांव हाळी थोड़ा छै, वासत वसी १ गांव मांहे राखै छै । हमार रा० बलू परतापोत बसै छै । सेंवज चिणा सारी सींव हुवै । धोरा छै, तळाव वरसोंदीयौ पांणी । बाहळो १ पींपळीया था आवै । असल षालसा रौ गांव । पटे ही हुवै छै ।[2]

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२२२०)	३०८५)	३३७१)	४३२८)	२०६७)

१ नीबाहेड़ो

जैतारण था कोस ४ दिषण मांहे । जाट बाणीया कुंभार सीरवी बसै । धरती हळवा ६० षेत काठा कंवला । अरट ५ ढीबड़ा २५ चांच ४, सेंवज चिणा गेहूं सारी सींव में हुवै । तळाव मास ७ पांणी बाहळो जुठोरायपुर रौ दिषण में बहै । बावड़ी १, कोहर १ मीठौ छै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५६८)	१८११)	४१६५)	२७४१)	१६२९)

१ कटाहड़ी[1]

जैतारण था कोस १॥ उगोण मांहे । जाट बांणीया बांभण बसै । धरती हळवा १२० षेत कंवळा बाजरी मोठ रा । अरट १० ढीबड़ा ३० चांच १० हुवै । सेंवज चिणा रेल आधी सींव में हुवै । तळाई मास ४ पांणी । कोहर १ गांव बीच मोठो । जोड़ १ वीघा ५०० छै । नदी पेरवा[2] भाषर रेलोजै छै । असल षालसै रौ गांव ।

---

१. कुटाडो । २. परवा ।

---

1. कुछ खारापन लिये हुवे । 2. जागीरदार के पट्टे में भी दिया जाता है ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२२६५)	३८४०)[1]	४७२९)	३१५७)	३७५४)

१ बाघीया हेड़ो

जैतारण था कोस ३ दिषण था डावो। जाट बांणीया बसै। धरती हळवा १०० बाजरी मोठ हुवै। षेत कंवळा उन्हाळी अरट ८ ढीबड़ा १०, सेंवज चिणा हुवै। नदी कांणुजा वाळी गांव नजीक तिण री बेरीयां पांणी पीवै। तळाव बावड़ी कोई नहीं। असल षालसै रौ गांव।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२३६१)	२८१८)	२०४८)	४२००)	२३१९)

१ पाटवो

जैतारण था कोस ४ आथण था डावो। जाट बांणीया बसै। धरती हळवा २०० बाजरी मोठ तिल हुवै। षेत कंवळा, अरट ८ ढीबड़ा ८, सेंवज हुवै। तळाव मास ८ पांणी। देहूरीया वाळा चारणां नुं अठा री हीज धरती छै[1]।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
११६३)[2]	१७५७)	३४६८)	२२७३)	१२५०)

१ बहेड़

जैतारण था कोस ३।। आथवण था जीवणी। जाट बांणीया बांभण रजपूत बसै। धरती हळवा १०० जवार बाजरी षेत सषरा। ऊनाळी अरट ७, ढीबड़ा ५ हुवै। सेंवज चिणा रेल जैतारण वाळी[2] हुवै। तळाव मास ४ पांणी। पालो[3] गांव सषरौ हुवै छै। निषालस

---

१. ३८३०)। २. ११६३)।

---

1. इसी गाव की जमीन देहूरीया के चारणो को भी दी हुई है। 2. जैतारण की ओर से बहकर आने वाला पानी। 3. छोटी बेर की झाड़ियो के पत्ते जो विशेष रूप से ऊंट और बकरी खाते हैं।

गांव १ षाळसै रौ छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	८४७)	१४३७)	२७२१)	१६३३)	१०१०)

१ रांमपुरौ

जैतारण था कोस ५ दिषण था जीवणौ। जाट बांणीया बांभण बसै। धरती हळवा ५०, बाजरी मोठ षेत कंवळा। अरट ढीबड़ा २८, सेंवज चिणा हुवै। सींव घणी, हाळी[1] थोड़ा तिण वासतै बसी मांहे राषी छै। रा० बलु ईसरदासोत री तळाव वसडो[1] नहीं। नदी भुठ वाळी नजीक।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१३६९)	१५७६)	२६८४)	१९२२)	१३५४)

१ पोपळीयौ कापड़ीया रौ

जैतारण था[2] डावौ। जाट रजपूत बसै। धरती हळवा ५० बाजरी मूंग षेत कंवळा। अरट ढीबड़ा २० कोसटा ४ चांच १० हुवै। सेंवज चिणा सगळे हुवै। जाट कापड़ीया रौ बसायौ छै। जोड २ छै। नदी लूणी गांव नजीक। तळाव मास ४ पांणी। बाहळौ १ जोड में रेळीजै छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०९१)	२२५०)	३५५२)	१९८२)	८१७)

१ चावडीयौ बडौ

आगेवा कन्है जैतारस था कोस ३ दिषण था डावौं। जाट वसै। धरतो हळवा ४५ बाजरी मोठ षेत कंवळा। ऊनाळी अरट ७ हुवै। हाळी थोड़ा छै सु बसी एक गांव में राखै छै। तळाव मास ८ पांणी।

---

१. सडो। २. कोस २ ऊगवण (अधिक)।

---

1. हल जोतने वाला।

कदीम षीचीयां रो गांव । कुवौ १ पांणी मोठौ । असल षालसै री गांव । रा० अणंदरांम दवारकादासोत री बसी ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
९१५) १४७२) ९४०) २५७०) ११०७)

१ रांणीवाळ

जैतारण था कोस ३ पिछम मांहे । जाट नै नंदवाणा बोहोरा बसै । धरती हळवा ३० तथा ४० षेत सषरा । जवार बाजरी मोठ हुवै । ऊनाळी ढीबड़ा १२, सेंवज चीणा हुवै । तळाव मास ५ पांणी । निषालस गांव पटै ही रह्यौ छै[1] ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
९४०) २९४५) ३६५१) १४७१) ११५५)

वसी वाळा बडा गांवां री विगत—

[1][१ रायपुर

जैतारण था कोस ६ रूपारास कूंण मांहे । बांणीया जाट रजपूत बांभण तेली बसै । धरती हळवा ४०० सषरा षेत; ऊनाळी । बडौ गांव सारी सींव सेझौ । वाग २ सषरा छै । मांहे कूवौ मीठौ छै । कांठा रौ गांव । बसती रो मुदौ बसी माथै छै । बसीयां सदा रहै । तळाव १ रै वरसोंदीयौ पांणी । नदी रायपुर था डावै[2] जैतारण आवै ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
३२३६) ४३०४) ५५०७) २६५७) १९३७)

१ गीररी

जैतारण था कोस ६ ऊगवण । बांणीया रजपूत माळी बसै ।

---

१. 'ख' प्रति का अंश ।

---

1. जागीर के पट्टे में रहता है । 2 बाईं ओर से ।

धरती हळवा ५०० बाजरी मौठ । ऊनाळी अरठ ढीबड़ा ५०, सेंवज चिणा हुवै । कांठा रौ बडौ गांव । मगरी ऊपर रा० षींवा रौ करायौ कोट छै । तळाव नहीं । बाहळौ १ चांग ता आवै । तिणरै झरणै पांणी मीठौ पीवै । नदी गांव नजीक । जिण नुं पटै हुवै तिण री बसी आय रहै ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
१०३९) २९०४) ४११४) २६२३) १८२३)

१ रास

जैतारण था कोस ८ ऊगवण था डावी । जाट बांणीया बसै नै मुदो बसी रा लोकां था छै । धरती हळवा ४० षेत सषरा । ढोमड़ा कोसीटा ५० तथा ६०, सेंवज चिणा सारै ही हुवै छै । तळाव वरसोंदीयौ पांणी । नदी चांग मानपुरा वाळी नै बाहळौ १ गांव नजीक छै । कांठा रौ बडौ गांव ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
२१३६) २८५४) ३२६४) २७२९) २०७१)

१ करमावस माळीयां री

जैतारण था कोस ५ दषण मांहे । वसेवांन घणौ को नहीं । रा० भारमल दलपतोत री बसी रा । बांणीया रजपूत जाट बसै । धरती हळवा १०० षेत कंवळा । अरट ढीबड़ा १३ कोसीटा २ चांच ४ । सेंवज चिणा हुवै । तळाव तसलो को नहीं । बाहळो १ जुठा वाळौ नजीक । कांठा रौ गांव ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
१२६३) १७७३) ३१००) १९३०) १७००)

१ आसरलाई

जैतारण था कोस ३ ऊगवण मांहे । जाट बांणीया कुंभार बांभण बसी रा रजपूत गूजर बांणीया बसै । धरती हळवा ४० षेत कांठा कंवळा । ढीबड़ा अरट १७ हुवै । तळाव मास ८ पांणी । बावड़ी १,

पांणी भळभळौ नदी काळा झरणा वाळी कोस १, बसी रौ बडौ गांव ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
१२०३) ४०६६) ४६९८) २६८९) १९६९)

१ जुठो

जैतारण था कोस ६ परवांण कूण मांहे । वसेवांन लोक घणो को नहीं । बसी रा बांणीया जाट रजपूत कुंभार बांमण बसै । धरती हळवा २०० षेत कंवळा । अरट ढीबड़ा ४० तथा ५० । सेंवज राजपुर बीच बहै । कांठा रौ गांव ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
८०१) १३०१) २०९४) १०००) १०००)

१ बाबरौ

जैतारण था कोस ९ ऊगवण मांहे । कुंभार बांणीया माळी बसै । बसी समुंदो[1] रजपूत बांणीया बसै । धरती हळवा ४०० बाजरी मोठ हुवै । षेत कंवळा अरट ४० ढीबड़ा ५० हुवै । तळाव मास ... पांणी । नदी गांव था नजीक । तिण रा द्रहा[2] गांव ३ पीवै छै । कांठा रौ गांव । सदा बसीयां रहै ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
२२००) ३७७८) ५५३७) ३५७९) ३१२९)

१ बलाहड़ो

जैतारण था कोस ५ ऊगवण था डावौ । जाट बांणीया बसै । बसी रौ मुदो रजपूत बांणीया सुं । कांठा रौ गांव । सदा बसियां रहै । धरती हळवा २५० षेत काठा कंवळा । अरट ८, सेंवज चिणा हुवै । तळाव वरसोंदीयौ पांणी । कोसीटो १ बंधवौ छै । कोटड़ी री पोळ १ छै[3] । भलौ गांव, दोम षुलासा ।

---

1. पूरे के पूरे । 2. नदी में बने गड्ढे । 3. गांव के अधिकारी के रहने के लिए एक प्रोल है ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
८७५)	३१५४)	३९९०)	२९६६)	१६५९)

१ ऊनावस बडौ

जैंतारण था कोस १। आथण मांहे। जाट नै बांभण बसैं। धरती हळवा ३० षेत काठा मटीयाळा। ऊनाळी अरट १० ढीबड़ा २ हुवैं। पहली आगे वाळी रेल आवती। चिणा हुवै। तळाव मास ८ पांणी। बावड़ी १ रतनपुरा रै कांकड़ ऊषेलिजै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०५)	७०१)	३०३४)	१४३५)	१२२६)

१ सोमावस

जैंतारण था कोस ०।।। आथण था जीमणो। सीरवी कुंभार बसै। धरती हळवा ३० षेत काठा जवार मूंग। अरट १० ढीबड़ा ३ हुवै। तळाव मास ७ पांणी। कोहर १ पांणी मीठौ, सीरवी सोमे पड़ीहारीये नवौ बसायौ। असल षालसा सारौ गांव छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०८५)	१६८०)	२३५०)	१४२९)	११२१)

१ राजाढंढ

जैतारण था कोस ३ आथण मांहे। जाट सीरवी बांणीया बसैं। धरती हळवा ३० षेत काठा कंवळा। अरट ढीबड़ा २७ चांच ३० सेंवज चिणा हुवै। तळाव मास ४ पांणी। कोहर १ सागरी मीठौ। रेल आगेवा वाळी आवै। पहली गांव बारहठां नुं सांसण थौ सु सोह मर षपीया[1] तरै संमत १७१७ षालसै कीयौ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२२५)	९३४)	२१६६)	१४६८)	९२६)

---

१. सारे बारहठ मर कर समाप्त हो गये।

१ ऊनावस षुरद

जैतारण था कोस १ डावौ। जाट बसै। धरती हळवा २५ षेत काठा कंवळा। ऊनाळी अरट ढीबड़ा ५ तथा ७। तळाव जाषणनडी मास ४ पांणी। सेंवज चिणा घणा हुवै।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३०७)	७६१)	१३२१)	५४२)	४१३)

१ आकेली

जैतारण था कोस ३॥ दषण मांहे। जाट बांभण बसै। धरती हळवा ३० बाजरी मोठ हुवै। षेत कंवळा, ऊनाळी अरट ढीबड़ा ८ गेहूं हुवै। नदी कांणुजा रा भाषर री दषण मांहे बहै। तळाव नहीं। ऊनाळीयां[1] पीवै।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	११७४)	१२२३)	१४३४)	१४१६)	५०८)

१ विरोल

जैतारण था कोस २ उत्तर था डावौ। जाट कुंभार बांणीया बसै। धरती हळवा ५० षेत काठा कंवळा। ऊनाळी अरट १२ ढीबड़ा १५ बांझाकुंडी री रेल में सेंवज गेहूं चिणा हुवै। नदी लूणी गांव था नजीक ऊतर मे। तळाव मास ४ पांणी। पछै नदी री बेरीयां पीवै। वालवस रौ षेड़ौ। सोमावस बिरोळ में षड़ीजै। मांजरै, असल षालसा रौ गांव।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५९)	२६२५)	२२९७)	१५८३)	११२३)

१ रांमावस षुरद

जैतारण था कोस २ उत्तर था डावौ। जाट सीरवी बसै। धरती

---

1. कुए से पानी पीती हैं।

हळवा ३० बाजरी मोठ षेत कंवळा। ऊनाळी अरट ४ ढीबड़ा २ हुवै। नदी लूणी वीकरलाई रै कांकड़ मास ५ पांणी कुंभारां रौ बसायौ छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
६९३)	७७१)	१३७०)	१३१०)	५७६)

१ पातुवस

जैतारण था कोस ०॥। धु मांहे। सीरवी बसै। धरती हळवा ३० जवार मूंग कपास, षेत काठा। ऊनाळी अरट ७ ढीबड़ा ५ हुवै। तळाव मास ८ पांणी। बावड़ी २ मीठी। अेक भळभळो अरट १ बंधवौ। रेल जेतारण वाळी आथण माहे बहै। असल षालसा रौ गांव पातु गूजर रौ बसायौ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५६१)	१८३८)	१६ ९)	१०९२)	९२८)

१ मालपुरीयौ

जैतारण था कोस ३ उत्तर नुं था डावौ। जाट बसै। बसी रा गूजर घणा बसै। धरती हळवा ४० षेत काठा कंवळा। अरट २ ढीबड़ा १०। रेल मांहे सेंवज चिणा हुवै। तळाव मास ३ पांणी। नदी लूणी दषण मांहे बहै। राव श्री मालदेजी रौ गांव बोरोल री सींव में, नवौ बसायौ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१४३०)	११२६)	२१०२)	१२४१)	५६९)

१ ठाकुरवस

जैतारण था कोस १। ऊतर मांहे। जाट बांभण बसै। धरती हळवा २० षेत सषरा। ऊनाळी ढीबड़ा ६। सेंवज चिणा हुवै। तळाव मास ४ पांणी। नदी लूणी ऊतर मांहे बहै। जागीरदार लायक गांव।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
६०२)	९५७)	१९४७)	७०३)	४१६)

१ रतनपुरो

जैतारण था कोस ०॥। आथण मांहे । जाट बसै । धरती हळवा २० षेत काठा । जवार मूंग हुवै । अरट ढीबड़ा ४ हुवै छै । तळाव १ मास २ पांणी । राठौड़ रतनसी ऊदावत री बसायौ षेड़ो जागीदारां नुं रहै ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३३६)	५२३)	४३६)	५४८)	३६६)

०॥ षिनावड़ी

जैतारण था कोस २ ऊगवण था जीवणी । कुंभार बसै । बसी रा रजपूत बसै । धरती हळवा ४० षेत कंवळा । ऊनाळी ढीबड़ा १४ सेंवज चिणा हुवै । बास १ चारणां नुं सांसण छै । सु आधौ गांव मांडै । तळाव मास ४ पांणी ।

संमत	१७२५	१६	१७	१८	१९
	१८०)	६२५)	१३६४)	१२१३)	९४१)

१ प्रिथीपुरो

जैतारण था कोस ३ आथण मांहे । जाट बसै । धरती हळवा १५ षेत सषरा, ऊनाळी अरट ३ तथा ४, सेंवज चिणा हुवै । तळाव मास ४ पांणी । संमत १७०९ सांवण मांहे । कंवर श्री प्रिथीसिंघजी रै नांव गांव । गळणोया री सींव मांहे नवौ षेड़ो बसायौ ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०५८)	९७१)	१६८७)	०)	०)

०॥ वीकरळाई

जैतारण था कोस ४ ऊतर मांहे । जाट बसै । धरती हळवा २५ बाजरी मोठ हुवै । षेत कंवळा, कोसीटा ९ । सेंवज चिणा हुवै । तळाव मास ५ पांणी । नदी गांव था नजीक । पहली प्रोहत मूळा नुं सांसण थी । पछै प्रोहत करमसी मूळावत री हेंस गळी[1] तरै प्रो० कला

1. हिस्से का अधिकार समाप्त हुआ ।

नुं दी हुती । सु षालसै हुई, राजा उदैसिंघजी री बार मांहे ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३००)	७१५)	१७१५)	७४८)	४१२)

१ भाषरावस

जैतारण था कोस ०।।। दिषण दिस । जाट बांभण बसै । धरती हळवा २० बाजरी मोठ । षेत कंवळा ऊनाळी अरट ढीबड़ा ८ तथा १० हुवै । सेंवज चिणा हुवै । तळाव मास ७ तथा ८ पांणी । बाहळो १ दषण मांहे बहै । मांगळीया भाषर रौ बसायौ[1] । सदा षालसा रौ गांव ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२९१)	७२७)	१३५२)	८९४)	४७२)

१ लाहावसणी

जैतारण था कोस २।। ऊगवण मांहे । जाट बसै, रजपूत बसी रा बसै । धरती हळवा १५ षेत काठा सबरा, ऊनाळी अरट ३ सेंवज चिणा हुवै । नदी लूणी आथण साहे बाहळो टोकड़ो रौ आवैं, गांव नजीक बहै । तळाव मास ८ पांणी । जाट लाहापा रासरीयां रौ बसायौ षेड़ौ छै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३६१)	८१५)	१५२०)	९१४)	५१८)

१ लीतरीयौ

जैतारण था कोस ४।। ऊतर मांहे । जाट बसै नै बसी रा रजपूत बसै । धरती हळवा १५ षेत काठा जवार घणी । ऊनाळी अरट २ हुवै छै । तळाव १ मास ४ पांणी । वाहळो १ गांव नजीक ऊगवण मांहे । सदा जागीरदारां रौ गांव ।

---

१. राजपूतो की मांगळीया शाखा के 'भाषर' नामक व्यक्ति का बसाया हुआ ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१६
	२१७)	४०५)	३५७)	५६७)	२५३)

१ बलुपुरी

जैतारण था कोस ७ ऊगवरा मांहे। जाट रजपूत बसै। धरती हळवा ३० बाजरी मोठ हुवै। षेत कंवळा। ऊनाळी घणी कोई नही[1]। कोसीटा २ तथा ४ सेंवज़ चिणा हुवै। तळाव मास ५ पांणी। बाहळो १ दिषण में। कांठा रौ गांव। रास कनै रा० बलु बोकावत रौ बसायौ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१६
	२४१)	३६३)	४६५)	६०२)	१७०)

१ मुरढाहो

जैतारण था कोस ३ ऊगवण मांहे। जाट रजपूत बसै। घरती हळवा २० जवार बाजरी। षेत काठा, उनाळी अरट ६ ढीबड़ा ६ सेंवज़ चिणा हुवै। तळाव मास १० पांणी। बाहळो कोई नहीं। पछै ऊनाळीया पीवै। कांठा दिसी। मेरां घणी वार बाळीयौ[2]। जागीरदार लायक।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१६
	३४६)	७७५)	१३२६)	१३४१)	३४४)

१ लुंभड़ावस

जैतारण था कोस ३ आथण था डावौ। जाट बांणीया सीरवी रजपूत बसै। धरती हळवा ३० षेत काठा कंवळा। अरट ढीबड़ा ८। सेंवज चिणा हुवै। तळाव मास ४ पांणी। बाहळौ को नहीं। रबारी लुंभा रौ बसायौ, लुंभड़ावस कहीजै।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१६
	४१८)	७०६)	२६२)	६५१)	३७१)

२१]

1. रबी की फसल कम होती है। 2. जलाया।

दोमगांव बसोया रा

१ बरांटीयौ षुरद

जैतारण था कोस ७ ऊगवण मांहे । लोक कोई नहीं । वडी बसीयां रहै । बांणीया रजपूत कुंभार गूजर बसे । धरती हळवा ६० षेत सषरा । ऊनाळू ढीबड़ा ४० छै । नदी मांनपुरा वाळी, गांव दोळू,[1] बाहाळो १ दिषण मैं छै, तिण रै द्रह पांणी पीवै । तळाव नहीं । कांठा रौ गांव । बडी बसी छै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५५३)	८४२)	२७३६)	१४३४)	६१४)[1]

१ महेसीयो

जैतारण था को ७ उगोण मांहे । लोक कोई नहीं । बसी रा रजपूत जाट बांणीया गूजर बसै । धरती हळवा १०० जवार बाजरी । षेत सषरा, ऊनाळौ ढीबड़ा ४० सेंवज चिणा हुवै । तळाव मास ४ पांणी । नदी १ सूकड़ी नै नदी १ गिररी वाळी गांव नजीक, तठै पीवै । वेरीयां हुवै । सदा बसी रो गांव ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
७५०)	६२६)	१६४१)	२०१८)	५८८)

१ बरांटीयो वडो

जैतारण था कोस ६ परवांण कूण मांहे । लोक कोई नहीं । वसी रा रजपूत बांणीया जाट बसैं । धरती हळवा १०० षेत सपरा । जवार बाजरी ऊनाळू ढीबड़ा ५ सेंवज चिणा हुवै । तळाव मास ८ पांणी । पछै मांहे बेरीयां पीवै[2] । बाहळौ गांव नजीक । कांठा रौ गांव ।

---

१. ८१४) ।

---

1. गाव से लगा हुआ । 2. तालाब के अन्दर खुदी हुई वेरियो से पानी पीते है ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
५८४) ९९९) ९६९) २६५५) १०२७)

१ नीलाबो

जैतारण था कोस ५ रूपारास कूण मांहे। लोक कोई नहीं। बसी रा रजपूत रैबारी बांणीया बसै। धरती हळवा ४० षेत सषरा, बाजरी। ऊनाळी ढीबड़ा २ सेंवज चिणा हुवै। तळाव मास ९ पांणी, नदी जुठा वाळी गांव नजीक पिछम सुं बहै। कांठा रौ गांव। सदा बसीयां रहै। बाळौ नजीक।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
१२०) ६५२) १२०३) १९९३) ५०२)

१ उदैसी कुवौ

जैतारण था कोस ७ दिषण मांहे। लोक कोई नहीं। वसी रा रजपूत बांभण जाट बांणीया। धरती हळवा ५० षेत सषरा। ऊनाळी ढीबड़ा ७ तथा ८ अषारीया[1] छै। तळाव मास ८ पांणी। बाहळो गांव री दोनुं तरफ बहै। जोड २ छै। घास गाड़ो १०० री जायगा। सेंवज रेल मांहे हुवै चिणा। सदा बसी रौ गांव।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
१२४) ५३६) ५३१) ८०९) ५४७)

१ हाजीवास

जैतारण था कोस ६ उगवण में। लोक कोई नहीं। बसी रा सीरवी गूजर रजपूत बसै। धरती हळवा ४० बाजरी मोठ, षेत कंवळा, उनाळू ढोबड़ा १० हुवै। नदी १ मानपुरा रा मगरा था आवै गांव नजीक तठै पीवै। कांठा रौ गांव, वसी था मुदौ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
२०१) २५०) ३०१) ७३८) ६०१)

---

१. पारीया।

१ नीबेहेड़ो गिररी रौ

जैतारण था कोस ५ उगोण मांहे। लोक कोई नहीं। बसी रा रजपूत सीरवी बांणीया रैबारी गूजर बसै। धरती हळवा १५० बाजरी मोठ, षेत कंवळा। ढीबड़ा २० सेंवज चिणा हुवै। तळाव नहीं। सूकड़ी रास वाळी गांव नजीक, तठै पीवै। बडौ गांव छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३४४)	१००४)	१५७७)	१३०१)	१००१)

१ बीटवस[1]

जैतारण था कोस ७ ऊगवण था डावै। लोक कोई नहीं। बसी रा रजपूत जाट बांणीया कुंभार रैबारी बसै। धरती हलवा ७०। षेत सषरा जवार मोठ छै। तळाव मास ६ पांणी नदी रास वाळी नजीक छै। कांठा रौ गांव।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
७४२)	१०२२)	२४२७)	१२४३)	४९१)

१ बरि

जैतारण था कोस ७ परवांण कूण मांहे। लोक कोई नहीं। बसी रा रजपूत बांणीया कलाळ गूजर कीरमेर बसै। धरती हळवा ४० बाजरी जवार षेत सषरा। ढीबड़ा ४ सेंवज चिणा छै। तळाव बरसोंदीयो पांणी, सीघाड़ा नै गेहूं षरबूजा हुवै। कदीम मेरां चीता गोड़ातां रौ गांव। मेर सूरौ नरसा रौ बसतौ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४१५)	५७५)	५६७)[2]	१०२९)	५९५)[3]

१ पीपळीयौ वीढा रौ

जैतारण था कोस ७ दिषण माहे। जाट बांभण बसे। मुदौ बसी था। रजपूत बांणीया बसै। धरती हळवा १०० षेत सषरा। जवार

---

१. बीटाबास। २. ६६७)। ३. ५८५)।

बाजरी। ऊनाळू अरट ढोबड़ा २० चांच २० सेंवज चिणा छै। तळाव मास ८ पांणी। नदी सोधपुरा रायरा[1] वाळी दिषण में बहै। काठै री गांव। सींधल बसता। बडो वास छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१११६)	१८२८)	२५१८)	१९७०)	२२६२)

१ षातीवास

जैतारण था कोस १ आथण मांहे। लोक कोई बसी रा रजपूत जाट बसै। पाहू लोक षेती करै छै। धरती हळवा १५ जवार बाजरी षेत काठा। ऊनाळू ढीबड़ा ५ तथा ६ हुवैं। तळाव मास ४ पांणी। लोक बसतौ। निषालसै रौ गांव।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१६६)	४७७)	४८८)	४७०)	३६७)

१ समोषी

जैतारण था को ३॥ ऊगवण थी जीवणौ। लोक कोई नहीं। वसी रा रजपूत कुंभार-बांणीया बसै। धरती हळवा ३०। जवार बाजरी, षेत सषरा। ऊनाळौ अरट ४ ढोबड़ा ६ चांच २, सेंवज चिणा छै। तळाव मास ५ पांणी नदो मौरेई रै कांकड़ बहै। षेड़ौ पहली सूनो थौ नावोजे मैं षड़ोजतो। षालसे रौ गांव।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१८१)	४५७)	८३८)	२७५)	४६२)

१ ऊषळीयौ

जैतारण था कोस ७ दषण मांहे लोक कोई नहीं। बसी रा रजपूत जाट गूजर बसै। धरती हळवा ३० बाजरी मोठ षेत कंवळा। ऊनाळू अरट ४ कोसीटा चांच हुवै। तळाव कोई नहीं। नदी रायपुर वाळी

1. रायपुर।

नजीक गांव सु ' पांणी अषारीयौ[1] पगी[2] रा मगरा था नजीक गांव वसी लायक कांठा रौ ।

संसत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३६२)	४६१)	४२०)	५३२)	४८८)

१३. सेम गांव वसीयां रा रैत कोई नहीं

१ पालयाबास[3]

जैतारण था कोस ८ ईसांण कूण मांहे। लोक कोई नहीं। जिण नुं पटै हुवै तिंण री-बसी रा रजपूत बांभण बसै। धरती हळवा ५० बाजरी मोठ षेत कंवळा। ऊनाळी ढीबड़ा ५ तथा ७ हुवै। रास रै पटा रौ गांव। नदी दिषण मांहे। पांणी बाहळौ उतर मांहे छै, तठै पीवै, षैरवा रै कांकड़।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३०१)	३६५)	५१७)[4]	६२७)	२१६)

१ लोहामाळी

जैतारण था कोस ५ परवांण कूण मांहे। लोक कोई नहीं। बसी रा रजपूत गूजर बांणीया बसै। धरती हळवा ५० बाजरी मोठ, षेत कंवळा। ऊनाळी ढीबड़ा १० तथा १५ हुवै। नाडी १ मैं पांणी, बाहळो १ मांनपुरा रौ गांव नजीक तठै पांणी पीवै। गिररी रै नजीक कांठा रौ गांव।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३४०)	३५१)	११३६)	११००)	८००)

१ टुकड़ो

जैतारण था कोस ५ ऊगवण मांहे। लोक कोई नहीं। बसी रा रजपूत जाट बांणीया वसै। धरती हळवा ४० तथा ५० बाजरी मोठ षेत कंवळा। ऊनाळी ढीबड़ा ९ कोसेटा २ चांच ४ हुवै। तळाव

---

१. पारो। २. पेती। ३. पालायावास। ४. ५७७)।

नहीं। नदी रास वाळी ऊगण मांहे गांव नजीक, तठै पांणी पीवै। कांठा रौ गांव गिररी पटा रौ। बसी रहै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३४१)	३०७)	७८६)	६४१)	६०१)

१ घूलकोट

जैतारण था कोस ५ ऊगवण मांहे। लोक कोई नहीं। बसी रा रजपूत जाट गूजर बसै। धरती हळवा ६० बाजरी मोठ षेत कंवळा। ऊनाळी ग्ररट ढीबड़ा १० तथा १२ हुवै। तळाव को नहीं, ऊनालीयां पीवै, बरंटीयां बिचे, पहली सूनौ हूतौ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१२५)	३१२)	९८०)	८७२)	३१३)

१ चांवडीयो गिररी रौ

जैतारण था कोस ७ ऊगण मांहे। लोक कोई नहीं। बसी रा सीरवी रजपूत गूजर बसै। धरती हळवा ५० षेत कंवळा। ऊनाळी ग्ररट ढीबड़ा १० तथा १५ छै। सेंवज चणा हुवै। तळाव मास ४ पांणी। बाहळो गांव नजीक तठै पीवै। गिररी नजीक कांठा रौ गांव, बसी रहै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३०१)	३०१)	५५१)	६०१)	३४६)

१ चांवडीयो वीठा रौ[1]

जैतारण था कोस ८ रूपारास कूण मांहे। लोक कोई नहीं। बसी रा रजपूत जाट बांणीया गूजर मेर कुंभार बसै। धरती हळवा ५० जवार बाजरी षेत सषरा। ऊनाळी ढीबड़ा ५ तथा ७ सेंवज चिणा छै। तळाव मास ८ पांणी बाहाळो उतर में। गांव नजीक रायपुर रा पटा रौ गांव, कांठा रौ। बड़ी बसी छै।

---

१. बीठा री।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०१)	३०१)	३०१)	३०१)	३५१)

१ बांघाणी[1]

जैतारण था कोस ५ परवांण कूण मांहे। लोक कोई नहीं। बसी रा रजपूत जाट गूजर बसै। धरती हळवा २० षेत सषरा। ऊनाळी नहीं। तळाव मास पाणी बाहळो गांव नजीक, बरांटीया कनारै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
७६)	१०१)	३१)	१०२)	१०२)

१ बीचपुड़ी[2]

जैतारण था कोस ८ रूपारास कूण मांहे। लोक कोई नहीं। बसी रा बांणीया रजपूत गूजर जाट कुंभार बसै। धरती हळवा ४० बाजरी मोठ षेत कंवळा। ऊनाळी ढीबड़ा १५ तथा १६ सेंवज चिणा हुवै। तळाव मास ५ पांणी। बाहळो षीवल रौ तेण पांणी पीवै। कांठा रौ गांव नडी[3] बसी छै। पैला सूनो हुतो।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०)	२००)	५८४)	४०१)	४०१)

१ रहलड़ौ[4]

जैतारण था कोस ८ पूरब मांहे। मेर लागसीयोत बसै। धरती हळवा २० बाजरी मोठ षेत कंवळा। ऊनाळी ढीबड़ा १० कोसेटा ७ चांच ४ हुवै। तळाव मास पांणी नदी चांग वाळी उतर में तठै पांणी पीवै। चांग था नजीक मगरी री जड़ां बसै, गिररी रा पटा रौ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१८०)	३६५)	१०५०)	८०१)	४७१)

---

१. वोघाणी। २. बिचपुड़ी। ३. वडी। ४. यहां से पहले शीर्षक—मेरां रा गांव बसता अमल मांने।

१ देवळी हुला री

जैतारण था कोस ७॥ पूरब मांहे । मेर लागसीयोत बसै । धरती हळवा १५ बाजरी मोठ षेत कंवळा । ऊनाळी ढीबड़ा १० छै। तळाव नहों । नदी चांग वाळी गांव नजीक तठै पीवै । बाबरा सुं सीबडो मगरी री षंभा गिररी रा पटा मांहे ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
६२)	१५१)	२६५)	२५१)	२३५)

१ चीतार

जैतारण था कोस ८ पूरब मांहे मेर मेहरात[1] बसै । धरती हळवा ३० बाजरी मोठ, षेत कंवळा । ऊनाळी चांच ४ सेंवज हुवै । तळाई मास २ पांणी । बाहळो थो बाकरा[2] लालपुर आयो तठै पांणी पीवै । लालपुर नजीक मगरी ऊपर बसै । गिररी रा पटा रौ ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५५)	६१)	६१)	६१)	६१)

१ रातड़ीयो

जैतारण था कोस १० ऊगण था डावौं । मेर भीलात पीपळीयात बसै । धरती हळवा २० षेत कंवळा । ऊनाळी ढीबड़ा १० सेंवज चणा छै । तळाव मास २ पांणी । नदी पंम[3] नुं बहै, तठै पांणी पीवै । चांग नजीक भाषरी षंभ बसै । बाबरा रा पटा रौ गांव ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५४)	२७४)	८५१)	५१२)	३११)

१ नांदण

जैतारण था कोस ७ पूरब मांहे, मेर लागसोयोत बसै । धरतो हळवा १५ बाजरी मोठ षेत कंवळा, ऊनाळी ढीबड़ा १ कोसेटा ५

---

१. हरावत । २. मोवा कर । ३. पछिम ।

चांच १ छै। बाहळो १ चांग वाळो उत्तर में बहै, तठै पीवै। गिररी नजीक मगरा ऊपर बसै। गिररी रा पटा रौ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	७२)	२५१)	२६५)	१६५)	१६१)

१ कांणचो[1]

जैतारण था कोस पूरब मांहे। मेहरात बसै। धरती हळवा १० षेत कंवळा। ऊनाळी कोसेटा ६ हुवै। बाहळो चांग वाळो गांव नजीक, तठै पीवै। रहलड़ा रातड़ीया कनै। षेड़ौ मगरी षांभ, गिररी रा पटा रौ छै।

१ लोहचो

जैतारण था कोस ७ पूरब मांहे। मेर महरात बसै। धरती हळवा २० षेत कंवळा सषरा। ऊनाळी नदी मांहे बाजरी गेहूं करै। हरयापुर वाळी गांव नजीक तठै पीवै। रायपुर था कोस ३, रायपुर रा पटा रौ मगरी उपर बसै छै।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३५)	१००)	२६८)[2]	१०१)	१०१)

१ माकड़वाळी

जैतारण था कोस २ रूपाराम कूण मांहे। मेर मेरहसी[3] नै कलाळ बसै। धरती हळवा ३०। षेत सषरा जवार बाजरो। ढीबड़ा ११ चांच २५ सेंवज चिणा छै। द्रहा १ हींडोळ भाषर री भांष[4] पीवै। वाहळो १ ऊगण मैं बहै। बार नजीक रड़ी ऊपर वसै। सभुभो षेड़ो घाट चढै वारर[5] पटै रौ गांव।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४८५)	८५६)	१०५१)	११५४)	२४६)

१ महलणी[6]

१. काणेदो। २. २५८)। ३. मोहसो। ४. पंम तठै। ५. बरोरा। ६. माळणी।

जैंतारण था कोस ७ पूरब[1] मांहे । मैहरषांना जसा चीता बसै । धरती हळवा २० षेत कंवळा ऊनाळी ढीबड़ा ४ हुवै । सारंगवास नजीक नदी राहपुर वाळी, गांव नजोक तठै पीवै। षेड़ौ भाषरी षंभ, रायपुर रा पटा रौ गांव ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२१)	५१)	२३४)	५१)	५१)

१ मोडरीयो

जैंतारण था कोस ७ परवांण मांहे । मेहरात चीता बसै । धरती हळवा १० षेत कंवळा । ऊनाळी ढीबड़ा २ चांच २ सेंवज हुवै। नदी रायपुर वाळी गांव नजीक तठै पीवै। रायपुर रा पटा रौ षेड़ौ। मगरी ऊपर बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५)	११	२९)	११)	११)

१ कालब

जैतारण था कोस ९ रूपरास मैं । मेर चीतौ षांन कांनौ बसै । धरतो हळवा २० बाजरी मोठ षेत कंवळा, ऊनाळी ढीबड़ा ४ हुवै । नदी रायपुर वाळी गांव नजीक, तिण था पीवे । षेड़ौ मगरा री षांभ बसै । पंचाईणपुरा रैं नजीक ।

१ पंचाईणपुरौ

जैतारण था कोस ९[2] परवांण मांहे । मेर महरात । किसनात चीता बसै। धरती हळवा २० षेत सषरा । ऊनाळी कोसेटा ४ चांच ५ हुवै । नदी रायपुर वाळी गांव नजीक तठै पीवै । षेड़ौ भाषरी षंभ, रायपुर रा पटा रौ गांव ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१४)	२१)	२५)	२५)	२५)

१. परवाण । २. कोस ८ ।

१ काणुजो[1]

जैतारण था कोस १० पूरब में रावत नराइणदास। चीतौ मेर बसै। धरती हळवा ५० षेत सपरा। ऊनाळी ढीबड़ा १० तथा १५ चांच ५ बावड़ी १ बधवा[2] तीण पीवै। नदो रायपुर वाळी नजीक। विषा मांहे राव चद्रसैण अठै रह्यौ छै। हिमें रतना चीता रौ गांव। विषै रहाण सारोषौ[1]।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२१)	२१)	२५)	२१)	२१)

१ कोहड़ो

जैतारण था कोस १० ऊगवण परवांण मांहे। मेर जसौ मानावत बसै। धरती हळवा १२ षेत सषरा, ऊनाळी सेंवज चिणा नै नाडो १ मांहे साल हुवै। मानपुरा नजीक षेड़ौ पाधर मांहे। सीधसर रै कुवै पांणी पीवै। बाहाळौ छै चीत कांठोत।

१ काबरो

जैतारण था कोस १२ दिषण मांहे। मेर नरसा चीता री गांव उदा री नाई वाळा बसै। धरती हळवा २५ मगरा बंध में छै[3]। बावड़ी १ ऊगवण मांहे हाथ ५ पीवै। नाळै मांहे बेरीयां पीवै। बाहळो छै। झीलेळाव नजीक छै। षेड़ौ ऊंचौ तोरवा ५ छै।

१ चांग[4]

जैतारण था कोस १० ऊगवण मांहे। मेर चीत काठोत बसै। वास २ छै। धरती हळवा १०० षेत सषरा। ऊनाळी वंधै। गोहूं हुवै। बावड़ी १ देहीवास बीच। पांणी मीठौ। तळाव मास ४ पांणी। मूळै हुल रौ गाव। भापर कमळ माळ रा ऊपर देवी रौ थांन।

---

१. इस वृतांत के पहले 'ख' प्रति में शीर्षक है—'मेरां रा गाव वसता अमल न मानै।' २. वदषी। ३. मगरा रा बधा मे छै। ४. चाठा (प्र)।

---

१. संकट के समय में रहने योग्य।

१ बोराड़

जैतारण था कोस १० ऊगवण था जीवणौ। बडी ठौड़, मेर चीत गोडात बसै । धरती हळवा २०० अरट कोसीटा चांच करै तितरी छै । सेंवज चिणा चावळ हुवै । बावड़ी ३ बंधवी । पांणी मीठौ। तळाव मांहे गेहूं हुवै । सषरौ कोट छै । मांहे तळाव बावड़ी छै । कोट री भींत गज ४ प्रोळ षांध रा० जसवंत रा कराया छै ।

१ ... ...

मैंरां रा गांव सूना

१४. १ नाई ऊदारी

जैतारण था कोस १० पूरब[1] मैं । मेर गोडात ऊदौ घर २० था परवाण मेर गोडात बाला बसतौ । षेड़ौ भाषर रै ऊपर बाहळा री बेरीयां पांणी पीवता । कोराणा कने बावड़ी १ तळाव ५ षेतीवाळी हल १०० री बधवी, तठै षेता तळाई, काणुजा नजीक ।

१ गुदरड़ौ

जैतारण था कोस १० परवांण में । मेर गोडाता बीढो परवत रौ बसतौ । बौराड़ वाळै भाषर रै आधफरै[1] षेड़ौ छै, बाहळौ तिण बराषणोयतां बोराड़ नजीक ।

१५. ५ रास मांहे मांजरै—

१ षीरहटी

रास था कोस १॥ षरक मांहे । पहला तिला[2] पुंवार री मेड़ी कहीजती । षेड़ौ भाषर री षंभ, बाड़ीयां रै कड़षै । नदी षुकड़ी पीवै । धरती हळवा २ ऊनाळी छै ।

---

१. परवांण । २. तोला ।

---

1. पहाड़ के मध्य भाग में ।

१ नीबाहटी

रास था को ०।।। मंगरा वड़ीयां रै। ढूंढां री छै। बीरांटीया रास बीच मैदान में। नदी सूकड़ी पीवै। धरती हळवा २० ऊनाळी हुवै।

१ जगहथीयौ

रास थो कोस ०।।। रूपारास मांहे। बाबा रै मारग षेड़ा री ठौड़ छै। बाहळो १ लाषुवास जगहथीया बीच नदी सूकड़ी नजीक रास मांहे षड़ीजै। घटटी री घाटी आही, दयाळपुरौ पिण ओहीज।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५२)	५२)	५०)	१५१)	१५१)

१ रैबारीयां री बासणी

रास था कोस १ पाहड़ दुबड़ा मांहे। दयालपुरा नजीक पांणी री ठौड़ कोई नहीं। षेत घणौ को नहीं कांठ मोहर था कांकड़।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५२)	५२)	०)	१०१)	०)

१ लापुवास

रास था पांवडा ४०० दिषण मांहे, षेड़ा री ठौड़। पींपळ १ वड़ १ छै। लापुवास नै रास बीच नदी छै। धरती हळवा ५० रास मांहे षड़ीजै छै। नदी सूकड़ी गांव था नजीक। ऊनाळी ४ हुवै।

५

१६. ३ गिररी पटा रा गिररी मांहे षड़ीजै—

१ रांमावास

जैतारण था कोस ६ परवांण। गिररी था कोस १ षेड़ौ। पाधर ढूंढा छै। पींपळ २ छै। नाडो १ बावड़ी १०० धरती हळवा २० ढीवढ़ा ४ हुवै। वुटीवास री बाहळौ नजीक गिररी में षड़ीजै छै।

१ चीड़ोयाहेटा

कोस १० पूरब। चांग नजीक षेड़ा रा ढुंढा छै। घाटौ छै[1]। षेत घणा को नहीं। गिररी रा पटा रौ।

१ टीकड़ौ

कोस २ ऊपर राव सगतसिंघ बसायौ थौ। नदी चांग वाळी नजीक। सींव नहीं। गिररी रै पटै।

२

१ नाई सूजा री

जैतारण था कौस १० परवांण। मेर गोडात वाळा रा षेड़ो भाषर री जड़ां भीगड़ी कौरांणा कनै बावड़ी १ बंधवी, तठै षेता तळाई ५ षेती बाळी हळवा ६० री धरती।

१ पुनेसर

जैतारण था कोस ११ रुपारास कूण मांहे। मेर मेहराता चीता जसौ मांनावत बसतौ। धरती हळवा ४०। तळाव १, बीघा १०० ऊनाळी। पांणी कंवार री नदी पीता। डलेळाव[1] चिहार नजीक षेड़ौ, तीरवा १ ऊंचौ।

१७. २ कसबै जैतारण मांहे षड़ीजै छै—

१ झुंझणदौ षुरद

जैतारण था कोस ०।। दिषण मांहे। बडा झुंझणदा था ऊगवण कांनी। पहली जाट की लक बसता। षेड़ा री ठौड़ पींपळ १ छै। धरती हळवा २५ नै ऊनाळी थी सु कसबा मांहे षड़ीजै छै।

१ बघीयाहैडौ षुरद

---

१. झलेळाव।

---

1. पहाड़ की घाटी है।

जैतारण था कोस ०। दिषण मांहे। आगेवा रा मारग सुं जीवणी षेडा री ठोड़ छै। तिण कनै सीरवी षरथौ अरट करै छै। धरती हळवा कसबै मांहे षड़ीजै छै।

२

१८. २ नीलाबा मांहे षड़ीजै—

१ वालूवाड़ी

जैतारण था कोस ५ रुपारास मांहे। नीलबा थी कोस ०॥। षेड़ौ मगरा री षांभ ढुंढा छै। तळाई १ ऊगोण मांहे छै। धरती हळवा ५० ढीबड़ा १० तथा १२ सेंवज चिणा हुवै। ऊनाळियां हुवै। नदी जुठा वाळी नजीक।

१ वसीयाबास बडो

जैतारण था कोस ४ परवांण मांहे। षेड़ो पाधर री भींव कीलांण-दासोत रो करायौ कोट छै। नदी गांव नजीक। धरती हळवा ५०० ऊनाळी नहीं, षेत कंवळा, बाहळे पीवै। कसबा में षड़ीजै छै।

१६. २ नीबाज मांहे मांजरै षड़ीजै—

१ वीरम री बासणी

जैतारण था कोस ३ दिषण डावै बाजू। ऊतर मांहे ऊदावतां री वार मांहे गौड़ वीरम बसतौ। पछै जाट बसीया था। रा० जगनाथ कीलांणदासोत रै पटै हुवौ थौ। तळाव मास ४ पांणी। धरतीं हळवा २० अरट १५ हुवै। षेड़ा री ठौड़ पींपळ २ छै।

१ वसीयांवास षुरद

जैतारण था कोस ४ परवांण कूण मांहे। नोबाज था — मेरा भोजषांन वाळौ षेड़ौ पाधर मांहे, तठै रूंष २ छै, द्रह १ छै। तठै पीवै। धरती हळवा १५, नींबाज मांहे षड़ीजै छै।

२

२०. २ आसरळाई मांहे मांजरै षड़ीजै—

१ करमावास

जैतारण था कोस ४ आसरळाई था कोस ०॥ ऊतर मांहे । जाट करमौ बसतौ । षेड़ौ पाधर गांव नाडी आसरळाई दिसी तठै पीवै । धरती हळवा छै । सु आसरलाई रा जाट षड़ै छै ।

१ सुरीयावास

जैतारण था कोस ४॥ आसरलाई थी कोस १ ऊगवण मांहे । चारण सूरौ बसीयौ थौ । षेड़ौ पाधर तठै देवळी १ भाठे री छै[1] । नाडी थी सुं बुरांणी । धरती हळवा — छै ।आसरळाई रा रजपूत षड़ीजै छै ।

२

२१. २ बीचपुड़ी मांहे मेरां षड़ीजै—

१ षिवळ

जैतारण था कोस ८ रुपारास मांहे मांनौ परबत मेररात चीता बसतौ । षेड़ौ भाषरी रै षंभ ढुंढा । तळाब छै तठै पीवता । धरती हळवा ४० ऊनाळी ढोबड़ा २ हुवै । बाहळा दिषण मांहे बहै । पहली बरि रा पटा मांहे मंडै छै । नांवै चापुड़ी रौ षेड़ौ छै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
११)	५१)	३३७)	१५१)	१५१)

१ भीचराड़ी[1]

जैतारण था कोस ५ परवांण मैं । जुण नजीक षेड़ौ पाधर, तठै पींपळ १ छै । तळाव नहीं । धरती हळवा १० । ऊनाळी ढोबड़ा ४ हुवै । राईपुर रा पटा मांहे मंडतौ । हिमैं बीचपुड़ी ता षड़ै छै ।

---

१. भीवराड़ी ।

---

1. एक पत्थर की मूर्ति है ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४०)	२००)	५८४)	४००)	४००)

फुटकर मांजरै षेड़ा—

२२. १ षेतावास

जैतारण था कोस २ पछम मांहे। गळणीया था कोस ०। दिषम मांहे। रा० रतनसी रा वार में गूजर षाती[1] बसता। गळणीया रा षेत दीया था, पछै षेता रै बेटो न हुवौ। तरै डोहळी री धरती भोपा थका नुं दी छै। गांव रा षेत पाछा गळणीया भेळा कीया। षेड़ै री ठौड़ देवीजी रौ थांन छै। नाडी १ मास ४ पांणी। गळणीया रौ मांजरौ।

१ जैतपुर

कोस ८ उगवण नुं। बरांटीया षुरद था कोस २ षेड़ौ। मगरी उपरां रा० करन कीसनसिंघोत बसतौ। बोराड़ै नजीक नदी सुहड़ा आगे तठे पीवता। धरती हळवा ५०। ढीबड़ा २० छै। बरांटीया रौ मांजरौ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१००)	६००)	१००८)	३०१)	२६०)

१ वालु[2] षुरद

कोस ५ नीलबा था, कोस १ नदी डुठाबाजी[3] रै ढाहै बसतौ। धरती बीघा २०० ढीबड़ा ४ तठै पीता। हिमें पाही पड़ै वर रा पटा रौ वरमांकड़ वाळी रा षडै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	७५)	१०१)	१४१)	१०१)	१०१)

---

१. पेतो। २. वली। ३. जुगवाली।

गांव जैतारण सांसण—

२३. ८॥ बांभणा नुं

१ मेरो वावड़ी

जैतारण था कोस ४ ऊगवण मांहे दत्त रा जैतसी ऊदावत री प्रो० राजा चोहोथोत सीवउत नुं। हिमें प्रो० अचळदास नै ठाकुरसी राईसलोत नै कचरो नेतसीयोत नुं छै। तळाव २, मास ३ तथा ४ पांणी नदी कांलीभर[1] षरवा वाळी तठै षरबूजा छै। धरती हळवा १०० बाजरी मोठ जवार छै। षेत कंवळा ऊनाळी अरट ढीबड़ा कोसेटा ४० हुवै। सारी सींव सेझो छै। सेंवज हुवै बड़ी ठोड़। रजपूत बांणीया प्रोहत जाट कुंभार बसै। भाषरोयां बीच षेड़ो छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३१५)	१५००)	१५२०)	१४५०)	१०००)

१ तालूकीयो

जैतारण था कोस १॥ धु मांहे दत्त रा० ऊदा सूजावत री। प्रोहत भोजा कूंपावत सीवड़ नुं भोजो जोधपुर था आयौ तरै दीयौ। हिमें प्रोहत हरीदास नरा रौ, नै सूरौ गोइंदासोत रांम अचळदासोत छै। जाट प्रो० बांणीया बांभण बसै। षेत कंवळा, उनाळी अरट ढीबड़ा २५ तथा ३०, पांणी बावड़ी १ पुरस ७ मीठौ पांणी। नदी लूणी कोस ०॥ ऊतर में बहै। कदीम षेड़ौ तालणपुर कहीजतौ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३००)	१२५०)	१३००)	१२७५)	८००)

१ देहूरीयौ

जैतारण था कोस २॥ धु मांहे। तालकीया था कोस १ धु मांहे। सूनौ षेड़ौ तालूकीया रा षड़े। दत्त रा० रतनसी षींवावत रौ। प्रो० कांधल भोजावत सीवड़ा नुं। हिमें प्रो० हरीदास नरा रौ नै रांमौ

---

१. कलंभर।

अचळदासोत छै। बसै कोई नहीं, धरती हळवा २० जवार छै। षेत काठा, उनाळी अरट ढीबड़ा ७ कोसेटा ४ हुवै। तळाव मास ६ पांणी, नदी लूणी दिषण मांहे। तिण रै द्रह पीवै। वाषळी पींपळीया रौ नजीक। एक बार राजा श्री सूरजसींघजी गांव उरौ ले नै हाडा सूजा नुं वरस १ पटै दीयौ थौ पछै फेर वळे सांसण कर दीयौ।

१ ब्रामू[1]पुरी

जैतारण था कोस ३ ऊगण मांहे। दत्त रा० जैतसी ऊदावत रौ ब्रा० डूंगर पदमावत जात राजगुर नुं भाटी राजै पातावत अरज कर गांव मोरेवी री सरहै द्वारकाजी मांहे दिराई। राजा रौ प्रो० डुंगर गुर हुतौ। पछै षेड़ौ बसीयौ। बांभण नै बसी रा रजपूत बांणीया सुतार बसै। धरती हळवा बीघा १००० बाजरी मोठ छै। षेत कंवळा। ऊनाळी ढीबड़ा १० तथा १२ चांच २ हुवै। तळाव २, मास ५ पांणी नदी कांलरा वाळी आथण मांहे बहै। बाहाळौ १ गांव नजीक ऊनाळीयां पीवै। हिमें ब्रा० वीरौं षेतसी रौ नें धनौं पीतावत नै पीराग इसर रौ छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
६०)	२१०)	२१५)	२२०)	३००)

॥० मोरवी षुरद

जैतारण था कोस ४ ऊगवण मांहे, दत्त रा जैतसी ऊदावत रौ ब्रि० वरसंघ पीथावत जात राजगुर नुं। मोरवी वडी प्रोहत राजा उदीत दोया नुं अै षेत दीया बै भ़डवा मोरेवां मांहे षेत छै। पहली षेड़ौ बसतौ। हिमैं सूनौ छै। हिमैं ब्रि० लिषमीदास वीठळोत नै डूंगर दयाल रौ छै। धरती हळवा ६ सांवणु छै। गिररी वाळी नजीक षेड़ौ मातारी डूंगरी था नजीक बसतौ। तठै वांवळी १ छै। बीजौ कोई नही।

८॥

[1] १. ब्रमपुरी।

४ रायपुर रा पटा रा मांजरै पड़ीजै—

१ दीपावास

जैतारण था कोस ८ रूपारास रायपुर थी कोस १ ईसांन में। नदी लूणी नजीक षेड़ौ। पाधर धरती हळवा २० ढीबड़ा ५। नदी रायपुर वाळी उगोण में तठै षेत।

१ सारंगवास

जैतारण था कोस ८ परवांण रायपुर था कोस २ ईसांन मैं। षेड़ौ मगरा रै ऊपरा ढुंढा छै[1]। धरती हळवा २० ढीबड़ा ५ तथा ७ छै। नदी गांव था नजीक तठै पीवै। बर रा षेड़ा।

१ देवलो

जैतारण था कोस ... बरी नजीक कणुजा गुदरड़ा बीच।

१ धुलपुरीयौ

जैतारण था कोस ... बोराड़ कनै चांग मांहे गयौ। मेरां रौ गांव।

४

२ बाबरा मांहे मांजरै—

१ हीयादी'रा वास

कोस ६ ऊगवण मांहे। बाबरा था कोस ०॥ ऊतर। षेड़ा रौ आरष[2] कोई नहीं। भाटी सांवळदास बसीयौ थौ। नदी नजीक धरती हळवा ५०, कोसेटा २५ छै।

१ ढसुरो

जैतारण था कोस १० पूरब में। बाबरा थी कोस १॥ तळाव १

१. हाहीरावस।

1. खडहर। 2. चिन्ह, खंडहर आदि।

फुलेसो' बावड़ी १ बूरी पड़ी छै । धरती हळवा ६० बाबरा में षड़ीजै । भाषर रौ नांव ढसुरो छै । तिण रै नांवै गांव ।

२

१ हीगवाणीयौ

जैतारण था कोस ५ ऊगवणी थी डावौ । बालाहेडा था कोस ०। पिछम था डावौ । तळाव १ हींगवणीयौ मास ८ पांणी । षेड़ै रौ घणौ आरष को नहीं । रा० हरीदास ठाकुरसीयोत कान्होत रौ बसायौ थौ । पछै यांनु बलाड़ै बसाय नै धरती बलाड़ै भेळी कीवी, पहली बलाड़ै सींव थोड़ी थी । बलाड़ा री मांजरौ ।

१ वालुवास

कोस १ पिछम नुं सोमावास था कोस ०।। पिछम जीवणै । कदीम वेड़ौ हुतौ पाधर ऊंची ठौड़ में, नाडी १ लोटाधरी रै मारग छै । षेड़ा री ठौड लिषमण षड़ै । धरती हळवा ... सोमावास रौ षेड़ो । अरट ६ वोरोल रा लोक षड़ै वे बांहो गांवा बीच मांजरै मंडै छै ।

१ वोकरलाई

प्रोहतां री बास । जैतारण था कोस ४ ऊतर थी डावौ । दत्त राव श्री मालदेजी रौ प्रोहित मूळा कूंपावत सीवाड़ नुं । हिमें प्रोहत रामसिंघ गोपाळदासोत नै नरसिंघदास रांमदासोत छै । प्रोहत नै जाट बसै । धरती हळवा ३० बाजरी मोठ पेत कंवळा । ऊनाळी कौसेटा १० सेंवज चिणा छै। तळाव मास ४ पांणी नदी लूणी दिषण मांहे । पहसी नवौ पेड़ो नीबोल री सींव मैं बसाय दीयौ थौ । पछै प्रो० करमसी मुळावत रै वांसै कुं न हुवौ[1], तरै करमसी री हेंस[2] षालसै कीयौ । सु जागीरदार नुं छै । भली बसती छै ।

---

१. फूटोसो ।

---

1. वंश में कोई नहीं रहा । 2. हिस्सा ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१२५)	४२५)	५३०)	४१५)	६००)

१ कारोलीयो

जैतारण था कोस १ धू मांहे। दत्त रा० जसवंत डूंगसीयोत रौ श्रीमाळी व्यास वांजा गदाधर रा नुं, राव श्री मालदेजी री वार मांहे गांगाजी ऊपर सूरज परब मांहे दीयौ[1]। हिमें व्यास नरौ वछा रौ नै हररांम गवाल रौ छै। जाट नै श्रीमाळी बांभण बसै। धरती हळवा २५ जुवार बाजरी छै। ऊनाळी अरट ढीबड़ा ७ हुवै। तळाब मास ८ पांणी। नदी लूणी कोस १ धु मांहे। रेल वधनौर रै भाषरां वाळी। अरट २, रेल पहली सीरवी बसता[2] सु गांव सोमावास जाय बसीया।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१००)	३१५)	५२५)	३३१)	५००)

१ जैना वासणी[1]

जैतारण था कोस २ दिषण मांहे। दत्त रा० डूंगरसी उदावत रौ श्रीमाळी व्यास जैना रामावत नुं। जैतारण पटै थी तद गांव आगै वासांगा वास षेत दीया था पछै नवौ षेड़ौ बसायौ। हिमें व्यास रामचंद सांवळोत नै हरजी जनावत छै। जाट नै बांभण बसै। धरती हळवा १५। बाजरी मोठ षेत कंवळा। ऊनाळी ढीबड़ा ४ सेंवज चिणा हुवै। तळाव मास ४ पांणी। नदी वधनोर री भाषरां वाळी ऊगोण मांहे बहै। पहली सांगावास थी नजीक वसीयौ थौ हिमैं—।[2]

१ भाषर वासणी

---

१. जनावसणी। २. संमत १६८८ पछै सांगावस था कोस ०॥ आथण मांहे बसै छै। रेख—

१२५)	३२५)	४१५)	३४०)	६००)

---

1. सूर्य ग्रहण में दान दिया। 2. पानी की रेल आने के पहले सीरवी वसते थे।

जैतारण था कोस २।। आथवण मांहे । दत्त रा० उदा सुजावत रो श्रीमाळी व्यास भाषर नरहरोत डुगा वागळणीया रा रजपूत री सरेह दीया था । पछै माहाराजा श्री जसवंतसिंघजी संमत १६६५ अटक ऊतरतां व्यास पीराग मुकंदोत[1] नुं फेर पटै कर दीयौ छै । हिमैं व्यास चत्रभुज भगवान रौ नै वीजेरांम पिराग रौ छै । बांभण नै जाट बसै । धरती हळवा १५ मोठ मूंग छै । षेत काठा ऊनाळी ढीबड़ा ४ सेंवज चिणा हुवै । तळाव १ मास ४ पांणी गळणीया, रेल आवै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
११०)	२२५)	३५०)	३१५)	४५०)

२४. ८।। चारणां नुं—

१ सींधला नडी

जैतारण था कोस ३।। आथवण थी डावौ । दत्त राजा श्री सूरजसिंघजी री बाहारैट लाषा नांदणोत रोहड़ीया नुं संमत १६७२ मांगसर सुद ७ गांव ३ रैं भेळौ छै । हिमैं बारठ नरहरदास लाषावत नुं छै । जाट कुंभार बसै । धरती हळवा २० बाजरी मोठ षेत काठा कंवळा । ऊनाळी अरट ५ ढीबड़ी १ सेंवज चिणा हुवै । तळाव मास ४ पांणी । बाहाळो १ गांव नजीक आथवण मांहे । पहली मांगळीया गोयंददास चांपावत नुं पटै हुवै । पटावा देवली नजीक छै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
०)	०)	०)	०)	४००)

।। षिनावड़ी चारणां रौ वास

जैतारण था कोस २ ऊगण मांहे दत्त रा० सुरतांण जैतसीयोत रौ । बारट साजण मेरावत जात रोहड़ीया नुं दीयौ । रा० सुरतांण नुं जैतारण हती तद षिनावड़ी आधी षालसै थी, आधी जागीरदार नुं पटै हती पछै षालसा री सारी ही सांसण कर दीवी । बार मेरै

१. मुकी ।

भाद्रसा था आयौ थौ। हिमैं बारठ गोरषदास मेघराज रौ नै गरबदास दुदा रौ छै। बांणीया जाट चारण बांभण बसै। धरती हळवा २५। षेत कवळा। जवार बाजरी। ऊनाळी अरट ढीबड़ा ५ तथा ७ हुवै। तळाई १ कोहर १ छै। तिण बेऊ ही बास[1] पांणी पीवै। बसती षेड़ा भेळा बसै छै। जुदो षेड़ो नहीं।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३१०)	०)	४२५)	४३५)	६५०)

१ गेहावास

जैतारण था कोस ५ ऊगवण थी डावै। दत्त राव रतनसी षींवावत रौ षड़ीयौ गेई रतनावत नुं गांव राबड़ीयाक घोड़ाबळ लांबीया आणंदपुर बालाहेड़ वीचार षेत दीया था। पछै नवौ षेड़ौ बसायौ। हिमैं षेड़ौ आसो पीथावत नै बीको देईदांन रै छै। जाट चारण बसै। पाहू पण षड़ै छै। धरती हळवा २० षेत सषरा मटीयाळा। ऊनाळी अरट १०। तळाब मास ४ पांणी पछै बालाहेड़ा पीवै। बाळाहेड़ा कनै बसै छै। षेड़ो सूनो। षिड़ीया गेहा रै बसु कुंन हुवौ। हरषा रतनावतरा बेटां नुं गांव हुवौ छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
११५)	१५०)	२००)	१७५)	४००)

१ गेहावासणी

जैतारण था कोस ४ दषण था जीवणो। दत्त रा० षींवौ ऊदावत रौ, चारण नींबा षेतावत जात कविया नुं। हमें कविया रांमदास मांडण रो नै चावंडादास देईदास रौ छै। बास २ छै। जाट चारण बांणीया सीरवो बांभण बसै। धरती हळवा ३० बाजरी मोठ। षेत कोळा, ऊनाळी अरट १० तांई सेंवज चिणा हुवै। तळाव मास ५ पांणी। पछै उनाळीयां पीवै। आदु षेड़ौ छै। पेली रैबारी बसता सु छांडगा[2]।

---

1. दोनो ही बस्तियें। 2. छोड़ गये।

षेड़ो सूनी दीयौ थौ। पाछै कविया गेहा बसायौ। तठा पाछै गेहवासणी कहीजै छै। देवळी चांवडीया नजीक।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	११०)	३२५)	२७५)	२१५)	६००)

८॥

१ जोधावास

कोस १। आथूण था डावै। दत्त रा० डूंगरसी ऊदावत रौ मेहडु जोधा सारंगोत नुं। गांव हुनावास वडा री सींव रा षेत दीया था तिण में नवौ गांव बसायौ। हिमें मेहडु वाघौ सुरतांण रौ नैं हरीदास लुणावत छै। चारण जाट बसै। सांवणु धरती बीघा ६०० षेत काठा सषरा। ऊनाळी ढीबड़ा ८ सेंवज चिणा छै। तळाव मास ५ तथा ७ पांणी। पहली भुंभणदा वाळी रेल आवती।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	११५)	२५०)	३५०)	२३५)	३००)

१ दागलो

जैतारण था कोस ४ ऊगरण मांहे। दत्त रा० सगतसिंघ ऊदेसींगोत रौ आढा दुरसा मेहावत नुं। गिररी पटा हती तरै दीयौ थौ।[1] हमें आढा रतनसी डूंगरसीयोत नै रांमा सारदुळोत नुं छै। रजपूत बांणीया जाट कुंभार चारण बसै छै। धरती हळवा ३५ षेत सषरा। ऊनाळी अरट ३ ढीबड़ा ७ हुवै। तळाव मास ८ तथा १० पांणी। नदी कालंभर रा चांग मांनपुरा वाळी ए तीनई दागला री सींव में भेळी हुवै छै। मोरवी नजीक कांठा रा गांवां आदु[2] गांव छै।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२१०)	४५०)	४७५)	४२५)	६००)

१ वोहोगुण री वासणी

जैतारण था कोस ५ बायव कूण मांहे। दत्त रा० भानीदास

1. गिररी गांव पटे में था तब यह गांव दिया था।　2. प्राचीन।

षींवावत री षड़या बोहीगुण मालावत नुं। रा० भवांनीदास गांव नींबोली लोटोधरी पटै होती तरै नींबोळा रा षेत दीया था, ते मांहे नवौ षेड़ौ बसीयौ। हमें षिडीयौ षेतसी पहराजोत छै। बीजौ कोई नहीं। जाट नै चारण बसै। धरती हळवा १० षेत सषरा। ऊनाळी अरट १ कोसेटा १ हुवै। तळाव मास ४ पांणी हुवै पछै ऊनाळीयां पांणी पीवै। जोध्रपुर रै कांकड़ रो गांव छे।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
११५)	३३५)	३१०)	२१०)	३००)

१ लाषा वासणी

जैतारण था कोस ३ आथूण मांहे। दत्त रा० रतनसी षींवावत रौ। चारण लाषा दासावत जात काछेला नुं गांव गळणीया रा रैबारीयां री ढांणी रा षेत दीया था। पछै लाषै रै गांव नवौ बसायो। लाषै काळ मांहे गुढे रा मांणसां री घणी टाहर[1] वाळी की थी ताद दीयौ। हमें कछेला गोदा गेलां रौ षेमौ सेषा रौ माधौ तेजां रौ छै। चारण मोतीया जाट बसै। धरती हळवा २०। बाजरी मोठ षेत काठा। ऊनाळी अरट ढीबड़ा ४। सेवज चिणा छै। तळाव मास ८ पांणी। मांहे बेरीयां छै। नदी आगे वावाळी रेल।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१००)	२१०)	३२०)	२३५)	५००)

१ तेजा री वासणी

जैतारण था कोस ५ दषण मांहे। दत्त रा० दलपत उदैसीयोत रौ। चारण तेजा करमसोयोत आसीया नुं संमत १६५३ गांव नींबहड़ रांमपुरा री सींव रा षेत दीया था। तां मांहे नवौ षेड़ो बसायौ छै। हमें आसीया हाथी नै मोटौ तेजावत छै। जाट गूजर चारण बसै। धरती हळवा ३० षेत सषरा। ऊनाळी ढोबड़ा ६ तथा ७ हुवै। तळाव १, मास ४ पांणी। पछै ऊनाळीयां पीवै। रेल आवै छै। रा० दलपत

---

१. ठहर।

जी नुं आगे गांव १० था, पटै था, तद दीयौ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
८५)	१५०)	१२५)	२५०)	५००)

जोगियां नुं—

१ झीलेळाव

जैतारण था कोस १२ दिषण था डावै उली पाहड़ां परै। दत्त मेर रावत देवा मेहरोत रौ जोगी थान रावळ नुं दमां रावळ रा नु रा० रतनसी पींथावत री बार में ही दीया। पहली रा० रतनसी[1] भारपुर रावळ करमां रावळ री छै। जोगी हीज बसे। धरती हळवा १० बाजरी छै। घणी को नहीं। उनाळी बावड़ी ऊपर अरट २ गेहूं षेत रा हुवे। तळाव वरसोंदीयौ पांणी। बावड़ी १ मीठी पुरस ४ छै। बाह्ाळो १ कोस ०॥ ऊपर छै। षेड़ौ मगरी ऊपर बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
७०)	१२५)	१३०)	११५)	२००)

परगने जैतारण रा गांव ७ मेरां रै दाषल छै। तिकै जैतारण री फिरसत मांहे अगे न छै[1] नै हिसार मेरां रा गांव मांडीया तरै मेरां रा ऐ गांव जैतारण दाषल मांडीया[2] छै।

३ मेर बसै छै—

१ मांनपुरौ

जैतारण था कोस १० ऊगण मांहे। मेर मांनौ मालावत[3] चीतौ कांठोत रौ वसायौ। नवा षेड़ौ गांव चांग री सींव में वसायौ। वसती घणी। धरती हळवा ४० छै। ऊनाळी नहीं। कालंभर व्याव २ वोराड़ा री केर वाहळौ गांव नजीक छै। तठै वेरीयां छै। वावड़ी १ वाहाळे

१. रतनसी गांव वीयाज रा खेत दीया। २. मडाया। ३. कालावत।

1. पहले नहीं थे।

मांहे छै। भाषर षुभराड़ीयो कहीजै। भाषर री षांभ बसैं। वांसै मांझेवळो छै। कोटड़ी नजीक छै।

१ लालपुरो

जैतारण था कोस ६ परवांण कूण मांहे। मेर लालौ गांव चांग री सीव मांहे नवौ षेड़ौ बसायौ थौ। मेर करमौ हवा[1] रौ बाहादर रौ पोत्रो चीतौ कांठोत बसैं। धरती हळवा २० षेत। ऊनाळी ढीबड़ा १५ तथा २० हुवै। नदी गांव था नजीक तिण री वेरीयां पांणी मीठौ। चोढो षेड़ौ भाषरी री षंभ पूठ वांसैंधी वाषर[2] छै। भाषरां बीच गांव छै।

१ सींराघणो

जैतारण था कोस १० ऊगण मांहे चांग गजीक मेर चीतौ काठौता माडौ जसा रौ दिदा रौ पोत्रौ बसै। धरती हळवा २० सांवणू। ऊनाळो ढीबड़ा चांच २ छै। घणी कांई नहीं। तळाव मास ४ पांणी। बाहळो १ दिषण मांहे। तठै पाणी पीवै। षेड़ौ भाषर री षंभ ढौसा मगरा रै मांहडै ओ गांव। बधनोर री ही फिरसत मांहे मांडै छै। ऊनाळी पांणी री कमी[1]।

३

४ सूना गांव—

१ कोटेड़ो

जैतारण था कोस ११॥ ऊगवण मांहे। मैंरा गोडात ऊदा री नाई वाळौ नरो बसतौ। षेड़ौ भाषरी ऊपरां बसीयां था कोस ०॥ छै। धरती हळवा ५०, तळाई ४ षेतीवाळी, बावड़ी १ बंधवी तठै पांणी पीवै। हमारू चांगवाळो तोरण बांधीयो छै।

१. हदा। २. धोवा कर।

1. सिंचाई के लिए पानी की कमी है।

१ डायटौ[1]

जैतारण था कोस — षेड़ै री षबर कोई नहीं।

१ पींपळोदो[2]

जैतारण था कोस १० ऊगवण मांहे। मेर जगमाल डूंगा रो। गोडात पहली बसतो। षेड़ौ भाषरी री जड़ां बोराड़ था नजीक। हमें मेर जगमाळ समोबी रहै छै। धरती हळवा ४० री। वाहाळो बोराड़ वाळो तठै कुवौ थौ, तठै पीवता पांणी।

१ भैसापो

जैतारण था कोस १॥ ऊगवण मांहे। मेर तेजो पांचावत गोडात वसतौ। षेड़ौ मगरी ऊपरां। हमें मेर तेजा मांनपुरा बसै। धरती हळवा ५० तळाब १ मांहे गेहूं बीघा २०० हुवै। बावड़ी १ बंधवा छै। कोटड़ा नजीक मांनपुरा रा षड़ै छै।

७

गांव ३ जैतारण रा अजमेर दाखल छै। एकर सुं राजा श्री सुरजसिंघजी अै गांव सुणीया तरै सीसोदीया जसवंता ऊगरावत नुं दीया था। बरस २ अमल हुवौ[1]। पछै संमत १६०२ सुं पछै अजमेर दाषल छै[3]।

१ जैन गढ तळाव छै

१ हमरळाई

१ कुंपावास

३

१. डावड़ी। २. पीपळरोदो। ३. इसके पश्चात मूल प्रति के ४ पत्र अनुपलब्ध हैं। 'ख' प्रति में भी यह वृत्तांत नहीं है।

1. दो वर्ष तक मारवाड़ के अधिकार में रहे।

परगनै जैतारण री सींव इण-इण परगनां लागै—

१ मेड़तौ

। रावड़ीयाक

१ अणंदपुर १ लांबीश्रा

। बलाहड़ो

१ अणंदपुर १ लांबीया

। बांझाकुड़ी अणंदपुर

। गेहावास अणंदपुर लांबीया

। बालपुरे

१ दुदावास १ लांबीया १ कठमोर १ अमरपुर

। बकरालादी काणेचो

। लातरयौ काणेचौ बड़हड़ो

। नींबलौ काणेचौ षड़हाड़ो

। वासां

१ देहूरीयौ, १ कठमोर २ बनसो

। पलोयावास देहरीयौ रजपूतां रौ

। जगहथीयो कठमोर

। सूबै अजमेर

। बाबरी

१ समेल १ करनो १ सषरवर

। चीतार

१ बावड़ी सुमेल री १ षाप सुमैल री

। रातड़ीयो

१ बावड़ी सुमैल री

---

१ परगनै जोधपुर—

। बहेड

१ काला ऊना १ ऊदळीयावास १ कुंपड़ावास

१ झांक १ षारीयो

। नींबलो

१ सिणलो १ झांक

। वीकरळाई कान्हावास

। मालपुरीयौ बळूंदो कांनावास

। प्रथीपुरो बारीयो बीझवाड़ीयो

। बलाहड़ो घोड़ारट

। बहोगुण री बासणी

१ सिणलो १ झांक १ मुरकाबासणी

। झंझणवास वींझवाड़ीयो

। पाटवो वींझवाड़ीयो

। लोटोधरी झांक

। वांझाकुड़ी बळूंदो घोड़ारट

। मुरड़ाहो घोड़ारट

। देहूरीयौ प्रोहतां री घोड़ारट

। मेहावास घोड़ारट

। पींपळीयो कापड़ीयो री घोड़ारट

---

१ परगनै सोझत—

। देवळी

१ चंडावळ १ छीतरीयो १ वरणो १ अटेवड़ो

। रांमपुरो रंडवाल

। वासीओ

१ चंडावळ १ डोयनंडो

। बीचपुड़ी रायरो

। ऊदेसी कुवो

१ करमावास १ चंडावळ १ मुरडाहो

। ऊषळीयो

१ करमावास १ रायरो १ सीधपुरो

। पंचाईणपुरो कालब

१ प्रगनौ बधनौर

। बरांटीयौ खुरद सोढ़पुरौ

। नाई ऊदां री

१ कालींभर १ बीहार

। नाई सुजा री

१ बीहार

। भैंसावौ कालंभर

। पुनैसर

१ बीहार १ हरढाणौ

। भीलळा वाहरौ ढांणी

। चंत थावर

। कोटड़ौ कालंभर

। काबरौ

१ भींगोड़ी १ हरढाणौ

परिशिष्ट १ (क)

कमठां री विगत

(जोधपुर के प्रत्येक शासक द्वारा करवाये गये भवन-निर्माण-कार्य आदि का विवरण)

१. श्री जोधपुर रो किलो सं० १५१५ रा जेठ सुद ११ सनीवार राव जोधाजी नीम दीवी। श्री करनीजी पधार नै सो विगत-पहला तो चौबुरजो[1] जीवरखो कोट करायो, चिड़ीया-टूक[2] ऊपर। नै बुरजां ४ कराई सो राव जोधोजी बतीसो[3] १ भांभी रो राजीपो ले नै हमार खजानै रै सांमी जूनी बुरज है, तिण में बळिदांन दे घाली है। नै बुरजां ४ ही साबत राखी है। तिको चौबुरजो कोट पाछौ राव मालदेजी संवारायो नै हमार महाराज श्री मांनसिंगजी जीवरखा रो कोट पाछौ नयो करायो। नै बुरजां ४ आगली जोधाजी री कराई साबत राखी नै श्री जीवरखा रौ कोट जिनाना दोळौ है। पण किला री नांम मोर रै आकृत है[4] तिण सुं मोरधुज है नै जनमपत्री रो नांम चिंतामण है।

लोड़ापोळ[5] कराई। राव जोधाजी नै लोड़ापोळ सुं लगाय नै चाँवडाजी री बुरज तांई नै पाछौ चांवडाजी रै बुरज सुं लगाय लोड़ापोळ तांई कोट नै बुरजां कराई। नै लोड़ापोळ आगे फिळसा रो झेलो करायो, तिको कोट पाछो करायो। राव मालदेजी संवरायो नै लोड़ापोळ बीय तरफ डावी जीमणी कोठार नै साळा कराई तिके हमार कोठार तेखाना रै नीचे छै। नै मांय जिनाना घर कराया। जीवरखा में राव जोधाजी करायो नै बारै हमार मोती-मैल है जिए रै हेठै सबा साळ नै मैल कराया नै खजांना हमार है जिण जायगा घोड़ां री पायगां कराई।

तिण जायगा हमार माराजकुवार हुवा तरां पायगा ने मुह ऊठे आंवळ गडीजे।

चाँवड बुरज ऊपर माताजी चांवडा जी री मंडप करायो। नै थापना करी

---

१. चार बुर्ज वाला। २. पहाड़ी का वह हिस्सा जहां चिड़ियानाथजी उस समय तपस्या कर रहे थे। ३. पूर्ण अंगों वाला पुरुष (पुरुष-बलि की प्राचीन प्रथा)। ४. मयूर की आकृति का। ५. लोहाप्रोल।

तिण मंडप आगै राव मालदेजी नवो मंडप फेर करायो। ओ मींदर नै मंडप सं० १६१४ रा भादवा वद ५ सोर उडीयो तरां मडप सिखर गयो[1]। तरां माराज श्री तखतसींघजी पाछो नवो मिंदर करायो दै जोवरखो में टांको १ खांन खुदाई तठै करायो, राव जोघाजी। नै मंडोर रा मारग में तळाव बालसमदर पेली तरफ राव जोधाजी करायो नै नांगणेचीयांजी[2] रो मंडप जीवरखा सुं उतरादो[3] नै मरदानां सुं दीखणादो[4] करायो जोधाजी। तिको मिंदर पाछो माराज सूरसींघजी करायो। राव जोधाजी जोधपुर रा गढ़ ऊपर कमठो[5] लाख ९ नव री करायो।

२. राव सातलजी—बरस तीन राज कियो। तिणां किला में ५० पचास हजार रो कमठो करायो। कंवरपदा[6] रा मैळ कराया। हमार कपड़ां रो कोठार तथा वागां रो कोठार है जिण नीचे पै पोकरख कनै सातलमेर सैर बसायो। नै सातलमेर रै कोट करायो। तिळाव करायो तिको हमार सुनड है, पोकरण सु तीन कोस ऊपर तिको राव मालदेजी पड़ाय पोकरण कोट करायो।

नोवै जोधावत रा नै सोजत दोनी जोधाजी। ऊं सोजत री भाखरी ऊपरलो कोट नीबैंजी करायो।

३. राव सुजाजी—हमार हवामैल है तिण हेट मैल करायो[7]। नै लोड़ापोळ कनै साळ कराई। नै जिनांना घर कराया नै मैलां री पोळ कराई। सुजापोळ तिण जायगा राजा सूरजसिंघजी सूरजपोळ कराई। तिका सं० १८०० में महाराज बखतसिंघजी उखेलाय नै[8] पाछी नयी सुरजपोळ कराई।

४. कंवर वागाजी—कंवरपदा में हमार नगारखांने है जठै मैल करायो।

५. राव गांगोजी—जोधपुर रा गढ़ में हमार दोलतखांनो है जिण नीचे मैल करायो। नै दौलतखांना रा चौक में भैंरूजी विराजै तिको तैखानो करायो।

फतै-मैल रै हेठै हमार तुमन तोख मुरातब पड़ीयो तिको मैल करायो। तळाव गांगेळाव करायो नै बावड़ी १ हमार चैनपुरीजी रै अखाड़ा में है तिका कराई।

३. राव मालदेजी—कमठो करायो तींरी विगत—जोधपुर गढ़ ऊपर राव जोधाजी रै करायोड़ो कोट संवरायो।

---

१. शिखर उड़ गया। २. राठौड़ों की कुलदेवी। ३. उत्तर की ओर। ४. दक्षिण की ओर। ५. निर्माण कार्य। ६. कुवर थे तब। ७. महल। ८. उखड़वा कर के।

झरणा दोळो[1] कोट नवो करायो।

चोकेळाव तळाव रै दोळो कोट करायो। तिको कोट सं० १८३४ में तरफ दिखणाद घणा में उणा उ कोट पड़ गयो तिण सुं माराज मांनसिंघजी चोकेळाव दोळो नवो कोट करायो, हमार है तिको।

रांणीसर दोळो कोट माराज मालदेजी करायो सं० १५९८ में। नै ईमरती-पोळ नै लोहापोळ बिचलो कोट करायो। ईमरतीपोळ कराई सुं पोळ अदूरी कराई। लीखणा पोळ कराई नै ईमरतीपोळ कराई नै ईमरत-बाव खांन री कराई।

पताळीयो बेरौ[2] करायौ। हमार नवा पैठा में है तिको नै पांणी भळभळो[3] है। पुरस ५२ है। पांणी पुरस २० रहै। यण रो नाम नयसरौ नै मेळीयाव पिण कहै। नै अठीनै किलो गोपाळ पोळ तांई संवरायो। ऊड़ गोपाळदास किलादार थो तिण गोपाळपोळ कराई तिका हमार १४ में सोर सुं उड गई। सु माराज तखत-सिंघजी पाछी कराई[4]।

गढ ऊपर मैल पड़ गया सु ने साळ दरीखांना वगेरे नवा कराया, राव मालदेजी।

नै मालासर तळाव हमार हडुमांनजी री भाखरी है जिण कनै जूना मेड़तीया दरवाजा रै बीच करायो। तिको हमार बुरीज गयो[5] नै सैर बसीयो।

जोधपुर सैर दोळौ कोट आगै पचेटीया भाखर रा नाका[6] ऊं लगाय नै खेजाली पोळ तांई तो राव जोधाजी सैर वसायो तरै कोट करायो थो, नै पछै राव मालदेजी सैर कनै नवो बंदायो तरां पोळ १ तो फुलेळाव ऊपर है तिका नै जूनी चांदपोळ थी तिका सुं लगाय ने पोळ १ आरुजो पटकने पोळ १ जूना मेड़तीया दरवाजा रा हमार नीबाज री हवेली है जठे नै पोळ १ जूनी नागोरी दरवाजो साऊ साजी रा तकीया कनै। सैर दोळो कोट पको करायो राव मालदेजी।

वीरमपुरी[7] मरीम पोळ मालदेजी रा बगत में हुई। पोकरण री जीवरखा रौ कोट सातलमेर रो कोट पड़ाय ने राव मालदेजी करायो समत् १६०९।

मेड़ते मालकोट कुंडल ऊपर सैर बारै वीरमेदजी रा घर पड़ाया नै संमत १६१३ करायो रु० अेक लाख असी हजार लागा।

---

१. चारों तरफ। २. कुआ। ३. कुछ खारापन लिये हुए। ४. वापिस बनवाई।
५. धूल से पट गयी। ६. किनारा, नुक्कड़। ७. ब्रह्मपुरी।

सोजत पैल री भीत हो सो पाड़ी[1] नै दूसरौ कोट करायौ।

सीवलां री रायपुर री जायगा गोडवाड़ री लेने भाखर ऊपर मालगढ़ करायौ नै गांम मालगढ़ बसायौ।

सिवांणा री पागती गांव पींपळूद रा भाखर ऊपर १६०१ मैं विखा मैं कोठार ने जायगा कराई[2]। गांम गुदवच री कोटड़ी कराई।

गांव भादरा जण दोळो कोट करायौ बाड़ू[3] भाटां रौ। पड़गने मेड़ता रै गांव रीयां कोटड़ी कराई।

सवांणा रा गांव दोळो कोट करायौ बाड़ू भाटां रौ। नै गढ संवरायौ।

गांव पीपाड़ री कोटड़ कराई। राठौड़ मेहेस घड़सिघोत रै पटे हीं तिण सुं।

पड़गने गोढवाड़ रै गांव नाडोळ गांव दोळो कोट करायौ।

सिवांणा रै पागती[4] गांव कुंडल कोट करायौ। पड़गने फळोधी कोट संवरायौ नै पोळ कराई। गांव धुनाड़े कोटड़ी कराई।

अजमेर वींटली ऊपर कोट वुरजां कराई नै गढ़ ऊपर पांणी चाढण नुं अरठ[5] मंडायौ।

जाळोर रौ गढ़ संवरायो। गांव चाटसु कोट करायौ।

नाडोर गढ़ सवरायौ, कोट पाछो दुरसत करायौ[6] तळाव १ चांवड-भुरज कनै करायो। तिण में मास ४ पांणी रेवै।

संमत १६६१ में पातसा सलेमसा जोधपुर गढ ऊपर मसीत कराई। तुरकांणी हुई तरै, नै सलेम-कोट करायो। कमठो पाड़ नै गोळ दिस पाज वांधी। तिका घाटी महाराज श्री विजैसिगजी पाछी दुरस कराय वंदाई, मांहलै वाग पधारण मुदे[7]।

७. राव चद्रसेणजी; कमठा कराया तिणां री विगत—प्रा० सिवांणा गढ में नवचोकीयां ने पोळ १।

८. महाराज श्री सूरसिंघजी; कमठा करायां री विगत—खास जोधपुर गढ में सूरजपोळ नवी कराई। चित्र सेवा री हुमार है जठै जनांनी दोढी कराई, ने पछै उवा दोढी माराज वखतसिंघजी मोकुब कर वाड़ी रा महलां कनै कराई।

---

१. गिराई। २. शेरशाह से हार जाने पर मालदे ने यहां शरण ली थी। ३. कच्चा पत्थर। ४. पास के। ५. रहट। ६. ठीक कराया। ७. महिला बाग की ओर जाने के लिये।

अगू मरदांनी दोढी तरफ दिखणाद कांनी कराई थी तिका ही बखतसिंघजी पाछी जी कराई ।

सिणगार चोकी[1] आगे सूरसिंघजी कराई तिका सादे भाटे री थी, तिका महाराज बखतसिंघजी मकरांणा री नवो कराई।

हमार दफतर है जठै सभा-मंडप रो महल करायो, गढ में ।

वाड़ी रा महल कराया जठै हमार जनांनी दोढी है। जठी मांये है ने वाड़ी कराई थी जिण सूं वाड़ी रा महल वाजता था । टांको १ अमदावाद सूं कारीगर बुलाय ईंटां रो पको करायो, सो हनोज[2] मोजूद है। संवत १६६४ तैयार हुवो।

ओर मिंदर ४ करायां री विगत, वाड़ी रै मैलां में—

मिंदर १ ठाकुरजी रो ।

मिंदर १ नागणेचीयां रो ।

हरकांबाई वगेरे सतीयां हुई तिण रो ।

राव मालदेजी रो मैल उखेलाय[3] ने ऊपर माराज सूरसिंघजी मोतीमैल करायो थो। तींने मा० तखतसींघजी उखेल नवो करायो ।

तळाव सूरसागर १६६४ रा वैसाख शुद्ध २ प्रतिष्टा हुई । तळाव रो पठो[4] नै वाग मांयला महैल हमार साहब रेवै तिके निवाण औ माराज सूरसिंघजी कराय नें आथूंणी वाग में १६७० री साल नै तळाव वीराजिया । जद रो कीर-थंभ[5] मैल १ वो होज, ने उरां रो चोतरो है। ओर वाग बारलो बेरो माराज गजसिंघजी रै करायोड़ो है। ओर तळाव रै पठै ऊपरला मैल माराजा जसवंतसिंघ जी १७०३ में कराया ।

सूरज-वेरो सूर-सागर जदे खुदायो नै वाग लगायो । तिको वेरो पैला तो तखतसिंघजी री वखत मे बडा रांणावतजी तालके थो सो हमार किसोरसिंघजी तालके है।

सूरजकुंड चांदपोळ बारे १६७२ रा जेठ वद २ ने ऊपर हमांम करायो ओर बंगलो १ सूरजकुंड माथे नागे करायो १७२६ में, जिण रा दांम सिरकारी लागा, जसवंतसींघ जी री वार में[6] ।

---

१. मारवाड़ के राजाओं का राजतिलक इस चौकी पर होता है। २. अभी तक। ३. उखड़वा कर। ४. मुख्य पाज। ५. कीर्ति-स्तंभ। ६. जसवंतसिंहजी के समय में।

तळेटी[1] रा महल सं० १६७२ कमठो करायो सो अदुरो[2] रह गयो। तरै माहाराज गजसिंघजी १६८८ इमांम: पोळ वगेरे संपूरण कराई।

सूरसागर कनै वाग ८४ सिरदारां, खावास पासवांन मुतसदीयां सारां आप आपरा न्यारा कराया नै जमी राज सुं दिरीजी नै रजवाड़ा री कुवो महेल ८४ वागां में है। औ कमठो भाटी गोयनदास[3] करायो।

गढ मे इण मुजब फेर:—

लोवा-पोळ आगे रावजी जोधाजी री करायोड़ी थी तिण के लाव मोटी कराई। ने लोवा-पोळ में साळां ने मलीनाथ जो रै मिंदर री थापना रावजी जोधेजी रै करायोड़ी थी तीं उखेलाय नवो ओरो करायो नै दौलतखांनो हमार है जठै टांको १ करायो।

जनांना मैल मांहे कराया १६६८ रा, तरो प्रबंद पातसाई तौर[4] बांदीयो ने ८ सिरायत मुकरर कीया। जनांना में सिरदार, मुतसदी, खास पासवांनां वगेरां री लुगायां जावती ही तिणां नै बंद कीवी। ने टाबर छोरो बरस ५ रौ हुवां पछै नहीं जावण देण री बंदोबसत कीयो। खोजा नाजर नोकर राखीया।

ओर गढ में हवामैल हमार बाजै तिको करायो। ओर कपड़ां रो कोठार करायो।

वागां रो कोठार।

ढोलीया रो कोठार।

वगेरे प्रबंद बांधीया।

जूंनी घोड़ां री पायगा में खजांनो जर-जर खांनो मुकरर कीया ने हेटै घोड़ां री पायगा थी।

९. माराज श्री गजसिंघजी, रै राज में कमठा इण मुजब।

गढ़ में इण मुजब—

श्री आनन्दघनजी रो मिंदर कंवरपदा[5] रा मैलां ऊपर करायो।

मंडोर में माहाराजा सूरसिंघ रो देवळ[6] १६६९ हुवो।

---

१. किले के नीचे के महल, जहां अभी विद्यालय है। २. अपूर्ण। ३. महाराजा सूरसिंहजी का मन्त्री था। ४. बादशाही प्रणाली के अनुसार। ५. कुंवर पदवी थी तब। ६. स्मारक।

१०. माराज श्री जसवंतसिंघजी—रै राज में कमठा इण मुजब*; गढ में—

आगरणी रौ म्हेल हमार दौलतखाना रौ चौक है तीमें थौ सो करायौ १७०३। तिको मैल मे महाराज श्री अजीतसिंघजी नै कुंवर बखतसिंघजी… कीयो जिण सबब सुं १८०६ बखतसिंघजी पड़ाय नांखीयौ[1]।

मंडोर में देवळ महाराज गजसिंघ ऊपर करायौ।

संमत १७०६ रा माह में सूरसागर रा बाग में इमारतां रौ कमठो सुरू हुवौ सो संमत १७३० में समपुरण हुवौ।

संमत १७१७ में पचेटीये भाखर ऊपर माताजी रौ मिंदर सिकदार सोभावत भगवांनदास करायौ। दांम सिरकारी लागो।[2]

व्यास री बावड़ी सालावस रा मारग में जोधपुर था कोस २ पोहोकरणा बिरांमण आसनाये री मां कराई सं १७११ में।

बावड़ी १ खटुकड़ी कने मोणोत नैणसी बंदाई। हमार मुणोयतां रौ बाग है, सं० १७११।

बावड़ी १ पचोळी मोवणदास कराई चांदपोळ बारे[3] संमत १७११ में।

महाराज श्री जसवंतसिंघजी देवळ करायौ नागादड़ी ऊपर १७७६ में।

यतरी[4] मूरतां रूपा री कराई :—

ठाकुरजी श्री मुरलीमनोहरजी चत्रभुज सरूप ऊभा, सो श्री आणंदघणजी मिंदर में गढ़ ऊपर।

श्री माताजी हींगळाजजी रौ सरूप ऊभो करायौ[5] श्री महादेवजी पारवतीजी भेळा विराजीया।

संमत १७१७ में वाड़ी १ सांमी सुमेर वन कराई मीये रै बाग कनै।

११. माराज श्री अजीतसिंघजी—रै बखत में कमठा; गढ में—

गोपाळ-पोळ सुं लगाय फतै पोळ सुदो[6] कोट, ने फतैपोळ खास माराज जाळोर सूं पधारिया तदे १७७४ कमठो करायौ, चहोतरै।

---

१. गिरवा दिया। २. कीमत सरकार से लगी। ३. बाहर की तरफ। ४. इतनी। ५. खड़ी मूर्ती बनवाई। ६. तक।

* जसवंतसिंह(प्रथम)और उनके पश्चात के शासकों द्वारा करवाये गये नवीन निर्माण-कार्य तथा पहले के निर्मित भवनों में परिवर्तन का विवरण यहां से प्रारंभ किया गया है।

दौलतखांना रौ म्हेल नवौ करायौ। नांव इण रौ पैला अजीतविलास दीयौ[1] थौ, पछै दौलतखांनो केणौ सुरू हुवौ १७७५।

भोजन-साळ वाड़ी रै आगरणौ रा मैलां रै लारै कराई।

फतै म्हेल करायौ।

दौलतखांना ऊपर विचलो म्हेल वाजे तिको करायौ ओर आथूंण उगूणा खांवका रा मेहल कराया। आगला उखेलीया।

तिके महाराजा तखतसिंघजी उखेलाय नवा उगूणा आथूंणा कराया।

जांनाना में रंग-साळ कराई।

ओर २४ जनांना में रैवास[2] जुदा-जुदा कराया।

जोधपुर मंडी में पंच-देवरो गंगस्यांमजी रा मिंदर सांमो करायौ।

मूलनायकजी रौ देवरो तुरकांणी[3] पाड़ नांखीयौ[4] थौ सो पाछौ नवौ करायौ, गूंदे रै महोले वड़ हेटै।

संमत १७६८ किले ऊपर माताजी श्री चांवंडाजी रौ मिंदर देवळ ईजारे

करायौ।

ठाकुरजी गंगसांमजी रौ मिंदर पाछौ दुरस्त करायौ।

मंडोर में कमठो इण मुजब करायौ :—

इकथमीयो मेल वाग में करायौ १७७६ रा में, ने २३ कोटड़ीयां जनांना रैवास री वाग में वड़तां डावे बाजु।

मुढा आगे साळ नई कराई।

ओर हवद करायौ ने ऊपर दिवांणखांनौ करायो। वाग रै सिरेपोळ कराई।

ओर देवतावां रो साळां कराय मांय देवतां री मूरतां मोटी-मोटी कोराई १७७६ में।

ओर भैरुंजी री बावड़ी तो आदु है[5] नै मरमत माराज कराई ने ऊपर भैंरुजी रौ थांन छोटौ थौ तिको मोटो करायौ। काळा गोरा भैरुंजी है नै विचे गजानंद है सो वडी मूरती कोराय थापनी कीवी १७७६ में।

महाराज श्री जसवंतसिंघजी रौ देवळ करायौ नागादड़ी ऊपर, १७७६ में।

---

१. पहले नाम 'अजीतविलास' रखा। २. रहने के स्थान। ३. मुगल सत्ता के समय में। ४. गिरा दिया। ५. प्राचीन है।

ठाकुरजी श्री मुरलीमनोहरजी चत्रभुज सरूप ऊभा, सो श्री आणंदघणजी रा मिंदर में गढ़ ऊपर।

बावड़ी १ खटुकड़ी कने घाय री बावड़ी कराई।

झालरो १ जाडेची चांदपोळ बारे रांणी जाडेचीजी महाराजा श्री अजीतसिंघजी री रांणी करायो संमत..........।

झालरो १ त्रिवाड़ी सुखदेव सिरीमाळी संमत १७७६ में करायौ, जाड़ेची झालरे रै पाखती है तिको।

बावड़ी १ भंडारी रुगनाथ कराय बंदाई, रामेश्वरजी मादेवजी रा मिंदर लारै। नै रामेश्वरजी रै भेंट कीवी। बाग करायो।

पुसकरणो बिरांमण रिणछोड़दास वेरो १ रांमेश्वरजी रा मिंदर कनै करायौ संमत १७ में, तिको प्रोतजो रौ कुवौ वाजै है।

वावडी १ नाजर दौलतरांम माहाराज अजीतसिंघजी री वार में दाऊजी रा मिंदर री पूठ[1] में कराई संमत १७।

१२. माराज श्री अभैसिहजी री बखत में कमठा; इण भांत—

जोधपुर खास रै दोळौ[2] कोट कागे री भाखरी सुं लगाय ने मेड़तीया दरवाजा रै कनै सुतरखांना तांई कोट पको करायौ। और बाकी अदुरो[3] हो सो संमत १८०८ माराज वखतसिंघजी ताकीद सूं मास दुय में संपूरण करायौ।

अभैसागर तळाब हमार जाळीयौ बेरौ है जिण रै परै पको पठो बांद नै करायौ तिको हमार बुरीजीयोड़ो है। रुपीया ३०००००) लाख तीन लागा। नवलको झालरो उदैमीदर मे है सो माहाराज करायौ।

तळाव देवकुंड गोळ ऊपर पको वंदाये, करायौ। तीं ऊपर चोतरो माताजी श्री हिंगळाजजी रै वासते करायौ सो संपुरण हुवौ नही। जिको हमार देवकुंड वाजै है।

तळाव, भवांनी-सागर देवकुंड नै गढ़ रै विच पको पठो बंदायो।

और गढ में चोकेळाव में वेरौ भाखर में सुरंगां सुं खोदाय करायौ नै ऊपर अरठ मंडायौ ने दोय कोठार वाग में सेमांन रा कराया, रुपीया हजार ५००००) पचास लागा।

---

१. खड़ी मूर्ती बनवाई। २. पीछे की ओर। ३. इर्दगिर्द। ४. अधूरा।

किले में फतै-महल ऊपर फूल-महल करायो। तिको महल माराज तखतसिंघजी उखेलाय करायो नै खुदाव री कांम[1] करायौ।

सभामंडप ऊपर कछवाईजी रौ मैल करायो।

लोवा-पोळ हेटै गोळ री घाटी कांनी भुरजां ३ कराई। तिके अदूरी रही। तिको कमठो माराज तखतसिंघजी सरु करायौ सो पार पड़ीयो नही[2]।

जोधपुर गढ री मरमत सारी पकी कराई।

गांव चोखां मे बाग नै बाग री कोट नै बेरा नै मांयली जायगा सारी महाराज रै करायोड़ी है।

मंडोर में इण मुजव:—

हमार कोटड़ी कनै नगारखानो रेवै तिका मोटोड़ी पोळ कराई।

और बाग री सिरैपोळ अफ उतराद वडो दरीखांनो ने मांय साळा कराई, गऊ-मुख कनै है।

महाराजा श्री अजीतसिंघजी री देवळ करायो सं १७८६ में, सो अदूरो रह्यो है।

देवतां री साळां में सीतारामजी वगेरे देवता कोराया, पाड़ में ऊपर चितराया।

अजमेर तथा पोकरजी मे तळाव सुं अफ दोखणाद में तिपोळीयो नै घाट पुसकरजी रो नै रैवास[3] री साळां वगेरे कराई। तिका जायगा हमार भरतपुर वाळां कुंज कराई तिण नीचे दवी है।

अजमेर में अनासागर ऊपर बाग में मैल रैवास रा कराया, ऊठे वीराजता जद[4]।

वावड़ी १ रावतां री महाराज श्री अभैसिंघजी री वार मे कराई। नै माताजी रो मिंदर ऊपर करायो। श्रो रावत महाराज अभैसिंघजी रो धाय भाई थो सो संमत १७८७ आसोज सुद १० अमदावाद री राड़[5] में कांम आयो। अमदावाद में तिण ऊपर छत्रो मावड़ीया री घाटी नुं जोवणा हाथ कानी, छत्र पडीयोड़ी, संमत १७६८ में हुई।

---

१. खुदाई का कार्य। २. पूर्ण नहीं हुआ। ३. रहने के लिये। ४. रहते थे तब। ५. युद्ध।

१३. महाराज श्री बगतसिंगजी—जोधपुर गढ़ ऊपर कमठो इण तरै करायौ:—

मरदानी दोढी कनै सांमी जनांनी दोढी री पोळ थी, हमार चक्रसेवारी डोढी वाजै, तिकी रै कनै वाड़ी रा महलां कनै जनांनी डोढ़ी नवी कराई।

आगरणी रौ मैल मारा‍ज श्री जसवंतसिगजी रौ करायोड़ौ थौ दौलतखांना रा चौक में तिण में महाराज अजीतसिंगजी नै चूक हुवौ थौ तिण सूं पाड़ ने दौलतखांना आगै चौक कीयौ।

श्री आणंदघणजी रौ देवरौ महाराज श्री गजसींगजी रौ करायोड़ौ थौ सु उखेलाय नवौ करायौ।

सैर दोळौ सेरपनौ[1] मेड़तीया दरवाजा सुं लगाय नै कागा री अखिरी सुदौ मास ६ में करायौ ने नागोरी दरवाजा[2] सुं लगाय नै मेड़तिया दरवाजा सुदौ अभैसींगजी रौ करायौ थौ, कोट।

व्यास ऊदैचंद री हवेली मूलनायकजी रा देवरा आगै बांमणां रा घर था सु पाड़ नै गूंदी रा मोहला रौ चौक करायौ नै उणां नै जायगावां दूजी दीवो। भंडारी रुगनाथ रै दीवांणखांना हेठली हांटां चार ४ पाड़ी।

मूता गोकळदास रा घर रा मूडा आगे कोटवाळी चोतरौ करायौ। सु आगै जायगा कोतै थी तिण सुं महाराज श्री तखतसिघजी पवार सेरकरण री कोटवाळी में कचेड़ी भारी नै कचेड़ी ऊपर मैल ने केदीयां रै रैण सारू भाखसी[3] री जागा सारी नवी कराई। कोटवाळी चोतरा में कुवो १।

कोटवाळ गेलोत जीवणदास महाराज मांनसिघजी री वखत में करायौ, कुवो १ कोटावळी चोंतरा आगे। महाराज श्री तखतसिघजी री वार में कोटवाळ पंवार सेरकरण करायौ है।

जाळोरी दरवाजा बारै तळाव बगतसागर महाराज बगतसिंगजी संमत १८०९ में खोदावणो सरू कीयौ थौ सो अधूरो रयौ। तिको तळाव महाराज श्री जसवंतसिगजी री वार में खांजी फाजुलाखांजी रा कांम में सरू हुवौ थौ सो सारो खुदीयौ नही। देवकुंड रे हेटै झरणा रौ पांणी जावतौ हो तिण रौ बंदो[4] बंदायौ। तिण नै ही बगतसागर कहै छै। हमार खुराब वीयौड़ो पड़ीयौ छै[5]

---

१. शहरपना। २. दरवाजे तक। ३. कैदखाना। ४. बंधा बंधवा दिया। ५. अभी खराब हालत में पड़ा है।

तळेटी रा मैलां मांय सूं जागा न्यारी कराय नै अन्न रो कोठार नै खेमा री कारखांनो करायौ।

और तबेलो घोड़ां रौ आगे तो महाराज जसवंतसिंघजी री वार में सूं १७३५ तुरकांणी समै तबेलो बिखर गयौ नै तठै हमार कुचांमण री हवेली है नै मांय पंच मींदर है और हमार महाराज अजीतसिंघजी री वखत में तो केलवां रौ छपरो थौ नै मा० बगतसिंघजी उताराय दीया, जगां पक्की कराई। मा० वीजै-सिंघजी रै बखत में चौफेर पायगा कराई नै विचलो मैल मा० श्री बखतसिंघजी करायौ।

महाराज श्री बगतसिंघजी नागोर में कमठौ करायौ तिण री विगतः—

सैरपना री कोट, सैर में मसीतां तथा छतरियां थी तिण पाड़ नै[१] सैरपनो करायौ, संमत १७८८ में। किले रै कनै तिपोळीयौ करायौ।

किले री कोट दुरसत करायौ[२]। मांय कमठा करायां री विगत—

मरदांनी दोढी री पौळ कराई नै ऊपर मैल-कराया। मोती-मैल नवौ करायौ—

मांय वाग है जठै मैल तीन नवा कराया। वाग रै ऊपर भोजन-साळ कराई।

अबखास मैल करायौ। वाग हो इणां करायौ।

सु नाळो लाय बेरे रै तोर ऊडो नै, नाळो लाय किले में वण में पाणी पवण सारूं।

मांय ठाकुरजी रौ मिंदर करायौ। पैला उण जायगा रावजी अमरसिंघजी राटौड़ विराजता तिण जायगा मिंदर करायौ।

मांय जनांना में मैल कराया नै रंग-साळ कराई।

सेहर खास में ठाकुरजी श्री मुरलीमनोहरजी रौ मिंदर करायौ।

जनांनी दोढी रै उरे[३] सेमांन री कोठार करायौ।

मूंडवे में—

तळाव री पाळ ऊपर ठाकुरजी रौ मिंदर करायौ नै वाग करायौ।

१४. महाराज श्री विजैसिंघजी री बखत में कमठो, किले में:—

ठाकुरजी श्री मुरलीमनोहरजी विराजै जिको मैल करायौ बावाजी आतमारांमजी रै ऊपर संमत १८१६ में, सांमो कमठो करायौ नै टांको[४] करायौ।

---

१. गिरा कर। २. मरम्मत आदि करवाई। ३. पहले। ४. पानी का हौज।

ठाकुरजी श्री गंगाश्यामजी रौ मिंदर पाछौ उखेलाय नवौ करायौ, सिखर बंदो[1] पोळ नै सूरजजी री मिंदर नै मादेव री मिंदर करायौ नै दोळी पेड़कोटो पको करायौ।

खास वां फिर मींदर वलभ कुळ रा इण मुजब तळेटी रै मैलां हेट बालकिशनजी रौ मिंदर करायौ। उण हीज मिंदर रै कनै सांमजी रो मिंदर करायो-तिके मा० मांनसिंघ जी रै १८ में गया परा।

गुंदी रा मोला में भारी हवेली में मदनमोवनजी रौ मिंदर करायौ।

फतैपोळ नीचै वीरज लंका तो० ठा० जी था सो मा० मांनसिंघजी रै राज में परा गया।

ठाकुरजी श्री महाप्रभूजी रौ मिंदर जोसीजी री हवेली कनै करायो सो मौजूद है।

खेरवा री हवेली कनै ठा० जी श्री नटवरजी रौ मिंदर करायौ जिको मिंदर हमार कितरोक तो खेरवा री हवेली नीचे है, नै कितरोक दाऊजी रै मिंदर नीचे है।

ठाकुरजी श्री दाऊजो रा मिंदर में सेवा तो महाराज अभैसिंघजी गुसांईजी विठलरायजी १७८६ कोटे सुं लाय[2] वीराजमांन किया नै मिंदर रौ मोटौ कमठौ माराज विजैसिंघजी करायौ।

बागर पैला तो तूरजी रै झालरा कनै थी। पछै सैर मोटो बसणे सुं वागर नागोरी दरवाजा रै ऊली कांनो[3] कराई नै आगे थी तिण रा सिरकार सुं पटा कर दोया। ओर हमार वाळी[4] वागर रा ही पहाराजा जसवंतसींगजी रै वगत में १९३७ में पटा कर दीया ह० कोटवाळ वीसा मोतीसिंगजी रै।

श्री कुंजबिहारीजी रौ मिंदर १८ में करायौ।

नवौ कोट हमार गिरदीकोट वाजै तिको करायौ। तिण साळां आगली ऊखेलाय चौसाळे री तरै सुं प्रतापसिंघजीसा कराई १९३७ में नै मांहें कुवो १ करायौ तिको मोजूद है, पांणी भळभळो है।

---

१. गुंबजवाला। २. कोटा से लाकर। ३. इस ओर, पहले। ४. मौजूदा।

१८३२ री साल मंयलो वाग नै झलरो करायो नै वाग री कमठो मैलायात कंवळ-चोकी बंगलो आददे सारा पासवांनजी हा० हुवो, तिण रा रु० ५०००००) पांच लाख अंदाज लागा।

तळाव गुलाबसागर १८४५ संपूर्ण हुवो।

तळाव तेजसागर पासवांनी आपरै वाभेरे नांव सु करायो। जिको अदुरो रै गयो। तरै मा० भीवसिंघजी फतैसिंघजी रै खोळै था तिण रै नांम सु पठो वंदायौ ने नांव फतैसागर दीयो। जिण री मरमत हमार १९३६ अंदाज में विजैसिंघजी रै हा० माहा० जसवंतसिंघजी रै राजलोग ऐ खुदीज नैर[1] कोट तांही बांदी।

मेड़ते रै मारग में नांनडो गांव सु परली तरफ १ बावड़ी कराई। मारग वेतो[2] सो मुसाफरां यै जळ री अड़चन रैती[3] ने नांव सोडी-सर री बावड़ी दीयौ।

सोजत में इण मुजब :—

सैरपना री कोट पक्को करायौ नै गढ़ नै सैर विचलो कोट मिळतो करायौ नै पायगा[4] कराई।

१५. माहाराज श्री भींवसिंघजी री बखत में—

जोधपुर गढ में इण मुजब:—

फतै-मैल कने लोवा-पोळ रै ऊपर झरोखा कराया।

नै फतै-मैल में कोठार कोटड़ियां कराई।

ओर फूल-मैल आगे दुर न थो तिण नै करायौ। तिको मैल माराज तखतसिंघजी नवो करायौ।

नाजर री बावड़ी बाईजीसा रा तळाव सूं आथूणी[5] नरसींघजी रा मींदर कने नाजर ……… कराई। सं० १८५९।

बाल समंद में—

वागां री पोळ नै ऊपरलो मैल करायो।

तळाव रे पठे ऊपरली साळां नै वागां रै मांय साळ कराई।

ईणां रू राणी भटियांणीजी देरावजी था तिणां बालसमंद रै मारग कनै तळाव आपरै नांव सु करायौ। जठे हमार माराज श्री तखतसिंघजी रै रांणीजी

---

१. नहर। २. रास्ता चलता था। ३ तकलीफ। ४. अस्तबल। ५. पश्चिम की ओर।

जाड़ेचोजी वाग लगायौ है।

१६. माराज श्री मानसिंहजी रै राज में इण मुजब। किला में इण मुजब—

आयसजी देवनाथजी रै ऊपर संमाद[1] कराई। नै टांके री खाडो तो सगळो बूरियोड़ो[2] थो, तिको दुरसत करायौ।

लोवा-पोळ रै आगे पठी जै-पोळ रै ऊपर हा० ६५ भरो भरा गजगी री ताळा-कुंची ऐ कांम ऐ करायो, पथर सींघोरीये री भाकरी सूं मंगाय नै।

लखणा-पोळ सूं लगाय नै जै-पोळ री कोट नै जै-पोळ नवी कराई।

और धायभाईजी री हवेली हमार जाड़ेचोजी रै नोरौ है तिको १८६४ में विरखा रै सवब सुं पड़ गयौ थौ तिको पाछौ ताळा कुंची रै कांम री करायौ। चोकेळाव रै चौफेर[3] नै रांणीसर में चोकेळाव सुं परबारी मारग रांणीसर में में जावण नै करायौ। तळाव रांणीसर री कोट तरफ दीखणा १८५३ में सोर भुरज मांय सुं उडीयौ थौ जिणसुं पड़ गयौ। तीसूं पाछौ नवौ पूठीबंद[4] करायौ। किला में लंब घणो पड़ती[5] तिणसूं गोपाळ पोळ रै उरलो तरफ नै चोकेळाव रै परली तरफ भेरुं-पोळ नै बुरज और फेर, नवी कराई। नांव भेरुं-पोळ दीयौ। भेरुंजी री थांन हो जिण सुं नांव दीयौ।

सेवा री मैल चित्र-सेवा रै ऊपर श्रीनाथजी री करायौ। नै जनांना में भटीयांणीजीसा रै मैल करायौ जिण रै ऊपर मा० तखतसिंघजी रै रांणीजी बडा रांणावतजीसा मैल करायौ!

जूनीवाळ पेला देवनाथजी माराज रै रैवण वासते कराई। पछै वे मांमिदर पधारीया तरै सिरकारी मकान है।

सैर में इण मुजब—

गुलाबसागर ऊपर श्रीनाथजी रौ मिंदर निज मिंदर १८६१ मे करायौ। तिको सूरतनाथजी, नै सूंपीयौ, संमत १८६२ रा मा सुद्ध ५ नै मांमिदर री प्रतिष्ठा हुई नै झालरो करायौ। वाग करायौ नै रेवास रा मैल नै आसण री जायगा आयसजी देवनाथजी नै सूंपी, भेंट कीयौ। इण कमठा में रु० दसलाख अंदाज लागा बतावै है।

---

१. समाधि। २. पटा हुआ। ३. चारों तरफ। ४. बड़े-बड़े घड़े हुए पत्थरों से। ५. लंबी दूरी पड़ती थी।

तळाव मांनसागर मामींदर में नै नैर पक्की कराई तिण में पांणी ठेरै नहीं। और मामिंदर सैर वसायौ नै सैरपना री कोट करायौ १८७१ में, सारो कुल कमठो रु० चाळीस लाख रो गिणीजै है[1]।

ऊदैमिंदर नै श्रीनाथजी री मिंदर नै झालरो नै वाम श्रासण नाजर इमरत-रांम हुस्ते कराय नै आयसजी भींवनाथजी रै भेंट किया, नै ऊदैमिंदर सैर वसायौ नै सेरपना री कोट करायौ। चेजै री नव नाथों रो मिंदर सोजतीये दरवाजे मांय बारे करायौ जिण में हमार बग्गीखांनो है।

चौरासी सीधों रो मिंदर सोजतीये दरवाजे रै बारे करायौ जठै हमार माराज जसवंतसिंघजी १९३१ जेळखांनो करायौ।

जनांना सिरदारां[2] मिंदर कराया :—

मिंदर पदमसर ऊपर.................करायौ।

मिंदर तळेटी रा मैलां कने.................करायौ।

हमार डाकखांनो मढ़ी में.................करायौ।

मिंदर ३ गुलाबसागर ऊपर—

१. राजमैलां में।

१. लालबाबे रै मिंदर कनै।

१. हमार फरासखांनो है तिको।

१. मांयलेबाग में।

फुलेळाव रै ऊपर सिंघवी करायै नाथजी रो, बालसमंद रै पठै ऊपर मंदर करायौ। मा० नाथजी रो मिंदर मंडोर में नाथजो री माराज करायौ।

मंडोर में देवतावां री साळां में जळंधरनाथजी गोरखनाथजी वगेरां री मूरतां कोरांई[3] नै साळ कराई।

वाईस ही प्रगनां में नाथजी रा मिंदर कराया।

नागोर में वडजी रो मिंदर ने मेलायत कराई। मांय नाथजी रा पगलीया पधराय नै[4] देवनाथजी रै भेंट कीवी।

---

१. चालीस लाख रुपये का माना जाता है। २. रानियों उपपत्नियों आदि ने। ३. मूर्तियें कुरवाई। ४. प्रतिष्ठा करवाकर।

जाळोर में सिरे मिंदर करायो नै आसणयो कोट में पांचुई भाई आयसजी रा जिणां री हवेलियां आसण में कराई नें आव कायस्थां मे आयसजी री दडेर कदीमी सांसण जठे मेलायता[1] कराई।

बाईजी श्री सिरै कंवर बाईजी भटियांणीजो राजेश्वर जगतसिंघजी नै परणाया तिणां जाळोरी दरवाजे कनै तळाव करायो। तोरी मरमत नै कड़ो नै नळि वगेरै घाल मा० जसवंतसिंघजी करायो।

१७. महाराज श्री तखतसिंघजी कमठा करायां री विगत।

किले में कराया :—

खाब्र का मैल ऊगणा आथूणा उखेलाय नवा कराया फूल-मैल आगलो उखेलाय नवो लदावरै कांम[2] सुं करायो।

मोतीमैल में नवा पाट घालय नै करायो, सोने रै कांम री करायो।

तखत-विलास मैल नवो करायो। और १९१४ रा भादवा वद ५ नै बीजळी पड़ी[3] जिण सुं सोर उडीयो तरै गढ में नुखसांण हुवो। वीगत—माताजी श्री चांवडाजी रै आगलो मिंदर उडगयो, नवो करायो।

कालका जी रो नवो करायो।

गोपाळ-पोळ उड गई जिका नवी कराई, हुमते जो० सिवनारायण।

फतैपोळ में आगली साळां उड गई तिके पाछी नवी कराई।

फतैपोळ ऊपरली छतरियां नै कांगरा नवा कराया।

चोकेळाव में मैल नवो करायो।

जनांना में श्री रांणावतजीसा री मैल नै फेर ही जुदा-जुदा मैल कराया।

जैंपोळ रै कोट री कमठो अदुरो थो सो संमपूरण करायो। पौळ रै पठे ऊपर साळां आदम्यां रै रैवण ने वराई।

रांणीसर रै बुरज ऊपर अरट मंडाय नै नाळां घलाय नै अरट नग ४ रा कुडीया कराय फतैमैल रा हवद में पांणी लावण वास्ते कराया।

---

१. महल आदि। २. जिसको छत में पत्थर की पट्टियां अथवा लकड़ी नहीं होती। ३. बिजली गिरी।

खास सैर में—गुलाव सागर रै वचे रै ऊगुणी त्रफ मैल कराया नै मैलां रा नांम राजमैल दिया। चौफेर पड़कोटो है। श्रो कमठो नाजर हरकरण हस्ते हुवो।

सैर रे बारे इण मुजब कराया—

सेखावतजी रै तळाव रै उरै ने राईकेबाग रै परै लोक रै रैवण सारू छांवणी कराई। ती वडा लालजी री डेरो रहतो।

वाड़ी घाटी में पड़दायतजी मगराजजी इण मुजब—वाड़ी घाटी मै तळाव नै साळ कराई। नागोरी दरवाजे बारे बावड़ी कराई। नै ऊपर नोरो नै मिंदर करायो। नांव मगराजी री बावड़ी कहीजै।

पड़दायतजी लछरायजी जाळोरी दरवाजे बारे बावड़ी कराई। ऊपर वाग लगायो। मिंदर करायो। पांणी भळभळो[1] नै अचाल[2] है।

नागोरी दरवाजा बारे नाजर हरकरण हस्ते वेरो १ खीणोजीयो नै चोवीसो हुवो तीको हमार चांपावत सुलतांनसिंघजी नै सुंपीजियो। तथा दिरीजियो।

नागोरी दरवाजे बारे सूरपुरा रा मारग में तळाव १ लालसागर नै वाग नाजर हरकरण हस्ते हुवो।

नाजर ऊजीरवगस रै हस्ते वेरो नै वाग ने मांय पोळ में मेलायत कराई, लालसागर रै कनै।

कासवा रा वेरा ले० नाजर हरकरण हस्ते करायो चोबीती ने मांय रैवास री जायगा कराई। वेरा तो आगला था तिणां री मरमत कराई।

चहुवांणजी सोयंतरे[3] री वेरो ने बाग उठेहीज करायो।

मूंता विजैसिंघजी हस्ते मंडोर रै नजीक वाग वेरो करायो ने मैल करायो।

खींची उमेदजी हस्ते झालरो[4] तो आगलो थो नै मंडोर रै परै कमठो करायो।

मूते पूनमचंद हस्ते मंडोर कने वेरो नै वाग करायो।

मंडोर कनै खोखरियां वेरा छापर वाग रांणीजी श्री रांणावत करायो तों कमठो करायो तिको हसार माराज प्रतापसिंघजी नै है।

---

१. कुछ खारा। २. काम में न आने वाला। ३. मारवाड़ का एक ग्राम। ४. एक प्रकार की बावली जिसमें चारो ओर सीढ़ियां होती हैं।

देरावजी रै वाग ऊपर रांणी जाड़ेचीजी वाग लगायौ बाळसमंद में पठै ऊपर बड़ौ भारी तीनखण रौ महल करायौ। तिको १६०६ फाट गयौ, तरै पाछौ नवो करायौ।

मांय जनाना रैवास पठै ऊपर कराया नै पठै रै ऊपर पौळ नै साळां कराई।

दूजोड़ा वाग में बंगळो १ नवो नै मांयली कांनी जनांना रैवास री जायगा कराई।

और महाराज री असवारी घणे बीसतर बाळसमंद विराजता तिण सुं मुदत पछां मुतसदी खवास पासवांनां रा डेरा जुदा-जुदा सु हुवोड़ा है।

छैल-वाग आगे बाळसमंद सुं पिछम त्रफ सिरमाळी पोकर री बगेची बाजती तठै वेरो, वाग नै मैलायत करायी नै नांव छैलवाग दियौ।

चीणां रै वाड़ियौ जठे कमठो करायौ।

सड़क री बंगलो नाजर हरकरण हस्ते हुओ नै तळाव बंदीजतो सु अदूरो रैयौ।

रांमदांन रै वाड़ीये वाग बावड़ी नै मेलायत कराई। नै नांव तखतबिलंद दीयौ। कमठो हस्ते पंवार अनाड़सिंघ। नाडेळाव तळाव तो आगलो है[1] नै मांय वेरो मैलायत नै वाग करायौ, पड़दायत मगराज जी हस्ते।

मीठीनाडी तळाव नै वाग कमठो ओयत जसकरण हस्ते हुवौ। मांचीये[2] भाखर ऊपर कमठो नाजर हरकरणा हस्ते हुवौ। ऊपर बगलो नै कोट अदूरो है।

कायलांणे नाजर सालगरांम हस्ते तळाव भारी बंदायौ नै वाग करायौ। मांय मेलायत पठो करायौ।

कायलांणा मे आगे तो मैल नै सूरां री बाड़ो पोळ थो खालो, सारो माराज तखतसिंघजी रै करायोड़ो है। नै कायलांणो त्रफ दिखणांद नाजर हरकरण तळाव मोटो ने वाग कमठो कराया।

नाजरां रा तथा कारखांना रा रसोड़ो न्यारी-न्यारी जगवां है।

बीजोळाई तळाव ओयत जसकरण हस्ते बदायो ने कमठो साळां और बंगळा वाग वगेरे कराया।

भिड़क[3] में जायगा ओ० जसकरण हस्ते हुई।

---

१. पुराना है। २. चारपाई के आकार का। ३. अभी यह स्थान भीम भड़क कहलाता है।

तळाव अभैसागर ऊपर वेरो जाळीयो तो आगे थो सु बंदायो मगराजजी हस्ते, नै वाग बंगळा ने मांय कमठो सारो नवो करायो।

विदीयासाळ[1] री कमठो संमत १९०२ फीरंच साव अजंट रा कैणा सुं लड़कां नै पढावण सारू तठै ई साळ री कमठो बड़ो मजबूत वीयो[2] नैं अंगरेजी नवेस १ फारसी नवेस १ पंडत २ संसक्रत पढावण सारू, ४ वथा ५ वरस रया। नै पछै वात ढीली पड़ गई। मांय ब्रांमणां री वरणीयां घणा वरस तक रही। पछै समत १९२३ री साल तेलग सायब री डेरो हुवो। पछै मुनसीजी हाजी मेंमदखांजी रौ डेरौ हुवो, तरै कमरा कमाड़ वगेरा दुरसत हुआ नै पछै दीवांण मरदांनअलीखांजी रौ डेरौ रयौ, तिणां कमठो अेक आथमणो[3] नवो करायो। नै हमांम रो हक करायो नै विदियासाळ ऊपरै वंगळो करायो। श्री हजूर सायबां री असवारी वठै रैणी सरू हुई तरै आपरै मरदांनअलीजी रै रैवण नै डेरौ हमार मौलवीजी रैता जकानै मुनसफी अडाल चहे तको कमरो करायो। पछै मुनसीजी हरदीयाल सिंघजी ४० री साल सारी विदीयासाळ पुरा कमाड़[4] काच दुरसत कराया ने ४१ री साल में पोळ तो आगली थी तिण आगै फेर वधाय नैं अेलमदां सारू कमरा कराया है। मांय फेर कमठो जुदो हुवो है नै वगोचो है, लगायो।

---

१. विद्यासाल, यहां वर्तमान में भी स्कूल है। २. बड़ा मजबूत इमारत आदि का

नीवांणां[1] री विगत (ख)

(जोधपुर के शासक, अधिकारी व रानियों द्वारा बनवाये गये जलाशय आदि)

१. १ जोधानाडी सीगोरिया री भाकरी बारै राव जोधाजी री वार में जोधै पड़ियार कराई।

२. १ रंगा री नाड़ी सीये रंगे कराई कागा रा मारग में, तिका बुरांणी।[2]

३. १ कागा रा मारग में सोगत आगे पंचोळी सारण रा बेटा नरहर री नाडी छै। प्रीतर नाडी बाजतो थौ सु बुरीज गयी। ऊपर पीपळ थौ।

४. १ बावड़ी १ दवै वीसंवर भूतिया वाळा में खोदाय नै पकी बंदाई सं० १७१५ रा फागुण सुद १ नै पछै तुरकांणी में नीबायत सुजायतखां पटो वीगा २ री कर दीयौ थौ।

५. १ कुवो १ पोनी में पींपाड़े दुगै सुत रावत भुगीयावाळा में खुदाय नै वंदायौ १७ में।

६. १ भांना नाडी भोजग भांनै कराई।

७. १ कसरा-नाडो राव गांगा री वार में कसरै कराई। १ मालवावड़ी राव गांगाजी रै नांव सुं राव मालदे कराई, जूना नागौरी दरवाजा रै बारै। हमार सेनपुरीजी रा आखाड़ा मांय छै। तिका सुगवे नै सवराई १६६१ में सूरसिंघजी री वार में।

८. ३ मुना रा तोन कोरा पतर में कोराय भेरवा भाखर ऊपर खोजे फराछै कराया १७०३ रा भादवा सुद ७।

९. १ नेहेटा री नाडी मंडोवर रा मारग में राव मालदेजी री........ उठै रेती सु भदेसो कीदार साळ ओरो करायौ।

१०. २ भडारी ताराचद नारणोत १८ में देहरौ[3] मंडाया, देहरो १ पारसनाथजी री नै देहरो १ श्री ठाकुरजी री नै देहरो १ श्री मादेवजी री।

११. १ श्री जीणमाताजी री मंदर पंचोळी हरसुखदास हरराजोत करायौ।

---

१ तालाब आदि जलाशय। २ धूल आदि से पट गई। ३ देवस्थान।

१२.　१ बाळसमंद में बावडी १ हुरबोला राजा उदेसिंघजी री ग्रोळगणी[1] री करायोड़ी छै सं० १६००।

१३.　१ तळाव देवकुड माहाराज ग्रभैसिंघजी पठो बंदायो, नै चौंतरौ करायौ। तिण ऊपर हिंगळाजजी रौ मिंदर कराता हा सो ग्रदूरो रहीयो नै इण मिंदर सारूं मकरांणा री मूरत मंगाई ही सो मेरां रा वास में पड़ी है। पठा में पांणी रो झरणो जाये है तिण हेटै वंदो माहाराज वखतसिंघजी बदायो थो।

१४.　१ तळाव भवांनीकुंड माहाराज ग्रभैसिंघजी करायौ।

१५.　१ तळाव धायसागर वागर कनै धाय करायौ, माहाराज विजैसिंघजी री वार मे[2]।

१६.　१ तळाव मोतीकुंड विसनपुरा कनै पहला तो खांन कटणा सु[3] हुयौ थौ नै पछै मोतीबाई करायौ तिण में वेरी १८९६ में विसन सांमीयां सारा सांमल होय नै कराई। मोतीबाई माहाराज वखतसिंघजी री खवास री बेटी थी, सो खेतासर रा भाटी भवांनीसिंघ फतैसिंघोत नै परणाई थी, नै पटो १००००) दस हजार रौ दीयौ थौ तिके ग्रठै जोधपुर में हीज रहता, तिणां तळाव मोतीकुड नै मिंदर ठाकुरजी रौ करायौ। माहाराज बिजैसिंघजी रै राज में।

जोधपुर गढ ऊपर टांका नीवांण छै—

१७.　१ टांको १ वाड़ी रा मैलां कनै राजा सूरसिंघजी करायौ। गुजराती कारीगर नोबै कीयो, सं० १६६४ तयार हुवौ।

१८.　१ चोयड भुरज ग्रागै तळाव नीबासर मास ६ पांणी रहै। राव मालदेजी करायौ थौ सो पाछो सं० १७०३ रा फागण वद २ खोजे फरासत संवरायौ नै कारीगर मेड़ता थी बुलाय देखायौ। तिण कही—पुरस ३५ हेटे पांणी घणो छै।

१९.　मांयलो पायगा री भींत रै पिछाड़ी कोठारां ग्रागे भाटो काढ तळाव कियौ छै, मास ४ पांणी रहै नै पायगा नीचै गोळ दिसि गढ रै ग्रादाफरा[4] ठौड़ छै नीचै पनरै पुरस भाटो भागां[5] पांणी घणो। गंगारांम सीरवी[6] बतायौ

---

१. गायिका। 　२. समय में। 　३. खान की खुदाई के कारण। 　४. ढाल में।
५ पत्थर तोड़ने पर। ६ प्रथ्वीतल में पानी बताने वाला।

सं० १७०३ रा फागण वद १ नै। महलां नीचै पांणी रौ कुंड छै तिण कुंड ऊपर राव जोधै जोधपुर रौ गढ़ करायौ तिण रौ पांणी झरणा में आवै छै।

२०. १ गढ़ रै तरफ नीचै झरणो छै तिण पांणी घड़ा २० निकळै छै नै कुंड आगे राव मालदेजी करायौ नै बरसात रा पांणी सुं भरीजै छै नै कोट दोळो करायो मालदे, नै माहादेव रो मिंदर छै।

२१. १ गढ रै आदेफरै राव मालदेजी करायो भाटो भांग नै पुरस ५२ खिणीयां पांणी निकळियो नै मेह री बरसात सुं ऊपर सीरां सूं भरीजै। पांणी पुरस २० रहै नै नांम मेळावाव नै कोई नवसरो कहै छै।

तळाव चोकेळाव छै, मास ४ पांणी रहतौ। राव मालदे नांम चोकेळाव दियौ नै कोट करायौ सो पड़ गयौ १८६४ में, तरै माहाराज मांनसिंघजी पाछौ नवौ कोट करायौ।

चोकेळाव में कुवो १ चौड़ो माहाराज अभैसिंघजी करायौ स० १७८६ में, नै माथै अरट मंडायौ नै तांबा री घड़लियां कराई।

गढ़ में छतरीयां ३ छै लखणा पोळ नीचै, चढतां डावा हाथ मसीत आगे, छतरीयां री विगत :—

२२. १ राठोड़ तिलोकसी सिवराज भीयोत री जूनी छतरी एक।

२३. १ राठोड़ अचळो सिवराजोत जोधावत री एक छतरी।

२४. १ भाटी संकरदास सूरा भैरवदास जैसाउत री, नवी छतरी सं० १६६६ री कराई एके बाजू।

२५. १ मसीत कने छतरी अचळा राठोड़ री। पातसाह सूरसा १६०० गढ ऊपर आयौ।

ख्यात फुटकर सं० १९१८ पोस सुद ७ :—

नीवांणां री विगत जोधपुर रा तळाव, कुवा, वावड़ी री विगत।

२६. १ तळाव पदमसर रांणी पदम देवड़ी रावजी गांगाजो री रांणी तळाव करायौ १५७७ सु सीरीमाळीयां नै तांबापतर कर दीयौ कहै छै। वेरीयां २ छै, वेरी १ तौ व्यास संकर री कराई नै दूजी महेस सिरमाळी री कराई, सं० १७०७ रा मिगसर वद ८।

२७. १ तळाव रांणीसर रावजी श्री जोधाजी री हाडी रांणी तिण करायौ सं० १५५७, सु नाळो रांरीसर पदमसर री एक नै तळाव दोय छै नै

रांणीसर रो ओटौ[1] तळाव पदमसर में घेरीयो छै। रांणीसर दोळो कोट राव मालदे करायो नै वेरीयां चार छै। जीया कोट रावजी मालदेजी करायौ छै नै अरट बुरजां तथा सोर ऊठणा सुं गेरा मै पड़तो गयौ जीं सु फेर पाछौ केई वार हुवौ छौ नै पठौ एक हमार म० तखतसिंघजी री वार में बंदायो नै ओटौ ऊंचौ लियो छै सु तळाव में जळ रौ फरक सवायो पड़ीयौ छै।[2]

२८. १ तळाव फुलेलाव रावजी श्री सातलजी री वार मै रांणी भटीयांणी नांम फूलां तिण तळाव फुलेळाव करायौ सं० १५४६। वेरी भरव मांहे छै तीन सौ घड़ा पांणी छै। तिका बहूजी सेखावतजी म्हाराज जसवंतसिंघजी री रांणी सं० १७१५ रै बरस वंदाई।

२९. १ गांगेळाव तळाव राव गांगे करायौ थौ सं० १५७५ पछै एक वार पठी फूटो थौ तरै पाछौ माहाराजाजी श्री गजसिंघजी री रांणी बहूजी चदावतजी रा मपेरा री तिकां माहाराज श्री जसवंतसिंघजी री वार मै फेर बंधायौ १७१४ रा मिगसर वद २।

३०. १ गोळनडी सुतरार गोवा री कराई, राव गांगा री वार में, पछै सिरमाळी जोत कराय पठो बंधायौ थौ, माहाराज श्री गजसिंघजी री वार में, सो आदो बंदीयो। सो फेर मीयां फरासत पूरो वंदायो सं० १७२४ में।

३१. १ बहूजी री तळाव राव मालदेजी री रांणी भाली सरूपदेजी करायौ १५९७ रा माहा सुद १३ तीकां रै कवरजी उदैसिंघजी, चंद्रसेनजी रै माजी था, इण तळाव री नांव सरूपसागर है। पीरोजी[3] एक लाख लागा था।

३२. १ तळाव किलांणसागर रांणी हाडीजी नांम जसरंगदेजी हाडी माहाराज श्री जसवंतसिंघजी री रांणी बूंदी रा राव छतरसालजी[4] री वेटी सं० १७२० रा वैसाख सुद १५ रांग मांडी[5] नै सं० १७३० रा जेठ सुद १५ प्रतसटा हुई। पैला अठै रातोनाडो कहीजतो नै हाडीजी वाग करायौ सु राईको बाग कहै छै। आगै इण जायगा सिरमाळी गोयंद नाडियो खिणायो थौ राव गांगा री वार में नै अठै रातौ भाटौ निकळतो तिण सूं रातोनाडो वाजीयो नै राईकोवाग ही इणां हाडीजी करायो। सं० १७२३ माराज श्री जसवतसिंघजी

---

१. तालाव का वह स्थल जहा से तालाब भर जाने पर पानी छलक कर निकल जाता है। २. सवाया पानी ठहरता है। ३. मुगल समय का सिक्का विशेष। ४. शत्रुशाल। ५. नींव दिलवाई।

री रांणी वाग दोळो कोट बाराद १ हरमिंदर १ कुवो १ कोट बारे कराय बदायो ।

३३. १ सेखावतजी रौ तळाव कछवाही अंतरंगदेजी खडेला री, माहाराज श्री जसवंतसिंघजी री रांणी करायौ। कंवरजी श्री पिरथीसिंघजी री माता नै इणां तळाव री प्रतसटा करी। तद बडो भारी उछब[1] कीयौ। श्री हजूर रणवास सेत[2] अठै पधारीया छै। के दिन रहा छै नै नोरा सुं गोठां जीमण सारा राज में हुवा छै के कवेसुरां इण भाव रा गीत कवत मालम कराया त्यां में निरां सुं नीवाजसां हुई थी। सं० १७३० मे पैहला इण ठौड़ साहणो नाडिया जती रातै-नाडो ही इण होज मुजब सारा उछब हुवा छै नै इण तळाव रो नांव जांन सागर छै।

३४. १ तळाव सूरसागर बाग महेल माहाराज श्री सूरजसिंघजी कराया। १६६४ रा वैसाख सुद २ प्रतिष्टा हुई परधांन भाटी गोयनदास कांमदार भंडारी लूणकरण गोरावत मुंसी केसव सूरसागर रो कांम वरस ८ हुवौ थौ। मांहे बेरीयां खिणाई है नै माहाराज श्री जसवतसिंहजी पठा ऊपर मैल, सं० १७५० रा वैसाख सुद ५ रांग रौ मोरत हुवौ।

३५. सुरजकुंड राजा सुरजसिंघजी करायो १६७२ रा जेठ सुद २। ऊपर हमांम नै तळैटी रा महल ही राजा सुरजसिंघजी कराया सो कांम अधूरो रयो, सु पछै माहाराज श्री गजसिंहजी री वार में समपूरण काम हुवो। हमांम नै मैल तयार हुवा सं० १६६६ मे।

३६. १ चहुवांणजी राव जोधा री रांणी तिण कूवो थौ आगे तिणरी वावड़ो बंधाई थी नै ऊपर वड़ थौ सो पड़ीयो तरै देवी री मूरत निकळी थी नै पाछी संवराई[3] सं० १७०२ रा। आगे मंडो री जायगा में थी।

३७. वीरमकुंड सूरसागर पाछे व्यास पदमनाभ नाथै तापी रै करायौ १६६८ रा जैठ सुद २ च्यारूं तरफ पांवड़िया छै।

३८. १ तापी बावड़ी व्यास तापी तेजावत कराई जात पोकरणा १६७५ काती सुद १५। पांणी खारो रु० बोवोत्तर हजार ने एक लागा। ऊंडी पुरस ६० नै सरू खोदणी १६७१ ने खुदी पिचतर, ७२०००) माहाराज श्री जसवंत-सिंघजी री वार मे।

---

१. उत्सव। २. रानियों सहित। ३. मरम्मत करवाई।

३९. १ तळाव कसुमदेसर बागैजी कड़मदेजी बंधायो। पैला कागड़ो कहीजती थी। सु रांणी माहाराज गजसिंघजी री थी गांव लोहाळीया री सं० १७११ लगाय, सं० १७१३ प्रतिष्ठा हुई।

४०. १ जांजा-वेरो सूरसागर विचै सो जोसी संकरपांण सं० १७१७ रा चैत वद में बंदाय नै बाग करायौ।

४१. १ कुवा १ रांमदेवरै थांन कनै जैदेव करायो।

४२. १ जाड़ेची[1] झालरो रांमपोळ वारै जाड़ेचीजी री नांव पेमावतीजी नवानगर री माहाराज श्री गजसिंघजी री राणी करायो सु नांम जाड़ेची झालरो कै छै।

४३. १ रूपा वेरो भाड़ै स्याय कनै छीपो रूपो वचायन करायो सं० १७३३।

४४. १ राजकुवो माराज श्री जसवंतसिंघजी री वार मे खुदायो सु अदूरो सु सं० १७४१ में ईनायतखां पातस्या री तरफ सुं तिण वधायो।

४५. १ तिरवाड़ी री झालरो सिरीमाळी सुखदेव रौ करायौ छै मा० श्री अजीतसिंघजी रै राज में १७ में।

४६. १ झालरो १ पं० केसरीसिंघजी सं० १७३० में वंधायो राईकाबाग ऊपर।

४७. १ नवलखो माहाराज अभैसिंघजी करायौ केसरीसिंघ रा झालरा परै।

४८. तुंवरजी री झालरो माहाराज श्री अजीतसिंघजी री रांणी तूंवरजी[2] करायौ।

४९. १ भांणसर ताळाव राव गांगा री वार में ऊड़ भांण करायो। सु वुरीज गयो।

५०. १ मालसर तळाव थळी में राव मालदे करायौ।

५१. ३ तळाव वीसोलाव, नै फलासर नै नाडेळाव सव जोधाजी री वार मे प्रोयतां राजगुरां कराया उणी री वार में।

५२. १ फतैसागर तळाव पैलां तो पासवांनजी श्री गुलाबरायजी आपरा भाभां तेजसिंघजी रै नावै तेजसागर करायौ थौ पिण समपूरण नही हुवौ, १८३५

---

१. जाड़ेचा खांप की रानी। २. तंवर खांप की रानी।

पछै तेजसिंघजी चल गया[1] तरै पाटवी कंवर माहाराज श्री विजैसिंघजी रै फतैसिंघजी था तिण सुं नांम फतैसागर कैण लागा। कीऊक भींवसिंघजी रा राज में हुवो थो और माहाराज श्री जसवंतसिंघजी रै राज में सं० १९३६ सुं मेता विजैसिंघजी को फतोवी राड़ रेखां ऊपर नै कितरोक सायरां रा तथा गांवां रा ईजारदारां तथा राज सूं खजाने सूं[2] तळाव खुदायो नै नेहर बंदाई।

५३. १ पासवांनजी रो बाग नै बाग मांयलो झालरो पासवांनजी गुलाबरायजी करायो, सु १८३१ में तो बाग रो कमठो सुरु हुवो थो नै १८३२ में झालरो करायो छै।

५४. १ तळाव गुलाबसागर माहाराज श्री विजैसिंघजी री वार में पासवांनजी गुलाबरायजी १८४२ तो नींव दीरीजी नै १८४५ तयार हुवो। ऊगण बचा री नांव तेजसागर पिण केता सु अधूरो थो सु उतरादो उगुणो पठो बचा रो माहाराज श्री मांनसिंघजी री वार में १८८८ रा वरस में पछै तयार हुवो छै। हमार माहाराज श्री तखतसिंघजी रा राज में तिण पर उतरादी तरफ तो श्री तीजामांजी मिंदर १९०२ रा फागण वद २ तयार करायो उतरादा घाट पर सुं पछै १९०९ रा वरस मींदर मचक खाही[3] तद दूजो मीदर घासमंडी में करायो। तीजामांजी नांव परताप कंवर, देरासरीया भाटी गोयनदास सेरसिंघोत री बेटी गांव जाखण रा, माहाराज श्री मांनसिंघजी रै रांणी।

५५. १ जैता-बेरो मूता जेतै वदे जात करायो राव जोधाजी री वार में करायो। इण रै भाई बारादरी कराई।

५६. १ बंदारां रो बेरो मुता वेला रा घर आगे।

५७. १ नासणीयां रो बेरो भडारी मना रा घर आगे, तीए ऊपर।

५८. १ रोखा-बेरो राजा गजसिंघजी री वार मे माळी रेखे करायो। पांणी टूटे नही।

६९. १ घांसी-बेरो, नासणीयां रे बेरा रे अड़तो[4] तिण ऊपर कूंपावत राजसिंघ अरट मंडायो सं० १६९९ रा वैसाख वद ४ नै, आसोप री हवेली में पांणी लावणा सारू।

६०. १ कुंभारीयो बेरो राव जोधाजी री वार में कुंभार खीमे करायो। हमार कुंभारीयो कुवो कहीजै।

---

१. स्वर्गवास हो गया। २. राज्य के कोश से। ३. छत लचक गई। ४. पास ही, लगा हुआ।

६१. १ नीबलो कुवो, राव जोधाजी री वार में सिरमाळो नींबै करायो।

६२. १ जगु-वाव, जूना नागोरी दरवाजा रै कनै राव जोधा री वार में श्रोसवाळ जगु कराई थी सु राजा सूरसिंघजी री पातर[1] कांमरेखा संवराई[2] सं० १५८७ में।

६३. १ दया-वेरो, सांमी बुरज नीचै नै पसेरो माना राव जोधा री वार दवे सीरमाळी करायो।

६४. १ राजबाग में मेहल वाळो कुश्रो राजा सूरसिंघजी री वार में भाटी गोयंददास करायो नै बाग करायो नै पेला दांमेळाई कहीजती थी।

६५. १ कुवो १ बाग री पोळ कने सूरसागर माहाराज गजसिंघजी री वार में।

६६. १ बावड़ी रूपा धाय री, रूपा देवड़ी थी गेलोत चापा री बहू। बाईजी श्री मनभावतीजी सायजादा परवेज नै परणाई थी माहाराज सायब श्री गजसिंघजी री बार मे, तिण री धाय थी, १६८९ रा वैसाख सुद १५ कराई। पांणी मीठो ऊपर पिरागदास री छतरी छै ने भाकरी ऊपर देहरो करायो नै बावड़ी कने मालासर तळाव थो राव मालदेजी रो करायोड़ो सु बुरीज गयो।

६७. १ कूंपावत राजसिंघ करायो कुवो नवोड़ो १६७१ रा सा० सूरसिंघजी री वार में सूरसागर कांनी।[3]

६८. १ अनारा[4] री बावड़ो, राजा गजसिंघजी री खवास थी तिण कराई १६८६ में। हमार जोसीयां री बगेची बाजै।

६९. १ बावड़ी गोरांधाय री, गोरां जात री राठौड़ थी मना पंवार री बहू नै बेटी राठौड़ किसना भांवर री देवराजोत री थी। माहाराज श्री जसवंत सिंहजी री धाय थी, तिण री १७१६ रा जेठ सुद १४ प्रतिष्ठा हुई। हमार ऊपर पोकरण री हवेली उठै छै।

७०. १ केसो री बावड़ी राजा गजसिंघजी री पासवान थी, अनारां री बैन जिण कराई सं० १६८६ में हमार विदयासाळ में।

७१. १ बावड़ी जगत भाय, राठोड़ जगतसिंघ रांमदासोत खांप मेड़तीया चांदावत कराई १७१० रा भादवा सुद १५, उठे बळूंदा री हवेली में है।

---

१. वेश्या। २. मरम्मत आदि करवाई। ३. सूरसागर की तरफ। ४. यह मुस्लिम महिला थी।

७२. इंदरकुंवर री बाव, राजा सूरसिंघजी री बेटी तिण कराई। पहला इण जायगा करणा रो बेरो कहीजतो थो। राव मालदेजी री वार में करणे सोळंकी वेरो करायो, तिण जागा वावड़ी कराई नै पछै राजा जसवंतसिंघजी सं० १७०३ थीरासत खोजा नै दियो तिके टांणै मैल में बाग करायो। हमार मीयां रो बाग बाजै है।

७३. १ जालप ब्रावड़ी मुता जालप री कराई १६०९ रा वैसाख सुद ७, राव मालदे री वार में।

७४. रांमा रो बेटो रांमे महेस री रांम वावड़ी कराई। तिण रो सीया वेरी थो तिका परदार पाड़खां सूरसिंघजी री वार में सवराई नै पछै भगवांन कुसळावत १७०७ में वाग करायो।

७५. २ रांम वावड़ी चांदपोळ बारे सूरजकुंड कनै मूता रांमा री कराई। १५९५ रा मिगसर सुद ५ राव मालदे री बार में कराई। नै महादेवजी रामेश्वरजी रो देवरो बावड़ी कने करायो। सु तुरकांणी में सं० १६१६ में बाड़ोतरै राजा श्री गजसिंघजी फेर करायो १६८७। पछै फेर १७३७ रा पोस सुद १२ नवाब नाहरखेद पड़ायो सु पाछो फेर हुवो। सु हमार माहाराज श्री तखतसिंघजी रा राज में जीणऊधार[1] पंचाऊ जोसी परभुलालजी सिकदार पंवार सेरकरणजी हसते हुवो १९०१। पछै सं० १९३३ में जोसी गंगाविसनजी मिंदर रो ऊछाळो लायने[2] कमठो पूठीयां[3] रो १ को करायो सो गंगाविसनजी बणायो अदुरो है।

७६. १ देवी चांवंड रै थांन आगे जरब छै सु राजा सूरसिंघजी री वार में सोनारे खिणाई। तिण ऊपर चोतरो छै समाद री सनीयासी परसादगी री पंचोळी नेना रा घर आगे सं० १६९० कारायो। ऊपर माहादेव रो मिंदर छै।

७७. १ माळी-वेरो माळी रांमा रो करायो जालप कनै छै। बुरांणो थो। सु राजा गजसिंघजी री वार में सं १६८७ सूं पाछो करायो।

७७. १ पछै रांम-बावड़ी नवी मूंदयार रा बारठजी करणीदांनजी १८ में बंधाई। माहाराज श्री विजैसिंघजी रा राज में।

७९. १ बावड़ी १ पंचोळी फतैसिंग विजैकरणोत भींवांणी बंदाई[4] १७४० में। सोबादार सुजातखां री वार में।

---

१. जीर्णोद्धार। २. स्थान ऊंचा करवा कर। ३. घड़े हुए बड़े पत्थर। ४. बंधवाई।

८०. १ रांम-पोळ रांम मूतै कराई। जात गेलण मेसरी १५९३ रा मिगसर सुद ९।

८१. १ तळाव सोभागदेसर गांव छीजर कछ पटरांणी सोभागदेजी माहाराज सूरसिंघजी री बहू करायौ १६६६ रा पछै फेर छीजर गांव बसायौ नै बाग लगायौ थौ। कांम भंडारी लूणा हस्ते हुवो थौ। श्री माताजी हरसतीजो रौ मिंदर तळाव री पाळ गांव में करायौ सु माताजो रै मिंदर रै पांवां भरणो आवै सु पाळ मांहै पांणी भरणौ हेटे नीसरै।

८२. १ बसंत-सागर नाजर बसंत बंधायो पैला भरणो थौ चौगान री वांयी तरफ भाखर मांये गढ ऊपर १७१६ रा मिगसग सुद ५, राजा जसवंत-सिंघजो री वार में।

८३. १ तळाव रासोळाई राठौड़ रायसिंघ बीकानेरीये कराई। ऊपर रासा रौ रैवास थौ। पछै ऊजड़ हुवौ तरै माहाराज श्री जसवंतसिंघजी रा राज में सोभावत भगवांनदास सं० १७१४ रा चैत बद ५ फेर खिणाई। नांव भगवांनसागर दीयौ सु नांम रासोळाई ही कहै छै। हमार जैपोळ आगे है नै आगे अठे राव जोधाजी री वार में चहूवांण रासो री वास थौ नै नाडो रासोळाई कराई थी। जूनी बही में लिखियो थौ तिण सुं जांणां[1], रायसिंघ नहीं कराई।

१ सहदेव री बावड़ी राव मालदेजी री सहदेव सोलंकी करणा री तिण कराई। तिण ऊपर तुरक मेहमेद परदार राजा सूरसिंघजी री वार में मुनारां दोय कराया।

१ रांम-बावड़ी सूरसागर विचै पंचोळी मोहोणदास कराई सं० १७०७ रा पोहो सुद ८। माहाराज जसवंतसिंघजी री वार में।

१ भटुकड़ी बावड़ो कनै मुणोत नैणसी जैमलोत नवी बावड़ी कराई सं० १७०७ रा माहा सुद में माहाराज जसवंतसिंघजी री वार में। हमार मुणोतां रौ वाग वाजै छै।[2]

८४. १ फरासत-सागर, मीयां फरासत बाहादरखां नपीर पीराजी तळाव बंधायो सं० १७१२ रा फागण सुद ११ रा पैला गोळ-नडी कहीजती थी सु हमें ही गोळ-नडी कहीजै छै। गोळ में है।[3] तिण मांय हमार माहाराज श्री

१. जिससे जान पड़ता है। २. अभी मुहनोतों का बाग कहलाता है। ३. गोळ-मोहल्ले में विद्यमान है।

तखतसिंघजी रा राज में महारांणीजी श्री रांणावतजी नांम गुलाबकंवर रणसिंघ मोखमसिंघोत रा, माहाराज कंवार श्री जसवंतसिंघजी री मां।

८५. १ कूंपावत राजसिंघ वाग अड़तो नवी बावड़ी सिकदार रागोदास सोभावत खीणाई सं० १७०७ रा माहा सुद में। राजा जसवंतसिंघजी री वार में करायो सूरसागर कांनी नें सं० १७११ में वाग करायो।

८६. १ जाळोर गढ़ नीचे मीयां फरासत बाहादर खां प्रीथीराजोत जात तुंवर तिण बावड़ी कराई १७२० रा भादवा वद ५, नांव फरासत-बाव दीयो। पैला जोगी री बाव कहोजती थी।

८७. १ खेता री वेरो बांमण खेतै करायो नागोरी दरवाजा रै मूडा आगे, राव जोधाजी री वार में करायो।

८८. १ मीयां फरासत इण ही कापरण रा तळाव मांहे बावड़ो कराई सं० १७१९ रा चैत सुद ५।

८९. १ प्रगने सीवांणा री गांव कुसीप री सींव में भाखर गोडो तठै श्री माहादेवजी री देवरी नै भीव पांडव री गोडो फोड़ नै खाण खायो छै तठै भाखर मांय सु पांणी नीसरै छै, तिको तीरथ छै। आदु कुंड भरीयो छै।

९०. १ कोयला परवत माताजी श्री हींगळाजजी रो देवरो आद तीरथ छै। पांणी रो बडो कुंड है नै काग दरसण भला कार हुवै तद कोई देखै नहीं। सीवांणा सुं कोस ४ अनाद काळ री थांन छै[1]। माखी नै कागलो थांन सुं नजीक न आवै। पूजा जोगा गुसांई करै छै।

९१. १ मंडोवर आद[2] गढ नै नागादरी री नदी नै श्री मंडलेश्वर माहादेव आद छै। श्री रामाअवतार में श्री रुगनाथजी श्री सीताजी लिछमणजी सुग्रीव, वभीसण, हनुमान तथा दूजी सेना साथै ले नै लंका सुं रावण मार नै पुसप-वीमांण वोराज नै अठै श्री मंडलेश्वरजी री पूजा पाछा पधारतां कीवी नै सेना साथै घणी थो तिण सुं भीड़ में दरसण हुवै नही तरै श्री रुगनाथजी री श्री माहादेवीजी री अग्या सुं कंकर सब संकर हुवा सु प्रीत री इक भाखर में सारा लिगांकार रा दरसण हुवा, तरै सेन्या सारो नै दरसण हुवा। पछै श्री रुगनाथजी अजोध्या पधारीया नै नागाधरी नदी में श्री गंगाजी परगट हुवा। पांणी उत्तर दिस था आवै[3] नै मडोवर रखेश्वर तपस्या कीवी तिण सुं नांम

---

१. बहुत प्राचीन, अनादिकाल से। २. अति प्राचीन। ३. उत्तर दिशा की ओर से पानी आता है।

८०. १ रांम-पोळ रांम मूतै कराई। जात गेलण मेसरी १५९३ रा मिगसर सुद ९।

८१. १ तळाव सोभागदेसर गांव छीजर कछ पटरांणी सोभागदेजी माहाराज सूरसिंघजी री बहू करायौ १६६९ रा पछै फेर छीजर गांव बसायौ नै बाग लगायौ थौ। कांम भंडारी लूणा हस्ते हुवो थौ। श्री माताजी हरसतीजी रौ मिंदर तळाव री पाळ गांव में करायौ सु माताजी रै मिंदर रै पांवां झरणो आवै सु पाळ मांहै पांणी झरणो हेटे नीसरै।

८२. १ बसंत-सागर नाजर बसंत बंधायौ पैला झरणो थौ चौगान री वांमी तरफ भाखर मांये गढ ऊपर १७१६ रा मिगसग सुद ५, राजा जसवंत-सिंघजी री वार में।

८३. १ तळाव रासोळाई राठौड़ रायसिंघ बीकानेरीये कराई। ऊपर रासा रौ रैवास थौ। पछै ऊजड़ हुवौ तरै माहाराज श्री जसवंतसिंघजी रा राज में सोभावत भगवांनदास सं० १७१४ रा चैत बद ५ फेर खिणाई। नांव भगवांनसागर दीयौ सु नांम रासोळाई ही कहै छै। हमार जैपोळ आगे हैं नै आगे अठे राव जोधाजी री वार में चहूवांण रासो रौ वास थौ नै नाडो रासोळाई कराई थी। जूनी बही में लिखियो थौ तिण सुं जांणां[1], रायसिंघ नहीं कराई।

१ सहदेव री बावड़ी राव मालदेजी रौ सहदेव सोलंकी करणा री तिण कराई। तिण ऊपर तुरक मेहमेद परदार राजा सूरसिंघजी री वार में मुनारां दोय कराया।

१ रांम-वावड़ी सूरसागर विचै पंचोळी मोहीणदास कराई सं० १७०७ रा पोहो सुद ८। माहाराज जसवंतसिंघजी री वार में।

१ भटुकड़ी बावड़ी कनै मुणोत नैणसी जैमलोत नवी वावड़ी कराई सं० १७०७ रा माहा सुद में माहाराज जसवंतसिंघजी री वार में। हमार मुणोतां री वाग वाजै छै।[2]

८४. १ फरासत-सागर, मीयां फरासत बाहादरखां नपीर पीराजी तळाव बंधायो सं० १७१२ रा फागण सुद ११ रा पैला गोळ-नडो कहीजती थी सु हमें ही गोळ-नडो कहीजै छै। गोळ में है।[3] तिण मांय हमार माहाराज श्री

१. जिससे जान पड़ता है। २. अभी मुहनोतों का बाग कहलाता है। ३. गोळ-मोहल्ले में विद्यमान है।

तखतसिंघजी रा राज में महारांणीजी श्री रांणावतजी नांम गुलाबकंवर रणसिंघ मोखमसिंघोत रा, माहाराज कंवार श्री जसवंतसिंघजी री मां।

८५. १ कूंपावत राजसिंघ वाग अड़तो नवी बावड़ी सिकदार रागोदास सोभावत खीणाई सं० १७०७ रा माहा सुद में। राजा जसवंतसिंघजी री वार में करायौ सूरसागर कांनी नै सं० १७११ में वाग करायौ।

८६. १ जाळोर गढ़ नीचे मीयां फरासत बाहादर खां प्रीथीराजोत जात तुंवर तिण बावड़ी कराई १७२० रा भादवा वद ५, नांव फरासत-बाव दीयौ। पैला जोगी री बाव कहीजती थी।

८७. १ खेता रौ वेरो बांमण खेतै करायौ नागोरी दरवाजा रै मूडा आगे, राव जोधाजी री वार में करायौ।

८८. १ मीयां फरासत इण ही कापरण रा तळाव मांहे बावड़ो कराई सं० १७१९ रा चैत सुद ५।

८९. १ प्रगने सीवांणा रौ गांव कुसीप री सींव में भाखर गोडो तठै श्री माहादेवजी रौ देवरौ नै भीव पांडव रौ गोडो फोड़ नै खाण खायो छै तठै भाखर मांय सु पांणी नोसरै छै, तिको तीरथ छै। आदु कुंड भरीयौ छै।

९०. १ कोयला परवत माताजी श्री हीगळाजजी रो देवरो आद तीरथ छै। पांणी रौ वडो कुंड है नै काग दरसण भला कार हुवै तद कोई देखै नहीं। सीवांणा सुं कोस ४ अनाद काळ रो थांन छै[1]। माखी नै कागलो थांन सुं नजीक न आवै। पूजा जोगा गुसांई करै छै।

९१. १ मंडोवर आद[2] गढ नै नागादरी री नदी नै श्री मंडलेश्वर माहादेव आद छै। श्री रामाअवतार में श्री रुगनाथजी श्री सीताजी लिछमणजी सुग्रीव, वभीसण, हनुमान तथा दूजी सेना साथै ले नै लंका सुं रावण मार नै पुसप-वीमांण वोराज नै अठै श्री मंडलेश्वरजी री पूजा पाछा पधारतां कीवी नै सेना साथै घणी थो तिण सुं भीड़ में दरसण हुवै नही तरै श्री रुगनाथजी री श्री माहादेवीजी री अग्या सुं कंकर सब संकर हुवा सु प्रीत री इक भाखर में सारा लिगांकार रा दरसण हुवा, तरै सेन्या सारो नै दरसण हुवा। पछै श्री रुगनाथजी अजोध्या पधारीया नै नागाधरी नदी में श्री गंगाजी परगट हुवा। पांणी उत्तर दिस था आवै[3] नै मंडोवर रखेश्वर तपस्या कीवी तिण सुं नांम

---

१. बहुत प्राचीन, अनादिकाल से। २. अति प्राचीन। ३. उत्तर दिशा की ओर से पानी आता है।

मंडोवर कहीजियो। दूजा तीरथां री भीमसेण माहातम में बिसतार कर कही है।

६२. १ श्री झाड़खंड श्री वैजनाथजी माहादेव रा दरसण करण नुं नाहड़राव पड़ियार जावतो थो पछै सिव प्रसन हुवा तरै सपना मैं आग्या हुई— थारी भगती सुं परसन हुवा म्हे मंडोर पधारसां फलांणै दिन। तरै दिन री ऊगाळी मंडोवर सुं कोस दोय पालड़ी कनै परगट हुवां जमी मांय सुं बारै नीसरिया सु बड़ी हाक हुई तरै गायां चमकी तरै गोरीयां[1] हो-हो सबद कीयो सु नीकळता ऊरा रेह गया। पछै श्री माहादेवजी वैजनाथजी री पूजा नाहड़राव कीवी देवरी करायो, सु हनोज है।[2]

६३. १ बालसमंद तळाव नाहड़राव रै भाई बालराव पड़ीयार करायो ११७५ रा मंडोर सुं कोस १।

६४. १ सं० १०७० रा पड़ीयार नाहड़राव मंडोवर रो कोट करायो।

६५. १ कागो आद तीरथ जोधपुर सुं अध कोस कागभुसंड रखेसर अठै तपस्या करतो। भाखर मांय सु गंगाजी परगट हुवा। नांम कुंड कागो दीयो। सीतळा रो थांन माराज श्री विजैसिंघजी पधराया छै[3]। कुंड मांहे भाखर मांहे उत्तर दिस था पांणी आवै। पंच तीरथ कहीजै नै पछै बीरांमण समट वध पारो बंधायो १७३६।

६६. १ जोगी तीरथ आद तीरथ देवीझर तांई गंगाजी भाखर मांय था परवाय नीसरै, पंच तीरथी मांहे। जोधपुर सुं कोस ४। पांणी उत्तर दिस तां आवै, तिण था बाग पांणी पीवै।

६७. १ अरणो आद तीरथ अठै अरण रखेसुर रहता। तपस्या करतां गंगाजी प्रगट हुवा। मोकळावस था अध कोस।

६८. १ नीबो तीरथ अठै नीब रखेस्वर तपस्या करता गंगा परगट हुई। जोधपुर सुं कोस ३।

६९. १ पंच तीरथी मांहै वड़ी ठौड़, वडो कुंड, मंडोर सुं अधकोस ऊपर मोटो वड़, आद तीरथ। पांणी ऊतर दिस था आवै।

१००. १ झरणो आद तीरथ अठै जोगी चिड़ियानाथजी तपस्या करता,

---

१. गायें चराने वाले। २. अभी तक है। ३. स्थापित करवाया।

सु राव जोधे गढ री नींव दीनी तरै झोळी में धूणी घाल बहिर हुआ।[1]

गढ ऊपर के देवस्थांन :—

१०१. १ श्री आणदघणजी मिंदर राजा गजसिंघजी करायौ सं० १६९२ रा।

१०२. १ श्री रिणछोड़जी रौ देहरौ ऊदांबाई राव बाघा री बहू राव गांगा री मां रौ करायौ बिटली ऊपर। हमैं धांन री कोठार छै।

१०३. १ श्री चत्रभुज रो देवरौ चोकेळाव ऊपर बहूजी झाली राव मालदे री बहू नै उदैसिंघजी री मां रौ करायौ। पछै तुरकांणी हुई तरै मसीत[2] कीवी नै हमें कारखांनो है।

१०४. १ श्री चांवण्डा देवी रौ थांन चांवंड भुरज ऊपर आगै तो राव जोधै करायौ थौ।

१०५. १ श्री माहादेवजी झरणा ऊपर छै।

१०६. १ सेरखां रै नीवांण राजा जसवंतसिंघजी री वार में १७०७ मैं सूरसागर कनै माळीयां रा गेहूँवां रा बेरा लेनै बाग करायौ।

१०७. १ पंचोळी बलु रायगोदासोत बाग करायौ।

१०८. १ सिंगवी रायमल कुवो षुदाय नै बाग करायौ।

१०९. १ खोजे लाले बाग करायौ।

११०. १ मीर जाफर रु० बाग करायौ।

१११. १ घीचना तोतांपीर रै बेटें बाग करायौ।

११२. १ ईंदो हरी बाग करायौ।

११३. १ पुरबीयो केसर बाग करायौ।

११४. १ करमसोत परथीराज बाग करायौ।

११५. १ आढे महेसदास बाग करायौ।

११६. १ वावड़ी १ उवो पंचोळी मूणदास कराई १७०७ में।

११७. १ ठाकुरजी श्री गगस्यामजी रौ देवरौ साहा गगदास गदाधर रै करायौ, जोधपुर मांय १६७१। पैला देवरौ राव गांगा रौ करायौ थौ सु

---

१. झोली में धूनी के अंगारे डाल कर रवाना हुए। २. मस्जिद।

ऊखेलाय ने नवौ करायौ १६८१ ईंडो चढ़ायौ ।[1] महेसरी गंगादास नै साह धनो गदाधर मोहणदास राठी भागीरथ १६५६ रा माह सुद ५ नै आया था सं० १७३७ पोस वदी पातसा औरंगजेब रा हुकम सु पाड़ीयौ नबाब तेबर बेग । पछै इण जायगा मसीत कराई । माहाराजा श्री बखतसिंघजी मसीत पड़ाई नै पाछौ मिंदर गंगस्यांमजी रौ करायौ । माहाराजा श्री वीजेसिंघजी करायौ १८१० में नै नोबत चढ़ाई । रु० ९०००) धनै पंचाऊ लागा ने बाकी रु० १८०००) गंगादास लगाया ।

११८. १ श्री सीतारामजी रौ देवरौ सिकदार भगवांनदास कुसळावत करायौ जोधपुर मे १७२० रा काती सुद १ जगतसिंह रांमदासोत री वावड़ी कनै ।

११९. १ श्री मुनांयकजी रौ मिंदर रावजी गांगाजी री वार में प्रोहत मूळै करायौ समत १५ ।

१२०. १ श्री जगनाथजी रा मिंदर ।

१२१. १ श्री सांवळाजी रौ देहरो राजा गजसिंघजी रै धायभाई मधू चहुवांण करायौ सं० १७ ।

१२२. १ श्री गोपीनाथजी रौ देवरौ बाई हरवंसी करायौ सं० १६८४ में सूरजकुंड सांमी ।

१२३. १ सांमी हरीरांम री देहरो सं० १७०८ पछै भाटी रांमसिंघ कूंभावत कराय दीयो स० १७१४ में ।

१२४. १ श्री संतनाथजी रौ देवरो जोधपुर मांहे सं० १५२२ पनरेसै वावोसे वोव ऊदो, साहा जगु नलवाणो करायौ । मुडा आगै जैना वेरो पैला ऊगीणी देवरो चौमुख थौ सु १७३७ माहा वद ५ पाड़ीयो, पातसा औरग रा हुकम सुं नवाव नाहरवेग । पछै माहाराज श्री अजीतसिंघजी १७६३ रा पाछौ जोधपुर मे अमल कीयौ[2] तरै माजनां छोटो देवरौ करायौ । पछै १८६१ भंडारी गंगाराम जसराजोत खांप लुंणावत फेर आगलो ऊखेल नवौ करायो । पिण आगे देवळ भारी थौ ।[3]

१२५. १ श्री पारसनाथजी रौ देहरो जोधपुर मांहे संवत १५१६ मुंहते जेतै, वेद मुतै राव जोधाजी री वार में करायो पछै सिंघी पदमे पारसोत

---

१. स्वर्ण कलश चढाया । २. राज्याधिकार स्थापित किया । ३. बहुत बड़ा था ।

जीरणऊधार करायौ । पछै सं० १७३७ माघ सुद ४ पाड़ीयौ,[1] नबाब नाहरखेग ।

१२६. १ श्री मनसोव्रतजी रौ देहरो सं० १५८७ सिरेमल साह संख-वालेचा गोत तिण रौ करायौ । परतमा रतन जु थी देहरौ चौमुख ऊपरले मंडप श्री आदनाथजी था सं० १५९१ सं० १७३७ माह वद ११ तुरकांणी मैं पाड़ीयौ ।[2]

१२७. १ श्री माहावीरजीं रौ देवरो ।

१२८. १ फेर श्री माहावीरजी रौ देवरो ।

१२९. १ श्री कुंतनाथजी रौ देवरो ।

१३०. १ श्री सिंभूनाथजी रौ देवरो ।

१३१. १ चौपासणी ठाकुरजी श्री स्यांमजी री सेवा श्री बलभ कुळ री नै श्री गुसांईजी सं० १७८६ मुरलीधरजी नै माहाराज श्री अभैसिंघजी ओर कोटे सूं बुलाया नै चोखां बाग करायौ नै चोपासणी, चौखां ठाकुरजी रै भेंट की ।

१३२. १. गांव केलावे देहरो चुतरभुजजी रौ १५८२ मिगसर सुद १३ प्रोहत बीदै कनावत जात रो सेवड़ो करायौ नै पुजारा सेवग नारद भोजग जात मुथरीयौ ।

१३३. १ साहली गांव माहादेव साहलेसुर भाखर मांहे सुं पांणी रा परला छूटे । कुंड सगळा भरीजै । सोमोती अमावस रौ जोग मिटे तरै पांणी रा परला रेह जाय ।[3]

१३४. आद सैर पेला फूल-माळा बाजती, पछै सिरीमाळ,[4] पछै फेर ऊठण हुई तरै भीनमाळ बसाई । राव कांनड़दे बसायौ सं० १३१३ । अठै श्री लक्षमीजी नै भगवांन परणीजीया था । अठै बराह भगवांन रौ खेतर छै, नै देवरौ छै ।

१३५. संवत १२१५ पोस वद १० रांणपुरजी रौ देहुरौ आदेसुरजी रौ देहुरौ पोरवाळ धनो करायौ । देवरौ चौमुख च्यारुं दिस दरवाजां पाखांण संनांणा री सु हुवौ नै यण देहरा मे पिछम तरफ मसीत रौ आकार छै, तुरंकां रा डरसूं[5] ।

---

१. गिरा दिया । २. मुगल-राज्य के समय में गिरा दिया गया । ३. पानी का सोता बन्द हो जाता है । ४. श्रीमाल । ५ मुसलमान लोग ध्वस्त न करदें इस भय से पश्चिम की ओर मस्जिद का-सा आकार बना दिया है ।

१३६. संवत ११८१ पोस वद १० पारसनाथजी रौ देऊरो सूगे का जैऊनै गोत तातेड़ तिण फळोधी मेड़ता रौ गांव मेड़ता सुं ग्रथूणो कोस ४ जठै देवरौ बडो छै। पोळ रा कींवाड़ां रौ हुकम नहीं[1]। आगे कुवौ छै। पाखांण चोकड़ी रौ, एक प्रतमा।

१३७. संमत १६७४ रा चैत सुद १५ कापरड़ा री देऊरी पारसनाथजी री भंडारी मांनो अमरावत करायो। भट्टारक पंचायणजी प्रतसटा स० १६७९ श्री देहरो श्री भैरुंजी रा हुआं हुवौ छै। महाराज श्री गजसिंह जी री वार में[2]।

१३८. गांगांणी, अरजनपुरी कहीजतो थो, पदमनाभजी रौ देहुरो संपत राजा रौ करायो, दुधेळाव तळाव ऊपर २०९ साकै। माबीर राजा बीर बीकरमाजीत पैला, पछै देहुरो जीरण हुवो, सु पाछो सुधार १६६७ राजा श्री सूर सिंहजी रा हुकम सुं भाटी गोयंददास, भंडारी लूणकरण सुग केसव जीरण उधार करायो। पछै सूग राजसिंहोता फेर उधार करायो, पछै तुरकाणी में बारणे मंडप करायो[3]।

१३९. तिवरी पारसनाथजी रौ मिंदर सं० १५२२ वैसाख सुद ५ रांग मांडी। देहुरो सिघ नी प्रतमा[4] गांव मथांनिणीया रौ चरण बौर बांटतो थौ तिण नै लाधी तरै बांमणै टीलै परतमा गांव में आंणी[5] पछै टाटीये समन डूंगर रै मांय देहुरो करायो सु प्रतमा रै खनै नांव।

१४०. ओसीयां महाबीरजी रौ देऊरो सं० १०३३ प्रतिसटा हुई सु नांवो तोरण सांमो काळो भाटो छै तिण में लीय करणांटी आखर छै। तिण नीचे ओळी[6] लिखी छै तिण रसब्रबम् मंडीयो छो सु बंचै छै नै पोळ ऊपर नै मंडप देऊरौ सुहड़ सेठ रौ करायो।

१४१. ओसियां श्री सिचीयाजी माताजी रौ देऊरौ सुपल राव पंवार रौ करायो कांमदार सुहड़ सेठ देहुरा दोळो कोट करायो विण में कीरोड़ी धन लखेसरी कोट मांय रैता,[7] ५०८ देहूरा हुता। बारे १२ कोस में बसती हुती।

१४२. नाडोळाई गोढवाड़ मांय माबीरजी रौ देहुरो जसो भादरसुर लायो। पाली थौ सु बार रच्यो नै जादवां देहूरो जोगी मांणकै आंणीयो— सोभत थी, सु पाड़ ऊपर चाढीयौ सं० १६ मे।

---

१. मुख्य द्वार के दरवाजा लगाने की आज्ञा नहीं। २. महाराजा गजसिंहजी के समय में। ३. दरवाजे पर मंडप करवाया। ४. प्रतिमा। ५. गांव में लाया। ६. पंक्ति। ७. बड़े करोड़पती लोग कोट में रहते थे।

१४३. गांव कांणांणे परगना सिवांणा रै पारसनाथजी री देवरो सं० १६८७ सुगमन करायो नै श्री ठाकुरजी री मीदर सेठ दमोदर करायौ। कोहर[1] फळसा कनै पलीवाळ री खिणायो[2] १६८२ माग सुद ७।

१४४. खेड़ ग्राद सेर[3] जठै राजा संपत री करयौ देवरो श्री ठाकुरजी री नै जैन री।

१४५. नगर मेवा[4] में जठै जैन रा देवरा ३ (तीन) छै।

१४६. गढ़ जाळोर गढ ऊपर पंवारां रा राज में देवरो माबीरजी रौ करायौ पछै जैमल जीरण-उधार[5] करायौ सं० १६ में।

१४७. गांव वीठू देहरो श्री महादेवजी री सं० १६६२ मै विणजारै वीठल करायौ। नै वीठल री बहू देवरा आगे सांमे ही भाय बावड़ी कराई नै वीठल री मां तळाव करायौ। बिणजार वीठल रै नांम गांव वीठू वासीयौ[6] नै तळाव देवरो बावड़ी नै सोनईया लाख सताहीस लागा सु नांवो तीरथ भरै छै।

१४८ कसबै जोधपुर रै बागां री विगत खालसै—

१ बाग दिल-कुसाल सं० १७०६ हुवो।
१ राजबाग कदीम छै।
१ कागी बाग।
१ हरखीळाई बाळसमंद मांहै।
१ प्रीथीराज दळपतोत राठौड़ री बाग।
१ मैसदास री बाग।
१ गोकळदास सुंदरदासोत री बाग।
१ सीपां लालां री बाग
१ केसरखांन बाजखांनोत करबीया री बाग।
१ जुगतसिंघ रांमदासोत री बाग।
१ सिंघवी चुहड़मल री बाग।

---

१. कुआ। २. खुदवाया। ३. प्राचीन शहर। ४. महेवा ? ५. जीर्णोद्धार।
६. उस बनजारे के नाम पर वीठू गाव वसा।

१३६. संवत ११८१ पोस वद १० पारसनाथजी रौ देऊरो सूगे क जैऊने गोत तातेड़ तिण फळोधी मेड़ता रौ गांव मेड़ता सु अथूणो कोस ४ जठै देवरौ बडौ छै। पोळ रा कींवाड़ां रौ हुकम नहीं[1]। आगे कुवौ छै। पाखांण चोकड़ी रौ, एक प्रतमा।

१३७. संमत १६७४ रा चैत सुद १५ कापरड़ा रौ देऊरौ पारसनाथजी रौ भंडारी मांनौ अमरावत करायो। भट्टारक पंचायणजी प्रतसटा स० १६७८ श्री देहरो श्री भैरुंजी रा हुआं हुवौ छै। महाराज श्री गजसिंह जी री वार मे[2]।

१३८. गांगांणी, अरजनपुरी कहीजती थी, पदमनाभजी रौ देहुरो संपत राजा रौ करायो, दुधेळाव तळाव ऊपर २०६ साकै। माबीर राजा वीर वीकरमाजीत पैला, पछै देहुरो जीरण हुवो, सु पाछौ सुधार १६६७ राजा श्री सूर सिंहजी रा हुकम सुं भाटी गोयंददास, भंडारी लूणकरण सुग केसव जीरण उधार करायो। पछै सूग राजसिंहोता फेर उधार करायो, पछै तुरकाणी में बारणे मंडप करायो[3]।

१३९. तिंवरी पारसनाथजी रौ मिंदर सं० १५२२ बैसाख सुद ५ रांग मांडी। देहुरो सिघ नी प्रतमा[4] गांव मथांनिणीया रौ चरण बौर बांटतो थौ तिण नं लाधी तरै बांमणै टीलै परतमा गांव में आंणी[5] पछै टाटीये समन डूंगर रं मांय देहुरो करायौ सु प्रतमा रै खनै नांव।

१४०. ओसीयां महाबीरजी रौ देऊरो सं० १०३३ प्रतिसटा हुई सु नांवो तोरण सांमो काळो भाटो छै तिण में लीय करणांटी आखर छै। तिण नीचे ओळी[6] लिखी छै तिण रसव्रवम् मंडीयो छो सु बंचै छै नै पौळ ऊपर नै मंडप देऊरौ सुहड़ सेठ रौ करायौ।

१४१. ओसियां श्री सिचीयाजी माताजी रौ देऊरौ सुपल राव पंवार रौ करायौ कांमदार सुहड़ सेठ देहुरा दोळो कोट करायो विण में कीरोड़ी धन लखेसरी कोट मांय रैता,[7] ५०८ देहूरा हुता। बारे १२ कोस में बसती हुती।

१४२. नाडोळाई गोढवाड़ मांय माबीरजी रौ देहुरो जसो भादरसुर लायौ। पाली थौ सु बार रच्यो नै जादवां देहूरो जोगी मांणके आंणीयो— सोभत थी, सु पाड़ ऊपर चाढीयौ सं० १६ में।

---

१. मुख्य द्वार के दरवाजा लगाने की आज्ञा नहीं। २. महाराजा गजसिंहजी के समय में। ३. दरवाजे पर मंडप करवाया। ४. प्रतिमा। ५. गांव में लाया। ६. पंक्ति। ७. बड़े करोड़पती लोग कोट में रहते थे।

१४३. गांव कांणांणे परगना सिवांणा रै पारसनाथजी रो देवरो सं० १६८७ सुगमन करायो नै श्री ठाकुरजी रो मीदर सेठ दमोदर करायौ। कोहर[1] फळसा कनै पलीवाळ री खिणायो[2] १६८२ माग सुद ७।

१४४. खेड़ ग्राद सेर[3] जठै राजा संपत रौ करयौ देवरो श्री ठाकुरजी रौ नै जैन रो।

१४५. नगर मेवा[4] में जठै जैन रा देवरा ३ (तीन) छै।

१४६. गढ़ जाळोर गढ ऊपर पंवारां रा राज मे देवरो मावीरजी रौ करायौ पछै जैमल जीरण-उधार[5] करायौ सं० १६ में।

१४७. गांव वीठू देहरो श्री महादेवजी रौ सं० १९६२ मैं विणजारै वीठल करायौ। नै वीठल री बहू देवरा आगे सांमे ही भाय बावड़ी कराई नै वीठल री मां तळाव करायो। बिणजार वीठल रै नांम गांव वीठू वासीयौ[6] नै तळाव देवरो बावड़ी नै सोनईया लाख सताहीस लागा सु नांवो तीरथ भरै छै।

१४८ कसबै जोधपुर रै बागां री विगत खालसै—

१ बाग दिल-कुसाल सं० १७०९ हुवौ।
१ राजबाग कदीम छै।
१ कागो बाग।
१ हरखोळाई बाळसमंद मांहे।
१ प्रीथीराज दळपतोत राठौड़ रो बाग।
१ मैसदास रौ बाग।
१ गोकळदास सुंदरदासोत रौ बाग।
१ सीपां लालां रौ बाग
१ केसरखांन बाजखांनोत करबीया रौ बाग।
१ जुगतसिंघ रांमदासोत री बाग।
१ सिंघवी चुहड़मल री बाग।

---

१. कुआ। २. खुदवाया। ३. प्राचीन शहर। ४. महेवा? ५. जीर्णोद्धार। ६. उस बनजारे के नाम पर वीठू गाव वसा।

गढ जोधपुर नीवांण छै जिकां की याददासत (ग)

[किले के अंदर, पहाड़ों पर, शहरपने के अंदर तथा बाहर, इस क्रम से जलाशयों की सूची]

प्रथम, गढ ऊपरला नीवांणां री यादवासत—

१. दौलतखांना का मांणिकचौक में टांको।
२. आयसजी देवनाथजी री समाधि में टांको।
३. बावाजी आत्मारांमजी का मिंदर कनै टांको।
४. चांवंडा माताजी का मिंदर कनै टांको।
५. ईमरत-वाय (बावड़ी)।
६. पताळीयो वेरो।
७. झरणेश्वरजी महादेवजी रो हौद[1]।
८. चोकेळाव री अरठ वाळो बेरो।
९. रांणीसर तळाव।
१०. बाड़ी का मेहलां में टांको।
११. झरणों के नीचे टांको।
१२. जिनांना मेहलां में टांको।
१३. पताळीया कनै नवो बडो टांको।

सहर का नीवांणां को याददासत, तिण में पहलां तो डूंगर उपरला[2]—

१. रासोळाई।
२. भवांनी-कुंड।
३. देव-कुंड।
४. मोती-कुंड।
५. गांगेळाव।
६. हाडां को तळाव।
७. सूरज-कुंड बावड़ी।

सहर मांहि नीवांण जिकां की विगत—

१. पदमसर तळाव।
२. चांद-बावड़ी।

---

१ हौज। २. पहाड़ के ऊपर के (किले के आस-पास)।

३. जैतो बेरो।

४. घायभाईजो को बेरो।

५. कोटवाळी चूंतरै रै मांयलो बेरो।

६. गूंदी का चौक में बेरो।

७. जूना व्यासां की हवेली कनै बेरो।

८. फूलेळाव तळाव।

९. कुमारियो कुवो।

१०. दरजियां को कुवो।

११. अेक-मीनारां री मसीत (मसजिद) री बेरो।

१२. जालप बावड़ी।

१३. मोबतस्याह का तकीया में बेरो।

१४. साद सुखानंदजी को बेरो।

१५. सिंघीयों का बास कनै बेरो।

१६. चोपदारां की मसीत (मसजिद) में बेरो।

१७. व्योपारियों की मसीत (मसजिद) में बेरो।

१८. तापीबावड़ी।

१९. नाजरजी की बावड़ी।

२०. आहोर का ओनाड़सिंघजी की हवेली में बेरो।

२१. चांदस्याजी की मसीत में बेरो।

२२. दीनास्याजी की मसीत में बेरो।

२३. गोरां-धाय[1] की बावड़ी।

२४. बळूंदा की हवेली में बावड़ी।

२५. चैनपुरीजी[2] का अखाड़ा में बावड़ी।

२६. नाजरजी की दूजी बावड़ी।

२७. तुंवरजी को झालरो।

२८. गुलाबसागर तळाव।

२९. फतैसागर तळाव।

३०. मांहिला बाग में झालरो।

३१. सोजतीया दरवाजै बंबो ऊपर बेरो।

---

१. जिसे आजकल घोरंधा कहते हैं। २ ये एक पहुंचे हुए संत हुए हैं। यहां अचलनाथ का प्रसिद्ध मंदिर है।

३२. दीवांण भांनीदासजी की हवेली में बेरो।
३३. मोतीबाई का मिंदर में बेरो।
३४. खोजा की बावड़ी।
३५. राजसिंघ चांदावत की बावड़ी।
३६. छीतर को बेरो।
३७. गोळ-नडी, गोळ-नडी की बावड़ी।
३८. घाय-सागर।
३९. बखत-सागर।
४०. मलकस्याह का तकीया में झालरो।
४१. जीवणदास को कूवो।
४२. बिजै-सागर तळाव।
४३. लूंण-कुंड[1]।
४४. नाजरजी का मिंदर में बेरो।
४५. श्री बालकिसनजी का मिंदर में बेरो।
४६. फूलेळाव की बगेची में बेरो।
४७. हणुमानजी की भाखरी ऊपर टांको।
४८. आंवली वाळो बेरो।
४९. चिताणियां[2] री बगीची[3] में बेरो।
५०. निरंजनीयों का असतल[4] में बेरो।
५१. भगतणियों का बास मे बेरो।
५२. हणुमानजी री भाखरी वाळो बेरो।
५३. चंडावळ की हवेली में बेरो।
५४. सांणीयां की हवेली आगे बेरो।
५५. लालदास को टांको १।
५६. साद मंगळदास रो टांको १।
५७. पंचोळियां का टांका २।
५८. गोलमदारां की मसीत में वेरो।
५९. सिरकार कुचामण की हवेली में बेरा २ (दोय)

आकार का नीचाण है, जिसका पानी खारा है। २. पुस्करणा ब्राह्मणों की एक । ३. यहां नीलकंठ महादेव का मंदिर भी है। ४. स्थान, आश्रम।

सहर का सहरपना बारै नीवांण जिकां की याददासत—

१. महांमिंदर को झालरो।
२. मानसागर तळाव। (महांमिंदर में, पांणी ठेरै नहीं)
३. महांमिंदर रा नवा बेरा दोय २।
४. रंगराय की बावड़ी।
५. धायभाईजी को बेरो।
६ नहेड़ी री भाखरी पावटो ऊपरलो टांको १ (एक)।
७. तूंवरजी को झालरो।
८. केसरीसिंघ को झालरो।
९. नवलखो झालरो।
१०. रायकाबाग में ऊपर बावड़ी।
११. रायकाबाग में मैंहलां री पूठ[1] रो बेरो।
१२. सेखावतजी को तळाव।
१३. जहांनसागर नांम तळाव।
१४. चुपस्याह री बगेची में बेरो १।
१५. व्यासजी रो बेरो।
१६. छीतर भाखर ऊपरलो तळाव।
१७. गोळ-नाडी रातानाडा गणेशजी रा भाखर ऊपर।
१८. रातोनाडो तळाव (नाम कल्यांण-सागर)।
१९. जगरूपजी को बेरो।
२०. बाला ऊपर बेरो (पाली रै मारग)।
२१. धनरूपजी रो बेरो।
२२. पिंडतजी री बावड़ी।
२३. महेसरियां की बावड़ी (सोजतीया दरवाजा बारे)।
२४. सुनारां की बेरी।
२५. कंदोयां की बावड़ी।
२६. सेवापुरीजी की वावड़ी।
२७. धरमपुरा की बावड़ी।
२८. व्यासजी की बावड़ी।

---

१. पीछे की ओर।

३२. दीवांण भांनीदासजी की हवेली में बेरो।
३३. मोतीबाई का मिंदर में बेरो।
३४. खोजा की बावड़ी।
३५. राजसिंघ चांदावत की बावड़ी।
३६. छीतर को बेरो।
३७. गोळ-नडी, गोळ-नडी की बावड़ी।
३८. घाय-सागर।
३९. बखत-सागर।
४०. मलकस्याह का तकीया में झालरो।
४१. जीवणदास को कूवो।
४२. बिजै-सागर तळाव।
४३. लूण-कुंड[1]।
४४. नाजरजी का मिंदर में बेरो।
४५. श्री बालकिसनजी का मिंदर में बेरो।
४६. फूलेळाव की बगेची में बेरो।
४७. हणुमानजी की भाखरी ऊपर टांको।
४८. आंवली वाळो बेरो।
४९. चिताणियां[2] री बगीची[3] में बेरो।
५०. निरंजनीयों का असतल[4] में बेरो।
५१. भगतणियों का बास में बेरो।
५२. हणुमानजी री भाखरी वाळो बेरो।
५३. चंडावळ की हवेली में बेरो।
५४. सांणीयां की हवेली आगे बेरो।
५५. लालदास को टांको १।
५६. साद मंगळदास रो टांको १।
५७. पंचोळियां का टांका २।
५८. गोलमदारां की मसीत में बेरो।
५९. सिरकार कुचामण की हवेली में बेरा २ (दोय)

---

१. कुए के आकार का नीवाण है, जिसका पानी खारा है। २. पुस्करणा ब्राह्मणों की एक शाखा। ३. यहां नीलकंठ महादेव का मंदिर भी है। ४. स्थान, आश्रम।

९०. मेहुतरां की नाडो ।
९१. हरनाथ री कुवो ।
९२. राज-कुवो ।
९३. माळी-कुवो ।
९४. रुगनाथ री बेरी ।
९५. सिव-वाड़ी में बावड़ी और टांको एक ।
९६. सेवगां री बगीची में भाखर ऊपर नाडी ।
९७. गोळ री घाटी, नायकां री मसीत कनै बेरो एक ।
९८. भैरव रै भाखर[1] ऊपर फदु-सागर[2] तळाव ।
९९. चतरा को तळाव ।
१००. फतैगढ़ कनै दीपचंद गुरां री तळाव ।

---

१. जहां आजकल पत्थर की खानें अधिक हैं । २. इसे फदुसर भी कहते हैं ।

५८. श्री पात बाबाजी री नाडी ।
५९. रांमदेवजी की नाडी ।
६०. जसु धायभाई की नाडी ।
६१. खटूकड़ो री बेरो ।
६२. भगवांन कुसलावत रौ बेरो ।
६३. छांगांणियां की बावड़ी ।
६४. प्रोयतजी की बावड़ी ।
६५. विजेरांमजी जोसी की बावड़ी ।
६६. सूरसागर तळाव ।
६७. सूरसागर रा बाग में बेरौ ।
६८. राश्टी कनै मोती-कुंड तळाव ।
६९. रायटी कनै किसन-कुंड तळाव ।
७०. रावटी री बावड़ी ।
७१. बारीयो नाडो ।
७२. बाळसमंदर तळाव (पड़ियार बालाराव वाळो)
७३. बाळसंमदर तळाव मांहिलो झालरो ।
७४. बाळसमंदर रा बाग रौ बेरौ ।
७५. भूतेसरजी महादेवजी को बेरौ ।
७६. जबरेसरजी महादेवजी रै मिंदर रौ बेरौ ।
७७. गूगू-नाडो ।
७८. काग-नाडो ।
७९. रतन-तळाई ।
८०. अभैसागर तळाव ।
८१. देरावरजी री तळाव ।
८२. शांनमल सिंघी री नाडी ।
८३. बहूजी को तळाव (नांम सरूप सागर) ।
८४. भादा बसोया को तळाव ।
८५. कागा रा वाग मे बेरौ एक १ ।
८६. कागड़ो री नाडो, भाखर ऊपर टांको ।
८७. सीवांणची दरवाजा वारे चूंतरा रौ तळाव ।
८८. बनड़ा री नाडी ।
८९. मनकरणजी श्रीमाळी री नाडी ।

९०. मेहतरां की नाडो ।

९१. हरनाथ री कुवो ।

९२. राज-कुवो ।

९३. माळी-कुवो ।

९४. रुगनाथ री बेरो ।

९५. सिव-वाड़ी में बावड़ी और टांको एक ।

९६. सेवगां री बगीची में भाखर ऊपर नाडी ।

९७. गोळ री घाटी, नायकां री मसीत कनै बेरो एक ।

९८. भैरव रै भाखर[1] ऊपर फदु-सागर[2] तळाव ।

९९. चतरा को तळाव ।

१००. फतैगढ़ कनै दीपचंद गुरां री तळाव ।

---

[1] जहां आजकल पत्थर की खानें अधिक हैं। २. इसे फदुसर भी कहते हैं।